भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में राजस्थानी कवियां रौ योगदान

डॉ नृसिंह राजपुरोहित

प्रकाशक
स्वतन्त्रता सेनानी
मथुरादास माथुर
सयोजक
राजस्थान कांग्रेस शताब्दी समारोह समिति
जयपुर

प्रथम सस्करण 1988

मूल्य 200 00 रुपये मात्र

मुद्रक
प्रिंटिंग हाउस
मेडती गेट के बाहर
जोधपुर

विगत



विगत

भूमिका

मात-पिता सुत मेहली, बधू वीसारेह।
वीर सपूता वातडी, चारण चीतारेह ॥
जो करसी जिणरी हुसी, आसी विण नूतीह।
आ मह किणरै वापरी, भगती रजपूतीह ॥

शूरवीरता अर पराक्रम रै पाण राजस्थान रो नाम जगचावो। पण वीर प्रसवणी इण धरा नै ओ विरुद सहज मे कोनी मिळ्यो। अणगिण शूरवीरा इण धरती अर आपरै धरम सारू प्राणोत्सर्ग करन आपरै मूघै लोही सू इण माटी न सीची, तद कठई जायनै इणमे इसा वीर सपूत निपजावण री खिमता पैदा हुई। सूखी रेत मूठी मे नी ठरै। आ बात जाण'र अठैरा वीरा इण धरती माथै आपरो धणियाप कायम राखण सारू इणनै अगोलग लोही सू भिग्योडी राखी।

लोही लुळी रैत लुळ लेऊ,
माथै मेल मोद मन मान।
अजस जोग प्रवाडा आछो,
रो पुनीत धर राजस्थान ॥

कई मिनख जीवणो सरु किया पैली'ज मर जाव। वे बापडा विना जीविया ई मर। पण शूरवीर जीवणो जाणै अर मरणो ई जाण। इण कारण राजस्थान रा कवि मानखै न आपरो जीवण सुधारण सारु सदीव मरणो सीखण री बात कैवता आया।

राजस्थान रै सपूत मानखै देश माथ आई हरेक आपद-विपद रो सदीव पग रोप नै विरोध कियो। धर्मान्धता सू प्रेरित धनलोलुप आक्रमणकारिया रै विश्व-विजयी अभियान रो पै'लडो प्रभावी प्रतिकार भारत मे ई हुयो। विश्व विजय रा सपना लिया ईरान, तुर्की, स्पेन अर अफगानिस्तान न रू दता अरबवासी जद भारत री सीव म घुस्या तो वारो सैंमू पै'लो मुकाबलो भारत ई कियो। वान आपरै विजय अर्जित अभिमान नै विसार नै समझौतो करण सारू मजबूर किया।

इण कारण राजस्थान री अर खासकर अठ री राजपूत कौम री शूरवीरता रो आभार सगळो देश मानै। लारला दोय सौ बरसा रो विपुल राजस्थानी साहित्य इण राजस्थानी सपूता रै उल्लेख जोग योगदान री साख भर। पण दुख री बात आ के विरला भारत-वासिया न इज इण अणमोल साहित्य री जाण है। इण उपरात विशेषता री बात आ के खुद राजस्थानवासिया न ई इणरी पूरी जाणकारी कोनी।

राजस्थान रो कवि कम घणो अनूठो रह्यो। इण कविया रै अेक हाथ मे कलम रही तो दूज मे तलवार। रणखेत मे वे बीर सैनका साग खाध सू खाधो भिडाय'र जू भिया। इण कारण वारी कथणी अर करणी मे कदई कोई फरक नी रह्यो। वारो अोजपूण काव्य मायड भोम री रक्षा खातर बळिदान री सतत प्रेरणा देवतो रह्यो धम, सस्कृति अर सभ्यता री रक्षा खातर सदीव आह्वान करतो रह्यो। जद कदई भारत री अस्मिता खातर खतरो पदा हुयो राजस्थान रा इण निडर सरस्वती पुत्रा आपर जोशीले काव्य सू आम आदमी न मर मिटण री प्रेरणा दोवी। इणारा दूहा अर गीता पीढी दर पीढी अलेखू सूरमावा न प्राणोत्सग करण सारू त्यार किया।

ईसा री तेरवी सदी मे देश र पछम उतराद सू धर्मान्ध विदेशिया रा हमला होवणा सरु हुया। वतमान मे उपलब्ध अोजस्वी डिंगल काव्य री रचना उण वखत सू ई सरु हुई। आ जमान री माग ही। उण वखत देश न इस प्रेरणादाई अर अोजस्वी काव्य री जरूरत ही। इण काव्य सू प्रेरणा लेय'र अठ रा शूरवीर मायड भोम री आबरू कायम राखण सारू मर मिटिया। हमला-वरा दिल्ली, कन्नोज अर अजमेर माथ आक्रमण करन आगै बढण री कोशिश करी पण प्रबळ प्रतिरोध र कारण वारा होमला पस्त होयग्या। *वान आपरी रणनीति माय पाछो विचार करणो पडयो।* छेवट वान कन्नोज अर अजमेर रा आदू शासका सू समझौतो करणो पडयो अर विदेशी शक्तिया रो नाम मात्र रो शासन की किला अर *थाणा ताई सीमित रयग्यो। अहकारी आक्रमणकारिया रो अेकछत्र* राज थरपण री मशा मन मे ई रैयगी। पछम मे मिश्र सू लेय'र स्पेन ताई उत्तर मे तुर्की सू लेयन चीनो तुर्किस्तान ताई, पूरब मे इराक सू लेयन बलूचिस्तान ताई अर दक्खण मे सगळ अरब मुलक

मे धर्मान्तरण रै रूप मे तूफान मचावणिया रो सगळो जोश अठै आवता ठडो पडग्यो ।

स्वाधीनता री रक्षा निरतर सावचेत रह्या ई सभव होय सकै । लिछमी री लाडेसर भारत विदेशी आक्रमणकारिया वास्तै सदीव आकर्षण रो केन्द्र रह्यो । इण वास्तै अदरूणी फूट रै कारण जद कदई मौको मिळयो तो विदेशी हमलावर इण माथै कब्जो करण री ताक मे रह्या । पण प्रबळ प्रतिरोध रै कारण दोय सौ बरसा मे अेक दो हमलावरा नै नीठ थोडी घणी सफळता मिळी । आखती पाखती रा क्षेत्र नै आपरी उपस्थिति बतावण सारू इणान निरतर दमन, अत्याचार अर क्रूरता रो सहारो लेवणो पडयो । सैनिक टुकडिया रा अभियान कदई सफळ रह्या तो कदई असफळ । इण भात अे विदेशी हमलावर आशिक रूप सू लूट खसोट करता रह्या अर नैनै-मोटा रजवाडा सू धन री वसूली करता रह्या । पण भारत रै आथमणै अर उतरादै भू भाग रै अलावा दूजी भारतीय जनता न इण बात री घणी जाण नी पडी के कुण आयो अर कुण गयो ।

अठारवी सदी ताई दिल्ली रो शासन अर देश रो विशाल भू भाग विदेशी विजेतावा सू अप्रभावित रह्यो । इण कारण देश रै उण इलाका र मध्ययुगीन साहित्य मे स्वाधीनता सग्राम रो आह्वान नी बरोबर लाधै । पण राजस्थान रो डिंगल साहित्य इणरो अपवाद है । इणरो मूळ कारण ओई के इण धरती स्वाधीनता रो मोल उण जमानै मे ई आछी तरिया जाण लियो हो ।

वीर साहित्य किणी धरम, देश अर सस्कृति री परतत्रता रै खिलाफ प्रतिक्रिया रो सरूप धारण किया ई आपरी ओळखाण बणावै । प्रतिक्रिया री अभिव्यक्ति उणरी तीव्र होवै । आ बात जरूरी कोनी के उण प्रतिक्रिया री सरुवात सैनिक विरोध सू होवै । कई बार सवेदनशीळ मानस मे उभारण वाळै साहित्य र रूप मे ई विरोध साकार होय सामरिक प्रतिरोध री प्रेरणा देवै ।

मध्ययुगीन भारत मे जिको इलाका विदेशी आक्रमणा सू प्रभावित नी हुया, उठारै साहित्य मे उत्तम भक्ति साहित्य अर सोवण शृगार साहित्य रो निर्माण तो मोकळो ई हुयो पण वीररसात्मक काव्य रो निर्माण नी हुयो । इणरै विपरीत राजस्थान अर गुजरात नै उण युग मे बराबर जूझणो पडयो । धम, धरती अर सस्कृति री

रक्षा खातर जिणी प्रकार मरै हुया उणरी अभिव्यक्ति ई ...
वीररसात्मक साहित्य है। राजस्थान अर गुजरात रा ...
धारापर चारण कवियां री, देवी अनुकम्पा नूं इणरै ...
दार रह्यो। इण भान इण सरस्वती पुत्रां स्वाधीनता री ...
नै निरंतर प्रज्वळित राखी। दोनूं प्रदेशां र साहित्य रा भाव
युग म जूनी राजस्थानी डिंगल रही। इण साहित्य नै ...
तीय भाषावां आदर दियो।

चारण काव्य रा विषय, प्रसंग अर नायक दूजा ...
भाषावां वास्तै प्रेरणा रा स्रोत बण्या। डिंगल साहित्य र ...
न सगळै देश स्वीकार कियो।

महात्मा गांधी र नेतृत्व में अंग्रेजी राज रै खिलाफ स्वाधीन...
संग्राम तो घणो बाद में सरु हुयो। पण अंग्रेजां उगणीसवीं ...
सरुआत में जद राजस्थान र देशी रजवाड़ा में दखलदाजी सरु ...
तद मठरा कवियां वारी खोटी नीत नै ओळख लीवी ही। ...
रियासत रा कविराजा बांकीदासजी आसिया प'लडा राजस्...
कवि हा जिणा हिंदू अर मुसलमान सगळा नै मिळ'र अंग्रेजी ...
री विरोध करण री आह्वान आपर काव्य र माध्यम सूं कियो। ...
इणीज भांत दूजा रजवाड़ा में ई चारण कवियां डिंगल काव्य र
माध्यम सूं हिंदू नेतृत्व न जागृत कियो। इणरै कारण अंग्रे...
सत्ता न कई ठोड देशी रजवाड़ा साग समझौतो करणो पड्यो।

अंग्रेजां 1857 मे भारतीय पराधीनता न पुख्ता बणावण र
भरपूर कोशिश करी। फळस्वरूप सगळ देश मे अंग्रेज विरोधी
संग्राम छिड़ग्यो। राजस्थान ई आपरी गौरवपूर्ण परंपरा मुजब
इणमे पूरो योगदान दियो। अठै रा स्वाधीनता प्रेमी वीर विदेशी
सत्ता रै खिलाफ उघाड़ी छाती लड्या तो अठै रा कवियां ई आपरो
फरज आछी तरियां निभायो। महाकवि सूरजमल मीसण, जनकवि
शंकरदान सामोर अर इसा निराई सरस्वती पुत्रां आपरी ओजभरी
वाणी सूं निडर होयन जनता री आह्वान कियो। उणा अंग्रेजी
सत्ता रै कोप री अेक रत्ती भर ई परवा नी करी। पण इण सगळ
योगदान री जाणकारी देश रा आम आदमी न छोड'र राजस्थान
वासियां न ई पूरी कोनी।
गांधी युगीन आंदोलन ...

माथै थोपण री प्रवृत्ति ठेट सू रही । इणसू आपणी
ा री घणी उपेक्षा अर अवहेलना हुई । देश रा नीति-
पगा बळती नै नी देख सक्या । इण भात दूरगामी
नदेखी करण सू इण प्रदेश रो घणो अहित हुयो अर

नरसिहजी राजपुरोहित मायड भाषा री इण पीड नै
राजस्थान री विशिष्ट सास्कृतिक परपरा अर मायड-
त अनमोल राष्ट्रीय काव्य री अवहेलना वानै घणी
ारण उणा इण समृद्ध साहित्यिक सपदा नै साहित्य
लावण रो बीडो उठायो । गहन अध्ययन अर खोज र
शोध प्रबध रै रूप मे वारो मो प्रयास सागोपाग अर
। म्हारी विनम्र राय मे विद्वान लेखक शूरवीर
रक कवियां रै इण सकल्प नै के 'पराधीनता अर अप-
ण करता वीरता सू मौत रो वरण करणो चोखो'
काल रै साहित्यिक इतिहास रा प्रसगा रो विवेचन
गौरव री लूठी सेवा करी है ।

सग्राम रै साहित्य मे अेक कानी शकरदान सामोर
व्यास 'उस्ताद' जिसा जनकवियां जनचेतना रो शख
जी कानी वाकीदास आसिया अर सूरजमल मीसण
अर चावा कवियां स्वाधीनता खातर बलिदान री
। इणी'ज भात तीजीकानी स्वाधीनता आदोलन मे
यण व्यास, हीरालाल शास्त्री, काळा बादळ, वर्मा,
त्याद स्वतत्रता सेनानियां साधारण काव्य रचना रै
चेतना पैदा करण री कोशिश करी । कुल मिळाय नै
अनूठो प्रयास आपणी अेक अमोलक साहित्यिक थाती

साहि ... ो मेणत अर लगन सू शोध
... ण इणन जिज्ञासु पाठका अर
... मे लावण री पूरी जरूरत
... ह रै माध्यम सू बैठो ।
... अध्यक्ष, स्वतत्रता सेनानी
मे उण वखत राजधानी

वान अर वारै काव्य न यथोचित स्याति अर सम्मान नी मिळवा रौ कारण वार योगदान री जाणकारी रौ अभाव रह्यौ ।

मानखै री समाज री अर राष्ट्र री धारणा, मानता, भावना अर प्रतिक्रिया न दिशा कुण देवै ? ऊडी विचार करा तौ कवि अर साहित्यकार ई इण काम नै पार घालै । वे जन जन रै मन सूतौडी पवित्र भावनावा न जगावै अर आपरा फरज नै निभावण री प्रेरणा देवै ।

राजस्थानी काव्य री अनूठी विशेषता नै सावळ समझण सारू अठै री शूरवीर, धर्मनिष्ठ अर बळिदानी परपरा री भारतीय शासन पद्धति र प्रति अनुराग समझणौ जरूरी है । इणर सारू जिण मानस री जरूरत है उणन अर्जित करण सारू मान्य परम्परा सू ओतप्रोत मन चाइजै ।

डिंगल कविया आपरी सामर्थ परपरा थापित करण सारू पीढिया रै अनुभव, ज्ञान अर आदर्शा री नींव माथ आपरै काव्य रौ निर्माण कियौ । इण रचनाकारा आपरी दीठ रै माफन जिकौ कर्त्तव्यपरायणता अर शूरवीरता निरखी परखी उणन आपर आखरा अर वाणी रै माध्यम सू भावी पीढी र मानस मे उतारण री पूरी कोशिश करन आपरौ पवित्र फरज निभायौ ।

पण उणार इण अमोलक योगदान न नी समझणिया नासमझ जे उण कविया माथै अतिशयोक्ति अर झूठी प्रशसा रौ आरोप लगावण री ओछी चेष्टा करै तो कोई इचरज री बात कोनी । कोई कायर इण बात न किया मान सक के अेक स्वाभिमानी मरद अवसर आया कोई अबळा री लाज बचावण खातर आपरा प्राण जोखम मे नाख सक । उणरै हिसाब सू तो वो आदमी झूठौ प्रशसक है जिकौ इण बात री साख भर । इण सारू 'होज की जाण तिय रस, बाराक मास वहाह' अेक ओपती ओखाणौ है । कायर इण बात नै काई जाणै के डिंगल मे मरुधोडा बळिदान रा चित्राम वास्तविकता रौ प्रतिबिंब है, झूठी तारीफ कोनी ।

स्वाधीनता, मरजाद अर धर्मपरायणता सू अणजाण देश रा अद्ध शिक्षित अग्रेज परस्ता रै गळै राजस्थानी कविया र योगदान री बात नी उतरी तो कोई अचू भा री बात कोनी । पण इण मामल मे अेक ओरू प्रमुख कारण ओ रह्यो के राज भाषा रै रूप मे हिंदी

न राजस्थान रै माथै थोपण री प्रवृत्ति ठेट सू रही। इणसू आपणी समृद्ध मायडभापा री घणी उपेक्षा अर अवहेलना हुई। देश रा नीति-निर्धारक आपरै पगा बळती नै नी देख सक्या। इण भात दूरगामी परिणामा री अनदेखी करण सू इण प्रदेश रो घणो अहित हुयो अर होय रह्यो है।

म्हारै मित्र नर्सिहजी राजपुरोहित मायड भापा री इण पीड नै महसूस करी। राजस्थान री विशिष्ट सास्कृतिक परपरा अर मायड-भापा मे रचित अनमोल राष्ट्रीय काव्य री अवहेलना वानै घणी खटकी। इण कारण उणा इण समृद्ध साहित्यिक सपदा नै साहित्य जगत रै सामी लावण रो बीडो उठायो। गहन अध्ययन अर खोज रै आधार माथै शोध प्रबध र रूप मे वारो ओ प्रयास सागोपाग अर सरावणजोग है। म्हारो विनम्र राय मे विद्वान लेखक शूरवीर भावना रा प्रेरक कविया रै इण सकल्प नै के 'पराधीनता अर अप-मानपूर्ण जीवण करता वीरता सू मौत रो वरण करणो चोखो' विदेशी शासन काल रै साहित्यिक इतिहास रा प्रसग रो विवेचन करनै राष्ट्रीय गौरव री लूठी सेवा करी है।

स्वाधीनता सग्राम रै साहित्य मे अेक कानी शकरदान सामोर अर गणेशीलाल व्यास 'उस्ताद' जिसा जनकविया जनचेतना रो शख पूरियो तो दूजी कानी वाकीदास आसिया अर सूरजमल मीसण जिसा क्षीपस्थ अर चावा कविया स्वाधीनता खातर बलिदान रो आह्वान कियो। इणी'ज भात तीजीकानी स्वाधीनता आदोलन मे प्रवक्त जयनारायण व्यास, हीरालाल शास्त्री, काळा बादळ, बर्मा, अर पथिक इत्याद स्वतत्रता सेनानिया साधारण काव्य रचना रै माध्यम सू जन चेतना पैदा करण री कोशिश करी। कुल मिळाय न सगळा रो ओ अनूठो प्रयास आपणी अेक अमोलक साहित्यिक थाती है।

ओ सगळो साहित्य नृसिहजी घणी मैणत अर लगन सू शोध प्रवध रै रूप मे भेळो तो कर लियो पण इणन जिज्ञासु पाठका अर आम आदमी री जाणकारी सारू प्रकाश मे लावण री पूरी जरूरत ही। ओ सजोग काग्रेस शताब्दी समारोह रै माध्यम सू बठो। राजस्थान काग्रेस शताब्दी समारोह रा अध्यक्ष, स्वतत्रता सेनानी श्री मथुरादासजी माथुर रै कुशळ निर्देशन मे उण वखत राजधानी

जयपुर मे अेक विशाळ मडप त्यार करीज्यो, जिणमें सगळा ज्ञात-अज्ञात स्वतन्त्रता सेनानिया अर कवि साहित्यकारा रो परिचय दिरीज्यो। इणी'ज सिलसिले मे उण वखत अक इसै ग्र थ र प्रकाशन री योजना ई बणी जिणमे भारतीय स्वतत्रता सग्राम मे राजस्थान र साहित्यिक योगदान री चर्चा होव। प्रदशनो मडप रो निदेशक होवण र नातै माथुर सा'ब इण काम री जिम्मेवारी म्हन सू पी अर इण भात इण अमालक प्रयास रै प्रकाशन री व्यवस्था सभव हुई। राजस्थानी भाषा साहित्य अर सस्कृति अकादमी बीकानेर डॉ नर्सिहजी राजपुरोहित री घणी आभारी है के उणा आपर शोध प्रबध रो राजस्थानी अनुवाद घणी मैणत साग त्यार कियो। इणरै सागै अकादमी, स्वतत्रता सेनानी मथुरादासजी माथुर अर प्रदशनी समिति री ई घणी आभारी है के जिणा प्रकाशन व्यय नप लब्ध कराय न ज्ञात-अज्ञात देश भक्त साहित्यकारा र योगदान न प्रकाश मे लावण री सहयोग दियो।

मरदा मरणो हक्क है, ऊबरसी गल्लाह।
सापुरुषा रा जीवणा, थोडा ही भल्लाह॥

(महात्मा ईशरदास)

देश हेत माथा दिया, जग माथा झुक जाय।
कर अमर कीरत कवि, गीता गल्ला गाय॥

कैलाशदान उज्वल
अध्यक्ष
राजस्थानी भाषा साहित्य एवम् सस्कृति अकादमी

शिवनिकेतन
वीर देवपालसिंह देवल मार्ग
जोधपुर (राज)

आत्म निवेदन

भारतीय स्वतन्त्रता सग्राम मे राजस्थानी भाषा रै-कविया र योगदान री विषय आज दिन ताई अचर्चित अर उपेक्षित सो रह्यौ। जन साधारण नै छोड'र साहित्यिक जगत नै ई इण वात री जाण कम रही के स्वतन्त्रता सग्राम मे राजस्थानी कविया री काई अर कित्तीक योगदान रह्यो। इण कारण स्वतन्त्रता सग्राम रै इण विस्मृत पृष्ठ नै प्रकाश मे लावण री काम शोध रै हिसाबू सू म्हन महताऊ लाग्यो।

पण ओ काम पार घालणौ म्हारै वास्त कितरौ अबखौ सावित होमी, इणरी जाण म्हनै काम सरु किया पछ ई हुई। विषय री विस्तार इतरो व्यापक अर सामग्री इतरी बिखरयोडी ही के सरुपात रा की बरस तो म्हन उणनै भेळी करण मे ई लागग्या। विषय सू सबधित साहित्य प्रकाशित कम अर हस्तलिखित नै लोगा री जबान माथ वेसी हो। इण कारण काम न पूरी करता, वखत कीं वेसी लागग्यौ।

विषय री सीमारेखा निर्धारित करता भारतवासिया कानी सू ब्रिटिश सत्ता रै खिलाफ कियोडै सग्राम न ई स्वतन्त्रता सग्राम री सज्ञा दिरीजी है। कारण के इणसू प'ली जिको बारली शक्तिया आक्रमक रै रूप मे भारत मे आई, वे अठै ई बस न भारतीय बणगी। भारत री सस्कृति नै उणा आत्मसात करली। पण ब्रिटिश शक्ति सदिया ताई भारत मे रह्या पछ ई अेक विदेशी शक्ति बणनै रही। इणरो भारत सागै सबध फगत शोषण अर साम्राज्य लिप्सा ताई'ज सीमित रह्यो। अठै सू जावण री वखत आयो तो उणन डेरा डाडा उठाय नै जावण मे ई जेज नी लागी अर जावता-जावता वु चाला करण मे ई कोई सकोच महसूस नी हुयो। ब्रिटिश सत्ता रै विरोध रा भारत मे अे इज मूळ कारण रह्या।

प्रस्तुत विषय इतिहास रै सागै इण भात गू थीज्योडो है के इण न मावता थकाई न्यारो नी कियो जाय सकै। कारण के विषय री

सगळी पष्ठभूमि इतिहास माथै ई आधारित है। इण वास्त विषय नै इतिहास सू न्यारो करणो सभव ई कोनी।

स्वतत्रता सग्राम मे कविया रो योगदान खास कर न काव्य रचना र रूप मे रह्यो। पण उण काव्य रै मूळ मे तत्कालीन राजनैतिक घटनाचक्र प्रधान रह्यो, जिणसू प्रेरणा लेय'र कविया री लेखणी गतिशील हुई। इसी हालत मे जठा ताई उण अैतिहासिक अर राजनैतिक घटनावा रो उल्लेख कर न वार सदभ सू काव्य न नी जोडीजै, उठा ताई उणरो महत्व नी आकीजै। किण वखत, किण कवि, किण घटना सू प्रभावित होय'र किण भात रै काव्य री रचना करी, इण वात न आछी तरिया समभण वास्त उण वखत री अैतिहासिक अर राजनैनिक स्थिति नै जाणणी-समभणी घणी जरूरी।

ओ इज कारण है के इतिहास रो वणन म्हारो मूळ उद्देश्य नी होवता थका ई म्हनै विषय रै प्रतिपादन सारू कई ठौड मजबूरन उणरै विस्तार मे उतरणो पड्यो। दाखलासरूप भरतपुर रै घेरै माथ रचित काव्य रो महत्व आकण सारू घेर सू सबधित अैति-हासिक घटना चक्र रो वणन विस्तार सू करणो जरूरी होयग्यो। इणी'ज भात कमोवेश रूप मे आ स्थिति की दूजा प्रसगा मे ई रही। पण इण भात रा सगळा प्रयास विषय र पूण प्रतिपादन सारू ई करीज्या है।

राजस्थान र काव्य जगत मे ठेट सू चारणी-साहित्य री अेक रूठी परपरा रही है। उगणीसवी सदी रै अत ताई प्रदेश मे इण साहित्य रा वारा वरतारा रह्या। ओ ई कारण है के बीसवी सदी रै प्रारभ ताई री स्वतत्रता सग्राम सबधी घणकरो काव्य चारण कविया री शली मे रचित है। इण साहित्य री आपरी न्यारी परपरा अर न्यारी ओळखाण है।

इणन समभण सारू तत्कालीन परिस्थितिया रो ज्ञान अर समभ दोनू बाता जरूरी है। इणरै बिना इण काव्य री मूळ आतमा सू ओळखाण नी होय सक।

इण प्रसग मे आ बात समभणजोग कै उण वखत ताई छाप री कळ ससार मे नी वापरी ही। कविता मूळ रूप सू बोलवा अर सुणवा री चीज ही। जे उणन हाथा सू लिख'र आखरा मे माडता

तो ई वा काना रै माध्यम सू आग्या सू वाचीजती । उगान पीढी दर पीढी रन नै याद राखता अर इण भात उणरौ सरूप कायम रैवतो । डिंगल काव्य ध्वनि प्रधान होवण रौ मूळ कारण ओ ई है ।

वीररस री प्रधानता इण काव्य री दूजो विशेषता है । ओ काव्य फगत वाग्विलास रौ साधन नी होय'र सदिया ताई मानखै नै प्रेरणा देवण रौ अजस्त्र स्रोत रह्यौ । इण अलेखू वीरा नै युद्ध भूमि मे जू झण री प्रेरणा दीनी । मरण नै मगळ वणाय'र उणरी आकृति मे रग भरयो । इणर कारण ई राजस्थान री धरती वीर-प्रसू गिणीज अर ससार मे चावी हुई ।

इण काव्य रै रचयिता कविया री कथणी अर करणी मे कदैई फरक नी रह्यौ । वारै काम अर वचन मे पूरौ ताळमेळ रह्यौ । वीर-रसात्मक काव्य रौ निर्माण करती वखत वारै अेक हाथ मे कलम रही तो दूजै हाथ मे तलवार । आ परपरा आग ई ठेट ताई कायम रही । 1857 रै स्वतन्त्रता सग्राम मे महाकवि सूयमल मीमण अर शकरदान सामोर रौ सक्रिय सहयोग नै भारतीय क्रातिकारी आदो-लन मे केसरीसिह बारठ अर वार परिवार रौ बळिदान इण वात रा ज्वळ त प्रमाण है । मायडभोम री रक्षा खातर आपरै पुत्र रौ बळि-दान देवण रा अनेक दाखला इतिहास मे मिळ सक पण आपर जमाई र बळिदान रौ दाखलो मिळणौ असभव है । महान देश-भगत केसरीसिह बारठ आपर अेकाअेक पुत्र प्रताप रै माग आपरै जमाई ईश्वरदान आमिया रौ ई राष्ट्रहित मे बळिदान कर दियौ ।

सामती व्यवस्था सू घनिष्ट सबधित होवता थकाई इण परपरा रै कविया आपर फरज अर मरजादा री पालणा पूरी ईमानदारी साग करी । उणा अेक कानी स्वतत्रता सग्राम मे जू झणिया साधा-रण सू साधारण आदमी री कीरत ई मुक्त कठ सू बखाणी तो दूजी कानी विदेशी सत्ता रा गुलाम बण्योडा राजा महाराजावा नै ई फट-कारण मे कोई कसर नी राखी । 1857 रै स्वतन्त्रता सग्राम मे अग्रेजा री मदद करणिया तत्कालीन बीकानेर नरेश सरदारसिह न—'सरदारा तोनै सदा कहसी जगत कपूत ।' कैय'र फटकारणिया स्वतन्त्रता सेनानी शकरदान सामोर सू लगाय'र ठेट जनकवि गणेशीलाल 'उस्ताद' ताई आ परपरा अटूट रही ।

काव्य मे अतिशयोक्ति उणरो अेक निजू चारित्रिक गुण है ।

इणरै प्रयोग सू कथ्य नै समझण मे मदद मिळै तो दूजी कानी इणरी शोभा मे ई वद्धि होवै। पण मूळ मे यथाथ काव्य रो प्रधान तत्व है अर अतिश्योक्ति गौण। जे अतिशयोक्ति यथाथ री अनुगामिनी बण'र चाल तो उणरी सहज सुभाविक अभिव्यजना यथाथ मे निखार पैदा कर सकै पण जठै अतिश्योक्ति प्रधान बण'र यथाथ नै गौण बणा देव उठै काव्य वास्तविकता सू दूर जाय पडै। पछ वो मानव मन न प्रभावित नी कर सक।

डिगल काव्य मे अतिश्योक्ति री बहुलता अेक काव्यगत विशेषता गिणीज। साधारण घटना न बढाय चढाय'र वर्णित करणी अर काव्य रा नायक न सब गुण सपन्न श्रेष्ठ व्यक्ति र रूप मे चित्रित करणो अेक परपरागत विधान है। इणसू सगळो काव्य अक ई साच ढळयोडो सो लखाव।

पण स्वतत्रता सग्राम सू सबधित काव्य मे कई कवितावा इण परपरागत रूढि विधान सू टळ न ई लिखीजी है। इसी कवितावा मे जीवण शक्ति सुभट लखावै। इसो काव्य अनुभूतिया नै जागत करण मे सक्षम है।

बीसवी सदी रै दूजोडै दशक ताई पूगता पूगता स्वतत्रता सग्राम सबधी राजस्थानी काव्य मे अेक नु वो मोड आवै। अठा ताई पूग'र राजस्थानी साहित्य आपरो सरूप बदळणो सरु करै अर काव्य रचना मे डिगल री ठौड बोलचाल री सरल राजस्थानी रो प्रयोग होवणो सरु होय जावै। इणरै साग तेवडी गुलामी में जीवतो रियासती जनता माथ जद राष्ट्रीय स्तर माथै चालतै ब्रिटिश विरोधी आदोलन रो असर पडण लाग तो उणमे ई राजनतिक चेतना आवण लागै। हरेक रियासत मे प्रजा रा राजनतिक सगठण पगा होय जावै अर आपर वाजब हका वास्त आदोलन करण लाग।

इण राजनतिक जन जागरण सू प्रभावित होय नै जिण काव्य रो निर्माण हुयो, वो इण युग री नवचेतना रो प्रतीक है। इण *काव्य मे वर्णित सामतशाही अर राजशाही व्यवस्था रो विरोध* परपूठो रूप सू विदेशी सत्ता रो विरोध हे। कारण कै इण मूळ आधार माथै इज आ सगळी व्यवस्था आधारित ही।

इण काव्यधारा मे जिको काव्य मिळै, उणन दो भागा मे बाट सका। परपरागत शैली मे रचित चारणी काव्य अर जन आदोलन रै

सिलसिले मे रचित साधारण काव्य । चारणी परपरा मे रचित काव्य रौ सुर उद्‌बोधनात्मक है । वे राजा महाराजावा न वारै बडेरा री वीरता, आत्मसम्मान अर प्रजावत्सलता इत्याद देव दुलभ गुणा री याद दिराय'र वान पाछा ठायै माथै लावणो चाव । काव्य वाणा री तीखी मार सू जगाय न वा मे राष्ट्रीय भावना भरणी चावै । इसौ काव्य परपरागत शैली मे रचित होवता थका ई सरल राजस्थानी मे रचित होवण सू कला अर भाव पक्ष दोनू दीठ सू श्रेष्ठ है ।

पण उण वखत रै जन आदोलन मे भाग लेवणिया कायकर्तावा र हाथ सू रचित काव्य दूजी तरै री है । अे लोग नी तो कवि हा अर नी काव्य रचना करणी यार वश री बात ही । छतापण काव्य जनजागृति रौ अेक सबळ माध्यम है । भाषणबाजी करता काव्य रै वाचन-गायन रौ श्रोतावा माथ घणो असर पडै । वो जनता रै सीधी हिवड मे उतर न तुरत जबान माथै चढ जाव । इण कारण राजनतिक कायकर्ता कवि नी होवता थका ई इणा काव्य रचना री कोशिश करी । अक तरै सू आपरै मनोभावा री अभिव्यक्ति काव्य रै माध्यम सू प्रगट करण री मैणत करी । इण वास्तै यारी कई रचनावा तो मात्र तुकवदी होय न रैयगी ।

ओ स की होवता थका ई इण काव्य री प्रमुख विशेषता आ है के आ जनता र मन री स्वयस्फूत भावाभिव्यक्ति है । भुगत्योडै अनुभवा रौ चित्रण है । इण कारण इण काव्य मे कला पक्ष कम अर भाव पक्ष बेसी है ।

ओ सगळौ काव्य इतरौ बिखरयोडो अर अव्यवस्थित है के घण-करो तो हाल आखरा मे ई कोनी उतरयो, फगत लोगा री जबान माथ इज है । इणमे सू थोडो-घणो तत्कालीन पत्र पत्रिकावा मे प्रकाशित हुयो है के कोई अेकड बेकड सकलना मे प्रकाशित हुयो है । बाकी सगळो अधार मे पडयो है । पुराणी पीढो रा लोग ज्यू-ज्यू ससार सू विदा होवता जाय रह्या है, त्यू त्यू ओ काव्य ई वार सागै लुप्त होवतो जाय रह्यो है ।

शोध प्रवध री प्रस्तुत सामग्री मे की लोकगीत ई सकलित करी-ज्या है । भरतपुर, आऊवा, टू गजी-जवारजी अर बिजोलिया आदो-

शन मे म्है शोध रौ ग्रो काम पूरौ कर सक्यौ। ग्रो ग्रापर उचित मारग-दरसण ग्रर प्रेरणा रौ प्रतिफळ है के ग्रो काम पूण होयग्यौ।

म्हैं राजस्थानी शोध सस्थान, चोपासनी, जोधपुर र निदेशक डॉ नारायणसिंह भाटी रौ ई घणौ ग्राभारी हू के जिणारै कारण म्हन काम री महताऊ सामग्री शोध सस्थान सू बराबर मिळती रही। इणर बिना ग्रो काम पूरौ होवणौ सभव ई नी हो।

सवश्री नाहरसिंह (ग्राउवा ठाकर), फतेहसिंह मानव (से नि उपसचिव, राजस्थान सरकार) रॅवतसिंह भाटी (से नि लेफ्टिनेंट) ग्रर डॉ मनोहर शर्मा रै प्रति ग्राभार प्रगट करणौ ई म्है म्हारौ फरज समझू, जिणा जरूरी सामग्री भेज र म्हन इण काम मे सहयोग दियौ।

म्हैं स्व डॉ नाथूराम खडगावत र प्रति घणौ कृतज्ञ हू के जिणारी पुस्तक (The role of Rajasthan in the struggle of 1857) म्हारै इण काम मे घणी सहायक रही।

म्हैं म्हारै मित्र डॉ शक्तिदान कविया (असोसियेट प्रोफेसर, हिदी विभाग, जोधपुर विश्वविद्यालय), म्हार दोनू पुत्रा डॉ कन्हैयालाल राजपुरोहित (असोसियेट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग जोधपुर विश्वविद्यालय) ग्रर राजेन्द्र राजपुरोहित (सह निदशक, जाच, ग्रायकर विभाग, भारत सरकार) न ई इण बाबत नी भूल सकू के जिणा बार-बार याद दिराय न इण काम नै वेगौ पूरौ करण री निरतर ताकीद करी।

ग्रत मे ग्रतस सू ग्राभार प्रगट करू स्वतत्रता सेनानी श्री मथुरादास माथुर (ग्रध्यक्ष, राजस्थान काग्रेस शताब्दी समारोह समिति) ग्रर श्री कलाशदान उज्ज्वल (ग्रध्यक्ष राजस्थानी भाषा-साहित्य ग्रर सस्कृति ग्रकादमी) र प्रति के जिणा री महती कृपा सू ई म्हारी ग्रा कृति राजस्थानी भाषा मे पाठका र हाथा ताई पूग री है।

पुरोहित कुटीर
खाडप, जि बाडमेर
(राजस्थान)

नृसिंह राजपुरोहित

पैंलौ अ्रध्याय

1857 री क्रांति सू पंलो रचित काव्य

भारतीय शक्ति री प्रथम विजय

भारत मे अंग्रेजी सत्ता अेक नैहैमीक ग्रावळ रै रूप मे प्रगट हुई अर होळै होळै काळी कळायण री रूप धारण करनै सगळै भारतीय आकाश मे छायगी। पूरब सूं प्रस्थान करनै पच्छिम कानी उमडती इण तूफानी घटा न राजपूतानै ताई पूगता पूगता मारग मे कठैई अवखाई नी आई। पण इण धरती माथै पूग्या उणन प्रतिरोध रा दो प्रबळ झटका झेलणा पडया।

बळ री ठोड छळ माथ बेसी विश्वास करणग्राळी ब्रिटिश सत्ता बंगाल सूं राजपूतान ताई री मारग निष्कटक पार करन आ धारणा बणाय लीवी ही के इण मुलक नै हरायन इण माथै कब्जौ करणौ डावै हाथ री खेल है। पण राजपूतान री धरती माथ पग मेलता ई उणरी आ धारणा खडत होयगी।

अठ आय'र उणन दो वार हार खावणी पडी जिणसूं उणरी लारली सगळी सफळतावां माथै पाणी फिरग्यौ। इण हार री घटनावां कंपनी सरकार री जडा हिलाय नाखी। वा महसूस करण लागी कै जे इण हार रो तुरत प्रतिकार नी करीज्यौ तौ भारत रै सगळै देसी रजवाडा रौ हौसलौ बढ जासी अर इण देस माथै अंग्रजी राज रा सुपना अधूरा ई रय जासी।

इण कारण उण साम, दाम, दंड, भेद इत्याद सगळा दंद-फंद काम म लिया। पण अठै उणरी सगळी चाला ऊंधी पडी। मोकळी कोशिश किया उपरान्त ई दाळडी थाल नी पडी अर सगळी मैंणत अकारथ गई।

'राजपूतानै मे अंग्रेजा न पै'लडी हार चंबल नदी रै काठै मराठा सामंत जसवंतराव होल्कर रै हाथा सूं खावणी पडी अर दूजी हार भरतपुर रै घेरे मे रणजीतसिंह र आगै जनरल लेक न खावणी पडी। इणसूं पैली अंग्रजा न इसी हारा रौ कदई सामनौ नी

करणो पड्यो हो। इणसू ब्रिटिश सत्ता री प्रतिष्ठा मे वट्टो लाग्यो।'[1]

'इणरै पछै भरतपुर रो अणखोलो दुग बरोबर बीस वरसा ताई गुमेज सू छाती ताणन मुलक री प्रतिष्ठा रो प्रतीक बण'र अग्रेजा रै हार री घोषणा करतो अडिग ऊभो रह्यो।'[2]

चवल रै काठै हुई हार अर भरतपुर र घेरै सू भारतीय जनमानस माथै घणो असर पड्यो। अग्रेजा रै खिलाफ व्याप्त असतोष न इण घटनावा सू तुष्टि मिळी। कविसरा रा भावुक मन इण घटनावा सू घणा प्रभावित हुया। उणा इण प्रसगा माथ ओपती अर सबळ काव्य रचना करी। खास करन भरतपुर घेर न लेय'र अनक् उल्लेख जोग डिंगल गीता री रचना हुई। कविराजा बाकीदास जिसा सामरथ अर मानीता कविसरा ई इण प्रसग न लेय'र कई सातरा डिंगल गीत लिख्या। भरतपुर रै घेर वाळी घटना री जन साधारण माथ इतरो जबरो असर पड्यो के इण माथ कई लोक गीता रो ई निर्माण हुयो। भरतपुर री जीत भारतीय वीरता री अेक प्रतीक वणगी। जनमानस जीत रै हरख मे मस्त होयर गावण लाग्यो—

(लोकगीत)[3]

आछो गोरा हटजा !

राज भरतपुर को रे गोरा हटजा !

---

1 It was in Rajasthan that the British troops during their onward march receive two great set backs—the first the disastor to Monson s Column near chambal with the loss of his artillery and baggage the second Lake's failure to take Bharatpur by storm Both of the reason of the blow they inflicted on the British prestige, were extremly serious events
—Rajasthan's role in 1857 By N R Khadgawat, Page No 2

2 Go Bully Bhuratpore an article in Blackwood magazine, 1938

3 होळी र मौक गवीजण आळो चावो लोकगीत।

भरतपुर गढ बको, किलो रे बको
गोरा हटजा !
थू मत जाणं गोरा लडं बेटो जाट को,
ओ तो कुंवर लड रे राजा दशरथ को
गोरा हटजा !
भरतपुर गढ बको, किलो रे बको
गोरा हटजा !
गढ रे ऊभा रे म्हारा बावन भैरू
कागरा ऊभी रे चोसठ जोगणिया
गोरा हटजा !
भरतपुर गढ बको, किलो रे बको
गोरा हटजा !
काई तो करैला थारा बावन भरू
काई तो करलो चोसठ जोगणिया
गोरा हटजा !
भरतपुर गढ बको, किलो रे बको
गोरा हटजा !
चक्कर चलावै म्हारा बावन भैरू
खप्पर भरली चोसठ जोगणिया
गोरा हटजा !
भरतपुर गढ बको रे किलो रे बको
गोरा हटजा !

कोई घटना विशेष माथै लोकगीता रो निर्माण तद ई होवै जद लोक मानस उण घटना सू घणू तो प्रभावित होवै । भरतपुर वाळै घेरै सू जन मानस कितरो प्रभावित हुयो उणरी पुष्टि इण वात सू होव के दो सईका वीतया पछै ई इण गीत री गुमारी जन साधारण र मन मस्तिष्क सू हाल उतरी नी है । आज ई होळी री रगीली परव आवै मे अे लोकगीत चग र घम्मीडा साग जन कठा मे गूजण लाग । इण प्रसग न लेय'र व्रज भाषा मे ई कई लोकगीत प्रचलित है—'अेक तरफ ऊ गोरा देखो, लड जाट के दो छोरा ।' इसा कई लोकगीत भरतपुर क्षेत्र मे घणा लोकप्रिय होवण सू जन जन री जबान माथ है ।

इण बाबत मन मे कई सवाल पदा होवणा मुनासिब है ज्यू के

इण जीत रौ भारतीय जन मानस माथै इतरौ ऊंडौ असर क्यू पड्यौ ? भारतीय सेना री उल्लेख जोग जीत अर विदेसी सत्ता री करारी हार सू जन साधारण रौ मन मस्तिष्क इतरौ आलाडित क्यू हुयौ ? जन जीवण सू इण घटना रौ काई सबध हो ? विदेसी सत्ता र प्रति लोगा रै मन मे इतरौ आक्रोश क्यू हो ?

इण सगळै सवाला रौ सही पडूत्तर जाणण वास्त आपानै तत्कालीन राजनैतिक अर सामाजिक परिस्थितिया नै थोडै विस्तार सू समझणी पडसी । वानै समझ्या बिना नी तो जन साधारण मे व्याप्त आक्रोश समझ मे आय सकै अर नी उण वखत री राजनैतिक घटनावा माथ रचित काव्य री पीड न समझी जाय सक । इणर बिना इण काव्य रौ महत्त्व ई नी आकीज सक ।

विदेसी सत्ता री रीति नीति, देसी रजवाडा री गतिविधि अर जन साधारण री हालत जाण्या बिना उण माथै रचित काव्य रौ परिवेश समझ मे नी आय सक । इतिहास रौ लेखन म्हारौ मूळ विषय कोनी अर नी इण बाबत विस्तार सू जाणकारी देवणी ई अभिप्ट है, पण प्रस्तावित विषय राजनीति अर इतिहास सू इतरौ जुडयौ थको है के अेक सू दूज न न्यारौ करणो असभव नी तो अबखौ काम जरूर है । अेक रै बिना दूज री जाणकारी अधूरी रैय जाव ।

इण वास्त पैली चबळ र काठ लडीज्यै युद्ध अर भरतपुर रै घेर रो अैतिहासिक पष्ठ भूमि जाण लेवणी श्रेयस्कर रहसी । इणसू घटनावा र प्रभाव सू पदा हुया अनुभवा न समझण मे सरलता रहसी ।

चबळ काठै लडीज्यौ युद्ध अर भरतपुर रौ घेरौ अेक इज शृ खला री दो कडिया है । दोनू घटनावा मराठा शासक जसवतराव होल्कर सू ताल्लुक राख । चबळ काठ मेह री झडिया मे अग्रेज जनरल मानसन री अगुवाई मे नाठती विदेसी सेना न घेर न होल्कर इण कदर मारी कै कपनी सरकार री आरया उघडगी ।

28 जुलाई 1804 रै दिन जनरल लेक न, गवनर जनरल अेक 'गुप्त कागद' इण हार र बाबत इण भात लिख्यौ हो—

'आ स्थिति घणी विकट अर चिताजनक ह । अब बिना लूठौ प्रयत्न किया पाछी आपणी इज्जत कोई हालत मे कायम नी रय

सकै। आपणी जितरी नुकसाण हुयो है, उणनें पूरो करणो अब घणो दोरो है। म्हनें इण वात रो घणो दुख अर डर है।'[1]

उगणीसमी सदी रै सरुआत मे कपनी सरकार भारत रा देसी रजवाडा न किणी भात हराय न वारै माथै कब्जो करण री फिराक मे ही। भारत मे मुगल राज रो पतन हुया पछ मराठा शक्ति रो उदय होयग्यो हो। या मे सिंधिया, गायकवाड (भोसले) अर होल्कर तीन प्रमुख राज घराणा हा। अग्रेजी राज रो थरपणा वास्तै इण तीनू राज घराणा रो पतन जरूरी हो। अग्रेजा नै आपरै छळ बळ अर दद-फद सू सन् 1800 ताई पूगता पूगता सिंधिया अर भोसले रै मामल मे तो खासी सफळता मिळगी ही। अे दोनू राज घराणा अग्रेजा रै खासा वशीभूत होयग्या हा। विदेमी मदद र बिना वे कोई कार रा नी हा। इणी'ज भात अग्रेजी सत्ता उण वखत ताई दखिण रा अेक प्रमुख भारतीय शासक टीपू सुल्तान न ई हराय चुकी ही।

मध्य भारत मे अबै वारै सामी फगत जसवतराव होल्कर अेक इसौ शासक हो जिको हाल वारै फदै मे फस'र कब्जै मे नी आयो हो। होल्कर अेक विवेकशील अर दूरदरसी शासक हो इण कारण उण माथै अग्रेजा री चालबाजिया रो कोई असर नी पड्यो। मराठा मडळ मे अबै फगत वो इज अेक इसो शासक हो जिको विदेसी सत्ता रै सामी छाती ठोर न ऊभो हो। इण कारण वो वारी आख्या मे काकरै री दाईं खटकै हो।

भारतीय रजवाडा अेक अेक करन अग्रेजा रै वश मे इण कारण होयग्या के वारै आपसरी मे फूट ही। अग्रेजा इण फूट फजीतो रो पूरो फायदो उठायो। उणा बिचाळै लाडा री भूआ बणन अेक रो

---

1 This is a most painful state of affairs Nothing can retrieve our character but the most vigorous effort I fear that all our exertions will now be too late to recover all we have lost

—Marques Wellesley s 'Private letter' to General Lake dated 17 August 1804

—'भारत मे अग्रेजो राज प्रथम खड, ले सुदरलाल पृष्ठ स 480

मदद करी अर दूजै न हरायो । इण भात झोळं होळं सगळा नै ई ढोलीघोडा बणाय नाख्या ।

उण वखत कोई पण ताकतवर शासक न युद्ध मे हरावण सारु अग्रेजा अेक जुगत सू काम लियो। आ जुगत इणा नै जबरी फाचरै आई । इण जुगत मुजब वे आगलै रै सनिका, अधिकारिया अर मददगारा नै धन अर धरती रो लोभ देय नै आपर कानी मिळाय लेवता । इण काम मे वानै मोकळी वार जबरी सफळता मिळी । इण कारण प्राय आ बात कही जावै के अग्रेजा भारत न सीसै री गोळिया सू नी जीत'र सोनै री गोळिया सू जीत्यो । भारत जिसा मुलक मे जयचदा री कदई कमी नी रही । लालच रै वशीभूत होयन निकृष्ट प्राणी कोई पण काम करण न त्यार होय जाव । भरतपुर र घेर वाळ प्रसग मे आ बात आछी तरिया सिद्ध होय जासी क लोभ मे आय'र मिनख काई काई कबाडा नी कर लेव । भरतपुर वाळो युद्ध इण बात री अेक आछी मिसाल है ।

ऊपर लिख्य मुजब अग्रेज मराठा शक्ति री नाश करण वास्तै सिंधिया अर गायकवाड न तो आपरै कब्जे कर ई लिया हा, इण वास्तै वा आपरी तोपा रा मू डा जसवतराव होल्कर कानी मोड दिया । 16 अप्रेल 1804 न मार्क्विस वेल्सली जनरल लेक न अेक 'गुप्त कागद' मे लिख्यो—

' म्हैं आ बात पक्की तेवडली है के जसवंतराव होल्कर रै साग युद्ध जितरो बेगो होय सक सरू कर दियो जावै । इण काम मे अवै ढील करणी उचित कोनी ।'[1]

उणी'ज दिन मार्क्विस वेल्सली जनरल वेल्सली न लिख्यो के दक्खिण कानी सू होल्कर रै चदौर इलाकै माथै हमलो कर दियो जाव । इणी'ज भात अेक कागद सिंधिया दरबार र रेजिडेंट न लिखीज्यो के वो सिंधिया न कय'र उणरी फौज होल्कर माथ हमलो करण वास्तै भेजै ।

'जनरल लेक न इण बात रो पूरो भरोसो हो के जिण आसानी सू वो सिंधिया न हराय सक्यो, उणी'ज भात वो होल्कर न ई

---

1 *भारत म अग्रेजी राज प्रथम खड, ले सु दरलाल, पृ स 469*

कब्जै कर लेसी। जनरल लेक री धारणा रा दो प्रमुख आधार हा। अेक तो आपरै दद-फद सू होल्कर र सैनिका नै आपरी कानी मिळावण री उम्मीद अर दूजो दक्खिण कानी सू जनरल वेल्सली रौ हमलौ। पण सजोग सू इण दोनू वाता मे लेक नै धोखौ रह्यो।

जसवतराव विश्वासघात रै मामलै मे पै'ली सू ई सावचेत हो। उण आपरा तीन विश्वासघाती यूरोपियन अफसरा न पै'लीज मरवाय नारया। इणसू सगळी सेना सावचेत होयगी।'[1]

सिधिया रै दरबार मे अग्रेजा रा मोकळा आदमी मौजूद हा, इण कारण वो होल्कर माथै हमलौ करण रै मामलै मे ना देवण री स्थिति मे नी हो। इणसू कई प्रमुख सामता रै विद्रोह करण री आशका ही।

जनरल वेल्सली खुद इण प्रसग मे 26 फरवरी 1804 नै गवनर जनरल नै इण भात अेक कागद लिख्यौ—

' सिधिया रै दरबार माथै तो आपणौ इतरौ जोरदार कब्जौ है के जे सिधिया आपणी आज्ञा नी मान'र विद्रोह करै तो उणर दरबार रा आधा सरदार-सामत अर आधी फौज आपणी मदद मे आय जामी।'[2]

इण भात दक्खिण कानी सू जनरल वेल्सली, गुजरात कानी सू कनल मरे अर उत्तर कानी सू सिधिया री फौज होल्कर रै राज माथ हमलौ कर दियौ। पण सगळै मोरचा माथै होरकर री जीत रही। कपनी इण हार सू तिलमिलायगी अर इणरौ बदळौ लेवण ताई मानसन रै नेतृत्व मे अेक विशाळ सेना होल्कर रै राज माथै हमलौ करण सारू फेरू भेजी।

---

1 भारत में अग्रेजी राज प्रथम खड, ले सुदरलाल पृ स 470

2 ' We have got such hold in his Durbar *that if ever he goes to war with the Company one half* of his chiefs and half of his army will be on our side
— General Wellesley to Major Shawe (Private Secretary to the Governer General) Dated 26th Feb 1804
—भारत म अग्रेजी राज प्रथम खण्ड पृ स 471-472

1 जुलाई 1904 नैं जनरल मानसन ग्रापरी विशाळ सेना सागै मुक्दरा र पहाडी दर्रे मे होय'र होल्कर र इलाके मे वळियौ। पछै ग्रा फौज चबळ नदी कानी चाली। उठै ई मानसन न ग्रा खबर मिळी के जसवतराव ग्रापरी विशाल फौज साग उणरो स्वागत करण ताई सामी ग्राय रह्यो है। ग्रे समाचार सुण'र वो घबरीजग्यौ।

8 जुलाई न दोनू सेनावा ग्रामी सामी हुई। लेफ्टिनेंट ल्यूकन ग्रर बापूजी सिंधिया घुड सवारा सागै हरावळ मे हा। थोडीक देर रै घमसाण मे होल्कर रै सनिका अग्रेजो सेना री ग्रागली पात नै देखता देखता काट नाखी ग्रर ल्यूकन न कैद कर लियो। बापूजी सिंधिया ई बुरी तरिया घायल हुयग्यो। बारा सात सौ सवार खेत रह्या।

'ल्यूकन वो इज शख्स हो जिको इणरै ई पै'ली दौलतराव सिंधिया री नौकरी मे रह्यो ग्रर सिंधिया र साग विश्वासघात करन ग्रलीगढ रो मजबूत किलो अग्रेजा नै सूप दियो। होल्कर री कैद मे ग्राया पछ वो कोटा मे दस्ता री बिमारी सू मरग्यौ।'[1]

पै'लडी भिड त सू ई घबराय न मानसन ग्रागै बढण री विचार छोडन पाछौ लारै नाठण लाग्यो सो नव जुलाई ताई ठेट होल्कर राज री सरहद माथ जायन ठरियो। अग्रेजा री इण हार रो खास कारण ग्रो ई हो जनरल लेक रा 'गुप्त उपाव' ग्रठ काम नी ग्राया। नी तो प'लडै मोरच ई होल्कर न मात खावणी पडती।

जसवतराव मानसन र बरोबर लार लाग्योडो रह्यो ग्रर 17 जुलाई 1804 न चबळ रै काठ उणन घेर लियो। उण दिना जोर री बिरखा होय री ही। ग्राभो ग्रर धरती अेक हुयोडा ग्रर रात दिन सूपडा र मू डै पाणी पडै हो।

'चबळ उफणै ही। मानसन प'ली तो हाथिया री मदद सू ग्रापरो तोपखानो नदी पार भेज्यो। पछै लकडी र बेडै सू बाकी सेना न लिजावण री कोशिश करी। लारै होल्कर री सेना ग्राक्रमण करै ही सो इण नावा दौड मे मानसन रा सकडू सनिक काम ग्रायग्या। सैकडू बिमारी सू मरग्या, सैकडू नदी मे डूब'र ग्रर

1 भारत मे अग्रेजी राज, प्रथम खड ले सु दरलाल प स 477

सैंकड़ू बादै मे पळीज'र सुरग सिधायग्या। प्राट डफ लिखै के कई सैनिकां रा लुगाई टाबर लारै ई छूटग्या जिणां नैं आदिवासिया वाट नाख्या। बांरा धणी अर सेना रा दूजा अफसर नदी र सामलै काठ ऊभा बांरो कुरलावणो सुणता रह्या पण की मदद नी कर सक्या।'[1]

इण युद्ध में होल्कर नैं अंग्रेजी सेना रो मोकळो सामाना तोपा, अस्त्र शस्त्र अर गोळा बारूद हाथ आयो। चंबळ रै काठै री आ हार अंग्रेजां रै वास्तै भारतीय क्षेत्र मे पैंलडी करारी हार ही। इणसूं ब्रिटिश सत्ता री प्रतिष्ठा नैं जोरको धक्को लाग्यो।

मानसन री हार रै प्रमुख कारणां मे अेक कारण ओ ई हो के नाठती अंग्रेज सेना नैं मारग मे रसद वास्तै घणी पीडा भुगतणी पड़ी। मारग र इलाकै मे रैवती जनता र मन मे अंग्रेजी सत्ता रै प्रति रोप री भावना ही। इणरो मूळ कारण ओ हो के जिको इलाको कंपनी रै अधिकार मे आयग्यो, उठ उणां घणो अत्याचार कियो। इण कारण प्रजा मे घणो असतोप हो अर विदेशी सत्ता रै प्रति अगा ई सहानुभूति नी ही।

जसवतराव होल्कर र हाथां मानसन री करारी हार री ब्रिटिश मानस माथै काई असर पड्यो इणरी अेक झलक जनरल लेक कानी सूं गवनर जनरल रै नाम लिख्योड़ै 'अेक गुप्त कागद' रै इण अंश सूं मिळ जावै—

'इण शमनाक घटना रै बाबत इण वखत म्है काई नी कैवूं ला। कई कारणां सूं इण वखत म्हारो मन इतरो उदास है के इण दुघटना रै कारणां रो बयान ई नी कर सकूं। अंग्रेजी सेना इण सूं बेमी ओपती कंच कदई नी कियो होसी। जे लेफ्टिनेंट अडरसन रो बयान ठीक है तो म्हन ओ कैवता दुख है के म्हारी सेना री पाच पूरी पलटणां अर छ कंपनियां अगाई नष्ट हुयगी है। भगवान जाणं अबै आ कमी किया पूरी होसी ? म्हारी सेना रा स सूं आछा अफसर अर जवान काम आयग्या। बांरी मौत माथै म्हन घणो दुख है।'[2]

इणी'ज भात 11 सितंबर 1804 नै मार्क्विस वेलसली जनरल

---

1 भारत मे अंग्रेजी राज प्रथम खड ले सुदरलाल पृ स 479

2 भारत मे अंग्रेजी राज, प्रथम खड, ले सुदरलाल पृ स 481 82

लेक नै लिख्यो के—'म्हैं इण घटना रै राजनैतिक परिणामा न सोच'र कापण लाग जावू ।'[1]

जसवतराव होल्कर मानसन री ठेट आगरै ताई लारो नी छोड्यो । आगर सू ई उणनै भगाय दियो । इणरै पछै उण कपनी रै इलाक मथुरा माथै हमलो कर दियो । अठ अग्रेजा री मोकळी सेना तैनात ही पण वा होल्कर री सेना रो मुकाबलो नी कर सकी । मथुरा माथै होल्कर रो कब्जो होयग्यो । दिल्ली अठ सू ढूकडी'ज ही । जसवतराव जे उण वखत चावतो तो दिल्ली माथ हमलो करन अग्रेजा न उठै सू ई भगाय सक हो पण की कारणा सू वो मथुरा मे थोडा दिन ठरग्यो । अग्रेजा मोको देख'र उणरी अनुपस्थिति मे उणरै राज माथै हमला करणा सरु कर दिया अर मोकळै इलाकै माथै कब्जो कर लियो ।

इसी स्थिति मे जसवतराव न मजबूर होय न आपरै राज री रक्षा खातर पाछो दक्खिण कानी कूच करणो पड्यो । अग्रेजा होल्कर रो लारो करण सारु तीन मोटी सेनावा लगायदी । अेक कर्नल वन री अगुवाई मे, दूजी जनरल लेक री देख रेख मे, अर तीजी मेजर जनरल फ्रेजर रै आधीन । जसवतराव आपरी सेना साग भरतपुर कानी जावै हो । अे सगळी सेनावा डीग ताई होल्कर री लारो करती रही पण बारी हमलो करण री हिम्मत नी पडी । डीग रै ठेट कन पूग्या फ्रेजर री फौज होल्कर माथै हमलो कियो । इणमे फ्रेजर खुद काम आयग्यो अर दोनू कानी रा मोकळा सनिक खेत रह्या । होल्कर डीग रै किल मे शरण लेय ली ।

जनरल लेक ई सेना साग होल्कर रै लार लाग्योडो हो, उण 19 नवम्बर न अेक कागद गवर्नर जनरल न लिखता खुद री तारीफ करता लिख्यो —'म्हारी सेना रै कूच री फुर्ती देख'र सगळा हिंदुस्तानी इतरा अचू भा मे पडग्या है के उणरी कल्पना ई नी करी जाय सक ।'[2]

---

1 I tramble at the political consequences of that event
भारत मे अग्रेजी राज, प्रथम खड ले सुदरलाल पृ स 482

2 The rapidity of my march has astonished all the natives beyond imagination
—General Lake to Governer General 19th Nov 1804
भारत मे अग्रेजी राज, प्रथम खड ले सुदरलाल पृ स 490

पण इण कूच री सगळी फुर्नी अकारथ गई। डीग मे लेक न कोई सफळता नी मिळी अर भरतपुर मे तो ब्रिटिश प्रतिष्ठा माथै अगाई काळख पुतगी।

लेक री सेना लगोलग दस दिना ताई डीग रै किलै माथै तोप खानै सू हमलौ करती रही। 23 दिसबर न किल री भीत अेक कानी सू टूट्या पछ अग्रेजी सेना किलै मे पूगी तो किलौ खाली पड्यौ हो। जसवतराव तो आपरी सगळी सेना सागै आराम सू भरतपुर रै किल मे पूगग्यौ हो।

भरतपुर रै राजा रणजीतसिंह री अग्रेजा रै सागै सधि हुयौड़ी ही। इण कारण शायद वो होल्कर न शरण देयन अग्रेजा सू अकारण वर मोल नी लेवतौ पण अेक तात्कालिक घटना इसी हुई जिणसू रणजीतसिंह अग्रेजा रै खिलाफ होयग्यौ।

बात यू हुई के मार्क्विस वेलसली भरतपुर रै की प्रतिष्ठित नागरिका माथै औ आरोप लगायौ के वे लोग जसवतराव होल्कर सू सपक राखै अर उणरी गुप्त रूप सू मदद करै। इण वास्तै उण जनरल लेक न हुक्म दियौ के वो भरतपुर रा उण नागरिका नै पकड़'र अग्रेजी इलाके मे लेय आव अर मार नाखै। भरतपुर अेक स्वतत्र रियासत ही पण इण बाबत राजा सू कोई पूछताछ के इजाजत नी लिरीजी। इण भात अग्रेज अधिकारिया आपरी मन-मानी करन रणजीतसिंह न अग्रेजी सत्ता र खिलाफ कर दियौ।

रणजीतसिंह नै आ सगळी वारदात घणी खारी लागी। इण वास्तै होल्कर जद उणरी शरण मे पूगौ तो उणै हिम्मत करन उणन आपर दुग मे ठौड देय दी। यू ई होल्कर अेक बराबरी री भारतीय शासक हो अर मुसीबत री हालत में भरतपुर री शरण मे आयौ हो, इण वास्तै रणजीतसिंह आपरी नैतिक फर्ज समझ'र उणन शरण देय दी। घरै आया शरणागत अतिथि री रक्षा करणी उणरौ धरम हो।

इण बात माथै जनरल लेक भरतपुर न तहस-नहस करण वास्तै त्यार होयग्यौ। उणरै हिसाब सू भरतपुर नै जीतणौ उणरै डावै हाथ रौ मेल हो। इण कारण उणै 27 नवबर 1804 नै गवनर जनरल न अेक कागद मे लिख्यौ—

' म्हैं अबै राजा रणजीतसिंह र किल माथ तुरत हमलो करनै उणन आपण आधीन किया विना नी रैय सकू ।'[1]

डीग रै किले माथै कब्जो किया पछ लेक बी र कनलै इलाकै माथ ई आपरो अधिकार जमाय लियो हो । उण वखत फगत भरत पुर नगर अर किलो राजा रणजीतसिंह रै अधिकार मे हा । अग्रेजा रणजीतसिंह न धमकी दीवी के वो तुरत जसवतराव होल्कर न वार सुपुद करै नी तो भरतपुर रो किलो तोपा सू उडाय दियो जासी । समझदारी इणमे इज है के वो परायो वाद मोल नी लेवै ।

पण स्वाभिमान अर नैतिकता रै पाण रणजीतसिंह री आत्मा इण काम वास्तै हूकारो नी भरयो । उण अग्रेजा न चोखो पडूत्तर भेज दियो कै प'ली रणजीतसिंह रो माथो कट'र धड सू न्यारो होसी अर इणर पछै ई कोई जसवतराव रै हाथ लगाय सकसी । जठा ताई खोळिय मे साम है वो अेक शरणागत न शत्रु रै हवाल नी कर सक ।

इतरी वात तणीज्या पछै युद्ध रै सिवाय दूजो कोई उपाव नी हो । इण वास्त 29 दिसबर 1804 न डीग सू रवानै होय न जनरल लेक 3 जनवरी 1805 र दिन भरतपुर पूगो ।

'भरतपुर उण वखत आठ मील भूमि म बस्योडो हो । चाफेर डीगी डीगी अर मजबूत गारै री दीवार ही । जिणर च्यारू मेर चौडी खाई ही जिकी हर वखत पाणी सू भरयोडी रवती । नगर र उगमणै छेहडै माथ भरतपुर रो किलो आयोडो हो । नगर री फसील माथ तोपा चढयोडी ही । रणजीत री सगळी सेना होल्कर री पूरी फौज अर नगर री अर कनली सगळी प्रजा फसील र मायन ही । होल्कर री थोडी सेना अग्रेजी फौज री लारै सू आवती रसद न रोकण र वास्तै किल सू बार रही ।'[2]

होल्कर री इण बार रहयोडी सेना रो नेनानायक अमीरखा

---

1 I will not be in my power to avoid attacking and reducing him and his fort without delay —*General Lake* to Governer General Dated 27th Nov , 1804

—भारत मे अग्रेजी राज प्रथम खड, ले सुदरलाल पृष्ठ स 491

2 भारत मे अग्रेजी राज प्रथम खड ल सुदरलाल, पृ स 492

हो । इण अग्रेजा सू हाथ मिळाय'र होल्कर अर भरतपुर नरेश न धोखौ दियौ । जे ओ आदमी बेईमान अर धोखबाज नी निकळतौ तो भरतपुर मे अग्रेजा री जिकी हार हुई, उण सू कई गुणा वत्ती अर भूडी हार होवती । अग्रेज शक्ति रा मरमट गळ जावता । पण भारत री धरती माथै तो इमा पीढी पीढी पीर पाकता रह्या जिणा धोखौ देयनै विश्वासघात कियौ ।

अमीर खा रै ज्यू सिंधिया रै अेक सैनिक अधिकारी जीन बेपटिस्टे ई भरतपुर रै युद्ध मे होल्कर नै धोखौ दियौ । भासले री गळती रै कारण ओ विदसी अफसर उणरी फौज मे अेक मोटौ अफसर हो । इणी'ज भात कमलनयन नाम रौ सिंधिया रौ अेक कर्मचारी ई अग्रेजा रौ गुप्तचर हो । उण अर जीन बेपटिस्ट मिळ'र इसौ षडयन्त्र रच्यौ के सिंधिया जिकौ भरतपुर री मदद करणी चावतौ नी कर सक्यौ ।

7 जनवरी 1805 न लेक घणै गुमेज सू आपरै दळ बळ सागै भरतपुर पूगौ । उणी'ज दिन दिन उगता ई दुर्ग री दीवार तोड़ण लाई तोपा सू गोळा री बिरखा ई सरु कर दी । दूज दिन दीवार रो थोडोसीक भाग खडित होयग्यौ । अग्रेजी सेना रा की सनिका हिम्मत करन खाई पार करी अर दुर्ग रै मायनै घुसण री कोशिश करण लाग्या । पण उणी'ज वखत भरतपुर री सेना अचाणचक इतरौ प्रबळ आक्रमण कियौ के अग्रेजी सेना न हार न पाछौ हटणौ पड्यौ । इण भात कपनी सरकार री सेना रो भरतपुर विजय रौ प'लडौ प्रयास असफळ रह्यौ ।

भरतपुर वाळा टूटयोडी दीवार री रातू रात मरम्मत करन उणनै पाछी मजबूत बणाय दी । तिण उपरात किलै सू भयकर गोळाबारी सरू कर दी । अग्रेजी सेना इण बरसती आग मे पूरा बार दिन फेरू दीवार तोडण सारू आफळती रही । छेवट 21 जनवरी 1805 दुर्ग री दीवार रौ अेक भाग फेरू खडित होयग्यौ । अबकाळै ई अग्रेजी फौज रा सनिका सामूहिक रूप सू प्रयत्न करन खाई पार करी अर घण जोश खरोश साग जोर को आक्रमण कियौ । अेकर तो इसौ लखायौ के अग्रेजी सेना दुर्ग मे पूग जासी पण प'ली री जिया ई भरतपुर वाळा री प्रत्याक्रमण इतरौ प्रबळ रह्यौ के अग्रजी फौज न पाछौ हटणौ पड्यौ । अबकाळ बारा सनिक ई घणा काम आया ।

लेक भरतपुर न जीतणौ डावै हाथ रौ खेल समझनौ वो जीमणै हाथ सूं ई असभव लागण लाग्यौ । इणी'ज प्रसग मे उण मार्क्विस वेल्सली न अेक कागद लिख्यौ जिण मे इण युद्ध रौ वणन करता उणे लिख्यौ के—

'म्हन आ बात लिखता घणौ दुख होव के किलै री खाई इतरी चौडी अर ऊडी निक्ळी के उणन पार करण री जितरी कोशिशा करीजी वे सगळी अकारथ गई । आपणी सेना न हार खाय'र पाछौ आवणौ पडचौ ।'

'आपणी सेना सदीव हिम्मत सू लडै, उणी'ज भात लडती रही, पण मोकळै वखत ताई गोळा री इण कदर झडी सी लागती रही के म्हने लाग के आपणी सेना मे अणू ती नुक्साण हुयौ हासी ।'[1]

अग्रेजी सेना री दो वेळा हार होवण री प्रमुख कारण दुग री फसील माथ गोठवियोडी वे तोपा ही जिणा भयकर रूप सू आग बरसाय न अग्रेजी सेना री होसलौ पस्त कर दियौ । इणरै सागै आ बात ई साची के उण तोपा माथै साचा देस भगत अर विश्वासू भारतीय गोळदाज काम करै हा ।

इण भात दो बार हार खावण सू लेक थोडी हिम्मत हार हायग्यौ । उणरी सेना मे जवाना अर सामग्री री इतरौ नुकसाण हुयौ हो के वो लारै बच्योडा सीमित साधना र बळ माथै भरतपुर कानी देखण री ई हिम्मत नी कर सकै हो । इण कारण उण हथियार नाख दिया अर कोई महीनो भर आपरी सेना र साग

---

1 I am sorry to aid, that the ditch was found so broad and deep that every attempt to pass it proved unsuccessful and the party was obliged to return to the trenches, without effecting their object

' The troops behaved with their usual steadiness, but I fear from the heavy *fire they were unavoidably exposed to* for a considerable time, that our loss has been severe '

—भारत मे अग्रेजी राज प्रथम खड, ले सु दरलाल पृ स 493

निष्क्रिय होय न बैठो रह्यो । छेवट आगरा इत्याद सू नुवी सेना, मोटी मोटी तोपा अर मोकळो साज सामान भेजीज्यो । मेजर जास रै आधीन गुजरात सू ई मोकळी सेना आई । इण भात भरतपुर माथ तीजी बार आक्रमण री त्यारी हुई ।

दो हमला मे अंग्रेज सेना नै मोकळा अनुभव होयग्या हा । वा सू शिक्षा लेवता अबकाळै उणा अधा धुध गोळाबारी नी करी । दुर्ग री भीत किण ठौड कम चौडी है, पैं'ली तो इण बात री पूरी चौकसी करीजी अर पछै वो ठायो त करन उण माथै सामूहिक हमलो करीज्यो । 20 फरवरी 1805 नै दीवार री वो भाग टूटग्यो अर अंग्रेजी सेना दुग मे घुसण ताई फेरू तन तोड कोशिश करण लागी । पण टूटोडी प्राचीर सू भरतपुर री सेना टिड्डी दळ री दाई बारै निकळ'र दुस्मण माथै इण भात अरडाय पडी के आगे बढणो तो आगडो गयो, आपरो जीव बचावणो ई कठण होयग्यो । औ प्रतिरोध इतरो प्रबळ हो के इणनै झेलणो अबखो होयग्यो । अंग्रेजी सेना हाक्वाक हुयगी । भरतपुर वाळा उणन खाई सू निरी परै हडेल नाखी अर खासी दूर ताई वारो अधिकार होयग्यो ।

जनरल लेक तो औ दरसाव देख'र डाफाचूक होयग्यो । 'उण हार खाय'र देसी सैनिका न छोड'र गोरी पल्टण न आगै बढण रो हुक्म दियो पण विदेसी सनिक ई इतरा हिम्मतहार होयग्या हा के उणा आगै बढण वास्तै इन्कार कर दियो । अंग्रेज अफसरा वान समझाय-बुझाय नै त्यार करण वास्त मोकळी कोशिश करी पण वे तो अगाई पाणी मे पैठग्या । छेवट भारतीय सैनिका नै आगै बढण री हुक्म दिरीज्यो । वे हिम्मत करन थोडा आगै बढ्या पण सामी सू आवती गोळिया री बौछार इतरी सातरी ही के की पावडा आगै जायन वान धूड भेळो होवणो पड्यो ।'

---

1 'The Europeans however of his Majesty s 75th and 76th, who were at the head of the column refused to advance .. The entreaties and expostulation of thier officers failing to produce any effect two regiments of native infantry, the 12th and 15th were summoned to the front and gellantly advanced to the storm

—Mill, Vol VI, Page 426

छतापण भारतीय सेना रा जवान हरावळ मे रह्या अर मारता काटता आगे बढता रह्या अर छेवट भरतपुर री सेना न पाछी किले रै मायन जावण वास्त मजबूर कर दी । जे इण मौकै अग्रेजा काती सू लडती भारतीय सेना इतरी वीरता सू युद्ध नी करती अर भरतपुर री सेना न ओरू आगै बढवा रो अवसर मिळतो तो शायद वे लेक री सगळी सेना रो घाण काढ नाखता । पण अेक उदू शायर रै शब्दा मे— घर मे आग लग गई घर के चिराग से । भारत रै इतिहास मे आ पै'लडी घटना कोनी ही, इणरी पुनरावृत्ति कई बार हुई है ।

तीजी बार ई हार रा समाचार सुण'र कपनी सरकार विचार मे पडगी । बळ सू काम पार पडतो नी देख'र छेवट छळ सू पूरो करण रो तै कियो । 5 मार्च 1805 न मार्क्विस वेलसली जनरल लेक न अेक विगतवार कागद लिख्यो, उणमे उण अेकर युद्ध बन्द करन की दूजा उपाव करण री सलाह दीवी—

' काई आ बात ठीक नी रहसी के होल्कर अर रणजीतसिंह रै बिचाळै फूट पाडण री कोशिश करी जाव ? भरतपुर माथ हाल आपणो कब्जो नी हुयो है, छतापण जे रणजीतसिंह होल्कर रो पख छोड दे तो होल्कर कमजोर पड जासी । पछै उणन जीत री कोई उम्मीद नी रहसी ।'[1]

गवर्नर जनरल ई लेक नै लिख्यो—

'रणजीतसिंह न आ बात साफ कय दी जाव के जे वो होल्कर रो साथ छोड देव तो उणन उणरो सगळो राज पाछो सू प दियो जासी ।'[2]

जनरल लेक इण कागदा रै पडूत्तर मे गवनर जनरल न लिख्यो—'रणजीतसिंह रै साग म्हारो कागद-वैवार जारी है । म्हन उम्मीद है

---

1 Might it not be advisable to endeavour to detach Ranjeet Singh from Holkar ? Holkar would be hopeless if abandoned by Ranjeet Singh

2 ' and renounce Holkar in which case he will be restored to his possessions

के इसो समझौतो बैठ जासी जिको कपनी सरकार रै हक मे होसी। पछै होल्कर ग्रर रणजीतसिंह पाछा अेक नी होय सक्सी।'[1]

जनरल लेक इण वखत दोवडी चाल खेलण मे लाग्योडो हो। अेक कानी तो वो रणजीतसिंह सागै सधि करण री वात करै हो ग्रर दूजी कानी होल्कर रै सरदार ग्रमीरखा न लालच देयनै ग्रापरै पख मे करण री कोशिश मे लाग्योडो हो। ग्रा वात पै'ली ई लिखी जाय चुकी है के होल्कर ग्रापरी घुडसवार सेना री अेक मोटी टुकडी इण रै वारै इण कारण राख छोडी ही के वा अग्रेज सेना माथै लारै सू ग्राक्रमण करन परेशान करती रवै ग्रर रसद इत्याद री सप्लाई ग्रडचण पदा करती रैव। इण घुडसवार टुकडी रो सेना नायक ग्रमीरखा हो। जे ग्रमीरखा रो मन साफ हुवतो ग्रर वो लारै सू ग्राक्रमण करतो तो अग्रेजी सेना नै दो पाटा रै बिचाळै घाल'र पीस सक हो। पण वो तो लोभ रै वशीभूत लेक र हाथा बिकग्यो हो।

लेक नै ऊपर सू जद ग्रो हुक्म मिळयो के ग्रमीरखा नैं लालच देयनै ग्रापणै कानी मिळावणो चाइजे तो उणै पडूत्तर मे गवर्नर जनरल न लिख्यो—

'ग्रमीरखा री मागणी घणी ग्रणू तो है। वो तेतीस लाख रुपिया सरुपात मे ग्रर उणर पछै इतरी मोटी जागीर मागै के जिण माथै दस हजार घुडसवारा री गुजारो चाल सकै। ग्रा इज उणरी मागणी रुहेलखड मे ही ग्रर ग्रबै वो सिंधिया रै सागै है इण कारण ग्रापरी मागणी शायद ई कम करै।'[2]

---

1 A correspondence is now going on between me and Ranjeet Singh favourable of to Government and prevent any union between Holkar and Ranjeet Singh
—भारत मे अग्रेजी राज प्रथम खड ले सुन्दरलाल पृष्ठ स 495

2 'Amir Khan is most exorbitant in his demands He asked thirty three lacs of rupees and a Jageer for 10,000 horse This was his proposal in Rohalla khand and I doubt much if he would now be more moderate as his battallians and guns have joined Sindhiya
—भारत मे अग्रेजी राज प्रथम खड, ल सु दरलाल, पृ स 496

छेवट कपनी सरकार सागै अमीरखा री बातटी बैठगी । ओ सोदौ अेक अग्रेज अफसर जनरल स्मिथ र मारफत तै हुयौ अर उणी जनरल नै अमीरखा रै सागै युद्ध मे भेजीज्यो । अफजलगढ रै कनै अमीरखा स्मिथ रै सागै युद्ध करण रो नाटक कियो अर होल्कर री सगळी घुडसवार सेना हाथौ हाथ कटवाय नाखी । इणर पछ वो 20 माच 1805 नै भरतपुर मे होल्कर कन बुग्रो गयौ । विदेसी सत्ता रै प्रति उणरी कत्त व्यनिष्ठा अर राष्ट्र रै प्रति अक्षम्य देसद्रोह रै फळ-सरूप आगै चाल'र अमीरखा नै टोक रो राज मिळयो । इस राष्ट्र-घाती अर विश्वासघाती री औळाद नवावा रो खिताब धारण करनै ठेठ स्वतनता प्राप्ति ताई टोक रियासत माथ राज करती रही ।

भरतपुर नरेश रणजीतसिंह सगळो भू डो भलो सोच समझ'र अर नतिक कत्त व्य सू प्रेरित होयन होल्कर न शरण दीवी ही, इण कारण इण दोनू रै बिचाळै फूट पाडण री लेक री सगळी कुचाला विफळ हुई । पण इणी'ज प्रसग मे अमीरखा र ज्यू सिंधिया र मामल मे अग्रेजा न की सफळता जरूर मिळी, उणरी जिक्र अठ करणौ अप्रासगिक नी होसी ।

जिण भात इण बात रो उल्लेख पै'ली ई आयग्यो है के सिंधिया न अग्रेजा भात भात री सधिया मे उळझाय'र कमजोर बणाय दियो हो । पण वो होल्कर र प्रति सहानुभूति रो रख राखतौ इण कारण अग्रेजा सू नाराज हो । होल्कर जिण वखत मानसन रो लारो करतो आगरा ताई पूगग्यो हो तो उण सिंधिया न सदेसो भेज'र अग्रेजा र खिलाफ कायवाही करण रो क्वायो हो । पण इणर पछ तुरत परिस्थितिया बदळगी अर होल्कर नै भरतपुर री शरण मे आवणौ पडयो ।

जिण वखत अग्रेजा भरतपुर माथ हमलो कियो, उण वखत दौलतराव सिंधिया आपरी सेना साग बरहानपुर मे मौजूद हो । उणन ज्यू ई भरतपुर र घेरै रा समाचार मिळया, उण आपरा पिंडारी सदेश वाहका न भरतपुर कानी रवान किया । पण अे पिंडारी घुडसवार अमीरखा रा आदमी हा, इण कारण वे भरतपुर पूगा ई कोनी । इणी'ज भात सिंधिया री सेना मे बेपटिस्टे नाम री जिको यूरोपियन सनिक अफसर हो उण सू साठ गाठ करन जनरल लेक अेक 'गुप्त कागद' गवनर जनरल न लिख्यौ—

'जीन वेपटिस्टे   म्हारै कन आवणी चावै । पण आपरी फौज सू पण वास्त वो डेढ लाख रुपिया मागै । सुणीजै तो आ है के आदमी खरौ अर साचौ है । अबार उणरै साग जिको कागद ववार हुयौ उण सू ई मालूम तो इसौ ई होवै, पण रुपिया दिया पैली आपा न उणरी सच्चाई माथ पक्को भरोसो होवणो चाइजै । कम सू कम इतरी मोटी रकम तो अबार अेकदम उणनै नो देवणो चाइजै, हा वो कोई खास काम करनै बतावै तो बात दूजी है ।'[1]

जनरल लेक रा दूजा कई कागदा सू ई ठा पडै के वेपटिस्टे अर अग्रेजा रै बिचाळ बातडी बठगी ही उण अग्रेजा रो काम इण भात बणायौ के सिंधिया जिको सैनिक टुकडी होल्कर री मदद वास्तै भरतपुर रवान करी ही, उणनै वेपटिस्टे मारग मे ई रोकली । दौलतराव सिंधिया ने इण बात री जाणकारी उण वखत हुई जद वो भरतपुर वाळो युद्ध बीता पछै होल्कर न मिळयो । इण बात री ठा पडता ई उण वेपटिस्टे नै कैद कर लियो । पण जीम्या पछ तो चळू होवै । बातडो बीतगी ही अर भरतपुर रो युद्ध खतम होयग्यो हो । जे सिंधिया वखतसर चेततो विश्वासघाती कमलनयन इत्याद री बाता मे नी आवतो अर लेक री सेना माथै लारै सू हमलौ कर देतो तो भारत रो शेप इतिहास की दूजै ढग सू ई लिखीजतो । पण इण मुलक मे तो सदीव दुसमणा करता देसद्रोही राष्ट्रघातका देस न वेसी नुकसाण पुगायो है ।

भरतपुर रै अैतिहासिक युद्ध मे ई भारतीय शक्ति री विजय रो प्रमुख कारण ओ हो के दुग री प्राचीर रै मायनी कानी रणजीत-सिंह के जसवतराव री सेना मे कोई देसद्रोही मौजूद नीं हो ।

---

1 Jean Baptiste   is desirous of coming to me but requires a lac and a half of rupees to pay his troops He is reported to be a good and fair man and by what I have seen him lately from his correspondence have very appearance of being so but I must be more convinced that he is so before I give money at any rate not to that extent If he does anything worth notice it will be time enough to pay him then
—भारत मे अग्रेजी राज प्रथम खड ले सुदरलाल पृ स 499

इणर साग उण जमानै मे अंग्रेजा जिसी सामरथ कौम सू टक्कर लेयन उणरी वीरता सागै मुकाबलो करणो अर तीन तीन वार हराय नै आपरी जीत रो डंको बजावणो देस मे अेक अनोखी राजनैतिक घटना ही। इण वास्तै जनसाधारण र मानस मे हरख व्याप्त होवणो सुभाविक वात ही।

इण कारण कविराजा बाकीदास जिमा राष्ट्रवादी अर जागरूक कवि रो ध्यान ई इण घटना कानी आकर्पित हुयो। वे विदेसी सत्ता र देसव्यापी प्रभाव सू घणा चिंतित हा। आ बात वार डिंगल गीता मे सुभट लखाय। इण गीता मे उणा आ बात घणै विस्तार सू खुलासैवार कही है वे किण भात सात समदर पार सू रवान होयन आ विदेसी सत्ता भारत मे आई अर किण भात अंवै वा होळै होळै भारत मे आपरा पग पसार री है। भारतवासिया नै उणा चाव धाडै सावधान रैवण सारू सावचेत किया।

इसी विकट वेळा मे जद भारतीय शक्ति विदसिया रै सामी निवळी पडती जाय री ही, बाकीदास जिसा राष्ट्रप्रेमी कवि नै मन मे घणी माठी लाग्यो होसी। इसै बोद अर गयबीतोडै वखत मे कवि न कोई इसै कथानक री पूरी भाळ रही होसी के जिणनै माध्यम बणाय'र प्रेरणास्पद काव्य री रचना सभव होय सक। भरतपुर वाळी जीत री घटना सू कवि नै वो अवसर मिळग्यो जिणरी उणन उडीक ही। च्यारू मेर सू निराश अर हताश हुयोडो कवि रो मन भरतपुर री जीत साथ घणो राजी हुयो होसी।

इण कारण रणजीतसिंह री इण जीत न भारतीय शक्ति री जीत मान'र उणा जिण डिंगल गीता री रचना कीधी, व घणा जीवत अर प्रेरणाप्रद है। इण गीता री रचना सौष्ठव अर भावगत वैभव देखण जोग है।

जसवतराव होल्कर भरतपुर रा युद्ध पछै मुसीबत अर विखा री मारयो मारवाड कानी आयो हो। जोधपुर नरेश महाराजा मानसिंह (जिकी कविराजा बाकीदास नै आपरो काव्य गुरु मानता) हिम्मत करन उणन शरण दीनी ही। रणजीतसिंह र ज्यू अंग्रजा रै कोप री परवाह किया विना उण होल्कर न की दिन आपरै कनै राख्यो। सभव है ओ स की कविराजा री प्रेरणा सू ई हुयो होसी।

कविराजा मानसिंह री इण 'शरणागतवत्सलता' रा घणा वखाण किया है।'[1] कवि मानसिंह नैं इण हिम्मत भर्‌यै काम वास्तै त्रिपुरारि कंयन सबोधित किया है। भरतपुर रै सग्राम नैं लेय'र कवि जिण डिंगल गीता री रचना करी, वा मे प्रथम गीत इण भात है—

गीत भरतपुर रौ

उतन विलायत किलकत्ता कानपुर आविया,
ममोई लक मदरास मेळा ।
यलम धुर वहण अगरेज दाटण यळा,
भरतपुर ऊपर हुवा मेळा ।।
अलीमन सूर रौ वस कीधो असत,
रेस टीपू मिजं प्रवट रुडिया ।
लाट अनराळ जनरेल करनेल लख,
जाट र किलै जमजाळ जुडिया ।।
सैन रिजमट असख पलटणा तण सग,
भड तिलग वग किलग तणा भिळिया ।
अभग जग भरतखड पारका उसरऊवे,
मारका वजद्र रै दुरग मिळिया ।।
सराबा बोतला पिया छक छक सडक,
किया निघडक हिया हरवळा कोप ।
वीर रस ओपिया हुलां विध विध वध,
टोपिया दवादस तणा अ टोप ।।
पीठ वडयडात कूरम छटा प्रल री,
महो लडलडात हैजम मचोळा ।
मुनि हडहडात घडधडात तोपा महत
गयण गडगडात पड झाट गोळा ।।
अरक्दुत सोम सम नमै लोयणा असम,
यूओ तमतोम रग धुरा यूरां ।
तठै सुर लडता घटै घण तदूरा,
हरख सूरां निरख रभ हूरां ।।

---

1 इण प्रसग री बांकीदास रचित डिंगल गीत घागै दिरोज्यो है।

धरै सवधीर गोरा घडण कांगुरां,
तिलग फरर फुरत फल ताळो ।
छूट पिसतोल पहहोम सायर छिलक,
करायोडा सिलक किलक काळो ।।
तुरी खुरताळ वज तूर तासां त्रबट
माळ फरहर गजां धजां माळा ।
अउदा अणडोल जाटां पतो आवियो,
तोल पग कपाटा खोल ताळा ।।

आग झडहड डहक धम रण आंगण
नाग फण नम कर सस्त्र नागा ।
कठा लग कयाडी व्यूह रचना कर,
सठायन तणा भड लडण लागा ।।

धडा सिर जोम ताज धडां धमाधम,
कांगुरां तरफ वाज कुहाडा ।
खिलो गिर धरण ओळ रवण धधकडा,
विरोळै चोवडा फिरग वाळा ।।

दिया सूजातणै पेड तोपां दिसा,
सफीला तणा नह लिया सरणा ।
धोजलां रीठ पाव सञ्रा विसाथै,
विजा करपूर करपूर वरणा ।।

अणी जटयाड वीरां तणो आवळ
विविध तोरां तणो मची वरसा ।
हुसम अंगरेज री आठवाटो हुई
पूर पाटां हुई रुधर परसा ।।

अरावां तणो असबाब अपणावियो,
भट विकट किलकता तणो भागो ।
आड रोपी धजड लोक थागो असभ,
लोक टोपी पटक पग लागो ।।

अमावड धना मे हुई लोया अनत
चढै घोडां विगत वात चालो ।
सायरा विरांणा हजारां साहिबा,
सुरसिघा हजारां हुई सालो ।।

अणखरब कलहतर कहै दुज अेकठा,
गरब वा किताबा तणा गळिया ।
थया बळहीण लसकर फिरगान रा,
चीण ईनान रा इलम चलिया ।।
मेह मरजाद रणजीत आखाडमल,
खेर दीधा डसण जबर खेटै ।
पुखत गुरनाम मिळि सेनपण पाकियो,
भरतपुर फेर नह उसर मेट ।

जिण भात इण बात री पैं'ली ई उल्लेख आयग्यो के भरतपुर री जीत इण कारण हुई के रणजीतसिंह री सेना मे कोई देश द्रोही सैनिक नी हो । छतापण इण बात रा प्रमाण मिळै के नीबावता महत इण युद्ध मे जरूर की गडबड करी ही । इण महत अग्रेजा सू मिळ'र भरतपुर रै दुग रा दरवाजा खोल न दुसमण नै मायनै प्रवेश करण मे मदद करी ही । इतिहास मे इण घटना रौ कठैई उल्लेख नी मिळै, छतापण कविराजा बाकीदास जिसै प्रतिष्ठित अर नामचीण कवि जिण घटना नै आधार बणाय'र डिंगल गीत री रचना करी, इणसू आ बात सुभट लखावै के आ घटना जरूर घटित हुई होसी ।

गीत मे कवि इण महत नै भाडता साफ शब्दा मे फटकारता थका कह्यौ है के इण आपरी गुरु गादी सलेमाबाद न ई बदनाम कर नाखी । इणै जिण हाडी मे खायो, उणमे इज छेद कियो । इसै पापी मिनख न बारबार धिक्कार है ।

इण डिंगल गीत सू कवि री राष्ट्रीय चरित्र अर सरुप सामी आव । वान इसी देश द्रोही हरकता सू कितरी नफरत ही वा इण गीत सू भली भात प्रगट होय जावै ।

जे आ घटना माची है तो इणसू इण वात री पुष्टि होवै के भरतपुर री दृढता आग अग्रेजा री आ सूगली चाल ई अकारथ गई । अठाताई करण र उपरात ई वे दुग माथ कब्जौ करण मे असफळ रह्या । भारत वासिया रै वास्त ओ अेक गुमेज करण जोग प्रसग हो ।

नीबावता रै महत रै प्रसग मे कविराजा बाकीदास रो कह्योडौ डिंगल गीत—

फरं सवबीर गोरा घढण कांगुरां,
तिलग फरर फुरत फैल ताळो ।
छूट पिसतोल पडहोल सायर छिलक,
करावोणां सिसक खिलक काळो ।।
तुरां खुरताळ वज तूर तासा त्रबट,
माळ फरहर गजां धजां माळा ।
अउण अणडोल जाटा पतो आवियो,
सोल पग कपाटा खोल ताळा ।।

आग झडहड डड रम रण आंगणं
नाग फण नम कर सस्त्र नागा ।
कठा लग कथावों व्यूह रचना कर,
लठावन तणा भड लडण लागा ।।

घडा सिर जोम ताज घडा घमाधम,
कागुरां सरफ बाज कुहाडा ।
खिलो गिर घरण ओळ रपण थपकडा,
विरोळै चौवडा फिरग वाळा ।।

दिया सूजातणं पंड तोपां दिसा,
सफीला तणा नह लिया सरणा ।
वीजला रोठ पावे सझा विलाथ,
विजा करपूर करपूर वरणा ।।

अणी जटवाड वीरां तणी आकळ
विविध तीरा तणी मची वरखा ।
हुसम अगरेज री आठवाटा हुई,
पूर पाटा हुई रुधर परखा ।।

अराबा तणो असबाब अपणावियो,
भट विकट किलकता तणो भागो ।
आड टोपी वजत्र झोक वागो असभ,
लोक टोपी पटक पथ लागो ।।

अमायड वना मे हुई लोथा अनत,
चढे घोडा दिगत वात चालो ।
सायरा विरांणा हजारा साहिबा
सुरसिया हजारा हुई खालो ।।

अणखरब फलहतर कहै दुज अेकठा,
गरब वा किताबा त्रणा गळिया ।
थया वळहीग्र लसकर फिरगान रा,
चोण ईनान रा इलम चलिया ॥
मेह मरजाद रणजीत आखाडमल,
खेर दीधा डसण जबर खेटे ।
पुखत गुरनाम मिळि सेनपण पाकियौ,
भरतपुर फेर नह उसर मेटे ।

जिण भात इण बात री पैंली ई उल्लेख आयग्यो के भरतपुर री जीत इण कारण हुई के रणजीतसिंह री सेना मे कोई देश द्रोही सैनिक नी हो । छतापण इण बात रा प्रमाण मिळे के नीवावता महत इण युद्ध मे जरूर की गडबड करी ही । इण महत अग्रेजा सू मिळ'र भरतपुर रै दुर्ग रा दरवाजा खोल न दुस्मण न मायनै प्रवेश करण मे मदद करी ही । इतिहास मे इण घटना री कठैई उल्लेख नी मिळै, छतापण कविराजा बाकीदास जिस प्रतिष्ठित अर नामचीण कवि जिण घटना नै आधार बणाय'र डिंगल गीत री रचना करी, इणसू आ बात सुभट लखावै के आ घटना जरूर घटित हुई होसी ।

गीत मे कवि इण महत नै भाडता साफ शब्दा मे फटकारता थका कह्यो है के इण आपरी गुरु गादी सलेमाबाद न ई बदनाम कर नाखी । इणे जिण हाडी मे खायो, उणमे इज छेद कियौ । इस पापी मिनख न बारबार धिक्कार है ।

इण डिंगल गीत सू कवि री राष्ट्रीय चरित्र अर सरूप सामी आवै । वान इसी देश द्रोही हरक्ता सू कितरी नफरत ही वा इण गीत सू भली भात प्रगट होय जावै ।

जे आ घटना साची है तो इणसू इण बात री पुष्टि होवै के भरतपुर री दृढता आग अग्रेजा री आ सुगली चाल ई अकारथ गई । अठाताई करण रै उपरात ई वे दुग माथ कब्जो करण मे असफळ रह्या । भारत वासिया रै वास्त ओ अेक गुमेज करण जोग प्रसग हो ।

नीवावता रै महत रै प्रसग मे कविराजा बाकीदास रो कह्योडो डिंगल गीत—

हुवौ कपाटां रौ खोलबौ ते फिरगी याटा रौ हल्लौ,
मत्र खोटा घाटा रौ उपायौ पाप भाग ।
भाया भडां फाटा रौ हडोफा हाथे दीनौ भेद,
ऊभा टीका वाळा कीधौ जाटा रौ अभाग ।।
माल खायौ ज्यारौ त्यारौ हियं रत्ती नायौ मोह,
कुवद्धा सू छायौ भायौ नहीं रमाकत ।
वेसासघात सू कांम कमायौ बुराई वाळौ,
माजनौ गमायौ नौंवावतां रै महत ।।
भूप बिया च्यारू सप्रदाया रौ भरोसौ भागौ,
लागौ काळौ सलेमाबाद सू गाडा लाख ।
नागा मिळै साहबा सू भिलायौ भरत्थानेर,
राजकठीबधां रौ मिळायौ धड राख ।।
आगरा सू लूट सूज अेकठौ कियौ सो आणै,
खजानौ ऊ लूट ताळा लूटिजियौ खास ।
कपनी सू बेध मोट जागिया पालट किलौ,
बैरागिया हूतौ हुवौ जाटा रौ विणास ।।

इणी'ज प्रसग मे कविराजा बाकीदास री अेक औरू गीत मिळै । इण गीत मे कवि जाटा री वीरता अर भरतपुर रै दुग री मजबूती री वणन कियौ है । कवि री क्थणी मुजब जिण दुग री रक्षा खुद नदकवर कृष्ण करै, उणनै कुण जीत सकै ? इसौ लखावै के औ गीत ऊपर लिख्यै गीत र पछै लिखीज्यौ है ।

गीत

पेल कवाडो तिलगा बाडा जगी राग घोरै पोल,
महाजोम आपरगी लोक सोबा मोड ।
गण थभ तूट क्यू भरत्थानेर चक्र गोरे,
ठोरै थभ राम के सो किवाडा री ठौड ।।
तोर तोपा कराबोण दूरबोण लाया तोल,
बोल फेर उडाया पाखाण तेण बाण ।
किले गैण वाळ माया आसुरा न लागी कजौ,
अेवजी फाटका थायाहली चक्रियाण ।।
लाग खाई पूरै पाटा खहै कपू खेघ लाग,
वहै घाटा घायला निराटा भीम वार ।

केम भागं लाट राटा जाट राटा वाळो कोट,
कपाटा ठिकाणा ऊभा नद रा कुमार ॥
भरज्जाळ आया ओगोपाळ कामपाल भीर,
निराताळ चाळ बाधे जितो सूजानद ।
लेर बोडो कपनी सू जमींदारा यान लेवा,
फौजा कर फिरगी न नाख फेरचद ॥[1]

भरतपुर रै घेरे बाबत बीकानेर निवासी स्व कवि गिरधारीसिंह पडिहार रचित आधुनिक सरल राजस्थानी मे 'धूडकोट' शीर्षक सू अेक लाठी काव्य रचना मिळै ।

आ रचना इण बात री पुष्टि करै के भरतपुरवाळी घटना रो भारतीय जन मानस माथै कितरो ऊडो असर पड्यो । ओ ई कारण है के दो ढाई सौ बरस बीत्या पछै ई जन मानस मे सू आ बात गई कोनी । इण कारण आज बीसवी सदी मे ई इण घटना न आधार बणाय'र काव्य रचना की जाय री है ।

सही रूप सू आ अेक इसी घटना है, जिणन याद करन भावी पीढिया ई गुमेज करसी अर इण प्रसग न लेय'र भविष्य मे ई काव्य रचना होवती रहसी ।

कविराजा बाकीदास अर गिरधारीसिंह पडिहार री रचनावा र अलावा भरतपुर प्रसग माथै भी फुटकर रचनावा ओरू ई मिळै पण वे इतरी महताऊ कोनी । की रचनावा मे तो प्रसगवश भरतपुर वाळी घटना रो फगत जिक्र आयो है ।

इण प्रसग मे कविराजा बाकीदास रचित गीता रो अध्ययन करणै सू ठा पडै के कवि री नजरियो कितरो झीणो हो अर बारो अध्ययन कितरो गेहरो हो । कोई पण बात न मूळ रूप सू समझण री वा मे अनोखी खिमता ही । ओ ई कारण हो के वे विदेशी सत्ता रै मसू बा सू आछी तरिया धाकब हा । राष्ट्रीय विचारधारा रा प्रबळ समथक होवण सू भरतपुर री जीत सू बारी आत्मा सतुष्ट हुई ही ।

गिरधारीसिंह पडिहार ई आपरी दीघ काव्य रचना मे भरतपुर रै युद्ध रो सागोपाग अर भावपूण वणन कियो है । सरल आधुनिक

---

1 परपरा गोरा हटजा अक पृ स 107

राजस्थानी मे रचित वारी म्रो काव्य भाषा री दीठ सू ई अेक म्राछो नमूनो है। काव्य रचना इण भात है— '

पूडकोट

शरण हुल्कर जसवतराव, जद भूप भरतपुर र म्रायो।
सळ पडयो भावरा रीस करी, गोरा परवाणो भिजवायो ॥
'जसवत करी है जबराई, गोरा पर हाथ उठायो है।
म्रगरेजा रो म्रपराधो है, थार गढ़ शरण म्रायो है ॥
म्हे सुणी भूप ये म्रभे कियो, म्रा भली नहीं है भुरजाळा।
टूटली सधि जे वरणस्यो, म्हार बैरी रा रखवाळा ॥
म्रग्रेजी बळ है म्रणतोरयो, भारत रा भूपा जाण लियो।
सता है वडी फिरग्या री, गढवतिया लोहो मान लियो ॥
हुल्कर नै करो हवाल म, उळभो मत उल्टी चाला मे।
म्रब पळक वो पाणी कोनीं, भूपत भारत र भाला मे ॥
गोरा रो लाडो भारी है, जाटा सू थोटा भिलै नहीं।
म्रगरेजी राज हिंदिया री, वा पागा पग्यो चल नहीं ॥
म्रो धरम रव नीं राजाजी, शरणागत री पत राखण रो।
राखं ला जूनी परपरा, तो म्रो नूतो है थानै रण री ॥
जे चड ज्याली गोरी फौजा तो, तोपा सू कोट खिडा देसी।
जाटा री माल मसल देसी, हुल्कर न बदी कर लेसी ॥
लश्कर उलटेलो म्रण गिणती, टूट ज्यू बाध सरोवर रो।
म्रगरेजी धज म्राभ म्रडग्यो, कितरो है मोल भरतपुर रो ॥
म्रै कात भूलजो मत राजा, मिटता रा पता नहीं लाग।
म्है मिटा दिया है कितराई, म्रडियोडा न म्राग म्राग ॥
ये हुकम पूगता ई म्हारो, हुल्कर बधियो भिजवा दीजो।
नीं तो भुगतोला घणी बुरी, म्रो होश हिय करवा लीजो ॥'
गोरा रो खारो परवाणो, म्रो लाट लेक भिजवायो हो।
जाण जाटा नै कूतण न, म्रगरेजी काटो म्रायो हो ॥
राता ह्वैयग्या रणजीतसिंघ, महाराज होठ नै चाब लियो।
म्रपमान भर्योडी म्रे बाता, गोरा भारत नै दाब लियो ॥

घर-घर मे फूट घला दीनी, लडवा दीना उमरावा न ।
श्रे मगता पागा पय गिरण, भारत री परम्परावा न ॥

महाराज कह्यो सिरदारा नै, दरवार भरचो है भाया सू ।
'तीखा है बोल फिरगी रा, नीं रव स्यान दब जाया सू ॥

खाडो खोसरण नै श्राव है श्रपजोरा, जाटा र कर रो ।
वैरी बूझै है श्राज खडचा, कितरो है मोल भरतपुर रो ?

रजपूती तोलण जाटा री, गाज हे गोरो परदेसी ।
मरजाद श्राण श्रापणी नै, दुनिया री श्राख परख लेसी ॥

श्रा श्राण जक नह झुकी कदै, गजनवी जिनो लूटण श्रायो ।
तैमूरलग रो पग धूज्यो जद, जाटा बढ खाडो वायो ॥

बाबर रो वल भय खाव हो, वे भाला है श्रा हाथा मे ।
श्रगरेज डराया चावै है, श्रापानै रण री बाता मे ॥

म्हैं तो मरण री धारो है, गोरा रो घमड नहीं राखा ।
शरणागत हुल्कर श्रभय कियो, जीवतडो नेम नहीं नाखा ॥

पण बूझा थानै सिरदारा, थारा मनडा काई चाव है ?
खुल्ली कह दे वो श्रस जाट, तोपा श्राग भय खाव है ।'

जद जोस भरघोडै शब्दा मे, सिरदारा रो उथलो श्रायो ।
'गोरा रो फूस खिडा देस्या, दरबार भरतपुर गरणायो ॥'

महाराज दूत नै भिजवायो, लिख दियो लेक नै परवाणो ।
'दुबला समझैना जे म्हानै, तो थन पडला पिछताणो ॥

सूरज रो वम तपै तातो, जद तलवारा तण ज्यावली ।
थारोडी फौजा समद जिसी, चुस छिलरियो बण जावली ॥

जाटा री चोट पडली जद, मुटबोला इस्याल रबोला ।
हिडक्योड ज्यू हाफण लागोला, जद गढ पर घेरो देबै ला ॥

भारत रा भोला वीरा नै, थे बाता मे भोला वणिया ।
भूखा मरता थे श्रायोडा, वणग्या कद खाडा वादणिया ॥

हो सात समदर परिया रा, कुण पच बणाया है थानै ।
कपटी सरकार कपनो रा, चाकर धमकावो य म्हानै ॥

जद कूद श्रखाड म्है उतरा, भाला री पाणी पलकलो ।
ऊचो श्राभ सू श्रडचोडो, धज धरती कानो ढलकैलो ॥

हुल्कर है म्हार शरण मे, मरिया ई थानें मिल' नहीं ।
गहरी है नींव भरतपुर री, खसता थाकला हिल नहीं ।।
जाटा री श्राण दव कोनीं, गोरां बालं खाड नोच ।
गादड ने मौत बुलावं जद, वो गावा कानी पग खींच ।।'
रणजीत भूप री मेज्योडो, परवाणो गोरा पायो ।
वो लाट लेक जबरो जोधो, मोट दलबल सू सज आयो ।।
गढ घिरयो फिरगी फौजा सू, चवड मु ह री तोपा दागी ।
जाटा री तोपा री उथलो, जाणं सावण री झड लागी ।।
दिन रात गडागड गाज रही, सिर शेषनाग री हालं हो ।
जाटा री जबरो 'धूडकोट', गोरा रा गोला झालं हो ।।
आधी राता रं अधारं, छलिया छल सू नडा आया ।
गढवाली तोपा तेज हुई, अगरेज मना मे घबराया ।।
घात्यां री घात गई खाली, नहीं कपट चलली जाण लियो ।
धोलं मे जाट मर कोनीं गोरां रो हियो पिछाण लियो ।
उण मेंट सेंड सेनापति री, जद दलदल मे सेना फसगी ।
तो सासा पडग्या जीवण रा, हमल री बाता खीसरगी ।।
जाटा रा जबरा हाथ देख, अगरेज भूलगा चतराई ।
कितरा मरग्या परकोट पर, कितरा न खागी खाई ।।
भाला मे, छुरया-कहारयां मे, गोली गोला री लडझड मे ।
फम होस फिरगी रा उडग्या गढ ऊपर मची तडातड मे ।।
गोली खा गुडग्यो मेंट सेंड, श्रा गया मिनख वे चौड हा ।
चित उठिय ज्यू वे हिडक्योडा, हारयोडा गोरा दौड हा ।।
मेजर क तान मरिया कितरा आधी फौजा बिछगी रण मे ।
जद लेक कह्यो म्हैं इसी हार, नहीं खाई आख जीवण मे ।।
दस दिन सुस्ताया चढघा दूसर, कूटीज्या घणा घिरघा पाछा ।
मोटा अफसर रणखेत रह्या गोरा रा गिर नहीं आछा ।।
बोल हो ऊभो लाट लेक, फौजा र साम्हो जोश भरयो ।
आ आज दूसरी बार सुणी, जाटा सामी अगरेज डरयो ।।
गोरा री शान घणी ऊची, श्रे छोटा कोम्हा लागं है ।
है घणी लाज मुट्ठी भरिया, मिनखां आग दल भाग है ।।

दो वार हार होगी मोटी, पण फेर चढाई करणी है ।
बदनामी री खाई खुदगी, आपा नैं पूठी भरणी है ॥

मरजावा तो भी मुडा नहीं, आ धारचा पूरी पावाला ।
गढ जीत्या विना लाख वाता, जीता पाछा नीं आवाला ॥

आखी धरती नै तोलणिया, छोटै से राजा सू हारा ।
अगरेज तेज तप धारचा नैं, आ लाज घणी है मोत्चारा ॥'

कह लेक तीसरी वार घिरचौ, फौजा गढ कानी चाली ही ।
जाटा वाळी जबरी तोपा, गोळा सू धरा उछाळी ही ॥

उण देवनारायण प्रोळ कनैं, सेनापत 'टेलर' चढ आयौ ।
जमवाळी भाटा जा लाग्यो, जद जाट अडया खाडो वायौ ॥

मेजर जनरल 'सर जास' जिको, मु बई सू मदद करण आयौ ।
सेनापति इन गढ भेळण नैं, वो आसूदी फौजा लायौ ॥

पण जाट लड हा मूतणिया, कायर रा पता कठै लागै ।
सेनापत क्व बढ आग, फौजा डर सू पूठी भाग ॥

पग आग धर पड पाछा, वो दुरग दिखै हो मौत जिया ।
मुख खुल्या काल री तापा रा, गोरा भागै हा प्राण लिया ॥

सेनापति दौडचो जीवण ले, जबरा हा वीर भरतपुरिया ।
छनबल वरचा री चल नहीं, वा मार भोगना भुवा दिया ॥

आ हार इसी है 'लेक' कहचौ, इतिहास कलकित कर नाख्यौ ।
'मोटचारा वात घणी माडी, थ रत्ता पाणी नीं राख्यौ ॥

ब्रिटिश रै लाग ओ वट्टो, धोया सू कालख धुप नहीं ।
छोट से राजा छका दिया, आ वात छुपाया छपै नहीं ॥

ओ इस्यो भरोसौ हो कोनीं, थारौ पुरसारथ थक जासी ।
म्हे जाण्यो म्हारौ मोटो दळ, चुटक्या मे भूप पकड लासी ॥

पण था नाखी अेड्डी नीची, म्है आखी उमर लजावाला ।
साम्ही सरकार कपनी रै जा, माथौ किया उठावाला ?

नहीं हुई कद इण धरती पर, वा अणचींती है आज हुई ।
रणजीतसिंघ री रजपूती, अगरेज कर दिया छुई मुई ॥

जे जाट सूरमा लूठा है, गढ जबरो जीत नहीं पावा ।
तो अेक वात बाकी रगी, सैं जूझ भरतपुर मर जावां ॥

हुल्कर है म्हार शरणा मे, मरिया ई थाने मिलै नहीं।
गहरी है नींव भरतपुर री, खसता थाकला हिल नहीं ।।
जाटा री आण दब कोनीं, गोरां वाले लाड नीच ।
गादड ने मौत बुलावं जद, वो गावा कानी पग खींच ।।'

रणजीत भूप रो भेज्योडो, परवाणो गोरा पायो ।
वो लाट लेक जवरो जोधो, मोटं दलबल सू सज आयो ।।
गढ घिरघो फिरगी फोजा सू, चवड मुह रो तोपा दागी ।
जाटां री तोपा रो उथलो, जाणं सावण री झड लागी ।।
दिन रात गडागड गाज रही, सिर शेषनाग रो हाल हो ।
जाटा री जवरो 'धूडकोट', गोरां रा गोला भाचे हो ।।
आधी राता रं अधारं, छलिया छल सू नडा आया ।
गढवाली तोपा तेज हुई, अगरेज मना मे घबराया ।।
घात्या री घात गई खाली नहीं कपट चललो जाण लियो ।
धोखं मे जाट मर कोनीं गोरा रो हियो पिछाण लियो ।
उण मंट सड सेनापति री, जद दलदल मे सेना फसगी ।
तो सासा पडग्या जोवण रा, हमल री बाता वीसरगी ।।
जाटां रा जवरा हाथ देख, अगरेज भूलगा चतराई ।
कितरा मरग्या परकोट पर, कितरां नं खागी खाई ।।
भाला मे, छूरघा-कहारघा मे, गोली गोला री लडझड मे ।
फम होस फिरगी रा उडग्या गढ ऊपर मची तडातड मे ।।
गोली खा गुडग्यो मंट सैड, आ गया मिनख वे चौड हा ।
चित उठिय ज्यू वे हिडक्योडा, हारघोडा गोरा दोड हा ।।
मेजर कप्तान मरिया कितरा आधी फौजा विछगी रण मे ।
जद लेक कह्यो म्हें इसी हार नहीं खाई आख जोवण मे ।।
दस दिन सुस्ताया चढ्या दूसर, कूटोज्या घणा घिरघा पाछा ।
मोटा अफसर रणखेत रह्या, गोरां रा गिर नहीं आछा ।।
वोलं हो ऊभो लाट लेक फौजा र साम्हो जोश भरघो ।
आ आज दूसरी बार सुणो, जाटा सामो अगरेज डरघो ।।
गोरा री शान घणी ऊची, श्रे छोटा कोभा लाग है ।
है घणो लाज मुट्ठी भरिया, मिनखां आग दल भागे है ।।

दो बार हार होगी मोटी, पण फेर चढाई करणी है।
बदनामी री लाई खुदगी, आपा नें पूठी भरणी है।।

मरजावा तो भी मुडा नहीं, आ धारघा पूरी पावाला।
गढ जीत्या बिना लाख बाता, जीता पाछा नीं आवाला।।

आखी धरती नें तोललिया, छोट से राजा सू हारा।
अगरेज तेज तप धारघा नें, आ लाज घणी है मोटयारा।।'

कह लेक तीसरी वार घिरघो, फौजा गढ कानी चाली हो।
जाटा वाळी जबरी तोपा, गोळा सू घरा उछाळी हो।।

उण देवनारायण प्रोळ कनें, सेनापत 'टेसर' चढ आयो।
जमवाळो भाटा जा लाग्यो, जद जाट अडघा लाडो वायो।।

मेजर जनरल 'सर जास' जिणी, मुबई सू मदद करण आयो।
सेनापति उन गढ भेळण नें, वो आसुदी फौजा लायो।।

पण जाट लड हा भूतलिया, कायर रा पता कठ लाग।
सेनापत क्य बढ आग, फौजा डर सू पूठी भाग।।

पण आग घर पड पाछा, वो दुरग दिखें हो मौत जिया।
मुख खुल्या काल री तापा रा, गोरा भाग हा प्राण लिया।।

सेनापति दौडघो जीवण ले, जबरा हा वीर भरतपुरिया।
छलबल अरघा री चलें नहीं, वा मार भोगना भुवा दिया।।

आ हार इसी है 'लेक' कह्यो, इतिहास कलकित कर नाख्यो।
'मोटयारा बात घणी माडी, थें रता पाणी नीं राख्यो।।

ब्रिटिश रै लाग ओ वट्टो, धोया सू कालख धुप नहीं।
छोट से राजा छका दिया, आ बात छुपाया छपें नहीं।।

ओ इसयो भरोसो हो कोनीं, थारो पुरुसारथ थक जासी।
म्है जाण्यो म्हारो मोटो दळ, चुटक्या मे भूप पकड लासी।।

पण था नासो अेड्डी नीची, म्है आखी उमर लजावाला।
साम्हो सरकार कपनी रै जा, माथो किया उठावाला?

नहीं हुई कदै इण धरती पर, वा अणचींती है आज हुई।
रणजीतसिघ री रजपूतो, अगरेज कर दिया छुई मुई।।

जे जाट सूरमा लूठा है, गढ जबरो जीत नहीं पावा।
तो अेक बात बाकी रगी, से जूझ भरतपुर मर जावा।।

पाछा जावाला किण मू ढ, बरबादी मोटी होई है ।
जाटां रै हाथा गोरा री, पग पग पर लाशा सोई है ॥
मरिया रा मू डा उजळा है, जीवा हा मरं सरीसा हा ।
भय सू भाजा हा घडी घडी, दुनिया मे न्नू डा दीसा हा ।।'
श्रे बोल लेक रा लाज भरया, फौजा मे लाय लगा दीनी ।
थाक्योडा मे भर दियौ जोश, मुडदा मे जान जगा दीनी ।।
चौथै फेर विरगेडपति, 'मनसन' मोटो हमलौ कोनौ ।
रळमिळ काळी गोरी फौजा, चढ जोर मोकळौ कर लोनौ ।।
जय बोल राम रघुवशी री, गढवाळा गगन गु जाव हा ।
श्रे जाट काळ री झाट बण्या, पग आग घरता साव हा ॥
रणखेत अगन ज्यू धधक रह्यौ, गोळी गोळा री लाय भउ ।
जिणर लाग वो डिग इया, शाण कढियोडी रुल पड ।।
ब धुरग चढ पडता दीस, जे माय बढ मारधा जाव ।
भुरजाळा जोध भरतपुरिया, किण विध ही काबू नह श्राव ॥
खप्पर भर दियो जोगणिया, धरती न राती कर दीनी ।
जळ भरी किल खाळी साई, लोया सू चोखी भर दीनी ।।
कर जोर घणा ई जूझ्या पण, ढेकड गोरा री यल थक्यो ।
धिन धिन थू धरा भरतपुर री, हिदवाण री पाणी राख्यो ।।
दो मास हुयो सग्राम जबर, श्री खबर रात दिन री लागी ।
गोरा फीटा बण घडी घडी, फूटीज डर पूठा भागी ।।
दुरात फिरग्या री हुयगी, जाटा र जबर हाथा सू ।
वे होश भूलग्या भाला मे, धरती जीतणिया घाता सू ।।
गोरी फौजा मे हाय हाय, हारयोडी लश्कर धूज हो ।
मुख करिया नीचो लाट 'लेक', लचकाणो पडयो श्रमू झ हो ।।
जाटा र गढ मे उच्छव हो, जीता रगरलया मनाव हा ।
रणजीतसिंध रा ज्यकारा, गू ज हा गगन गु जाव हा ।।

इण भात विदेसी सत्ता रै विरुद्ध भारतीय शक्ति री श्रा प लडी जीत ही । इणसू निराशा रै वातावरण मे देस वासिया नै श्राशा री किरण निजर श्राई । इणसू ई इधकी बात श्रा हुई के राष्ट्रीय विचारधारा रा कविया न आपरी लेखणी चलावण री श्रर जवान

खोलण रो अक सुअवसर मिळयो । स्वतन्तता सग्राम रै इतिहास मे कविसरा रो ओ योगदान घणो महताऊ है । उणा जन भावना न अेक वाचा प्रदान करी । वारै लिख्योडा अनमोल आखर राष्ट्र रै जीवण मे घटित घटनावा रो साचो लेखो जोखो प्रस्तुत कर । इतिहास में लिख्योडी कई बाता मे थोडो घणो फरक आय सक पण कविया रा अे अनमोल बोल कीमती है, घणा साचा है ।

महाराजा मानसिंह (जोधपुर) रो राष्ट्रीय चरित्र

जोधपुर नरेश महाराजा मानसिंह रो जनम इसै वखत मे हुयो जद सगळो देस अेक बदळाव रै दौर मे हो । राजपूतानै मे इण बदळाव री गति ओरू ई तेज ही । देसी रजवाडा रै दबदबै रो सूरज आथूणी दिस मे ढळग्यो हो अर आख देस मे अग्रेजा री आधी सू साड करती वाजै ही । इस वखत मे महाराजा मानसिंह रो प्रखर व्यक्तित्व पूरै राजपूतानै मे चरचा रो विषय रह्यो । वार कारवैवार अर जीवण री घटनावा उण वखत रै परिवेश नै घणो प्रभावित कियो ।

महाराजा खुद अेक आलै दरजै रा कवि, काव्य-ममज्ञ अर कुशळ राजनीतिज्ञ हा । उणा अनेकू कविया, सगीतकारा अर चित्रकारा न आपर दरबार मे आश्रय दय नै वारी कद्र करी । वे नामी गुणग्राही राजा हुया । विद्वाना, पडता अर कविसरा रा तो वे अगाई दास हा । तत्कालीन काव्य अर कलावा रै उत्थान मे वारो लूठो योगदान रह्यो । वे आपरै लार पाडुलिपिया, हस्तलिखित ग्र था अर चित्रामा रो अेक अनमोल खजानो छोड न गया ।[1]

जिको विद्वान अर इतिहास प्रसिद्ध पुरुष वारै सपक मे आया उणा वारा घणा वखाण किया । उदाहरण सरूप जेम्स टाड लिख्यो है—'जोधपुर महाराजा मानसिंह रो जीवण सघष अर धीरज रो अेक अनोखो नमूनो है । वो कोई पण राष्ट्र रै वास्त कोई पण जुग मे अेक *प्रकाशस्थभ रो काम देय सक ।*'[2] इणो'ज भात सदरलड नाम र अेक दूज अग्रेज अधिकारी जिको मानसिंह न

---

1 ग्र थ अर चित्राम जोधपुर र पुस्तक प्रकाश म सग्रहित है ।

2 टाड जिल्द प्रथम, पृ स 561

आछी तरिया जाणतो, लिख्यो है—'मानसिंह जिसो लायक अर जोगो राजा म्हन आखै भारत मे कठैई निगै नी आव। देसी राजावा मे फगत ओ इज अेक इसो आदमी है जिण माथै विस्वास कियो जाय सकै।'[1]

दूजी कानी मि केवेनडिश अर लाकेट इत्याद अंग्रेज अधिकारिया री दीठ मे 'मानसिंह अगाई गैर जिम्मेदार राजा है, जिको साल भर मे फगत पाच वार आपरो दरवार लगावै अर नाथ सम्प्रदाय रा साधुवा रै इसारा माथै आपरो राज चलावै।'[2]

इतिहास रो वणन करणो म्हारै लेखन रो विषय कोनी पण मानसिंह रा विवादास्पद व्यक्तित्व न समभण वास्तै सक्षप मे इण राजा री अैतिहासिक पृष्ठभूमि जाणणी जरूरी है। इणन जाण्या विना आपा वारै राष्ट्रवादी सरूप न आछी तरिया नी ओळख सका अर थार इण सरूप नै उजागर करण खातर कविया जिको काव्य रचना करनै योगदान दियो उणरो मर्म ई नी समझ सका।

जिण भात पूव पीठिका मे आ वात दरसाई जाय चुकी है के उण वखत रजवाडा मे राजगादी वास्त कई कावतरा (षडयन्त्र) चालता रैवता। इतिहास मे इसा अनेक दाखला मौजूद है के जद बेटै वाप न अर भाई भाई नै मारन राज माथै कब्जो कीधो, अठा ताई'ज नी पण लुगाई आपरा धणी न धोख सू विष देय न मरवाय नाख्यो। इतिहास इण वात रो गवाह है के उण वखत रा रजवाडा गृह युद्ध रा अखाडा वण्योडा हा। इण वैर विरोध अर आपसी ईसक सू आखी राजपूत कौम गारत हुयगी ही अर देस री शक्ति खड खड होयन विखरगी ही।

जोधपुर र राजघराणै मे ई ओ रोग लाग्योडो हो। मानसिंह रै दादा विजयसिंह रै सात बेटा हा। मानसिंह रा पिता गुमानसिंह वारी पाचवी सतान हा। मानसिंह रै जनम री वखत विजयसिंह सफा पुखती अवस्था मे हा। वारा राजकु वर ई मन मे राजगादी री हूस लिया अधवूढ होयग्या हा। विजयसिंह रो अेक मरजीदान

---

1 सदरलैंड री भारतमन्त्री र नाम कागद, फरवरी 1840

2 केवेंडनिश री कागद काल बक रै नाम 27 जुन 1828 स 24 अप्रैल री।

पासवान ही गुलाबराय । सगळो राज काज गुलाबराय रै हुकम सू चालतो । महाराजा उणरै अगाई वशीभूत हुयोडा हा । गुलाबराय री मशा सै सू छोटोड राजकु वर शेरसिंह नै गादी माथै बिठावण री ही । पण आ बात नियम, कानून अर परपरा रै सफा खिलाफ ही । इण बात न लेय'र राजपरिवार मे कई कावतरा घडीज्या जिणसू रजवाडो तो काई पण पूरो प्रदेश ई कमजोर पडग्यो ।

मानसिंह फगत [redacted] बरस रा हा । उण वखत वारी माता रो अर दस बरस रा हुया तद वारै पिता रो देहात होयग्यो । गुलाबराय रै पेट सू अेक टाबर जनम्यो हो तेजसिंह । पण वो टाबरपण मे ई मरग्यो । इण कारण गुलाबराय इण निमाईतै टाबर मानसिंह नै घणै लाडकोड सू पाळ पोप न मोटो कियो ।[1] पण ई सन् 1792 मे षडयत्रकारिया गुलाबराय री हत्या कराय दी । विजयसिंह र पाटवी कु वर फतेहसिंह रो दत्तक पुत्र भीमसिंह घणो निदय अर क्रूर हो । (जनश्रुति रै मुजब वो 'पापीराजा' रै नाम सू ओळखीजतो) इण कारण गुलाबराय रै जीवता थका ई मानसिंह अर शेरसिंह न प्राण रक्षाथ जाळोर र किलै मे भेज दिया हा । सन 1793 मे विजयसिंह रो ई देहात होयग्यो । भीमसिंह वारै शरीर छोडचा पै'लीज जोधपुर रै किलै माथै कब्जो करन बैठग्यो हो । मानसिंह आपर दादा विजयसिंह रै राम चरण हुया आपर काका शेरसिंह साग अेकर जोधपुर आया पण प्राणा रो खतरो जाण'र पाछा जाळोर रै किलै मे पूगग्या । इण किलै मे वान पूरा ग्यारै बरस रैवणो पडचो । किलै मे रैवता थका वान कई मुसीबता उठावणी पडी । कई बार तो इसा मौका आया जद किलै मे खाद्य सामग्री अगाई खूटगी, तद वारा जीव जोग अर स्वामी भगत आदमिया वारी मदद करी । इतरा बरस घेर मे रैवण सू वे अगाई निराश होयग्या हा अर भीमसिंह रै आग आत्म-समर्पण करण रो विचार करण लाग्या हा । पण उणी'ज दिना मे नाथ सप्रदाय रै सत देवनाथ वान सदेश भेज्यो के म्हार गुरू जळधर नाथ री आज्ञा मुजब आप तीन च्यार दिन ओरू गाढ राखजो । इणरै पछै मारवाड रो राज आपन मतै ई मिळ जासी । नाथजी री भविष्य वाणी सही निकळी । उणरै पछै मानसिंह

---

1 मारवाड का इतिहास, द्वितीय भाग प विश्वेश्वरनाथ रेऊ, पृ स 401

हजूरी मे लाग्योडा हा, पण मानसिंह इणसू अळगा रह्या। इण कारण वारै तेजस्वी सरूप तत्कालीन कविया नै आपरै कानी आकृष्ट किया। कविया वारी प्रशस्ति म ऊजळै मन सू प्रशषा करता काव्य रचना करी। उण वखत राजपूतानै रा सगळा नामचीन कवि डिंगल मे काव्य रचना करता इण कारण घणकरा कविया डिंगल गीता मे ई आपरी प्रशषा करी।

उदाहरण सरूप महाराजा मानसिंह र काव्यगुरू अर घनिष्ठ मित्र कविराजा बाकीदास वारी तारीफ करता अेक डिंगल गीत मे लिख्यौ है—'गरुड रूपी अंग्रेज न आपरै पूर दळ बळ रै सागै आवतौ देख'र सर्प रूपी राजावा मे खलवली मचगी। इसी विखमी वेळा मे शिव सरूप महाराजा मानसिंह आडा आया अर वारी रक्षा करी।

आपरी प्रळयकारी तलवार न तोल'र अंग्रेज जोधा बळवान गरुड री दाईं देस माथै चढाई करनै आयग्या है। किणरी हिम्मत है जिकौ वारै नेत्रा सू बरसती अग्नी री सामनौ करै। अे सगळा कायर राजा महाराजा मानसिंह री ओट मे आय'र आपरी प्राण रक्षा कर रह्या है।

अंग्रेज रूपी गरड जठै कठै ई पूग सर्प रूपी नरेश तुरत उणरी आधीनता स्वीकार कर लीवी। पण मानसिंह रै सामो अंग्रेज विवश है, उठै वे की नी कर सक। इण कारण दूजै राजावा (सर्पा) मानसिंह (शिव) री भुजावा मे शरण लेयली है —

दूहौ

देख गरड अगरेज दल, वणिया न्रप अन ब्याल
जठ मान जोधाहरौ, भूप हुवौ चन्द्र भाल॥

गीत

त्रअड तोड अगरेज भड गरुड आया तेठ,
चड कुण धक धखनेण चोलै॥
जठै अहराव जिम भूप भागे जिक,
ऊबर महेसर 'मान' ओलै॥
कटठ थट किलकता तणा खगरावकल,
बाजपख कूत चच जत्त वरण॥

उण समै उरगगत न्रपत प्रावै उड,
सुतन गुमनेस त्रिपुरार सरणें ॥

ताखडा फिर फिरगाण तारख तरह,
दुरग वका लियण रेण दधमा ।।

व्याल विध जठै, प्रवनीप प्रावै वहै,
कमध जटधार रै प्रोट कदमा ।।

तेज गोरा गरुड हट तिण ताळरा,
तन जग भ्राळरा दवण तात ।।

सिरमणी भाळरा जेम हिंदू सरब,
'मान' चद्रभाळ रा भुजा माथै ।।[1]

इणी'ज भात अेक दूजै कवि श्री नाथूराम लालस आपरै डिंगल गीत मे मानसिंह रै राष्ट्रीय सरूप री प्रशसा करता घणी मौलिक कल्पना करी है । उणा जोधपुर नें काशी री उपमा देवता लिख्यौ है के जिण भात सूरज भगवान री रथ काशी सू अळगौ अळगौ होयन ई निकळै, उणी'ज भात अग्रेजा री फौजा ई जोधपुर सू अळगी'ज रव । जे कदई अग्रेजी फौजा नें अठीनें आवणो पडै तो वे जाण-बूझ'र जोधपुर सू अळगी'ज रवै, जिण भात सूरज रै रथ रा घोडा काशी सू अळगा रैवै । वे काशी रै माथै कर होयनै नी निकळ'र डावा-जीमणा निकळ जावै—

गीत

महाराज मान मरधरा माथ, चमू फिरगी नाह चढ ।
रै जाण सूरज वाळो रथ, कासी सू आतरै कढ ।।

मारवाड ऊपर फिरगी मिल, परदल घोडा खड न पास ।
सिवपुर हुता दूर सहेतो, सूर बगल काढ सतपास ।।

गोरा मिलै जोधपुर गढ सू, कटक दूर टल जाय कहै ।
सिवपुर भाण विमाण सदाई, वामो कै जीमणो वहै ।।

---

1 गोरा हटजा (परपरा) अक, पृ स 76

नाथ सम्प्रदाय रा पक्का भगत बणग्या। गादी माथै बैठता ई उणा देवनाथ नै जाळोर सू जोधपुर बुलायो अर आपरा धरमगुरू कायम किया। वे जीवण लग नाथा रा पक्का भगत रह्या।

इण भात मानसिंह न मारवाड री राज पाट तो मिळग्यो पण सू डार्ग मुसीबता अलेखू ही। मारवाड रा कई सामत सरदार मानसिंह रै खिलाफ हा जिणा मे पोकरण ठाकर सवाईसिंह अगी-वाण हो। उणा मिळ'र अेक कानूनी सवाल उठायो के भीमसिंह री अेक राणी गभवती है, जे उणरै पेट सू कुवर जनम्यो तो उणरी काई होसी ? की इतिहासकारा रो मत है के ओ मानसिंह रै विरो-धिया रो पडयन्त्र मात्र हो। कव कै अेक नवजात शिशु न लाय न राजम्हैल मे राख दियो अर उणरो नाम धोक्ळसिंह राख्यो। की इतिहासकार इण घटना न सही मानै।

भीमसिंह रो देहात ई सन् 1803 (वि स 1860 रै काती महीन) मे हुयो। पण धोक्ळसिंह रो जनम फागण मे हुयो बताईजै। इण सगळी गडबड मे तीन च्यार महीना निकळग्या अर मानसिंह रो राज्याभिषेक जावतो माघ महीन मे हुयो।

धोकळसिंह रै जनम अर कृष्णाकुमारी रो ब्याव राजपूतानै रै तत्कालीन इतिहास नै घणो प्रभावित कियो। इण दोनू वाता माथै सगळ प्रदेश रा रजवाडा दो दळा मे बटग्या। वारै आपसरी मे भयकर युद्ध हुया अर माय रा माय न कई पडयन्त्र चालता रह्या जिणा मे केई मिनखा री हत्यावा हुयगी।

राटपाट सभाळता पछ मानसिंह अेक कानी तो देवनाथ नै धरमगुरू बणाय'र वारी आना मुजब राजकाज चलावणो सरु कियो अर दूजी कानी महाकवि वाकीदास न आपरो काव्यगुरू बणाय न उणा सू काव्य रचना साग कई भापावा री शिक्षा ग्रहण करी। इण दोनू व्यक्तिया रो मानसिंह रै जीवण माथै घणो असर रह्यो जिणसू तत्कालीन इतिहास ई प्रभावित हुयो।

मानसिंह रै जीवण काल मे सगळ भारत मे अग्रेजा रो प्रभुत्व बढतो जावै हो। अठीन देसी रजवाडा नमी मोटी मामूली वाता माथै आपसरी मे लडाई टटा करन आपरो शक्ति रो अपव्यय करण मे लाग्योडा हा। मराठा शासका मे भोसले, सिंधिया अर होल्कर इत्याद मोट मोट राजावा री होळै होळै पतन होवण लागग्यो हो। इण भात भारतीय शक्ति दिन दिन निस्तेज होवती जाय री ही।

पासवान ही गुलाबराय । सगळो राज काज गुलाबराय र हुकम सू चालतो । महाराजा उणरै अगाई वशीभूत हुयोडा हा । गुलाबराय री मशा सै सू छोटोड़ै राजकुवर शेरसिंह नै गादी माथ बिठावण री ही । पण श्रा वात नियम, कानून श्रर परपरा रै सफा खिलाफ ही । इण वात नै लेय'र राजपरिवार मे कई कावतरा घडीज्या जिणसू रजवाडो तो काई पण पूरो प्रदेश ई कमजोर पडग्यो ।

मानसिंह फगत छ बरस रा हा । उण वखत वारी माता रो श्रर दस बरस रा हुया तद वारै पिता री देहात होयग्यो । गुलाबराय रै पेट सू श्रेक टावर जनम्यो हो तेजसिंह । पण वो टावरपण मे ई मरग्यो । इण कारण गुलाबराय इण निमाईतै टावर मानसिंह न घणै लाडकोड सू पाळ पोप न मोटो कियो ।[1] पण ई सन् 1792 मे षडयन्त्रकारिया गुलाबराय री हत्या कराय दी । विजयसिंह र पाटवी कुवर फतेहसिंह रो दत्तक पुत्र भीमसिंह घणो निदय श्रर क्रूर हो । (जनश्रुति रै मुजब वो 'पापीराजा' रै नाम सू श्रोळखीजतो) इण कारण गुलाबराय र जीवता थका ई मानसिंह श्रर शेरसिंह नै प्राण रक्षाथ जाळोर रै किलै मे भेज दिया हा । सन् 1793 मे विजयसिंह रो ई देहात होयग्यो । भीमसिंह वारै शरीर छोडघा पै'लीज जोधपुर रै किलै माथै कब्जो करने बैठग्यो हो । मानसिंह श्रापरै दादा विजय-सिंह रै राम चरण हुया श्रापरै काका शेरसिंह सागै श्रेकर जोधपुर श्राया पण प्राणा री खतरो जाण'र पाछा जाळोर रै किलै मे पूगग्या । इण किलै मे वानै पूरा ग्यारै बरस रैवणो पडचो । किल मे रैवता थका वान कई मुसीवता उठावणी पडी । कई बार तो इसा मौका श्राया जद किलै मे खाद्य सामग्री अगाई खूटगी, तद वारा जीव जोग श्रर स्वामी भगत श्रादमिया वारी मदद करी । इतरा वरस घेर मे रैवण सू वे अगाई निराश होयग्या हा श्रर भीमसिंह र श्राग श्रात्म-समपण करण रो विचार करण लाग्या हा । पण उणी'ज दिना मे नाथ सप्रदाय रै सत देवनाथ वानै सदेश भेज्यो के म्हार गुरु जळधर नाथ री श्राज्ञा मुजब श्राप तीन च्यार दिन श्रौर गाढ राखजो । इणरै पछै मारवाड री राज श्रापनै मतै ई मिळ जासी । नाथजी री भविष्य वाणी सही निकळी । उणरै पछै मानसिंह

---

1 मारवाड का इतिहास, द्वितीय भाग प विश्वेश्वरनाथ रऊ पृ स 401

आछी तरिया जाणतो, लिख्यो है—'मानसिंह जिसो लायक अर जोगो राजा म्हून आख भारत मे कठेई निगे नी आवै। देसी राजावा मे फगत ओ इज अेक इसो आदमी है जिण माथ विश्वास कियो जाय सकै।'[1]

दूजी कानी मि केवेनडिश अर लाक्टे इत्याद अग्रेज अधि-कारिया री दीठ मे 'मानसिंह अगाई गैर जिम्मेदार राजा है, जिको साल भर मे फगत पाच बार आपरो दरबार लगाव अर नाथ सम्प्र-दाय रा साधुवा रै इशारा माथै आपरो राज चलाव।'[2]

इतिहास रो वणन करणो म्हार लेखन री विषय कोनी पण मानसिंह रा विवादास्पद व्यक्तित्व नै समभण वास्तै सक्षप मे इण राजा री अैतिहासिक पृष्ठभूमि जाणणी जरूरी है। इणन जाण्या बिना आपा वारै राष्ट्रवादी सरूप न आछी तरिया नी ओळख सका अर वार इण सरूप न उजागर करण खातर कविया जिको काव्य रचना करनै योगदान दियो उणरो मम ई नी समभ सका।

जिण भात पूव पीठिका मे आ बात दरसाई जाय चुकी है के उण वखत रजवाडा मे राजगादी वास्तै कई कावतरा (षडयन्त्र) चालता रैवता। इतिहास मे इसा अनेक दाखला मौजूद है के जद बेटै बाप नै अर भाई भाई न मारन राज माथ कब्जो कीधो, अठा ताईंज नी पण लुगाई आपरा धणी न धोपै सू विष देय नै मरवाय नाख्यो। इतिहास इण बात री गवाह है के उण वखत रा रजवाडा गृह युद्ध रा अखाडा बण्योडा हा। इण वर विरोध अर आपसी ईसकै सू आखी राजपूत कौम गारत हुयगी ही अर देस री शक्ति खड खड होयन बिखरगी ही।

जोधपुर रै राजघराण मे ई ओ रोग लाग्योडो हो। मानसिंह र दादा विजयसिंह रै सात बेटा हा। मानसिंह रा पिता गुमानसिंह वारी पाचवी सतान हा। मानसिंह र जनम री वखत विजयसिंह सफा पुखती अवस्था मे हा। वारा राजकु वर ई मन मे राजगादी री हूस लिया अधवूढ होयग्या हा। विजयसिंह री अेक मरजीदान

1 सन्दरलड रो भारतमत्री रै नाम कागद फरवरी 1840

2 केवेडनिश रो कागद कान बक र नाम, 27 जून 1828 रा 24 अफ पो।

पासवान ही गुलाबराय । सगळो राज काज गुलाबराय रै हुकम सू चालतो । महाराजा उणरै अगाई वशीभूत हुयोड़ा हा । गुलाबराय री मशा सै सू छोटोडै राजकु वर शेरसिंह नै गादी माथै विठावण री ही । पण ग्रा बात नियम, कानून ग्रर परपरा रै सफा खिलाफ ही । इण बात नै लेय'र राजपरिवार मे कई कावतरा घडीज्या जिणसू रजवाडो तो काई पण पूरो प्रदेश ई कमजोर पडग्यो ।

मानसिंह फगत छ बरस रा हा । उण वखत वारी माता रो ग्रर दस बरस रा हुया तद वारै पिता रो देहात होयग्यो । गुलाबराय रै पेट सू अेक टाबर जनम्यो हो तेजसिंह । पण वो टाबरपण मे ई मरग्यो । इण कारण गुलाबराय इण निमाईतै टाबर मानसिंह नै घणै लाडकोड सू पाळ पोष न मोटो कियो ।[1] पण ई सन् 1792 मे षडयत्रकारिया गुलाबराय री हत्या कराय दी । विजयसिंह रै पाटवी कु वर फतेहसिंह रो दत्तक पुत्र भीमसिंह घणो निदय ग्रर क्रूर हो । (जनश्रुति रै मुजब वो 'पापीराजा' रै नाम सू ग्रोळखीजतो) इण कारण गुलाबराय रै जीवता थका ई मानसिंह ग्रर शेरसिंह न प्राण रक्षाथ जाळोर रै किल मे भेज दिया हा । सन् 1793 मे विजयसिंह रो ई देहात होयग्यो । भीमसिंह वारै शरीर छोडया प'लीज जोधपुर रै किलै माथै कब्जो करनै वैठग्यो हो । मानसिंह ग्रापरै दादा विजयसिंह रै राम षरण हुया ग्रापरै काका शेरसिंह साग अेकर जोधपुर ग्राया पण प्राण री खतरो जाण'र पाछा जाळोर र किलै मे पूगग्या । इण किलै म वानै पूरा ग्यारै बरस रैवणो पडयो । किलै मे रैवता थका वान कई मुसीवता उठावणी पडी । कई वार तो इसा मौका ग्राया जद किल मे खाद्य सामग्री अगाई खूटगी, तद वारा जीव जोग ग्रर स्वामी भगत ग्रादमिया वारी मदद करी । इतरा बरस घेर मे रैवण सू वे अगाई निराश होयग्या हा ग्रर भीमसिंह रै ग्रागै ग्रात्म-समपण करण रो विचार करण लाग्या हा । पण उणी'ज दिना मे नाथ सप्रदाय रै सत देवनाथ वान सदेश भेज्यो के म्हारै गुरु जळधर नाथ री ग्राज्ञा मुजब ग्राप तीन च्यार दिन ग्रोरू गाढ राखजो । इणरै पछ मारवाड रो राज ग्रापन मतै ई मिळ जासी । नाथजी री भविष्य वाणी सही निकळी । उणरै पछै मानसिंह

1 मारवाड का इतिहास, द्वितीय भाग प विश्वेश्वरनाथ रेऊ, पृ स 401

नाथ सम्प्रदाय रा पक्का भगत वणग्या। गादी माथै बैठता ई उणा देवनाथ न जाळोर सू जोधपुर बुलाया अर आपरा धरमगुरू कायम किया। वे जीवण लग नाथा रा पक्का भगत रह्या।

इण भात मानसिह नै मारवाड रौ राज पाट तो मिळग्यो पण मूडागै मुसीवता अलेखू ही। मारवाड रा कई सामत सरदार मानसिह र खिलाफ हा जिणा मे पोकरण ठाकर सवाईसिह आगीवाण हो। उणा मिळ'र अेक कानूनी सवाल उठायौ के भीमसिह री अक राणी गभवती है, जे उणरै पेट सू कु वर जनम्यौ तो उणरौ काई होसी ? भी इतिहासकारा रौ मत है के ओ मानसिह र विरोधिया रौ पडयन्त्र मात्र हो। कव के अेक नवजात शिशु न लाय नै राजम्हैल मे राख दियौ अर उणरौ नाम धोक्ळसिह राख्यौ। की इतिहासकार इण घटना न सही मान।

भीमसिह रौ देहात ई सन् 1803 (वि स 1860 रै काती महीन) मे हुयौ। पण धोक्ळसिह रौ जनम फागण मे हुयौ बताईज। इण सगळी गडवड मे तीन च्यार मही‌ना निकळग्या अर मानसिह रौ राज्याभिषेक जावतौ माघ महीनै मे हुयौ।

धोक्ळसिह रै जनम अर कृष्णाकुमारी रौ ब्याव राजपूतानै रै तत्कालीन इतिहास नै घणौ प्रभावित कियौ। इण दोनू बाता माथै सगळै प्रदेश रा रजवाडा दो दळा मे वटग्या। वारै आपसरी मे भयकर युद्ध हुया अर माय रा माय न कई पडयन्त्र चालता रह्या जिणा मे केई मिनखा री हत्यावा हुयगी।

राटपाट सभाळवा पछै मानसिह अेक कानी तो देवनाथ न धरमगुरू वणाय'र वारी आज्ञा मुजब राजकाज चलावणौ सरु कियौ अर दूजी कानी महाकवि बाकीदास न आपरौ काव्यगुरू वणाय न उणा सू काव्य रचना सागै कई भाषावा री शिक्षा ग्रहण करी। इण दोनू व्यक्तिया रौ मानसिह र जीवण माथै घणौ असर रह्यौ जिणसू तत्कालीन इतिहास ई प्रभावित हुयौ।

मानसिह रै जीवण काल मे सगळ भारत मे अग्रेजा री प्रभुत्व वढतौ जावै हो। अठीन देसी रजवाडा ननी मोटी मामूली बाता माथ आपसरी मे लडाई टटा करन आपरी शक्ति रौ अपव्यय करण मे लाग्योडा हा। मराठा शासका मे भोसले, सिंधिया अर होल्कर इत्याद मोटै मोट राजावा रौ होळै होळ पतन होवण लागग्यो हो। इण भात भारतीय शक्ति दिन दिन निस्तेज होवती जाय री ही।

मानसिंह नै इणांज परिस्थितिया मे आपरो सगळो जीवण बितावणो पड्यो । इण कारण वानै पग पग माथै संघर्ष करणो पड्यो । सैं सू पैं'ली तो वानै परिवार रै सदस्या सू लडणो पड्यो, इणरै पछै सरदार सामता सू जूझणो पड्यो अर तीजो मोरचो अंग्रेजा सागै लेवणो पड्यो । यू अंग्रेजा साग तो वारो झगडो जीवण लग चालतो रह्यो ।

रजवाडा रै आपसी कळह रै अलावा इण प्रदेस री जनता मराठा अर पिंडारिया रै उत्पात सू ई काठी तग आयोडी ही । मराठा रै बार बार र आक्रमणा उदयपुर, जयपुर इत्याद रियासता री तो घाण काढ दियो हो । इण कारण राज्पूताने रा घणाकरा रजवाडा कोई इसी ताक्त री ओट मे जावणो चावता जिको वारी इण लुटेरा सू रक्षा कर सक । उठीन अंग्रेज तो इसै मौक री ताक मे ई हा । वे आपरो मायाजाळ फलावण मे लाग्योडा ई हा, इण कारण सगळा देसी रजवाडा आपरी मान मरजादा खूटी माथै टेर नै अेक अेक करन अंग्रेजा सागै सधिया करण लाग्या ।

इसी विखमी वेळा मे फगत मानसिंह अेक इसा दूरदरसी राजा हा, जिणा इण बात नै आछी तरिया जाणली ही के आ विदेसी सत्ता अेक दिन आखै भारत नै गुलाम बणाय न छोडसी । इण कारण सरुपात मे ई इणरो घोर विरोध होवणो चाइजै । उणा तो आपरी कानी सू इणरो जीवण भर विरोध कियो ई अर दूजा न ई प्रेरणा देवता रह्या । उणा जसवतराव होल्कर अर अप्पा साहेब भोसले जिसा अंग्रेजा रा कट्टर दुसमणा न ई वखत पडचा आप रै राज मे शरण दीवी अर अंग्रेजी सत्ता री की गिनरत नी करी । लार्ड वटिक जिण वखत अजमेर मे दरबार कियो तो सगळै रजवाडा सू टळ न उणा इण दरबार रो बहिष्कार कियो अर उणमे हाजर नी हुया । अंग्रेजा कानी सू खिराज देवण री बात वे जीवण लग टाळता रह्या । अंग्रेजी हकूमत री आज्ञावा रो वे बराबर उल्लघण करता रह्या । उणा जठा ताई वण सक्यो अंग्रेजा सागै सधि ई नी करी ।

औ वारो राष्ट्रवादी सरूप हो जिको जीवणलग स्वतत्रचेता वण्यो रह्यो अर अंग्रेजी सत्ता रै सामी जरा पण नी नमियो । उण वखत राजपूताने रा सगळा रजवाडा अंग्रेजा री चापलूसी अर जी-

हजूरी मे लाग्योडा हा, पण मानसिंह इणसू अळगा रह्या। इण कारण वार तेजस्वी सरूप तत्कालीन कविया नें आपरै कानी आकृष्ट किया। कविया वारी प्रशस्ति मे ऊजळे मन सू प्रशंसा करता काव्य रचना करी। उण वखत राजपूतान रा सगळा नामचीन कवि डिंगल मे काव्य रचना करता इण कारण घणकरा कविया डिंगल गीता में ई आपरी प्रशंसा करी।

उदाहरण सरूप महाराजा मानसिंह रै काव्यगुरू अर घनिष्ठ मित्र कविराजा बांकीदास वारी तारीफ करता अेक डिंगल गीत मे लिख्यौ है—'गरुड रूपी अंग्रेज नें आपरै पूरै दळ बळ रै सागै आवतौ देख'र सप रूपी राजावा में खलबली मचगी। इसी विखमी वेळा मे शिव सरूप महाराजा मानसिंह आडा आया अर वारी रक्षा करी।

आपरी प्रळयकारी तलवार न तोल'र अंग्रेज जोधा बळवान गरुड री दाई देस माथै चढाई करन आयग्या है। किणरी हिम्मत है जिको वारै नेत्रा सू बरसती अग्नी रौ सामनो करै। अे सगळा कायर राजा महाराजा मानसिंह री ओट मे आय'र आपरी प्राण रक्षा कर रह्या है।

अंग्रेज रूपी गरुड जठै कठै ई पूगै सप रूपी नरेश तुरत उणरी आधीनता स्वीकार कर लीवी। पण मानसिंह रै सामी अंग्रेज विवश है, उठ वे की नी कर सकै। इण कारण दूजै राजावा (सर्पां) मानसिंह (शिव) री भुजावा मे शरण लेयली है—

दूहो

देख गरड अंगरेज दल, बणिया नृप अन व्याल
जठ मान जोधाहरो, भूप हुवो चन्द्र भाल ॥

गीत

ग्रजड तोड अंगरेज भड गरुड आया तठ
धड़ फुण धक धसनेण चोलं ॥
जठ अहराव जिम भूप भाग जिक,
ऊबर महेसर 'मान' ओलं ॥
कटठ थट किलकता तणा खगरावकल,
बाजपस कूत चच जत्त वरण ॥

कासी सथर घणी नव कोटी, समद प्रयाग कपनी साथ ।
बेडा पार उतारण आवो, नेडा भीर जल धर नाथ ।।[1]

सधियां री उल्लघण

मानसिह रै पूरै शासनकाल मे परिस्थितिया वारै प्रतिकूल रही । जे वे चावता तो दूजै राजावा रै ज्यू अग्रेजा री शरण मे जायन सुख-चन सू जीवण विताय सक हा । पण वान तो इण विदेसी सत्ता माथै अतस सू ई नफरत ही । विदेसी सत्ता री शरण मे जावण पात उणा जीवणलग फोडा भुगतणा ठीक समझ्यो । परिस्थितिया रै वशीभूत होयन जे कदेई वान अग्रेजा सू सपक राखणो ई पडयो तो मौको आवता ई पाछो विरोध सरु कर दियो । वारै शासनकाल मे अग्रेजा सागै जिकी सधिया हुई वासू सुभट लखावै के कई बार वे सधिया वाने नाछूटक मजबूरी री हालत मे करणी पडी पण मूळ रूप सू वे अग्रेजा र खिलाफ हा अर आखी उमर खिलाफ ई रह्या ।

मानसिह रै राजपाट सभाळता ई अग्रेजा ई सन् 1803 र दिसबर महीन मे वार सागै अेक सधि करण री पेशकश करी ही ।[2] आ सधि सम्मान जनक मुद्दा माथ आधारित ही । इणर मुजब महाराजा मानसिह न नी तो कोई प्रकार रो कर कपनी सरकार नै देवणो हो अर नी कोई प्रकार री आधीनता ई स्वीकार करणी ही । आ बराबरी री हैसियत वाळा शासका रै विचाळै अेक दोस्ताना सधि ही । अग्रजा री पूरी इच्छा ही के मानसिह इणन मान लेव । पण उणी'ज वखत अचाणचक अेक इसी घटना घटित हुयगी जिणसू बातडी जमी कोनी । अग्रेजा रो मोटो दुस्मण जसवतराव होल्कर भरतपुर रै किलै सू निकळ'र मानसिह री शरण मे आयो अर मानसिह अग्रेजा री परवाह किया विना उणन शरण देयदी । इण भांत सधि धरी रैयगी ।

उण वखत राजनतिक परिस्थितिया मानसिह रै प्रतिकूळ ही ।

---

1 परपरा गोरा हटजा अक पृ स 77
—चारण साहित्य का इतिहास भाग दो से डा मोहनलाल जिज्ञासु, पृ स 91

2 राजपूताना गजेटियर, जिल्द III अ , पृ स 70

पोकरण ठाकर सवाईसिंह अर दूजा मानसिंह विरोधी सरदार सामता री गुट्ट मानसिंह न गादी माथै सू उतार नें भीमसिंह रै तथाकथित बेटै धोकळसिंह नै गादी सू पणी चावतो । इसी परिस्थितिया मे मानसिंह री ठौड कोई दूजो शासक होवतो तो झट अग्रेजा री शरण मे चुग्रो जावतो अर चैन सू आपरो जीवण बितावतो । पण मानसिंह जिसै स्वतन्त्रचेत्ता अर स्वाधीनता प्रेमी शासक इसी विकट परिस्थितिया में ई अग्रेजा सू सधि नी करनै वारै कट्टर दुसमण जसवतराव होल्कर न शरण देवणी ठीक समझी ।

अग्रेज षडयन्त्रकारिया जद पाधरी आगळी सू घी निकळनो नी दीठो तो दूजो मारग देख्यो । उणा अमीरखा पिंडारी नें कैय न ई सन् 1814 मे मानसिंह रै धारमिक गुरु देवनाथ अर दीवाण इद्रराज री हत्या कराय नाखी ।[1] अे दोनू जणा महाराजा रा खास सलाहकार अर मनमेळू हा । यारी हत्या सू मानसिंह रै मन माथै घणो खराब असर पडयो । वानै राज काज सू वैराग सो होयग्यो अर उणा सगळो काम नाथा रै हाथ में सूपनै अेकातवास धारण कर लियो ।[2] उठीनै विद्रोही सरदारा मानसिंह रै अेकाअेक राजकुवर नै पट्टी पढाय नै महाराजा रै खिलाफ कर दियो अर उणै राज गादी माथ कब्जो कर लियो ।[3]

अग्रेजा रै मनचींती हुई । वे तो श्रो ई चावै हा । उणा छतरसिंह रै साग ई सन् 1818 मे अेक सधि करी जिणरै मुजब हर वरस अेक लाख अस्सी हजार रुपिया अग्रेजा नै देवणा तै किया । इणरै उपरात 1500 घुडसवार रियामत रै खरचै माथै अग्रेजा री मदद सारू हरवखत त्यार राखण री बात ई तै हुई । अग्रेजा नै रियामत रै घरेलू मामला मे ई दखलदाजी करण रो अधिकार दिरीज्यो ।[4]

---

1 जोधपुर राज्य की ख्यात, जिल्द IV पृ स 70-74, वीर विनोद जि 2 पृ स 865

2 राजपूताना गजेटियर, जिल्द III अे, पृ स 71

3 जोधपुर राज्य की ख्यात, जिल्द IV पृ स 75-78, वीर विनोद, जि 2 पृ स 860

4 जोधपुर राज्य की ख्यात जिल्द IV, पृ स 82-84, वीर विनोद जिल्द 2 पृ स 888-891

मानसिंह नैं आ संधि घणी अपमानजनक लागी पण वारै हाथ री बात नी ही। इसी फोरी संधि रै वास्तै छतरसिंह अर वारा सलाहकार जिम्मेदार हा। संधि मानसिंह री इच्छा रै खिलाफ हुई ही। छतरसिंह नाथ सम्प्रदाय रो ई विरोधी हो अर उण आपरा धरमगुरू चोपासणी रा गुसाईंजी न बणाया हा।[1] इण सगळी बाता रै लार विरोधी सामंता अर अंग्रेजा रो हाथ हो।

ओ मारवाड रो दुरभाग हो के उणनैं अंग्रेजां सागै इसी अपमानजनक संधि करणी पडी। इणसू पै'ली तो अंग्रेज खुद सम्मानजनक संधि खातर मोहरा करै हा। इण बात सू मानसिंह री अंग्रेज विरोधी भावनावा उजागर होवै।

इणरै फगत अेक बरस बीत्या पछै छतरसिंह री देहांत होयग्यो। मानसिंह रै दुख री पार नी रह्यो पण मजबूरी री हालत मे वान पाछो राजकाज सभाळणो पडयो। पण शासन सभाळया प'ली उणा अंग्रेजा सू ओ वचन लेय लियो के वे राज रै अंदरणी मामला मे कोई दखलदाजी नी करसी।[2] इणरै पछै नी तो उणा कपनी न खिराज री रकम भरी अर नी कदेई सैनिक मदद करी। कपनी रकम मागती तो वे टाळाटूळी करता रह्या अर जीवण भर अंग्रेजा नैं टूंगावता रह्या।

छतरसिंह रै सागै हुई संधि मुजब अंग्रेजा न खिराज री रकम मे सू लाल पाई ई नी मिळबा सू अंग्रेज मानसिंह माथ घणा नाराज हा। तत्कालीन अे जी जी कर्नल सदरलैंड ई सन् 1839 मे मारवाड र असतुष्ट जागीरदारा री अेक सभा बुलाई अर वान पूछ्यो के जे अंग्रेजी फौजा मारवाड माथ हूमलो कर तो वे किणर पक्ष मे रहसी? इण बात माथै सायोण ठाकर सगतसिंह पडूत्तर दियो के जनमभोम री रक्षा खातर वान मारवाड रै पक्ष मे रैवणो पडसी। सदरलैंड आ बात सुण'र बळ न राख होयग्यो।

उणी'ज बरस सदरलैंड अर लडलो दस हजार सनिका साग जोधपुर माथै आक्रमण करण री मतो कियो। इण वखत मांयली अर बारली सगळी परिस्थितिया मानसिंह रै खिलाफ ही। वे

---

1 वीर विनोद जिल्द 2 पृ स 893

2 मारवाड की ख्यात (रेऊ), जिल्द II पृ स 432

अेक कुशळ राजनीतिज्ञ हो । इण कारण वखत री नाजुकता देख'र आक्रमण री वेळा सामनो करण री ठौड उणा ऊपरल मन सू अंग्रेजी रो आव आदर कियो । अंग्रेजा अर मानसिंह रै बिचाळै फेरू अेक संधि हुई ।[1] संधि रै मुजब जोधपुर रो किलो अंग्रेजा न सू पणो पड्यो । मानसिंह नै मन में घणो दुख हुयो । वानै इण मौकै सुरगवासी साथीण ठाकर सगतसिंह याद आयो । उणा इण बाबत अेक दूहो कह्यो—

राण्या तलै ठ्या ऊतरै, राजा भुगतै रेस ।
गढ ऊपर गोरा फिर, सुरग गया सगतेस ।।

गोरी फौज घणा दिन किला मे नी ठर सकी । इण सगळी घटनावा सू मानसिंह रो अंग्रेज विरोधी व्यक्तित्व सामी आय जावै । इण तेजस्वी व्यक्तित्व रो कविया रै मानस माथै घणो असर पड्यो । वानै दूजै राजावा रै बिचाळै मानसिंह रो व्यक्तित्व सूरज र उनमान प्रखर तेजस्वी निगै आयो । चिमन जी आढा नाम रै अेक सुप्रसिद्ध कवि आपर डिंगल गीत मे मानसिंह रै प्रताप रो लेखो-जोखो देवता इण भात वणन कियो है—

गीत

अरक आकरो मान भूपत तपै आज रो ।
थटै दल कलह संमान थाता ।।
पेसकस भरै सुनमान ओवडपणा ।
यरा मत करो अभमान आता ।।

× ×

हेल मिट काल कल चाल कर हाय सू ।
गेल पग रात सू पनग गाहै ।।
जोघपुर नाथ सू रहै उमरड जिता ।
चिता नलबाय सू भरण चाहै ।।

× ×

विजा हर हिदवा भाण ताला विलद ।
आण सुण कमण ओयण उठावै ।।

---

1 जोधपुर राज्य का इतिहास, द्वितीय भाग (रेऊ), पृ स 431-32

पाण राखै जिकै प्राण छोडै प्रसण ।
पाण जोडे जिक अभय पाव ।।[1]

मानसिंह जीवण लग अंग्रेजा नै कर रै रूप मे अेक पाई नीं दीवी । पण दूजा रजवाडा खुशी-खुशी अंग्रेजा न कर देवता रह्या। इण अेक काम सू ई मानसिंह री राष्ट्रीय सरूप समझ म आय सक । जवान जी आढा नाम रै अक वयोवृद्ध कवि इण बात माथै अक डिंगल गीत री रचना करी। उणमे उणा लिख्यो है के अंग्रेजी सत्ता भारत मे आवता ई आख देस मे खलबली माचगी । मोटा मोटा रजवाडा इण सत्ता रो मुकाबलो नीं कर सक्या अर वा न इणरै आगै नमणो पड़्यो । पण गुमानसिंह रो सपूत मानसिंह आज ई छाती ठोर न विदेसी सत्ता रै सामो ऊभो है । दूजा सगळा राजा अंग्रेजा सू डरता थानै कर देय रह्या है । पण किण मे हिम्मत है जिको मानसिंह कनै कर मागै ? वो नर वीर अकलो ई विदेसी सत्ता साग युद्ध करण नै त्यार है—

गीत

हुव फल फिरगाण गिर धरण हैकप हुव ।
चढ तुरा रख फुण खाग चालो ।।
गढपति आज दूसरा नमिया धणा ।
अेक रहियो अनम गुमन वालो ।।

× ×

माण होण सुपह भरै यत मामलत ।
पाण कुण कर महराण पाजा ।।
मासरा ताण महाराज मरदा मरद ।
रच घमसाण जमराज राजा ।।[2]

इणी ज भात गोपाळजी दधवाडिया नाम र अेक दूजै कवि मानसिंह री प्रशंसा करता आपरै डिंगल गीत मे लिख्यो है के हे मारवाड नरेश मान ! थारी वीरता रै बळ माथ ई आज सगळै भारत मे

---

1 परपरा गोरा हटजा अंक पृ स 113
2 परपरा गोरा हटजा अंक, पृ स 80-81

हिंदवाण री रक्षा होय री है। उदयपुर, जयपुर, कोटा, बूंदी इत्याद रजवाडा थारी मरदानगी पाण ई माथो ऊंचो करनै चालै है। थारी भुजावा रै बळ माथै आज सगळो राजस्थान गुमेज करै—

गीत

फिरै फिरंगी के हका काज सुधारै हकारै फौजा,
धूकलो उवारै रका मारै बका धींग।
सवादी भयभीत होय नगारा घुरावै सारै,
माझी थारै भरोसै नचीतो मानसींग॥
× ×
सत्रा माथै घकाव अचीतो पाना लागा सिंघू,
जोस अगा ऊझठै उडो यूं बाघ जाण।
जडै काला जरा इंदू जगा कई बार जीतो,
हिंदू थारै भरोसै नचीतो हिंदवाण॥
खावै मारराव माल उडाव न मावै खापा,
जाव जठै पाव फत खलाण जिहान।
बीजा राव राजा राणा जोड रा घुरावै बवी,
धार पाण चमरा करावै राजथान॥[1]

होल्कर अर अप्पा साहब नै शरण

भरतपुर रै किले सूं निकळ'र जसवतराव होल्कर राजपूतान कानी आयो अर हरमडा गाव (अजमेर) कन आयन डेरो कियो।[2] मानसिंह न जद आ खबर मिळी तो उणे विना कह्या आगै बढ'र उणरी मदद करी। उणनै राजनैतिक शरण देना यर उणर कुटुब री रक्षा रो वचन दियो, जिणसू वो माळव कानी आपरै इलाकै मे पूग'र पाछो शक्ति सचय करन अग्रेजा रो मुकाबलो कर सकै।[3] इण भात इण दोनू स्वतत्रचेत्ता राजावा रै आपसरी मे मेळ मिळाप अर भाईचारो वध्यो अर होल्कर न आपरी शक्ति सचय करण रो अवसर मिळग्यो।[4]

---

1 परपरा गोरा हटजा अक, पृ स 113
2 जोधपुर राज्य की ख्यात, जि IV, पृ स 14
3 वीर विनोद जि II, पृ स 861
4 जोधपुर राज्य की ख्यात जि IV, पृ स 14

अग्रेजा री अगाई परवाह नी करन होल्कर न शरण देवण री बात सू मानसिह रा काव्यगुरू बाकीदास घणा प्रभावित हुया। उणा मानसिह री प्रशषा मे अेक डिगल गीत लिख्यो जिण मे उणा मानसिह री तुलना तिरुपति भगवान शिव सू करी है। (गीत प'ली दियोडो)

अबखी पुळ मे मदद देवण रै कारण जसवतराव मानसिह री घणी कदर करी। थो जीवण लग इण बात नै भूल्यो कोनी। जद मानसिह अर जयपुर नरेश जगतसिह रै बिचाळै कृष्णकुमारी रै मामल न लेय'र युद्ध हुयो तो जसवतराव उण वखत खुद जाय न मानसिह री मदद करी।[1] आ सुभाविक बात ही, कारण कै उण विखमी वेळा मे होल्कर री जिकी मदद मानसिह करी वा कोई साधारण बात नी ही। उण वखत मानसिह रै खुद र घर मे अर राज मे उथल पाथल मच्योडी ही। इसै मौक होल्कर न गळै बाध'र अग्रेजा सू ववडं धाडं वर बाधणो मानसिह जिसै हिम्मतवर अर छाती वाळै आदमी रो ई काम हो। दूजा राजा महाराजा तो इण बाबत सोच ई नी सक हा। मानसिह कानी सू ठीक मौक माथै मिळी मदद सू होल्कर पगां होयग्यो। वो माळवै कानी सू आगै बढ्यो अर सिंधिया री मदद सू अेकर फेरू अग्रेजा रो मुकाबलो करण वास्तै त्यार होयग्यो।

महाकवि बाकीदास रै अलावा डिगल रै कोई अज्ञात कवि ई इण काम सारू मानसिह रा घणा वखाण किया है। उण आपर डिगल गीत रै छेहल चरण मे लिख्यो है—दक्खिण मे उथल पाथल मचावण वाळो वीरवर जसवतराव होल्कर, जिण आपरी जीत री प्रतीक लाल झडी सगळी ठौड फुरकायो, उण योद्धा री मदद करन थे ससार मे जस री धवळी धजा फुरकाय दी। हे सूरसिह रा वशज मानसिह! थ थारी भुजावा रै बळ माथै आपरी कीरत उजागर करी—

गीत

न्रपत मांन घन तपोबळ, धुरधरण नाथ निज,
राइया आभरण देवराया।

---

1 जोधपुर राज्य की ख्यात, जि IV, पृ स 861-62

वडेरा जिकी खयकरण होता विदा,
ऊबरण जिक तो सरण आया ॥
तेज प्रभुता नमो गुमानीसिंघ तणा,
रोस घण छ खड खुरसाण रोळ ।
जावता चढ दादा जिया रचण जुध,
आविया वचण वे तूझ ओळं ॥
× ×
दिखण ऊयाल जसराज जिसडा दुरस,
प्रकास लाल झडा वरण पूर ।
राखवा दिखण सरणं सुजस सेतरग,
सरस बाघी भुजा प्रभनमा सूर ॥[1]

सुप्रसिद्ध चारण कवि जसदान मेहरिया ई जसवतराव होल्कर री देस भगती री तारीफ करता अर अग्रेजा री कुटिल नीति बावत अेक दूहो कह्यो है—

दूहो

वखणी दखणी पवन ज्यू, जो न आतो जसवत ।
फैल उतर काळळ फिरग, कुळ लोपना करत ॥

महाराजा मानसिंह रो राष्ट्रीय सरूप अेक ओरू घटना सू उजागर होवै । उणा ई सन् 1827 मे नागपुर नरेश मधुराजदेव अप्पा साहेब न ई अग्रेजा र खिलाफ शरण दीवी ।[2] जसवतराव होल्कर रै ज्यू अप्पा साहेव ई अग्रेजा रा कट्टर दुस्मण हा । अप्पा साहेब परसोजी रै देहात पछै नागपुर री गादी माथ बेठा हा । दूजा रजवाडा रै ज्यू नागपुर सागै ई अग्रेजा री सधि हुई ही । उण वखत अग्रेजा री नीति आ ही कै प'ली वे देसी रजवाडा सागै बराबरी री हैसियत सू सधि करता । पछै वारै घर मे घुस'र वारी फूट अर कमजोरी रो लाभ उठाय नै वारै सागै पोछी करडी शर्ता माथ सधि करता । पछ मोको आया सधि भग रो दोप लगाय न वा सू युद्ध

---

1 परपरा गोर हटजा अक 1, पृ स 75
2 वीर विनोद जि प्रथम, इपिरियल गजेटियर ऑफ इडिया जि 18, पृ स 307-308

भरता अर वारो राज कब्ज करण री कोसिस करता । इण भात पेट मे वळ न आतरा धोध लेवता ।

अप्पा साहेब रै सागे ई सागण था ई वात हुई । पै'लो बरावरी री हैसियत सू सधि करन पछै वार माथ दोप लगायो के वे पेसवा री मदद कर है । इण भात दोप लगाय न हमलो कर दियो अर नागपुर रियासत रो खासो मलो भाग दवाय न अप्पा साहब न कद कर दिया । अप्पा साहेब किणी भात जेळ सू भाग छूटा । अग्रेजा वानै पाछा पकड्या री घणी कोसिस करी पण अकारथ गई । अप्पा साहेब कद सू निकळ'र लाहोर पूगा अर नागपुर जीतण री कोसिस मे बरसा लग अठी उठी भटकता रह्या । जद कठ सू ई कोई मदद नी मिळी तो थाक'र आपरो जीव बचावण ताई हिमालय परवत री घाटिया मे बुआ गया अर बरसालग उठै भटकता रह्या । छेवट कोई उपाय नी देख'र महाराजा मानसिह री सरण मे जोधपुर आया ।

मानसिह अप्पा साहेब न घणो भाव आदर दियो । महामदिर मे वारै ठैरण रो प्रबन्ध कियो । सगळी सुख सुविधावा साग वारी सुरक्षा रो ई पक्को इतजाम कियो । मानसिह खुद अप्पा साहेब री तारीफ में अेक कवित्त लिख्यो, उणमे उणा शरणागत न धीरप देवता विश्वास दिरायो है के जिण भात राजा सगर हिमालय पुत्र मेनाक री रक्षा करी, उणी'ज भात म्हैं खतरो उठाय न ई थारी रक्षा करसू ।

अग्रेज सरकार अप्पा साहब न पकडण वास्तै उतावळी हुयोडी ही । उण जद मानसिह न इण बाबत बात करी तो वे मना नटग्या ।[1] उल्टो गवर्नर जनरल न सलाह देवता ओ कैवायो के अप्पा साहेब रै भाणज न नागपुर रो राज सूप दियो जावै अर अप्पा साहेब नै कोई नैनी-मोटी जागीर देयदी जावै ।[2] अग्रेज मानसिह री इण बाता माथ घणा नाराज हुया अर उणा जोधपुर माथ

1 केवेनडिश रो कागद हाकिस र नाम, दि 23 सित 1829, न 3 अेफ अर पी ।

2 केवेनडिश रो कागद हाकिस र नाम, दि 12 अक्टू 1829, न 9 अेफ अर पी ।

आक्रमण करण रो विचार कियो। दोनू कानी लडाई री त्यारिया होवण लागी। जोधपुर मे तो फौज रै वास्तै नुवी भरती ई खुलगी।[1] मामलै री नाजुकता अर वखत रो दौर देख'र कुशल राजनीतिज्ञ मानसिंह आपरो पैंतरो बदळ्यो। उणा गवनर जनरल नै अरज कराई के म्हैं आपरो मित्र हू। इण वास्तै अप्पा साहेब म्हारै कन रैवै तो काई अर आपरै कन रैवै तो काई? इणमे काई फरक पडसी? आ म्हारी जिम्मेवारी रहसी के म्हारै कनै रैवता वो कपनी सरकार रै खिलाफ कोई काम नी करसी। अग्रेजा मानसिंह री बात मानली। अप्पा साहेब आपरी उमर रा दस बरस मानसिंह री छत्र छाया मे आराम सू महामदिर मे रैयनै बिताय दिया अर 15 जुलाई 1840 रै दिन वारो जोधपुर मे देहात होयग्यो।[2]

महाराजा मानसिंह रचित अप्पा साहेब बावत कवित्त—

आय हो सरण जान मान कमधेस मोको
मानत हू धन्य धन्य असो अवसर मैं।
लोक बीच याही काज बाजत हैं छत्री हम
याते अब सफल करोगो भुजवर मैं॥

नागपुर नाथ जिन आपको अनाथ जानो
रावरे निमित्त कर दीनो सर धर मैं।
राखि हौं सजत्न यों सुरेस सों बचायकर
राख्यो हिमगिरि पुत्र सिधु ज्यों उदर मे॥

अजमेर दरबार रो बहिष्कार

मानसिंह रै मन री अग्रेज विरोधी भावना रो चरम प्रदरसण अजमेर दरबार री वखत 1831 मे हुयो जद तत्कालीन गवनर जनरल लार्ड विलियम बैंटिक अजमेर आयो अर राजपूतानै रै सगळै राजावा रो अेक दरबार बुलायो।[3] सगळै राजावा इणमें आपरो

---

1 हार्किस रो कागद स्विनटन रै नाम, दि 10 नव 1829, न 10 अफ अर पी।

2 जोधपुर राज्य की ख्यात, जिल्द IV पृ स 104 श्री प्रयागदत्त शुक्ल रचित मध्य प्रदेश का इतिहास और नागपुर के भोंसले पृ स 172

3 जोधपुर राज्य की ख्यात, जि IV, पृ स 109

मान समझ्यो अर गवनर जनरल नै भेट देवण री अेक आछी अवसर जाणन सगळा अजमेर मे हाजर हुया । पण मानसिंह उठै जावण मे आपरी असमथता दरसाई । अंग्रेजा री निजरा मे ओ वारो मुलो अपमान हो इण कारण अेक मोटो अपराध हो । छतापण उणा जेहर री घू टियो उतार लियो अर अजमेर दरबार मे मानसिंह री गैर हाजरी माथै अेक बोल ई नी कह्यो ।[1]

कविया मानसिंह रै इण काम री घणी तारीफ करी है । इसै वखत मे जद अंग्रेजा रा भाठा तिरता अर सगळा भारतीय रजवाडा वार आगळ हाथ जोडया ऊभा हा, कविया नै मानसिंह रो ओ तेजस्वी सरूप घणो दाय आयो । अजमेर दरवार रो बहिष्कार करण सू वारो राष्ट्रीय सरूप उजागर हुयो । कई कविया इण घटना माथै काव्य रचना करी । इण सगळी कवितावा मे पारलू निवासी चैन जी चारण कृत अेक डिंगल गीत घणो चावो हुयो । उण गीत मे कवि कह्यो है कै अग्रेजी सत्ता भारत मे आई तो सगळा राजा वार चरणा मे निमण करण लाग्या । पण हे गुमानसिंह रा सपूत मानसिंह, थू इज अेक इसो हिम्मतवर मरद है जिको गोरी सत्ता रै सामी माथो ऊचो किया निडर ऊभो है ।

गीत

मिळै सुभट्टा कपनी वाळा आया हिंदवाण माहै,
जठै सारी प्रथी राजा पाय लागा जाय ।
गुमनैसनद तठ अगेजी जोधाण गावो,
इद नरा न कीधो सरद्दो सामा आय ॥

तिलगा हाजरी लेता थजाता अगजी तोपा,
भंचक सारा ही दसू दिसा तणा भूप ।
हुया मदा उतार गयदा जेम सारा हद्दै,
राजा मठ खोभ्रायो कठोर च रूप ॥

गोरा हूत राज राणा राव दुवा छोडे गाढ,
दीप हेक हुवकमा समस्ता हिंदू देस ।
सारी प्रथी सिघो विजाहरो छाजै दीह साज,
नाथ रे प्रताप गाज हिंदुवा नरेस ॥

---

1 जोधपुर राज्य की ख्यात, जि IV पृ स 108

दान री उभेळ वीक भोज ओळें जाय दुर,
वसू सिध कान री कीरती हुई वाद ।
भूमडळां वीच नृपा ग्रान री जोवता यश्री,
मार्नासिह भुजा राजस्यान री मजाद ॥[1]

इरा भात रै प्रशपात्मक काव्य री भलाई ओतिहासिक दीठ सू घणो महत्व मत हुवो पण इण काव्य रै सुरा री अभिव्यक्ति सू आ वात तो चवडै आवै ई है के आम जनता रै मन मे अग्रेजा र प्रति विरोध री भावना ही । जिकोई व्यक्ति गोरी सत्ता री खिलाफत करतो वो आम आदमी नै चोखो लागतो । इण काम मे वान हिम्मत अर वीरता निजर आवती अर वार खुद रै मन रै भावा री अभिव्यक्ति प्रगट होवती ।

मार्नासिह रै खिलाफ आरोप पत्र

मार्नासिह री अग्रेजी सत्ता रै खिलाफ गतिविधिया सू गोरी सत्ता सावचेत होयगी । अेक देसी रजवाडै कानी सू वार वार होवती हुक्म उदूली अर अपमानजनक वैवार रै कारण विदेसी सत्ता छेवट आ वात मन मे पक्की तेवडली के इण सारु मार्नासिह रै खिलाफ फौज भेजनै उणनै शिक्षा देवणी चाइजै । सी ई ट्रेवेलियन, डिप्टी सेक्रेटरी, भारत सरकार, आपरै 15 मई 1834 रै कागद मे अे जी जी नै लिख्यो के जोधपुर नरेश मार्नासिह कई वार व्रिटिश सत्ता रो अपमान कियो है ।[2]

मार्नासिह जद आपर राज री तीन पाडोसी रियासता माथै हमलो कियो तो अग्रेज सरकार इण वात माथै वा सू जवाव तलव कियो । उणा इण री पडूत्तर इण भात दियो के इण तीनू रियासता सू वानै कई शिकायता ही इण कारण वारै माथै आक्रमण जरूरी हो ।[3] ट्रेवेलियन रै मत मुजब ओ मार्नासिह रो मोटो अपराध

---

1 राजस्थान'स रोल इन स्ट्रगल ऑफ 1857, ले नाथूराम खडगावत, पृ स 114

2 फाईल न 5 जोधपुर, 'जि I 1834, रेजिडेंसी रेकडस नेशनल आर्काइव्ज दिल्ली

3 फाईल न 5, जोधपुर, जि I, 1834 रेजिडेंसी रेकडस् नेशनल आर्काइ ज, दिल्ली

हो । सधि रै हिसाब सू ब्रिटिश सरकार नैं पूछ्या विना श्राक्रमण करण री मानसिंह नें कोई हक नी हो ।

ठगा रै मामले मे ई अग्रेजा नै मानसिंह सू कई सिकायता ही ।[1] अग्रेजा ठगा री नास करण सारू अेक देशव्यापी सैनिक सगठण बणायो हो । कई सैनिक दळ नियमित रूप सू इण काम वास्त तैनात हा । इण कारण ठगा मे खलबली मच्योडी ही । वे आपरी प्राण रक्षा खातर अठी उठी दौडता फिरता अर मोकळी वार देसी रजवाडा री सरहद में घुस'र शरण लेवण री कोशिश मे रैवता । इणी'ज भात अेकर ठगा री अेक गिरोह प्राण रक्षा खातर जोधपुर रियासत मे आय घुस्यो अर आलनियावास गांव मे आयन शरण लीवी । जद अग्रेज सरकार साभर रा रियासती अधिकारी न ठगा रा इण गिरोह न बान सू पण री कह्यो तो उण ना देय दियो अर अग्रेज सैनिक अधिकारी री अपमान फेर न्यारो कियो ।

ट्रेवेलियन री कथणी मुजब साभर रा इण अधिकारी न इज थोडाक दिना पछ रियासत कानी सू खिल्लत बख्स न सम्मान दिरीज्यो ।

इणी'ज भात जद अग्रेज विरोधी मराठा सरदार अप्पाजी आयन घाणेराव मे शरण लीवी तो केप्टन बूरथोक उणरी लारो कियो अर अजमेर सू गवनर जनरल रै कानी सू महाराजा मानसिंह नै अेक कागद दिरीज्यो के वे केप्टन बूरथोक री इण काम मे मदद कर अर घाणराव ठाकर न उचित सजा देव । मानसिंह पाछो लिख्यो के उण घाणेराव ठाकर री जागीर जब्त कर ली है । पण कनल स्पिर जद इण बात री जाच कराई तो बात सफा कूडी निकळी ।

ट्रेवेलियन आग चाल'र आ बात ई लिख के अजमेर र सिविल सजन डॉ मोटले रै घरा रात री वखत हमलो हुयो अर लूटपाट हुई, उणमे जिका लुटेरा पकडीज्या वे जोधपुर रा रवासी हा । पण मानसिंह इण बात री इनकार कियो ।[2]

---

1 फाईल न 5 जोधपुर, जि I, 1834, रेजिडेंसी रेकड्स् नेशनल आर्काइ्ज दिल्ली

2 फाईल न 5 जोधपुर जि I, 1834, रेजिडेंसी रेकडस नेशनल आर्काइव्ज, नई दिल्ली

इण भात ट्रेवेलियन रै मतानुसार मानसिंह साग युद्ध करन उणनै सजा देवणी जरूरी बात हुयगी ही । श्रो नी हुया दूजै रजवाडा री ई हौसलो वढण री डर हो ।[1]

गवनर जनरल रै निर्देश मुजब इण आरोपा रै आधार माथै अे जो जो अेक छेहलो चेतावणी पत्र त्यार करनै मानसिंह न भेज्यो । 14 अगस्त 1834 नै ओ आरोप पत्र मानसिंह कनै पूगो ।[1] अग्रेजी सेना ने आक्रमण वास्तै त्यार होवण री हुक्म दिरीजग्यो । पण जोधपुर री ख्यात इत्याद अैतिहासिक रेकडस् मे जोधपुर माथै आक्रमण री कोई हवालो नी मिळै । इण सू अदाज लागै के मानसिंह आपरै बुद्धिकौशळ सू किया ई करनै इण युद्ध नै टाळ दियो होसी ।

अग्रेजा री भेज्योडो आरोप पत्र मानसिंह कन पूगो तो इण घटना री जनमानस मे घणी तीव्र प्रतिक्रिया हुई । इण प्रसग री लिख्योडो कवि नवल जी लालस री अेक डिंगल गीत घणो प्रसिद्ध है । उणमे कवि लिख्यो है के अग्रेजी सरकार रै फरमाना अेक अेक करन सगळा देसी राजावा नै बाध लिया है । पण वो इज फरमान जद महाराजा मानसिंह कनै पूगो तो उणा ठुकराय दियो । हुकमनामै रा कागद नै देखता ई वारी आख्या क्रोधाग्नि रा खीरा धुखण लाग्या । उणारी हाथ मू छ माथ पडग्यो अर खलीत री पडूत्तर बाहुबळ सू देवण री तै कियो । कोई दूज रै भरोसै नी रैय'र खुद रै आपाणा माथ विदेसी ताकत नै बकारण री मतो कियो ।

आखै मुलक नै गुलाम बणावण आळै अग्रेज नै अबै देश बारै काढ नै इज उणन चैन पडसी । सगळै रजवाडा आपरी मरजादा छोड'र अग्रेजा री आधीनता स्वीकार करली है पण मानसिंह डकै री चोट वारो सामनो करसी

गीत

आया लाट रा खलीता बाचता ई धकै लाय उभो,
घर हाथ मूछा छाय ऊभो क्रोध धींग ।

1 फाईल म 5 जोधपुर जि II 1834, रजिडेंसी रकडस नेशनल आर्काइ ज दिल्ली

आपरै भरोसै राम जांगडौ दिराय ऊभौ,
साय ऊभौ जनेवा खागडौ मानसींग ।।

आभ लागा गोरा दळा छोडिया न काढ आगौ,
अधी सारी आपाण छोडिया वहै पाण ।
रोडिया नगारो ठहे न मानै टेकलौ राज,
जिका सूतोडिया वहै अकलौ जोधाण ।।

तूटै कळा छूटै ठौड ठौड री खचाणी तोपां,
लाखा हाडा गौड री कुरभां आडी लीक ।
जोड रा ठिकाणा घणा मगजी मेलदी जठ,
तठ रही राठोड री अक चौक तीख ।।

फिरी वागा जठीनै चलाई पातसाही फौजा,
भुजा लाज भळाई सदाई आई भाय ।
रूठिया धु धळोनाथ कळाई ऊजळी रूका,
मारवाडा दिल्ली नै मिळाई धूड मांय ।।

भाज चौक हरोळा अणी रा ऊतोळिया भाला,
धर्क तणौ मेलिया जणी री रीस धख ।
रही आट कणीरो जौ वार सिद्धा राज राखी,
साजी वाजी नवा कोटा धणी रो साबूत ।।

सग्रामा सभाव वीजूजळा कसा आय साम,
रण अक थोडा नाम थाव असी रीत ।
नमाव फिरगी हिंदूयान कीधो पाय नाम,
आप नाम नाज खाधो विजाई अजीत ।।[1]

अग्रेज सरकार कानी सू छेहलो चेतावणी पत्र आया पछ मामल नै शाति सू सुळझावण ताई मानसिंह आपरा की अधिकारिया न अजमर भज्या हा । उणा सगळ आरोपा रा उचित उत्तर देयन कर वाळ मामलै न ई सुळझावण री कोशिश करी ही । छतरसिंह रै वखत मे हुई सधि रै मुजब जोधपुर रियासत न सालीणा कर र रूप मे अग्रेजा नै आई साल लूठी रकम देवणी ही । पण मानसिंह अेक टकौ ई नी दियौ अर हर वार टाळाटूळी करता रह्या । इण

---

1 परपरा, गोरा हटजा अक पृ स 79

कारण हिसाब सू अवै वा रकम बढता-बढता मोकळी होयगी ही।

1834 मे आरोप पत्र अर छेहली चेतावणी आई उण वखत जोधपुर री हालत इसी नी ही के अंग्रेजा सू लडाई करीजती। इण कारण मन मे नफरत अर द्वेष भाव होवता थकाई मानसिंह अंग्रेजा सागै किणी भात निभाव करणी चावता। जिणसू रियासत नै कोई नुकसाण नी पूगै अर किणी तर सू बात वणी रैय जावै।

इण कारण उणा आपरा की विश्वस्त अर जोगा अधिकारिया न आरोप पत्र रो माकूल पडूत्तर देवण वास्त अर दूजा मामला सुळझावण ताई अजमेर भेज्या हा। उणा उठै जाय'र दूजा मामला सागै कर वाळै मामलु न इण भात सुळझायो के नावा अर साभर री नमक री आमदनी की बरसा ताई देय'र वकाया अदायगी कर दी जावै अर भविष्य मे कर री रकम बरसो वरस दी जावती रहै।

मारवाड री ख्यात मे इसौ उल्लेख मिळै के अजमेर सू पाछा आय'र अधिकारिया जद मानसिंह नै सगळी हकीकत विगतवार सुणाई तो वे घणा नाराज हुया। कई फैसला वारी मशा रै खिलाफ हुया हा।[1] खासकर कर अदायगी।

साभर अर नावा सू वसूली री रकम वखतसर नी पूगी तो अग्रेज अधिकारी मन मे घणा राजी हुया। वे तो इसै मौकै री ताक मे ई हा। उणा तुरत साभर अर नावा री नमक री खाना मायै कब्जो कर लियो। बजार मे नमक री अचाणचक कमी आयगी जिणसू नमक मूघो होयग्यो। नमक जिसी रोजीना प्रयोग मे आवण वाळी चीज री कमी आवण सू प्रजा माथ इणरो असर पडणो सुभाविक हो। इण प्रसग री अेक लोकगीत प्रसिद्ध है जिको जन भावना नै सही रूप सू प्रगट कर। जनता नै अंग्रेज घणो चालाक अर कुटिल निगै आवै। लोग इण बात न भली भात जाण के इण विदेसी कौम रो फगत ऊपरलो रग गोरो है, वाकी तो मायनै सू ओ काळो घ्र है। जे इण न घर मे बढण दियौ तो ओ जरूर नुकसाण करसी। म्हारो राजा सफा भोळो है। इण चालाक कौम राजा न भरमाय न साभर कब्जै करली है। घर मे

1 जोधपुर राज्य री ख्यात, जि IV पृ स 111

म्हारा टाबरिया भूखा बैठा है। वान अलूणी रोटी भावै कोनी। वे लूण खातर तरसै। इण लोकगीत में जन मानस में व्याप्त अंग्रेज विरोधी भावना नै सातरी अभिव्यक्ति मिळी है —

लोकगीत

म्हारो राजा भोळो, सांभर तो दे दीनी अंगरेज न
म्हारो राजा भोळो !
म्हारा टाबर भूखा, रोटी तो मांगे तीख लूण री
म्हारो राजा भोळो !
गोरो गोरो मूंडो ईंको, पण मन को ओ काळो अे !
घरा मती बुलावो
भेद मती बतावो
म्हारो राजा भोळो !
गिटपिट गिटपिट बोली बोलै बाता मारै धूणा की
मत मूंड लगावो
ईं नै मत बतळावो
म्हारो राजा भोळो !

पूर्व वर्णित मजमून मुजब महाराजा मानसिंह मजबूरी री हालत में अंग्रेजी सेना नै जोधपुर रै किलै में रवण री हुकम देय दियो हो पण इण सूं नी तो प्रजा संतुष्ट ही अर नी राजा। आ तो अेक विवशता री स्थिति ही।

इतिहास में इण बात री पुख्ता प्रमाण मिळै के जद अंग्रेज सैनिक टुकडी किलै में पूगी तो किलैदार माधोसिंह किलो खाली करण री ना देय दियो। इण सारू महाराजा न खुद न उठ जायन माधोसिंह नै समझावणो पड्यो।[1] इणी'ज भांत जद मि लडलो सैनिका सागै किलै में घुसण लाग्यो तो भीमसिंह राठोड नाम र आदमी लडलो माथै हमलो करन उणने घायल कर दियो।[2] इण भिड़त में अंग्रेज सैनिका भीमसिंह न ई घायल कर दियो अर वो की दिना पछ मरग्यो।

---

1 जोधपुर राज्य का इतिहास, ओझा, जि III पृ स 861
2 जोधपुर राज्य का इतिहास, ओझा जि III, पृ स 861

मारवाड मे सरकारी अधिकारिया रै अलावा कई सरदार सामत ई अग्रेजा रै सख्त खिलाफ हा। खास करन मालाणी रै इलाकै माथै जद अग्रेजा कब्जो करणो सरु कियो तो उठै रा सगळा जागीरदार अग्रेजा र खिलाफ होयग्या अर विद्रोह माथै आयग्या। अग्रजा मानसिह नै हुकम दियो के वे मालाणी रा जागीरदारा नै दबावै पण उणा मना कर दियो।[1] आगै चाल'र अग्रेजा वान दवावण ताई सनिक कारवाई करी तो मानसिह अगाई सहयोग नी दियो। अग्रेजा जद मालाणी माथै अधिकार जमाय लियो तो मानसिह इणरो विरोध कियो अर कह्यो मै ओ इलाको वारो है इण वास्तै अग्रेजा नै इण माथै कब्जो नी करणो चाइजै।[2] इण सगळै ऐति-हासिक तथ्या सू आ बात उजागर होवै के मानसिह अग्रेजा सू सदीव खिलाफ रह्या अर जीवण लग वारो विरोध करता रह्या।

अठै प्रसगवश ओ उल्लेख करणो ई उचित रहसी के मालाणी वाळै विद्रोह ई प्रदेस रा कविया न प्रभावित किया। इण बात रो प्रमाण अेक डिंगल गीत सू मिळ जिको चोहटण (बाडमेर) ठाकर श्यामसिह री प्रशसा मे कोई अज्ञात कवि रो लिख्योडो है। गीत मे वर्णित तथ्या सू पतो लागै के मालाणी रा जागीरदारा बाडमेर मे गोरी सत्ता रो करडो मुकावलो कियो जिण मे ठाकर श्यामसिह घणी वीरता सागै लडतो थको काम आयो।

गीत

हटवादी जद नाहर होफरिया, सावी जिसडा साथ सिपाह।
मेर जही मड बाहडमेर, गोरा सू रचियो गज गाह॥

केवी मार ऊजळो कीधो, अनड चोहटण आड आक।
घण रीझवण पलट धारधण, सेरावत नह मानो साक॥

सोमा जिम तलवार सामाहे, जोस घणै बाहे कर जग।
मरण हरख रजवट मजबूता, रजपूता दीज घण रग॥

अणिया भवर रोप पग ऊडा, रचियो समहर अमर हुवो।
आट निबाह उतन आपाण, मालाण जळ चाद मुवो॥

---

1 जोधपुर राज्य का इतिहास, ओझा जि III पृ स 861

2 मेजर माल्कम की रिपोट, 1849 राजपूताना गजेटियर जि [illegible] पृ स 266 67

सोरठो

सामा जिसा सपूत, मात्र भोम नेहो मरद ।
रजधारी रजपूत, विघना घडजे तू वळै ।।

इण भात आ बात सही है के मानसिंह रै ज्यूं दूजा राजा महाराजा ई विदेशी सत्ता री मिळन विरोध करता तो इण धरती रौ ईतिहास की दूजो ई होवतो । अंग्रेजा न अठै कब्जौ करण मे जोर ई पडतौ ।

पण परिस्थितिया इण सू सफा विपरीत ही । घणकरा राजा महाराजा अंग्रेजा री चापलूसी अर जो हजूरी मे लाग्योडा हा । फगत मानसिंह अेक मात्र इसा नरेश हा जिणा अंग्रेजी सत्ता साग कदैई मन सू समभोतो नी कियो । अवसर आया सदीव विरोध ई कियो । अजमेर दरबार रो बहिष्कार, होल्कर अर अप्पाजी सिंधिया जिसा अंग्रेज विरोधिया नें शरण देवणी, कर नी चुकावणी अर बार बार ब्रिटिश आज्ञावा री लल्लघण करणो इत्याद कई इसा काम है जिको महाराजा मानसिंह र राष्ट्रीय सरूप न उजागर कर । जठालग पिंड मे गाढ रह्यो अर परिस्थितिया अनुकूळ रही, उणा विदेसी सत्ता सू बराबर टक्कर लीवी ।

छेहली अवस्था मे जद उणा देख्यौ के सगळो प्रदेस विदेसी सत्ता रौ गुलाम वणग्यौ है, वारै खुद रै घर मे फूट फजीती चाल री है अर गोरी सत्ता अगाई नीचता माथै उतरगी है तो वान सासारिक जीवण सू नफरत होयगी । मन मे वैराग पैदा होयग्यो । अंग्रेजा जद वारै गुरू नाथजी न गिरफ्तार कर लिया तो वारो अतस टूटग्यो । शरीर माथै भभूती रमाय न इणा भगमा धारण कर लिया अर चित्त भ्रम हुयोडा अठी उठी फिरता घिरता पाल गाव पूगा । अठै सू जाळोर होयन वारो गिरनार जावण रो विचार हो । पण पोलेटिकल अजट लडलो न जद इण बात री जाण पडी तो वो लारै गयो अर वान समझाय बुझाय न पाछो लेय आयो ।[1] वे की दिन राईकाबाग मे रुक'र मडोर वुआ गया । उठै इज 4 सितंबर 1843 न वारो देहात हुयो ।

जनकवि मोतियै वारै बाबत ठीक ई कह्यो है—

---

1 टाड जि प्रथम, पृ स 578

कविराजा बांकीदास आसिया

सोरठो

सामा जिसा सपूत, मात्र भोम नेही मरद ।
रजधारी रजपूत, विघना घडजे तू यळ ।।

इण भात भ्रा वात सही है के मानसिंह रै ज्यू दूजा राजा महाराजा ई विदेशी सत्ता रो मिळन विरोध करता तो इण धरती रो इतिहास की दूजो ई होवतो । अग्रेजा नै अठै कब्जो करण मे जोर ई पडतो ।

पण परिस्थितिया इण सू सफा विपरीत ही । घणकरा राजा महाराजा अग्रेजा री चापलूसी अर जी हजूरी मे लाग्योडा हा । फगत मानसिंह अेक मात्र इसा नरेश हा जिणा अग्रेजी सत्ता सागै कदैई मन सू समझोतो नी कियो । अवसर आया सदीव विरोध ई कियो । अजमेर दरबार रो बहिष्कार, होल्कर अर अप्पाजी सिंधिया जिसा अग्रेज विरोधिया नै शरण देवणी, कर नी चुकावणो अर बार बार ब्रिटिश आज्ञावा री लल्लघण करणो इत्याद कई इसा काम है जिको महाराजा मानसिंह र राष्ट्रीय सरुप न उजागर करै । जठालग पिंड मे गाढ रह्यो अर परिस्थितिया अनुकूळ रही, उणा विदेसी सत्ता सू बराबर टक्कर लीवी ।

छेहली अवस्था मे जद उणा देख्यो के सगळो प्रदेस विदेसी सत्ता रो गुलाम बणग्यो है, वारै खुद रै घर मे फूट फजीतो चाल री है अर गोरी सत्ता अगाई नीचता माथै उतरगी है तो वान सासारिक जीवण सू नफरत होयगी । मन मे वैराग पैदा होयग्यो । अग्रेजा जद यार गुरू नाथजी न गिरफ्तार कर लिया तो वारो अतस टूटग्यो । शरीर माथै भभूती रमाय न इणा भगवा धारण कर लिया अर चित्त भ्रम हुयोडा अठी उठी फिरता घिरता पाल गाव पूगा । अठै सू जाळोर होयन वारो गिरनार जावण रो विचार हो । पण पोलेटिकल अजेंट लडलो न जद इण बात रो जाण पडी तो वो लारै गयो अर वानै समझाय बुझाय नै पाछो लेय आयो ।[1] वे की दिन राईकाबाग मे रुक'र मडोर वुआ गया । उठ इज 4 सितबर 1843 न वारो देहात हुयो ।

जनकवि मोतियै वारै बावत ठीक ई कह्यो है—

---

1 टॉड, जि प्रथम, पृ स 578

घालै अरि घाणै, पालण दाळद पातवा ।
न जनम जोधाण, मान जिसो नृप मोतिया ॥

कविराजा बाकीदास

कविराजा बाकीदास रो जनम ई सन् 1771 मे अर देहात 1833 मे हुयो । इण वखत मे राजपूतानै री सगळी रियासता अेक अेक करन ईस्ट इडिया कपनी रै मार्ग सधि करती विदेसी सत्ता रै जाळ मे फसती जावै ही । उण वखत प्रदेस मे तो काई पण आखै भारत मे कोईक विरला राजा इसा हा जिका विदेसी हकूमत री इण कुटिल चाल नै भली भात समझी होसी । सभवत थोडा घणा नरेश इण बात न समझी ई होसी तो वे आपरै स्वार्थ मे इण भात डूबोडा हा के वारी निजरा मे राष्ट्रीय हित नगण्य हा ।

छतापण जोधपुर महाराजा मानसिह जिसा की गिण्या-चिण्या इसा नरेश जरूर हा जिका विदेसी सत्ता री चाला न आछी तरिया ओळख लीवी ही । इण बात री विगतवार उल्लेख महाराजा मानसिह वाळा प्रसग मे आयग्यो है । वारै कानी सू अजमेर दरबार रो बहिष्कार, होल्कर और अप्पा साहेब न शरण अर जीवण भर विदेसी सत्ता रो विरोध इत्याद इसा ज्वलत उदाहरण है जिका वारै राष्ट्रीय सरूप न उजागर करै ।[1]

पण इणमे आ बात ई सोळ आना साची के मानसिह री इण राष्ट्रीय विचारधारा रै विकास मे वारै काव्यगुरु बाकीदास रो लूठो योगदान रह्यो । कविराजा महाराजा मानसिह रा घनिष्ठ मित्र हा । दोनू जणा री जगचावी जोडी ही । वे हर वखत साग रवता । मानसिह रा काव्यगुरु होवण सू वार माथै कविराजा रो घणो प्रभाव हो । इण वास्त जे आ बात कहीजै के मानसिह र ब्रिटिश विरोधी कामा मे प्रेरक शक्ति बाकीदास ई हा तो कोई खोटी बात कोनी । मानसिह आपरै मन री बात कविराजा आगळ करता अर हरेक महताऊ मसल माथै वारी सलाह लेयन आगै पावडो भरता । इण बात री पुष्टि मानसिह रचित इण सोरठा सू होवै जिको उणा कविराजा रै देहात माथै मरसिया रूप मे कह्यो । महाराजा न

---

1 The role of Rajasthan in the struggle of 1857 N R Khadgawat Page No 127-28

आपरी साची हितैषी अर साची सलाहकार जावण सू कितरो दुख हुयो वो इण सोरठा सू भली भात उजागर होय जाव । वे दुखी मन सू कवै—हे कविराजा, थार ससार छोडया पछ अवै म्हैं राजकाज रै गूढ रहस्य री अर निजू बातां मन खोल नैं किणरै साग करसू ? किणसू साची सलाह लेयन आगै पावडो भरसू ? आपर जावण सू म्हारे वास्तै तो सगळो ससार सूनो होयग्यो ।

सोरठा

विद्या कुळ विख्यात, राज काज धण रहस रो ।
थाका तो बिन थात, किण आगळ मन री कहां ?

सद् विद्या बहु साज, बाकी थी बाका बसू ।
कर सूधी कविराज, आज कठीगो आसिया ?[1]

कविराजा रै देहात माथ मानसिंह रै मू ड सू इण भात रा शोक उद्गार प्रकट होवणा सुभाविक बात ही । कारण के वे वारा काव्यगुरू होवण रै सागै, वारी राष्ट्रीय विचारधारा रा पोषक अर प्रेरणा स्रोत हा । बाकीदास रै व्यक्तित्व नैं भली भात समझ्या विना आपा मानसिंह रै जीवण न आछी तरिया नी समझ सका । लारल आलेख मे मानसिंह रै जिण ब्रिटिश विरोधी कामा रो वणन आयो है, वा सगळा नै बाकीदास र सदभ मे ई देखणा होसी ।

उगणीसवी सदी रै पूर्वार्द्ध मे जद अग्रजी सत्ता राजपूतानै मे आपरा पग जमावण मे लाग्योडी ही, बाकीदास प'लडा कवि हा जिणा उणरी चाल अर कुटिलता भली भात ओळखी । उण जमान रा डिंगल रा श्रेष्ठ कवि होवण र रूप मे उणा इण तथ्य न आपरी काव्य रचना रो विषय बणायो अर जनमानस नैं विदेसी सत्ता र खतरा सू सावचेत कियो ।

उण वखत बाकीदास रै अलावा सूयमल मीसण अर शकर-दान सामोर दो ओरू कवि इसा हुया जिणा आपर काव्य र माध्यम सू अग्रेजा रो घोर विरोध कियो, पण इण त्रिमूर्ति मे बाकीदास प'लडा कवि है जिणा सै सू प'ली अग्रज विरोधी भावना

---

1 बाकीदास ग्रथावली, भाग तीन री भूमिका, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी ।

नै सुर दियौ । इणरै अलावा बाकीदास रै प्रखर व्यक्तित्व री प्रमुख विशेषता आ पण है के उणा विरोध रै सुर विना कोई लाग लपेट अर दबाव रै निडर होय नै प्रगट किया । यू सूयमल मीसण री योगदान ई कम कोनी, पण उणा आपरो विरोध चवडै धाडै प्रगट नी कियौ । आपरै मित्रा इत्याद नै लिख्या कागदा मे ई उणा आ बात साफ-साफ लिखी है के वारो ओ कागद वेवार गुप्त रवणौ चाइजै । शायद वखत री नाजुकता नै देखता कवि नै आ बात उचित लागी होसी । इणरै अलावा मीसण 'वीरसतसई' री रचना करनै कवि देस वासिया री आह्वान तो कियौ पण प्रगट रूप सू अग्रेजा री विरोध कदेई नी कियौ ।

यारी तुलना मे बाकीदास विदेसी सत्ता री विरोध सफा खुला शब्दा में अर प्रगट रूप सू कियौ । अठै आ बात ई ध्यान देवण जोग है के बाकीदास री जनम सूयमल मीसण रै जनम सू चवाळीस बरस पै'ली हुयौ । इण अरसा मे अग्रेजा अठै आपरा पग जमाय लिया हा । इण वास्तै मीसण रै जीवण काल मे परिस्थितिया मे मोकळो बदळाव आयग्यो हो । शायद इण कारण जितरी निडरता सू बाकीदास आपरी बात कैयग्या, मीसण रै वास्तै कैवणो सभव नी हुयो होसी ।

ऊपर कियै उल्लेख मुजब बाकीदास री निजरा सामी प्रदेस मे अग्रेजा री प्रभाव बढतो जाय रह्यौ हो, इण कारण इण जागरुक कवि री मन घणौ दुखी रह्यौ होसी । इसै निराशा रै वातावरण मे कवि न कोई इसै प्रसग री पूरी तलाश रही होसी के जिण माथ काव्य रचना करन वो आपरै मन रा भाव प्रकट कर सकै, हियै री वराळ काढ सकै ।

इण कारण भरतपुर वाळै घेरै मे भारतीय शक्ति री जीत अर विदेसी शक्ति री हार कवि रै मन न हरख अर उछाव सू भर दीनो । कवि रै अतस री कळी-कळी खिलगी । इण घटना माथै उणा तीन डिंगल गीता री रचना करी (तीनू गीत भरतपुर वाळै घेरै रै प्रसग मे पै'ली ई देय दिया है) । इण गीता में उणा भरतपुर वाळा रा ऊजळै मन सू वखाण किया है । इणान भारतीय शक्ति री जीत मान'र कवि इण घटना री वणन घण गुमेज सू कियो है । अेक दूजै प्रसग मे ई भरतपुर री जिक्र आया कवि 'लडियो भलौ भरतपुर वाळौ' कैयन भरतपुर वाळी जीत न बिडदाई है ।

इण घर मे नीबावता रै महत देसद्रोहीपणो करन अग्रेजा री मदद करण री कोशिश करी ही। नीबावता रो महत भरतपुर वाळै राज घराण रो गुरु मानीजतो अर राज परिवार उणरो कठीबध चेलो हो। पण अवखी पळ आया महत इण भात गुरूपणो निभायो अर विश्वासघात कियो, ओ कवि नै घणो खारो लागो। उणा इण प्रसग नै लेयन अेक डिगल गीत मे नीबावता रै महत री जबरी आरती उतारी है। गीत री की कडिया इण भात है—

'माल खायो ज्यारो त्यारो होय रती नायो मोह,
कुबद्धो सू छायो भायो नहीं रमाकत।
वेसासघात सू काम कमायो बुराई वाळो,
माजनो गमायो नीबावता रै महत॥

पीढिया लग जिणरो अन्न खाधो, उणसू ई विखमी वेळा आया विश्वासघात कियो। नुगरा साधुडा अणा ई विचार नी कियो। इणा आपरी मान मरजाद अर इज्जत खुद र हाथा सू ई खतम करदी।

इणी'ज भात जद मानसिंह जसवतराव होल्कर न शरण दीवी तो कवि री मन घणो राजी हुयो। उणा मानसिंह री तारीफ रा अेक डिगल गीत मे लिख्यो—

'नृपत मान धन तपोबळ मुरधरण नाथ निज
राइया आभरण इद्रव राया।
धडेरा जिको जय करण होता विदा,
ऊबरण जकै तो सरण आया॥'

हे मारवाड रा नाथ मानसिंह, थू धिन्न है। थारो तपोबळ ई धिन्न है। थारो तेज इद्र रै उनमान है। जिण मराठा थारै राज म लूटपाट करी, उणा रो इज वशज थारी शरण मे आयो तो थ उणन छाती रै चेप लियो। धिन्न है थू अर धिन्न है थारी महानता।

बाकीदास अेक नामी कवि होवण रै सागै इतिहास रा ई अेक लूठा विद्वान हा। इण कारण वे विदेसी सत्ता रै छळ कपट अर प्रपच नै गेहराई सू समझ सक्या। वे इण बात न आछी तरिया जाण अर समझ हा के आज जिको विदेसी सता होळै होळ पग पसार री है वा अेक दिन आखै राष्ट्र माथ छाय जासी अर मुलक सदिया ताई गुलामी रै जाळ मे फस जासी। इणी'ज भाव र अक डिगल गीत मे उणा लिख्यो है—

'अलीमन सूर रौ वस कोधौ असत,
रेस टीपू विज जबट रुडिया ।
लाट जनराल, जरनेल, करनेल लख,
जाट र किल जमजाळ जुडिया ।।'

इण विदेसी सत्ता मुगलवश रै सूरज नै सदीव रै वास्ते अस्त कर दियौ है । टीपू जिसै टणकेल शासक नै ई हराय दियौ है । वो ई अंग्रेज अबै आपरी लाठी फौज सागै भरतपुर रै किलै माथै चढन आयौ है ।

कविराजा रचित अेक डिंगल गीत 'चेतावणी र गीत' रै नाम सू घणो चावौ है । औ गीत राष्ट्रीय भावना सू ओतप्रोत है । इण गीत मे उणा लिख्यौ है के किण भात देश गुलाम बणन चेतनाशून्य होवतौ जाय रह्यौ है । हिंदू अर मुसलमान सगळा रौ आह्वान करता उणा देश न बचावण री मार्मिक अपील करी है ।

फगत इण अेक गीत सू ई कवि रौ राष्ट्रीय सरूप उजागर होय जावै । कवि न देश री दुरदशा माथ कितरी पीड ही वा इण गीत सू भली भात प्रगट होय जावै । गीत चेतावणी रौ इण प्रसग री अेक मनीक अर लाठी रचना है ।

गीत चेतावणी रौ

आयौ इगरेज मुलक र ऊपर, आहस लीधा खेंचि उरा ।
धणिया मर न दीधी धरती, धणिया ऊभा गई धरा ।।

फौजा देख न कीधी फौजा, दोयण किया न खळा डळा ।
खवाखाच चूड खावद र, उण हिज चूडै गई यळा ।।

छत्रपतिया लागी नह छाणत, गढपतिया धर परी गुमी ।
बळ नह कियौ बापडा बोता, जोता जोता गई जमीं ।।

दुय चत्रमास वादियौ दिखणी, भोम गई सो लिखत भवेस ।
पूगो नहीं चाकरी पकडी, दीधौ नहीं मरैठा देस ।।

वजियौ भलौ भरतपुर वाळौ, गाजै गजर धजर नभ गोम ।
पहिला सिर साहब रौ पडियौ, भड ऊभा नह दीधौ भोम ।।

महि जाता चींचाता महिला, अ दुइ मरण तणा अवसाण ।
राखो रे केहिक रजपूती, मरद हिंदू क मुसळमान ।।

पुर जोधाण उदैपुर जपुर, पह थारा खूटा परियाण ।
आक गई आवसी आर्क, वाक आसल किया वखाण ।।

अेक जागरुक कवि होवण सू वारी प्रकृति स्वतन्त्र ही । खरी बात कैवणी वारो सुभाविक गुण हो । इणरै कारण वानै जीवण मे कई वार फोडा ई भुगतणा पडया । इणी'ज प्रसग रो अेक दूहो प्रसिद्ध है, जिणरो भाव ओ है के कवि ने आपरै आश्रयदाता कानी सू लाख पसाव तो अेकर मिळयो पण देस निकाळो दोय वार मिळयो—

वाका थारी वाक नै, काढ सक्यो नह कोय ।
लाख पसाव तो इक लियो, देस निकाळा दोय ।।

महारावळ जसवतसिह डूगरपुर

1857 सू पै'ली राजस्थान मे अग्रेजा री चळवळ देखता आ बात आछी तरिया समझ मे आय जाव के वे किण भात छळ प्रपच सू प्रदेश मे आपरो प्रभाव जमावण मे लाग्योडा हा । इण बाबत डूगरपुर रियासत रो अेक प्रसग उल्लेखजोग है ।

इण प्रसग कानी कविया रो ध्यान गयो तो उणा इण विषय माथै काव्य रचना करी । इणसू जाण पडै के तत्कालीन कवि आपरै कर्त्तव्य रै प्रति अर राजनैतिक गतिविधिया र प्रति सजग हा । कविवर दलजी महडू इण प्रसग माथै जिकी काव्य रचना करी उणमे विदेशी सत्ता र प्रति विरोध रो सुर घणो सबळो है ।

अग्रेजा जद आपरी कपट नीति सू डूगरपुर रियासत माथै कब्जो करण री मती कियो ता तत्कालीन महारावळ जसवतसिह इणरो घोर विरोध कियो । पण सामत सरदारा महारावळ ने धोखो दियो । इणसू महारावळ नै आपरै काम मे सफळता नी मिळी अर विदेसी सत्ता रजवाडै माथै हावी होयगी । कविसरा न सरदार सामता रो ओ देशद्रोह अगाई दाय नी आयो । उणा वान आपर काव्य मे वारवार धिक्कारता थका वार इण कुकृत्य न जनता रै निजरा मे लावण री कोशिश करी । इण प्रसग रो अेक सोरठो इण भात है—

लाणत लूण हराम, जसवत मे कीधी जिका ।
कुळ विदरा रौ काम, साबत तो मे सादला ।।[1]

डू गरपुर रियासत रै इण प्रसग री सरुग्रात ई सन् 1808 सू होव—

'इणी'ज वरस महारावळ जसवतसिंह डू गरपुर री गादी माथै वैठा । उणी'ज दिना सिंधिया डू गरपुर रियासत मे लूटपाट करनै अशाति फलावणी सरु कीधी । अग्रेजा मौको देख'र डू गरपुर सागै सधि करण री वात चलाई अर राज मे व्यवस्था कायम करण रो वायदौ कियौ । ई सन् 1818 मे जान माल्कम र हुकम सू कप्तान कालफील्ड महारावळ सागै सधि करी । थोडाक दिना पछै रियासत मे भीला विद्रोह कर दियौ । सरदार सामता इण मामलै मे ई महारावळ री मदद नी करी । छेवट अग्रेजा आपरी सेना भेज'र शाति कायम करी । इण परिस्थिति रो लाभ उठावता अग्रेजा महारावळ सागै अेक ग्रौरू इकरारनामो तै कियौ । कप्तान मक्डानल्ड महारावळ न धमकाय न वारा सगळा अधिकार खोस लिया अर रियासत मे अग्रेजा कानी सू अेक दीवाण मुकर कर दियौ । महारावळ रै गुजारै वास्तै रकम तै कर दी । इसी अबखी वेळा मे ई सरदारा महारावळ री कोई मदद नी करी अर तमाशो देखता रह्या । महारावळ री इच्छा रै खिलाफ प्रतापगढ रा कु वर दलपतसिंह न लायन गोद विठाय दियौ अर रियासत मे अग्रेज मनमानी करण लाग्या । मौको देख'र महारावळ आपरै अधिकारा सारू अग्रेजा रै खिलाफ मघप करण री कोशिश करी पण सरदार सामत स्वार्थवश अग्रेजा अर कु वर दलपतसिंह रै पक्ष मे रह्या, जिणसू महारावळ आपर काम मे असफळ रह्या ।[2]

रियासत मे आपरी स्थिति मजबूत हुया अग्रेज महारावळ जसवतसिंह न भात भात सू परेशान करण लाग्या । महारावळ इण कुलगाया सू काठा धापग्या अर आछी तरिया तग आयग्या । होळै-होळै हालात इतरा विगडग्या के महारावळ न मजबूर होय न डू गरपुर छोडणो पडयो । 1845 मे वे वृ दावन जायन वसग्या अर

---

1 परपरा गोरा हटजा अक पृ स 87
2 परपरा गोरा हटजा अक पृ स 146

उठै ई वारो देहात हुयो ।[1] जे सरदार सामत मोक माथै महारावळ सागै विश्वासघात नी करता अर विदेशी सत्ता र विरुद्ध वारी मदद करता तो डूगरपुर छोड'र व दावन जावण री नोवत नी आवती । पण आपसी फूट अर वेर विरोध र कारण डूगरपुर विदेशी सत्ता र वब्ज होयग्यो ।

आपरै छोटै मोट स्वार्थ रै कारण महारावळ री खिलाफत धरन अग्रेजा रो पक्ष लेवण वाळ सरदार सामता मे हवाई ठिकाण रो सरदारसिह सोळकी, गढी ठिकाणै रो अजु नसिह अर दूजा कई नना मोटा सरदार सामत हा । कविवर दलजी महडू इण सगळा न धिक्कारता थका कह्यो के थ सगळा लूणहरामी अर दोगला हो । आज जे इण वागड धरा रो सपूत अजीतसिह जीवतो होवतो तो महारावळ री आ दशा नी होवती ।

सोरठो

हमक अजमल होत, असधारी वागड इळा ।
गढ छोड गहलोत, जातो नह रावळ जसो ॥[2]

कविवर आपरी वात आगै कहता उणा देश द्रोही सामता री तुलना लुगाइया सू करी है अर उणा न धिक्कारता कह्यो के थ कायर कपूत महारावळ जसवतसिह न अकेलो छोड'र यू बुआ गया ज्यू मुसलमान ताजियो छोड न आय जाव के लोग वाग गणगोर न छाड'र सावण रा गीत गावता बुआ जाव—

दूहा

ओढे सिर पर ओढणी, सह भड मागी सीख ।
तुरका रा तावूत ज्यू, मेल धल्या मछरीक ॥
जसवत नै गणगोर ज्यू, मेल तीरथ मझार ।
आया सावण गावता, साभरिया सिरदार ॥[3]

कवि दलजी महडू इणी'ज प्रसग र अेक डिगल गीत मे लिखै के इण सामत सरदारा री पत्निया वान इण कुकृत्य वास्तै धिक्कारती

---

1 परपरा गोरा हटजा अक पृ स 146
2 परपरा, गोरा हटजा अक पृ स 87
3 परपरा गोरा हटजा अक, पृ स 87

थकी वानै कवै—रे विश्वासघाती सरदारा, थारी मातावा थानै हालरिया गाय न वृथा लडाया अर पाळ पोप न मोटा किया। आछो तो ओ होवतो के थ उठै ई मर खप जावता अर मू डो नी बतावता।

थै थारै वडेरा रै नाम न ई कळ कित कर नाख्यो। डू गरपुर रै स्वामी महारावळ जसवतसिंह नै मौत रै मू ड मे नाख'र थै तमाशो देखता रह्या, धिक्कार है थान ! विदेशिया रो पक्ष लेय न कायरा थै देश रो नाक कटाय नाख्यो।

गीत

मू घा हालरा उगेर व्रथा पालणै हिंडाया मात,
पोख केण कारण जिवाया थानै पीव।
लोका लाज धारण फिरगी हूत भ्राट लेता,
जैर खाय धणी र वारण देता जीव॥

× ×

श्राघा जाता मू डो ले'र पाछा ई न आवणो छो पीव,
कर सारा भेळा क्यू गमावणो छो कूत।
श्रावरू थावता वठ पीवणो सहो छो श्राक,
जीवणो नहीं छो धणी जीवता जसू त॥

× ×

देखो वैरागीरा छाप, वडा नू लगाय दीधी,
श्रावगी हरामखोरी, माथै लीधी श्राज।
कहो धणी गमाव, सावता श्राव कासू कीधी,
लुच्चा सारा देस री, गमाय दीधी लाज॥

× ×

छोडै लीक छाप माथै, वडा री न धारी चाल,
खोटी सला विचारी, लगाई कुळा खोड।
नोरा ले ले पीव सू, साभरिया तणी कहै नारी,
मेल आया सारा, छत्रीपणा री मरोड॥

इण भात डू गरपुर रा इण प्रसग मे कविया आपरा मनोभाव प्रगट करन विदेशी सत्ता रो विरोध करता अवसरवादिया नै खरी-खरी सुणाई।

उठै ई वारी देहात हुयी ।[1] जे सरदार सामत मौकै माथ महारावळ सागै विश्वासघात नी करता अर विदेशी सत्ता रै विरुद्ध वारी मदद करता तो डू गरपुर छोड'र वृ दावन जावण री नौवत नी आवती । पण आपसी फूट अर वैर विरोध रै कारण डू गरपुर विदेशी सत्ता र कब्जै होयग्यो ।

आपर छोटै मोटै स्वार्थां रै कारण महारावळ री खिलाफत करन अग्रेजा रो पक्ष लेवण वाळै सरदार सामता मे हवाई ठिकाण री सरदारसिंह सोळकी, गढी ठिकाणै री अजु नसिंह अर दूजा कई नना मोटा सरदार सामत हा । कविवर दलजी महडू इण सगळा न धिक्कारता थका कह्यौ के थ सगळा लूणहरामी अर दोगला हो । आज जे इण वागड धरा री सपूत अजीतसिंह जीवतौ होवतौ तो महारावळ री आ दशा नी होवती ।

सोरठौ

हुमकै अजमल होत, असधारी वागड इळा ।
गढ छोडै गहलोत, जातो नह रावळ जसौ ॥[2]

कविवर आपरी वात आग कहता उण देश द्रोही सामता री तुलना लुगाइया सू करी है अर उणा न धिक्कारता कह्यो के थ कायर कपूत महारावळ जसवतसिंह न अेकलो छोड'र यू वुग्रा गया ज्यू मुसलमान ताजियो छोड नै आय जावै के लोग वाग गणगोर न छोड'र सावण रा गीत गावता वुग्रा जाव—

दूहा

ओढे सिर पर ओढणी, सह भड मागी सीख ।
तुरका रा तावूत ज्यू, मेल चल्या मछरीक ॥
जसवत नै गणगोर ज्यू, मेल तीरथ मझार ।
आया सावण गावता, साभरिया सिरदार ॥[3]

कवि दलजी महडू इणी'ज प्रसग रै अेक डिंगल गीत मे लिख के इण सामत सरदारा री पत्निया वान इण कुकृत्य वास्त धिक्कारती

---

1 परपरा गोरा हटजा अक पृ स 146
2 परपरा, गोरा हटजा अक पृ स 87
3 परपरा, गोरा हटजा अक, पृ स 87

थरी वानै कैवै—रे विश्वासघाती सरदारा, थारी माताबा थानै हालरिया गाय न वधा लडाया अर पाळ पोष न मोटा किया । आछौ तो ओ होवतो के थ उठ ई मर खप जावता अर मू डो नी वतावता ।

थै थारै वडेरा रै नाम नै ई कळ कित कर नाख्यो । डू गरपुर र स्वामी महारावळ जसवर्तसिह न मौत रै मू ड में नाख'र थै तमाशो देखता रह्या, धिक्कार है थान ! विदेशिया रो पक्ष लेय नै कायरा थ देश रो नाक कटाय नाख्यो ।

गीत

मू था हालरा उगेर सथा पालणै हिंडाया मात,
पोख केण कारण जिवाया थानै पीव ।
लोका लाज धारण फिरगी हूत भाट लेता,
जैर खाय धणी र वारण देता जीव ॥

× ×

आधा जाता मू डो ले'र पाछा ई न आवणो छो पीव,
कर सारा भेळा वधू गमावणो छो कूल ।
आवरू थावता वठ पीवणो सही छो आक,
जीवणो नहीं छो धणी जीवता जसू स ॥

× ×

देखो वरागोरा छाप, वडा नू लगाय दीधो,
आयगो हरामखोरी, माथ लीधो आज ।
कहो धणी गमाय, साबता आव कासू कीधो,
लुच्चा सारा देस री, गमाय दीधो लाज ॥

× ×

छोड लोक छाप माथ, वडा री न धारी चाल,
खोटी सला विचारी, लगाई कुळा खोड ।
नोरा ले ले पीव सू, सार्भरिया तणी कहै नारी,
मेल आया सारा, छत्रीपणा री मरोड ॥

इण भात डू गरपुर रा इण प्रसग मे कविया आपरा मनोभाव प्रगट करनै विदेशी सत्ता रो विरोध करता अवसरवादिया नै खरी-खरी सुणाई ।

राजकु वर चनसिह नरसिंहगढ

डू गरपुर महारावळ जसवतसिंह रै ज्यू नरसिंहगढ रै राजकु वर चैनसिंह ई विदेशी सत्ता रो विरोध कियो हो । इण विरोध र मूळ मे ई सागण वे इज कारण रह्या जिका डू गरपुर रै मामल मे रह्या । अठ ई अग्रेजा राजकाज मे दखलदाजी करन आपरो प्रभाव जमा वण री कोशिश करी तो चनसिंह इणरो विरोध कियो । राजकु वर चनसिंह अेक स्वतत्र प्रकृति रो विवेकशीळ मोटयार हो । उणनै अग्रेजा री कुटिल नीति सहन नी हुई । प लो तो उण आपसरी मे बातचीत सू मामलो निवेडण री कोशिश करी पण अग्रेजा री नीत खोटी देख'र छेवट उणनै खुलो विद्रोह करणो पड्यो ।

उण वखत अग्रेजी सत्ता राजस्थान मे अर कनला प्राता मे होळै-होळै आपरो कब्जो जमावण मे लाग्योडी ही । इणसू ठौड ठौड उणरो विरोध हुयो । इण सिलसिल मे भारतीय शक्ति साग अग्रेजा री जिको भिड त हुई, उणमे नरसिंहगढ र राजकु वर चनसिंह रै साग हुयो युद्ध घणो महताऊ अर उल्लेख जोग है । चैनसिंह कन थोडीसीक सेना ही । मोको देख'र अग्रेजा उणन घेर लियो । विकट स्थिति मे फस्या उपरात ई उण कायरा री दाई पूठ नी बताई अर घणी वीरता सागै लडता थका रणखेत रह्यो । गोरी सेना उणरी वीरता देख'र चकित हुयगी ।[1]

अेक अज्ञात कवि इण प्रसग रो अेक सवैयै म वणन कियो है । इणमे कवि चनसिंह अर अग्रेजा र बिचाळै हुयै युद्ध रो वणन करता तत्कालीन परिस्थितिया रो जिक्र करै—अग्रेजा पूरै देश मे फूट नाख'र आपरो काम काढ लियो । पण छेवट लोग वारी चाल न समझग्या । वे अग्रेजा रै विरोध मे सगठित हुया । युद्ध र हाक साग भाला री अणिया सू आकाश छायग्यो । तोपा गडगडावण लागी अर देशवासी वतन न आजाद राखण खातर त्यार होयग्या—

सवयो

करी अगरेज अजोग इसो, फिरि लोक फटाय फटाय के फाट,
हाक बगी मिळगी अणिया, दहु तोप दगी सो लगो कळकाट ॥

---

1 परपरा, गोरा हटजा अक, पृ स 145

जुद्ध कियौ मन सुद्ध भडा जद, सूर आये तब देखन साट,
इण काज कवार पवार लड जग ऊपर चन जमीन के म्राट ।।[1]

इणी'ज भांत सिढायच वुधसिंह नाम रै अेक कवि ई इण प्रसग माथ अेक डिंगल गीत लिख्यौ है। इणमे चैनसिंह अर अग्रेजा र बिचाळै युद्ध रो सातरो वणन है। इणसू जाण पडै के चैनसिंह इण युद्ध मे कितरी वीरता सू लड्यौ। कवि उणरै शौय री तुलना उणरै पूवज गुमानसिंह रै सागै करी है। कवि मायड भोम रै इण सपूत रा वखाण घणै उछाव सू किया है—

गीत

चल आवता फिरगी सीस ऊससै क्रोधार चनो,
चोळ चखा सार धारा दाहणा चचाळ।
ऊथक अराबा आग हूबकै जोधार अग,
(जठै) ताता जगा पमगा मेलिया निरातोळ ॥

धग वीर ताळ जग ज्वाळ तोपा जेण वार,
अहक नबाळ डका डहक्क तबूर।
कोमखी कराळ जगा मिळ घडी प्रळै काल,
किरमाला निरातोल वाजिया कस्र ॥

उभै ओडो घाव बहै हेक चमू उभै ओडा,
धमोडा सावला घोडा भडा वाव घाव।
भटक्का हजारा बहै सरोसा बटक्का झाड,
रटक्का बटक्का रिमां कर गाढै राव ॥

ईस भाण आराण तमासौ तुरी आण ऊभो,
वारगा चिवाण हूकै काचा मघा वोम।
फौला भडा फरक्क ढमक्क बाथा तमा काबी,
धबकै लोयणां क्रोध हुई रत्ती बोम ॥

× ×

मुक्कै तल मुक्कै भरा ढक्कै बड़ी सू आया,
मुडक्कै कायरा सूर वक्कै मार-मार।
फडक्कै फौकरा रत्ता धडक्कै बैरिया फौज,
धकै घाव भार्या उरां वहा सार धार ॥

1 परंपरा, वीर हुतात्मा अंक, पृ सं 82

डू गरपुर महारावळ जसवतसिंह र ज्यू नरसिंहगढ रै राजकु वर चैनसिंह ई विदेशी सत्ता री विरोध कियो हो । इण विरोध रै मूळ मे ई सागण वे इज कारण रह्या जिका डू गरपुर रै मामल मे रह्या । अठै ई अग्रेजा राजकाज मे दखलदाजी करन आपरो प्रभाव जमा वण री कोशिश करी तो चनसिंह इणरो विरोध कियो । राजकु वर चनसिंह अेक स्वतत्र प्रकृति री विवेकशील मोटयार हो । उणा अग्रेजा री कुटिल नीति सहन नी हुई । प'ली तो उण आपसरी मे बातचीत सू मामलो निवेडण री कोशिश करी पण अग्रेजा री नीत खोटी देख'र छेवट उणनै खुलो विद्रोह करणो पडयो ।

उण वखत अग्रेजी सत्ता राजस्थान मे अर कनला प्राता मे होळै-होळै आपरो कब्जो जमावण मे लाग्योडी ही । इणसू ठौड ठौड उणरो विरोध हुयो । इण सिलसिल मे भारतीय शक्ति सागै अग्रेजा री जिको भिड त हुई, उणमे नरसिंहगढ रै राजकु वर चनसिंह र साग हुयो युद्ध घणो महताळ अर उल्लेख जोग है । चैनसिंह कनै थोडीसीक सेना ही । मोको देख'र अग्रेजा उणनै घेर लियो । विकट स्थिति मे फम्या उपरात ई उणै कायरा री दाई पूठ नी बताई अर घणी वीरता साग लडता थका रणखेत रह्यो । गोरी सेना उणरी वीरता देख'र चकित हुयगी ।[1]

अेक अग्यात कवि इण प्रसग री अेक सवयै म वणन कियो है । इणमे कवि चनसिंह अर अग्रेजा रै बिचाळै हुय युद्ध रो वणन करता तत्कालीन परिस्थितिया री जिक्र करै—अग्रेजा पूर देश मे फूट नाख'र आपरो काम काढ लियो । पण छेवट लोग वारी चाल न समभग्या । वे अग्रेजा रै विरोध मे सगठित हुया । युद्ध र हाक सागै भाला री अणिया सू आकाश छायग्यो । तोपा गडगडावण लागी अर देशवासी वतन नै आजाद राखण खातर त्यार होयग्या—

सवयो

फरी अगरेज अजोग इसो, फिरि लोक फटाय फटाय के फाट,
हाक वगी मिळगी अणिया, दहु तोप दगो सो लगी कळकाट ।।

---

1 परपरा, गोरा हटजा वक, पृ स 145

जुद्ध कियो मन सुद्ध भडा जद, सूर आये तब देखन साट,
इण काज कवार पवार लड जग ऊपर चन जमीन के आट ।।[1]

इणी'ज भात सिढायच वुधसिंह नाम रै अेक कवि ई इण प्रसग माथ अेक डिंगल गीत लिख्यो है। इणमे चैनसिंह अर अग्रेजा र विचाळै युद्ध रो सातरो वणन है। इणसू जाण पडै के चैनसिंह इण युद्ध मे कितरी वीरता सू लड्यो। कवि उणर शौय री तुलना उणरै पूवज खुमानसिंह रै सागै करी है। कवि मायड भोम रै इण सपूत रा वखाण घणै उछाव सू किया है—

गीत

घलै आवता फिरगो सीस ऊससै जोधार चनौ,
चोळ चखा सार धारा दाहणा चवाळ।
ऊवक अरावा आग हूबक जोधार अग,
(जठै) ताता जगा पमगा मेलिया निराताळ ।।

धग थोर ताळ जग ज्वाळ तोपा जेण वार,
न्रहक अग्राळ डका डहक्क तदूर।
कोमली कराळ जगा मिळ घडी प्रळ काल,
फिरमाला निराताल वाजिया करूर ।।

उभ ओडा घाव वहे हेक चमू उभ ओडा,
घमोडा साबला घोडा भडा दाव घाव।
भटक्का हजारा बहे सरीखा बटक्का झडै,
रटक्का बटक्का रिमा कर गाढ राव ।।

ईस भाण आराण तमासो तुरी आण ऊभौ,
बारगा बियाण हक्कै काया भगा बोम।
फौला भ्रडा फरक्क धमक्क घावा सना फावै,
धधक लोयणा कोध जुडै रूपी धोम ।।

× ×

मुरक सल धुक्क घरा दडक्कै धडा सू माया,
मुडक्क कायरा सूर बक्कै मार-मार।
फडक्क फौकरा रगा धडक्क वेविया फौज,
धक धाढ भाज उरा घणा सार धार ।।

---

1 परपरा गोरा हटजा मव, पृ स 82

केता गजा पछाड रचाडे खेत नरा केता,
अखाड मचाड वीर विहड अपार ।
नीवड भडक्का भडे लड दोय जाम नभ,
सूजावसो भाग पड कवरा सिंगार ॥

अच्छरा वधाव राग रगा गावै मोद अगा,
अढगा उवारै हवका प्रमत्तो असेर ।
पाच सो सुभट्टां समा करैं इद्रलोक पूगो,
झमटो चढाव आव वियो अच्चळेस ॥[1]

मायड भोम र सपूत कु वर चैनसिंह र बळिदान रो महत्व इण बात सू ई बढ जाव के महाकवि सूयमल मीसण ई इण प्रसग मे रचना करी है । आ बात चनसिंह रै राष्ट्रीय सरूप न उजागर करै । मीसण जिस राष्ट्रीय स्तर रै कवि परपरागत डिंगल शली मे काव्य रचना करन चनसिंह री जिण भात प्रशसा करी है उणसू जाण पड़ै के कवि रै मन मे उणर प्रति कितरो मान हो । गीत मे युद्ध रो घणो ओजपूण वणन है—

गीत

दगो विचार फेरियो अगरेजा लोगा ओगडह्,
तासा बवो भडदा तेडियो नाग ठाय ।
भाल घाचो फेरियो खेहरी हूत छायो भाण,
बाघलो केहरो घन घेरियो बलाय ॥

माच लाग झाटा रावै सवाई ▮ लडा मायै,
रत्रा प्राट पाटा नदी बहाई रोसाग ।
पाय पाटा जग रूपो कबाणा नवाई पाणा,
सन्नाटा बेढियो थारा सवाई सो भाग ॥

सुण घोर तासा आसमांण लागियो सीस,
सत्रा घ चनरो खाग बागियो समूळ ।
धांप हुणं आसुरा विभाडवा आगियो किना,
सिंधु रा पाडवा सूतो जागियो सादूळ ॥

---

1 चारण साहित्य रा इतिहास, भाग II, पृ स 95, डॉ मोहनलाल जिनासु ।

देखता ग्रेहबा जग घडक्कै ग्रागरी दिल्लो,
बबो जत मागरा रडक्क बारबार ।
भडक्क खाग रा बाढ भडक्कै कायरा भुड,
हमल्ला नाग रा माथा रडक्कै हजार ॥

× ×

भद्र काली पीव थोरा उमग खप्परा भरै,
वाज यू मुनीस वाली भेरी नाद बग ।
ताली दे जोगणी रभा माल रा चौसरा तूटैं,
जूट वीर जोस रा कमाली जेम जग ।।

भडक्का खरांकै वाज सैल रा घमोडा भाट,
रडक्का गुरजा गाजै घम्मोडा रढत ।
ग्रावधा ग्ररिया वाला माथा रा चटक्का उडै,
चटक्का चन रा काच सोसी ज्यू बढत ।।

हीका घर साहसी वैरिया धू चलाया हाथ,
ग्राहसी नत्रोठा काछो मलाया ग्रोसाण ।
पाथ ज्यू ग्रनम्मी खध वसनू चाढियो पाणी,
यू पद्म ऊमटा नाथ पोढियो ग्रारारण ।।

वाना ग्रग धारणा भो जाहरा करगो वाता,
उधरेगो हाथा देत बारणा ऊवाड ।
उछाहा भरेगो खाग धारगा खरेगो ग्रग,
धारना बरेगो चन लोहडा बजाड ।।[1]

स्वतत्रता सेनानी डूगजी जवारजी

मुगल साम्राज्य री पतन होवता ई भारत र राजनतिक क्षितिज माथै मराठा शक्ति री ग्रभ्युदय हुयो । धडलै रै ज्यू मुगल साम्राज्य जठा ताई भारतीय धरती माथै छायोडो रह्यो, ग्रापरी छिया मे सत्तारूपी कोई दूजी वनस्पति न नी पनपरा दीवी । परा उरार कमजोर पडता ई कई शक्तिया वळवती होयगी ।

मुगला री प्रभाव मोळो पडता ई मराठा शक्ति ग्राधी रै उनमान ऊडी ग्रर देखता देखता सगळै भारतीय ग्राकाश मे छायगी । अेक्र

---

1 परपरा, गोरा हटजा ग्रक पृ स 85

तो उणै आखै देश न धुजाय दियो। मुगल साम्राज्य रै प्रति उणारै मन मे जिको रोप हो, ओ उत्पात अेक तर सू उणरी अभिव्यक्ति ही। अधाधुध लूटपाट अर भयकर रक्तपात सू आखो देश दुखी होयग्यो

उण वखत राजस्थान रै रजवाडा री हालत घणी माडी ही। पीढिया लग मुगला र दमन अर शोषण सू सगळा रजवाडा निष्प्राण सा हुयोडा हा। तिण उपरात आपसी फूट रै कारण वे ओरू कमजोर पडग्या हा। इसी अवखी वेळा मे मराठा शक्ति रो अभ्युदय रजवाडा र वास्त कोढ मे खाज रै ज्यू सावत हुयो। उणा बार बार आक्रमण करन रजवाडा मे खूब लूट खसोट करी। इणसू वे सफा बरबाद होयग्या।

अग्रेज तो इसै मौक री ताक मे ई हा। उणा अेक अेक करनै सगळै रजवाडा साग सधिया करी अर वान सुरक्षा रो वचन दियो। रजवाडा तो इण वास्तै त्यार ई वैठा हा। वे आपरी सुरक्षा रो भार अग्रेजा नै सूपन नचीता होयग्या। अग्रेजा जद रजवाडा मे च्यारू-मेर पोल अर अव्यवस्था देखी तो उणा बार आतरिक मामला मे ई दखलदाजी सरु करी। देशी नरेशा न तो आपरी सुरक्षा अर अेश आराम सू मतळब हो। इण वास्त उणा तो जिण भात मुगला अर मराठा रा अत्याचार सहन किया, उणी'ज भात अग्रेजा री बेजा दखलदाजी अर शोषण न ई सहन करण लाग्या।

पण राजस्थान रा की स्वतत्रचेता जागीरदार इण स्थिति न देख'र घणा दुखी हुया। अग्रेजा री हरेक मामल मे 'लाड री मुभ्रा' वणणी वानै सहन नी हुयो। उणा अग्रेजी हकूमत र खिलाफ खुली बगावत सरु करदी। ब्रिटिश शक्ति री तुलना मे कोई सगठित शक्ति नी ही अर नी वारै लारै कोई पीठ बळ हो। पर वार मन म जिकी स्वतत्रता री भावना ही उण सारू वे मरण मारण न त्यार होयग्या।

'इण जागीरदारा मे शेखावाटी रै बठोठ पाटोदा रा ठाकर डूगर-सिंह जवाहरसिंह, बीकानेर रै ठठावत रा ठाकर हरिसिंह बीदावत, भोजोळाई रा प्राणदसिंह, सूरजमल ददरेवा, आऊव ठाकर खुशाल-सिंह चापावत, विशनसिंह मेडतिया गूलर, शिवनाथसिंह आसोप, श्यामसिंह चोहटण (बाडमेर), नाथूसिंह देवडा भटाणा (सिरोही),

बळवतसिंह गोठडा (बूंदी) अर कोटा नरेश रा छोटा भाई पृथ्वी सिंह हाडा इत्याद प्रमुख हा।'[1]

रजवाडा सागै अंग्रेजा री जिकी संधिया हुई वे इण स्वतनचेता जागीरदारा न अगाई दाय नी आई। इण संधिया सूं राजावा अर जागीरदारा री स्वायत्तता नष्ट होवती ही। ओ ई कारण है के 1857 रा स्वतनता संग्राम रै पैं'ली ई राजस्थान मे अंग्रेज विरोधी वातावरण आछी तरिया फैलग्यो हो। शेखावाटी मे सैं सूं पैं'ली इण विद्रोह री नेतत्व बठोठ पटोदा रै ठाकर डूंगरसिंह अर वारै काकाई भाई जवाहरसिंह कियो (लोक काव्य मुजब डूंगजी जवारजी काको भतीज गिणीज जिको गळत है।)[2]

इण उगणीसवीं सदी रै पूर्वार्द्ध मे अंग्रेजा रै खिलाफ अेक सग ठित अर योजनाबद्ध विद्रोह री आयोजन कियो, जिणसूं विदेशी सत्ता हाक बाक रैयगी। इण सगठण मे शेखावाटी इलाक रा कई प्रमुख जागीरदार ई भेळा हा। उदाहरण सरूप खीरोड, खडब, मझाऊ, देवता अर मोहनवाडी रा ठिकाणा। इण सगठण न छत्तीस कौम री ई सहयोग मिळ्योडो हो। जाट, गूजर, मीणा अर लुहार इत्याद सगळी कौमा रा लोग इणमे भेळा हा। इण कारण इणनै फगत सरदार-सामता अर राजपूता री सगठण नी कय सका। लोटियो जाट, करनियो मीणो, बालियो नाई अर सावतियो मीणो इत्याद तो डूंगजी जवारजी रा प्रमुख सहयोगी रह्या अर उणा इण विद्रोह मे घणी बहादुरी सूं भाग लियो। इण भात ओ विद्रोह अेक समाज विशेष ताई सीमित नी रैय न आम जनता ताई फैलग्यो हो।

इण सगठण रै पीठ बळ माथ डूंगजी जवारजी अंग्रेजी राज रा गावडा माथै हमला करण अर लूटपाट करणी सरू करी। इण माथै अंग्रेज सरकार थोडी चमकी अर विद्रोहिया रो दमन करणो सरू कियो। सरकारी डाक अर खजाना नै लूटणा आम बात हुयगी। अंग्रेज परेशान होयग्या।

राजस्थान मे नसीराबाद अंग्रेजा री मशहूर छावणी ही।

---

1 स्वतनता सेनानी डूंगजी जवारजी पृ स।

2 बठोठ पटोदा री वशवक्ष सुजनसिंह भामड री सग्रह।

तो उण आधा देश न धुजाय दियौ। मुगल साम्राज्य रै प्रति उणरै मन मे जिको रोष हो, भ्रो उत्पात अेक तरै सू उणरी अभिव्यक्ति ही। अधाधु ध लूटपाट अर भयकर रक्तपात सू आखो देश दुखी होयग्यो

उण वखत राजस्थान रै रजवाडा री हालत घणी माडी ही। पीढिया लग मुगला रै दमन अर शोषण सू सगळा रजवाडा निष्प्राण सा हुयोडा हा। तिण उपरात आपसी फूट रै कारण वे औरू कमजोर पडग्या हा। इसी अबखी वेळा मे मराठा शक्ति री अभ्युदय रजवाडा र वास्तै कोढ मे खाज रै ज्यू साबत हुयौ। उणा बार बार आक्रमण करनै रजवाडा मे खूब लूट खसोट करी। इणसू वे सफा बरबाद होयग्या।

अग्रेज तो इसै मौकै री ताक मे ई हा। उणा अेक अेक करन सगळै रजवाडा सागै सधिया करी अर वान सुरक्षा रो वचन दियो। रजवाडा तो इण वास्त त्यार ई बठा हा। वे आपरी सुरक्षा रो भार अग्रेजा न सू पन नचीता होयग्या। अग्रेजा जद रजवाडा मे क्यास-मेर पोल अर अव्यवस्था देखी तो उणा वार भ्रातरिक मामला मे ई दखलदाजी सरु करी। देशी नरेशा न तो आपरी सुरक्षा अर अेश आराम सू मतळव हो। इण वास्त उणा तो जिण भात मुगला अर मराठा रा अत्याचार सहन किया, उणी'ज भात अग्रेजा री बेजा दखलदाजी अर शोषण न ई सहन करण लाग्या।

पण राजस्थान रा की स्वतन्त्रेता जागीरदार इण स्थिति न देख'र घणा दुखी हुया। अग्रेजा री हरेक मामले मे 'लाड री भुआ' वणणी वान सहन नी हुयो। उणा अग्रेजी हकूमत रै खिलाफ खुली बगावत सरु करदी। ब्रिटिश शक्ति री तुलना मे कोई सगठित शक्ति नी ही अर नी वारै लार कोई पीठ बळ हो। पर वारै मन मे जिकी स्वतत्रता री भावना ही उण सारु वे मरण मारण नै त्यार होयग्या।

'इण जागीरदारा मे शेखावाटी रै वठोठ पाटोदा रा ठाकर डूगर-सिंह जवाहरसिंह, बीकानेर रै ठठावत रा ठाकर हरिसिंह बीदावत, भोजोळाई रा आणदसिंह, सूरजमल ददरेवा, आउव ठाकर खुशाल-सिंह चापावत, बिशनसिंह मेडतिया गूलर, शिवनाथसिंह आसोप, श्यामसिंह चोहटण (वाडमेर), नाथूसिंह देवडा भटाणा (सिरोही),

वळवतसिंह गोठडा (बूंदी) अर कोटा नरेश रा छोटा भाई पृथ्वीसिंह हाडा इत्याद प्रमुख हा।'[1]

रजवाडा सागै अंग्रेजां री जिकी संधियां हुई वे इण स्वतन्त्रचेता जागीरदारां नै अगाई दाय नी आई। इण संधियां सू राजावां अर जागीरदारां री स्वायत्तता नष्ट होवती ही। ओ ई कारण है के 1857 रा स्वतन्त्रता संग्राम रै पै'ली ई राजस्थान में अंग्रेज विरोधी वातावरण आछी तरियां फैलग्यो हो। शेखावाटी में सं मू पै'ली इण विद्रोह रो नेतृत्व बठोठ पटोदा रै ठाकर डूंगरसिंह अर बारै काकाई भाई जवाहरसिंह कियो (लोक काव्य मुजब डूंगजी जवारजी काको भतीज गिणीजै जिको गळत है।)[2]

इण उगणीसवीं सदी रै पूर्वार्द्ध में अंग्रेजां रै खिलाफ अेक संगठित अर योजनाबद्ध विद्रोह रो आयोजन कियो, जिणसूं विदेशी सत्ता हाक वाक रैयगी। इण संगठण में शेखावाटी इलाकै रा कई प्रमुख जागीरदार ई भेळा हा। उदाहरण सरूप खीरोड, खडब, मण्डाऊ, देवता अर मोहनवाडी रा ठिकाणा। इण संगठण न छत्तीस कौम रो ई सहयोग मिळयोडो हो। जाट, गूजर मीणा अर लुहार इत्याद सगळी कौमां रा लोग इणमें भेळा हा। इण कारण इणनै फगत सरदार-सामंतां अर राजपूतां रो संगठण नी कैय सकां। लोटियो जाट, करनियो मीणो, बालियो नाई अर सावतियो मीणो इत्याद तो डूंगजी जवारजी रा प्रमुख सहयोगी रह्या अर उणा इण विद्रोह में घणी बहादुरी सूं भाग लियो। इण भांत ओ विद्रोह अेक समाज विशेष ताईं सीमित नी रैय न आम जनता ताईं फैलग्यो हो।

इण संगठण रै पीठ बळ माथै डूंगजी जवारजी अंग्रेजी राज रा गावडां माथै हमला करण अर लूटपाट करणो सरू करी। इण माथै अंग्रेज सरकार थोडी चमकी अर विद्रोहियां रो दमन करणो सरू कियो। सरकारी डाक अर खजाना न लूटणा आम बात हुयगी। अंग्रेज परेशान होयग्या।

राजस्थान में नसीराबाद अंग्रेजां री मगरूर छावणी ही।

---

1 स्वतन्त्रता सेनानी डूंगजी जवारजी, पृ स 1

2 बठोठ पटोदा री वंशवृक्ष सुजानसिंह सामड री संग्रह।

तो उणं श्रापं देश न धुजाय दियो । मुगल साम्राज्य रै पति उणरै मन मे जिको रोष हो, श्रो उत्पात अेक तरै सू उणरी श्रभिव्यक्ति ही । अथाघु II लूटपाट श्रर भयकर रक्तपात सू श्राखो देश दुखी होयग्यो

उण वखत राजस्थान र रजवाडा री हालत घणी माडी ही । पीढियां लग मुगला रै दमन श्रर शोपण सू सगळा रजवाडा निष्प्राण सा हुयोडा हा । तिण उपरात श्रापसी फूट र कारण वे श्रोरू कमजोर पडग्या हा । इसी श्रबखी वेळा मे मराठा शक्ति रो श्रभ्युदय रजवाडा र वास्त कोढ मे खाज र ज्यू साबत हुयो । उणा वार वार श्राक्रमण करन रजवाडा मे खूब लूट खसोट करी । इणसू वे सफा बरबाद होयग्या ।

अग्रेज तो इसै मौकै री ताक मे ई हा । उणा अेक अेक करनै सगळ रजवाडा साग सधिया करी श्रर वान सुरक्षा रो वचन दियो । रजवाडा तो इण वास्त त्यार ई बैठा हा । वे श्रापरी सुरक्षा रो भार अग्रेजा नै सूप नचीता होयग्या । अग्रेजा जद रजवाडा मे च्यारू-मेर पोल श्रर श्रव्यवस्था देखी तो उणा वार श्रातरिक मामला मे ई दखलदाजी सरु करी । देसी नरेशा न तो श्रापरी सुरक्षा श्रर अेश श्राराम सू मतलब हो । इण वास्त उणा तो जिण भात मुगला श्रर मराठा रा श्रत्याचार सहन किया, उणी'ज भात अग्रेजा री बेजा दखलदाजी श्रर शोपण नै ई सहन करण लाग्या ।

पण राजस्थान रा की स्वतत्रचेता जागीरदार इण स्थिति न देख'र घणा दुखी हुया । अग्रेजा री हरेक मामल मे 'लाड री भुश्रा' बणणो वान सहन नी हुयो । उणा अग्रेजी हकूमत रै खिलाफ खुनी बगावत सरु करदी । ब्रिटिश शक्ति री तुलना मे कोई सगठित शक्ति नी ही श्रर नी वारै लारै कोई पीठ बळ हो । पर वार मन म जिकी स्वतत्रता री भावना ही उण सारू वे मरण मारण नै त्यार होयग्या ।

'इण जागीरदारा मे शेखावाटी रै बठोठ पाटोदा रा ठाकर डू गर-सिंह जवाहरसिंह, बीकानेर रै ठठावत रा ठाकर हरिसिंह बीदावत, भोजोळाई रा श्राणदसिह, सूरजमल ददरेवा, श्राऊवे ठाकर खुशाल-सिंह चापावत, बिशनसिंह मेडतिया गूलर, शिवनाथसिंह श्रासोप, श्यामसिंह चोहटण (बाडमेर), नाथूसिंह देवडा भटाणा (सिरोही),

रीझा देवण जुध करण, मेम सुणै जग माय ।
ज्वार डूग दोनू जिसा, नर जनम फिर नाय ।।

काका मे पण नह कमी, निडर भतीजो ह्हार ।
अे कूरम रहसी अखो, जग मे डूग जवार ।।

ज्वार डूग दीधो जस्र, रिपुवा इण विध रेस ।
रणव श्रो इचरज रह्यो, सुण जुध वात महेस ।।[1]

इण भात जन मानस मे इण स्वतत्रता सेनानिया र प्रति कितरौ मान हो, वो इण काव्य मे सुभट लखावै । पण डू गजी जवारजी रै सदभ मे रचित सगळै काव्य रो अवलोकन किया पै'लो यारै जीवण सू सबधित की प्रमुख घटनावा रो अैतिहासिक विवेचन कर लेवणो ठीक रहसी, जिणसू इण सदभ मे रचित काव्य रो सही मूल्याकन होय सकै ।

जिण भात पै'ली वणन आयग्यो है राजस्थान प्रदेश रा सरदार सामत अर जागीरदार राजावा अर अग्रजा र बिचाळै हुय गठबधन रै पूरा खिलाफ हा । इण कारण जद ई सन् 1818 मे जयपुर रियासत र सागै अग्रे जा री सधि हुई तो शेखावाटी प्रदेश रा सगळा जागीरदारा न आ वात अगाई दाय नी आई । खासकर न सीकर रा रावराजा लक्ष्मणसिंह, दाहपुरा रा राव हणवतसिंह अर बिसाऊ ठाकर श्यामसिंह शेखावत इण सधि रा कट्टर विरोधी हा । इण वास्तै मौको देख'र जयपुर र पोलेटिकल अेजेंट रै सहायक अधिकारी मि ब्लेक री सरेआम हत्या करवाय दी । इणर पछै शेखावाटी रै दोळलै अग्रेजी इलाक माथ हमला होवण लागग्या । अग्रे जी सरकार ई सावचेत होयगी अर उण इणरो मुकाबलो करण वास्तै शेखावाटी ब्रिगेड' नाम सू अेक नु वो सनिक सगठण बणायो ।

'डू गजी इणी'ज ब्रिगेड री घुडसवार सेना मे रिसालदार रै पद माथै हा ।'[2] पण जद सीकर ठिकाणै रै उत्तराधिकार रै मामलै मे अग्रे ज लार्ड री मुश्रा वणनै डाड पटेली करण लाग्या तो दूजा जागीरदारा र साग अे ई अग्रेजा र विरुद्ध होयग्या । 'ई सन् 1834

---

1 परपरा, गोरा हटजा अक पृ स 124
2 स्वतत्रता सेनानी डू गजी जवारजी, पृ स 2

डगजी जवारजी उण माथै हमलो करन उणन लूटली । इण घट
सू अंग्रेजा री नाक कटग्यी । डूगजी धोखै सू पकडीजग्यो अ
अंग्रेजा वान लिजाय न आगरै रै किलै मे कद कर दिया । प
लोटिय जाट अर जवारजी मिळ'र किल न तोड'र डूगजी न छुड
लाया । इण सगळी घटनावा री जन मानस मे घणी तीव्र प्रतिक्रि
हुई । कवि गणा इण माथै यशप्रशस्ति लिखन अर लोक गाय
पवाडा अर छावळिया लिख'र इण घटनावा न खूब बिडदाई ।

डूगजी जवारजी री तारीफ मे लिख्योडो काव्य मोकळी मा
मे मिळै । इणमे घणकरा डिंगल गीत, पवाडा अर छावळिया है
इणरै अलावा की आधुनिक राजस्थानी पद्य ई मिळै । इण सग
काव्य मे डूगजी जवारजी न अेक अंग्रेज विरोधी 'हीरो' रै रूप
चित्रित करन वारी खूब प्रशसा करीजी है ।

इण काव्य मे तत्कालीन परिस्थितिया रो आछो वणन है
अंग्रेजी शोषण रै फळसरूप समाज मे फली गरीबी र कारण व्या
जन असतोष रो वणन करता लिख्यो है—

'मिनखा निठगो मोठ बाजरो, घोडा निठग्यो घास'

अर इण असतोष रै कारण ई आम जनता री सहानुभूति स्वतत्रत
सेनानिया साग रही जिणसू ओ सघप मोकळै वखत ताई चालत
रह्यो ।

कविया इण वीरा री प्रशसा मे घण गुमेज रै साग कह्यो—

जे कोई जणती राणिया डूग जिसा दइवाण ।
तो इण हिंदुस्तान मे, फिरतो नहि फिरगाण ।।

जुग बीता पछै आज ई वारी धवळ कीरत अखै बण्योडी है —

आठ पहर देव अजा, सारो ई दाव मसार ।
इळ जनम्या माटी उभय, जग मे डूग जवार ।।

सुप्रसिद्ध राजस्थानी कवि उदैराज उज्ज्वळ इण स्ततत्रत
सेनानिया री पुण्य स्मति मे कह्यो—

मरै नहीं भड मारका, धरती बेडी धार ।
गाईज जस गीतडा, जग मे डूग जवार ।।

इणी'ज भात अेक अज्ञात कवि इण वीरा न मान भरी श्रद्धा
जळि अर्पित करता लिख्यो—

रीझा देवण जुध करण, मेम सुणै जग माय ।
ज्वार डूग दोनू जिसा, नर जनम फिर नाय ।।

काका मे पण नह कमी, निडर भतीजो न्हार ।
अे कूरम रहसी अखी, जग मे डूग जवार ।।

ज्वार डूग दीधौ जरू, रिपुवा इण विध रेस ।
रंगव श्रो इचरज रह्यौ, सुण जुध वात महेस ।।[1]

इण भात जन मानस मे इण स्वतन्त्रता सेनानिया र प्रति कितरौ मान हो, वो इण काव्य मे सुभट लखावै । पण डू गजी जवारजी रै सदभ मे रचित सगळ काव्य रौ अवलोकन किया प'ली यार जीवण सू सबधित की प्रमुख घटनावा रौ ऐतिहासिक विवेचन कर लेवणौ ठीक रहसी, जिणसू इण सदभ मे रचित काव्य रौ सही मूल्याकन होय सकै ।

जिण भात पै ली वणन आयग्यौ है राजस्थान प्रदेश रा सरदार सामत अर जागीरदार राजावा अर अग्रेजा र बिचाळै हुयै गठवधन रै पूरा खिलाफ हा । इण कारण जद ई सन् 1818 मे जयपुर रियासत रै सागै अग्रेजा री सधि हुई तो शेखावाटी प्रदेश रा सगळा जागीरदारा न आ बात अगाई दाय नी आई । खासकर नै सीकर रा रावराजा लक्ष्मणसिह, शाहपुरा रा राव हणवतसिह अर बिसाऊ ठाकर श्यामसिह शेखावत इण सधि रा कट्टर विरोधी हा । इण वास्तै मौको देख'र जयपुर रै पोलेटिक्ल अेजेंट रै सहायक अधिकारी मि ब्लेक री सरेआम हत्या करवाय दी । इणर पछै शेखावाटी रै दोळलै अग्रेजी इलाक माथै हमला होवण लागग्या । अग्रेजी सरकार ई सावचेत होयगी अर उण इणारी मुकाबलो करण वास्त शेखावाटी ब्रिगेड' नाम सू अेक नुवो सनिक सगठण बणायौ ।

'डू गजी इणी'ज ब्रिगेड री घुडसवार सेना मे रिसालदार रै पद माथै हा ।'[2] पण जद सीकर ठिकाण रै उत्तराधिकार रै मामल मे अग्रेज लार्ड री भुआ वणन डाड पटेली करण लाग्या तो दूजा जागीरदारा र साग अे ई अग्रेजा रै विरुद्ध होयग्या । 'ई सन् 1834

---

1 परपरा गोरा हटजा अक पृ स 124
2 स्वतन्त्रता सेनानी डू गजी जवारजी, पृ स 2

मे शेखावाटी ब्रिगेड रा की घोटा ऊट अर सन्तर पाटी लेयन अे निकळग्या अर बारोठिया बणग्या ।'[1]

शेखावाटी इलाक रा जितरा ई जागीरदार अंग्रेजा र विरुद्ध हा, डूगजी न वा सगळा रो सहयोग मत ई मिळग्यो । इण भात ओ जेक लूठो अर ताकतवर सगठण बणग्यो । अंग्रेजी इलाक र अलावा बीकानेर अर सीकर रियासत र गावडा माथ ई हमला होवण लाग्या । कारण के इण रियासता रा राजा अंग्रेजा रै इशारा माथै चाले हा ।

शेखावाटी ब्रिगेड रै कप्तान फास्टर कनल अेल्विन नै लिख्यो के वो बीकानेर नरेश रतनसिंह माथै इण बात रो पूरो दवाव नाखै, के वो डूगजी जवारजी न पकडण मे उणारी पूरी मदद कर । रतनसिंह बीकानेर रियासत मे हुई लूट खसोट रै कारण डूगजी जवारजी माथ नाराज ई हो । इण कारण उणं तन मन धन सू अंग्रेजा मदद करी । उण लोटासर र ठाकर खुमाणसिंह न इण काम र वास्त मुकर कियो के वो विद्रोहिया री गतिविधिया री सूचना देयबो कर । खुमाणसिंह जवारजी रो साळो हो । वो खुद ई मन सू अंग्रेजा र खिलाफ हो, इण वास्तै गळत सूचनावा देय देय नै वान पानरावतो रह्यो ।

'सिगरावट रो ठाकर मुकनसिंह ई डूगजी रो प्रमुख साथी हो । अंग्रेजा उणान सजा देवण ताई उणारै ठिकाण माथै हमलो कर दियो । मेजर फास्टर जयपुर री सेना सागै किले न घर लियो । मुकनसिंह मोकळ दिना ताई बहादुरी सू वारो सामनो करतो रह्यो अर पछ घेरो तोड'र निकळग्यो ।'[2]

1838 मे डूगजी जवारजी अर वारा साथिया बीकानेर रियासत रा कई गाव लूट्या । अंग्रेज हैरान होयग्या । उणा च्यारु मेर आपरा गुप्तचर छाडधोडा हा । थोडाक दिना मे वारै मारफत आ खबर मिळी के डूगजी आपरै सासर झडवासै आयोडा है । अबकाळै अंग्रेजा बळ री ठोड छळ सू काम लियो । उणा झडवास रा भरवसिंह गोड नै लोभ देयन आपरै कानी कियो । भरवसिंह डूगजी

---

1 बीकानेर राज्य का इतिहास, दूसरा भाग, पृ स 423

2 Political History of the State of Jeypore, Brooke

रै सासरिया मे नैंडो लागतो । इण आदमी डूगजी न धोखो दियो । उण विश्वासघात करनै डूगजी न पकडाय दियो । गोठ करन इणं डूगजी न खूब दारू पायो अर अचेत हालत मे नसीराबाद सू सनिक टुकडी बुलाय न हाथोहाथ पकडाय दिया ।

डूगजी जिसै खतरनाक कैदी नै अग्रेजा राजस्थान मे राखणो उचित नी समझ्यो । इण कारण वान लिजाय'र आगरै र किल मे कैद कर लिया । इण धोखेबाजी रै कारण भडवासै र गौडा री घणी बदनामी हुई । इण कुकृत्य रै कारण डूगजी र साथिया न घणो क्रोध आयो । वे बदळो लेवण री फिराक मे लागग्या ।

डूगजी रै ज्यू आगर रै किलै मे दूजा ई कई स्वतन्त्रता सेनानी कारावास मे पडचा सड हा । जवारजी अर उणरा साथिया वा सगळा न छुडावण री अक गुप्त योजना बणाई । इण योजना रै प्रथम चरण मे लोटिया जाट अर सावता मीणा न आगर रै किल री पूरी जाणकारी लेवण वास्तै भेज्या ।

इणरै पछै 'ई सन् 1846 मे करीब पाच सौ जवाना अेक बरात रै रूप मे आगरै कानी प्रस्थान कियो । इण टोळी मे ठाकर भोपाळ-सिंह श्यामगढ, खुमानसिंह बीदावत लोढासर, कानसिंह मलसीसर, उजीणसिंह मीगणा अर जोरसिह रै सागै वैरीशालसिंह बीदावत, हठीसिंह काधळोत, मानसिंह लाडखानी, लोटियो जाट, सावतो न करणियो मीणो, बालू नाई अर दूजा कई स्वतन्त्रता सेनानी हा ।'[1]

आ बरात बाजा गाजा सागै आगरै पूगी अर मोरै री ताक म बीद रै माम रै देहात री बहानो बणाय नै पनरै दिना ताई आगरै मे पडी रही । छेवट मोहरम रै स दिन रात री बखत किलै रो परकोटो कूद न हमलो बोल दियो । किल मे जितरा ई सनिक अर पोहरैदार हा सगळा न बाढ नाख्या अर किलो फतेह कर लियो । 'इण सघप मे कई स्वतन्त्रता सेनानी ई काम आया, उण मे बख्तावरसिंह शेखा-वत श्यामगढ, उजीणसिंह मीगणा (बीकानेर) अर हणूतदान चारण दाह (तहसील सुजानगढ) इत्याद प्रमुख है ।'[2]

आगरै री इण जीत सू डूगजी जवारजी रो नाम आख देश मे

---

1 स्वतन्त्रता सेनानी डूगजी जवारजी, पृ स 5
2 स्वतन्त्रता सेनानी डूगजी जवारजी, पृ स 5

चावौ होयग्यौ। वारा नाम लोकगीता री कड़िया मे गू जण लाग्या। घणकरो लोक काव्य इणी'ज घटना सू प्रभावित होय न लिखीज्यौ है। कारण के इण घटना री प्रेरणादायी नाटकीय परिस्थितिया जनमानस न घणो आकृष्ट कियो। इण कारण डू गजी री ठकराणी कानी सू होळी रै मौकै जवारजी नै ओळमो, लोटिया जाट रौ साधु रै वेष मे आगरै मे प्रवेश, बरात रै रूप मे सनिका रो आगरै पूगणो अर मीढै न मारणो इत्याद रोचक प्रसग जोड न लोककाव्य री रचना करीजगी।

आगर रै किलै सू छुटघा पछ डू गजी जवारजी अग्रेजा री बेइज्जती करण सारू अर वारो मनोबळ गिरावण सारू अेक ओरू योजना बणाई। राजस्थान प्रदेश रै बिचाळै अग्रेजा नसीराबाद मे फौजी छावणी इण वास्त बणाई ही के इणरै जोर सू वे आख प्रदेश मे आपरो दबदबो कायम राख सक। आ फौजी छावणी राज॰स्थान मे अग्रेजा री शक्ति री प्रतीक ही। स्वतन्त्रता सेनानिया इण छावणी न इज लूटण री योजना बणाई। इण योजना वास्त धन री जरूरत पडी तो इणा 'रामगढ (शेखावाटी) रै मायापत सेठ अनतराम घुसीमल पोद्दार कनै सू पनरै हजार रुपिया लिया अर इण धन सू ऊट घोडा अर सस्तर पाटी मोल लिया।'[1]

छावणी माथ आक्रमण पूरै योजनाबद्ध तरीकै सू करीज्यो। आक्रमण वास्त तीन दळ बणाईज्या। पैलडो दळ शेखावाटी इलाक सू रवान हुयो अर जयपुर रियासत र मालपुरा गाव कनै सू आग वढयो। इण दळ रातवासो डिग्गी ठिकाण मे लियो अर दिनूग चाल'र करकेडी-रामसर हावतो नसीराबाद पूगो। दूजोडो दळ मारवाड सू रवान होयन अजमेर, नाद, रामपुरो, पीसागन अर मसूदा होवतो थको नसीराबाद ढूको। इणी ज भात तीजो दळ मेवाड कानी सू आयो।

'तीनू दळा वन कुल मिलाय न अेक सो ऊट अर ग्यारसो घोडा हा। आधी रात ढळया इणा अेकण सागै धावो कियो। छावणी रो सै सू मोटो अफसर जनरल ब्योरसा हो। हमलो करता ई सै सू पै'ली तो छावणी रा [illegible] पोहरदारा न मार नाख्या। पछै बाकी रा

1 स्वतन्त्रता सेनानी डू गजी जवारजो पृ स 5

सात नै बंद करनै वखी खानै र खजानै सू सत्ताईस हजार रुपिया लूट लिया। आ रकम सैनिका री पगार चुकावण वास्तै अेक दिन पे'लीज छावणी पूगी ही। जावता जावता वे छावणी रा तबू ई बाळता गया। इण भात हाका धाका मे फौजी छावणी लूट'र जागडी दूहा बोलता निकळग्या। शाहपुरै रै राज मे धनोप माताजी रै मदिर मे देवी न प्रसाद चढाय न वे मेवाड, मारवाड, साभर अर नावा कानी च्यारु मेर बिखरग्या।'[1]

आगरै रै किलै री फ्तेह पछै नसीराबाद छावणी री लूट सू अग्रेजा री आवरू सफा माटी मे मिळगी। राजस्थान मे तो वारी पैठ इज ऊठगी। छावणी री लूट सू कपनी रा अधिकारी ई घबरायग्या। उणा आपरा राजस्थान मे तैनात सैनिक अफसरा नै जवाब पूछ्यो अर कोई पण कीमत मार्थ विरोधी सगठण न विखो-रण री हुकमनामो जारी कीधो।

अठीन छावणी री लूट अर आगरै वाळी जीत सू डूगजी जवारजी री घणी नामवरी हुयगी। जनता मे खुशी री लेहर छायगी। कविया अर लोक गायका मन सू वारी प्रशसा मे काव्य रचना करी। याचका घर घर जाय न यारी जस गाथा जन जन ताई पुगाय दी। देशी रजवाडा मे भय छायग्यो अर अग्रेज तो यारै नाम सू ई कापण लाग्या।

पण अग्रेजी सत्ता रै वास्तै जीवण मरण री सवाल पदा होयग्यो। वान अबै का तो विरोधी सगठण नै किया ई करनै दबावणो हो अर का आपरा बोरिया-बिस्तरा सावट न अठै सू रवानै होवणो हो। इण कारण कनल सदरलैड बीकानेर नरेश रतनसिंह अर जोधपुर नरेश तखतसिंह नै करडा आखरा मे कागद लिखन हुकम दियो के किया ई करन डूगजी जवारजी नै पकडो के मारो नी तो भविष्य मे इणरी नतीजो खराब निकळसी। इणी'ज भात उण कैप्टन डिक्सन, मेजर फास्टर अर कप्तान शॉ न डाट न लिख्यो के अबै तो कपनी री आबरू माटी मे मिळ री है, इण वास्त किया ई करन डूगजी जवारजी नै खतम करो, नी तो राजस्थान मे अग्रेजी सत्ता न खतम होवणो पडसी।

---

1 सदरलैंड र नाम अजमेर सुपरिंटेंडेंट डिक्सन री कागद, 24 जून 1847

सदरलैंड रै इण प्रयासां री खासी असर पड़यो । डूंगजी जवारजी रै खिलाफ अेक सातर अभियान री सामूहिक योजना बणी । इणमे जोधपुर, बीकानेर अर अंग्रेजा री तीनू सेनावा शरीक हुई । जोधपुर महाराजा आपरै अठै सू विजयसिंह मेहता, कुशळराज सिंघवी अर अनाड़सिंह किलैदार इत्याद प्रमुख सेनानायका सागै अेक विशेष सैनिक दळ इण काम सारू भेज्यो । इणी'ज भात बीकानेर नरेश ई आपरै प्रमुख सेनापति ठाकर हरनाथसिंह नै अेक सैनिक टुकड़ी सागै भेज्यो । जोधपुर नरेश तो आपरा जागीरदारा न आपरी जमीयत साग इण अभियान मे शरीक होवण री हुकम दीधो ।

'इण कारण ठाकर इंदरभाणसिंह जोधा भाद्राजुण, ठा केशरीसिंह मेड़तिया जावला, ठा बादरसिंह लाडनू, ठा विजयसिंह लूणवा, ठा शार्दुळसिंह पीपळाद इस अभियान मे शरीक हुया ।'

स्वतंत्रता सेनानिया बाबत पूरी जाणकारी लिया पछै वान घेरण सारू अे सगळी सेनावा डीडवाणा कन भेळी हुई । देशी रजवाड़ा री सेना सागै कप्तान हाडकसल अर ई अेच मेकमेसन री ब्रिटिश सैनिक टुकड़ी ई आय मिळी ।

मुकाबलो बीकानेर राज र घड़सीसर गाव कन हुयो । जोरकी राटक बाजी । पण स्वतंत्रता सेनानी सख्या मे थोडा अर सामली सेना री सख्या बळ कई गुणो बेसी होवण सू डूंगजी जवारजी आपरै साथिया सागै घेरीजग्या । उणा जबर वीरता दरसाई अर सख्या मे थोड़ा होवता थकाई कई सनिका न काट नाख्या । डूंगजी घेरो तोड'र निकळग्या अर जैसलमेर कानी बुआ गया ।

जवारजी अर बारा साथी जद लार रैयग्या, भूखा बाथा री गळाई शत्रुवा माथै अरड़ाय पड़या । छेवट बीकनेर रै सेनानायक हरनाथसिंह अर अंग्रेज कप्तान शों जवारजी न समझाया कै वान अंग्रेजा रै हाथा मे नी सू'प'र बीकानेर राज मे इज्जत आबरू साग राख्या जासी तो वे मानग्या अर उणा आत्मसमर्पण कर दियो ।

इण बात सू उछाव मे आयनै सामूहिक सेना डूंगजी री लारो कियो अर जैसलमेर राज र गिरदड़ा गाव कन वान घेर लिया । उण वखत डूंगजी रै सागै मेडी निवासी मुकनसिंह अर हुकमसिंह इत्याद साथी हा । बाकी रा सगळा का तो घड़सीसर रा घेरा मे काम आयग्या अर का लार छूटग्या । सामूहिक सेना र सामी सख्या

मे मामूली होवता थकाई स्वतन्त्रता सेनानिया मुकावलो घणी वहादुरी सू कियो । छेवट जवारजी रै ज्यू डूगजी नै ई समझाया अर पक्को भरोसो दिरायो के वान ई इज्जत आबरू सागै जोधपुर मे राम्या जामी अर अग्रेजा रै हाथा मे नी सूप्या जासी । तो डूगजी ई प्राण देवणो उचित नी समझ'र आत्म समर्पण कर दियो ।

जवारजी बीकानेर नरेश र सरक्षण मे आया पछै अग्रेजा जवारजी न सूपण रो कह्यो । रतनसिंह साफ ना देय दियो । उणा अग्रेजा नै समझाया के म्हैं थारो मित्र शासक हू । थान म्हारै माथै विश्वास राखणो उचित है । जवारजी भलाई थारै कन रैवो के म्हार कनै रवो, इणमे फरक काई पड ? बाकी इण बात री जिम्मेवारी म्हारी है के जवारजी म्हार कन रैवता थका कोई ब्रिटिश विरोधी काम नी कर । दूजी सबू मोटी बात्त वे वचनबद्ध है, इण वास्त जवारजी न नी सूप सक ।

रतनसिंह रै इण नैतिकतापूण काम री जन मानस मे आछी प्रतिक्रिया हुई । कविया रतनसिंह रा वखाण करता कई डिंगल गीत लिख्या । जवारजी तीन बरस ताई बीकानेर मे नजरवद रह्या ।

'सीकर री गादी माथ जद रावराजा भैरवसिंह वैठा तो वे ब्रिटिश सरकार अर बीकानेर नरेश नै समझाय'र जवारजी न नजरबदी सू छुडाय नै सीकर लेय आया । उठ वठोठ ठिकाणै मे ई वारो देहात हुयो ।'[1]

डूगजी शेप जीवण लग जोधपुर रै किलै मे नजरवद रह्या । उण हालत मे किलै मे ई वारो देहात हुयो । बीच मे अेकर जोधपुर महाराजा तखतसिंह माथ दवाव नाख्यो के वे डूगजी न वानै सूप देवै । तखतसिंह दवाव मे आयग्या अर उणा डूगजी नै अग्रेजा र हवालै कर दिया । इण बात माथ जोधपुर महाराजा री घणी बदनामी हुई । जन मानस वारै इतरो खिलाफ होयग्यो के वे सहन नी कर सक्या । इण कारण अग्रेजा न समझाय बुझाय न डूगजी न पाछा जोधपुर र किलै मे लेय आया । इतिहासकार नाथराम खडगावत ई इण घटना री पुष्टि करी है ।[2]

---

1 स्वतन्त्रता सेनानी डूगजी जवारजी, पृ स 7

2 The condemnation heaped upon the ruler of Jodhpur

इण भात सन् 1834 मे अंग्रेजी सत्ता रै विरोध मे वण्योडो ओ विद्रोही सगठण बरोबर तेरै बरस ताई सक्रिय रह्यो अर 1847 मे जायन बिखरग्यो। इण गाळा मे अंग्रेजी सत्ता नै स्वतन्त्रता सेनानिया चन सू ऊध नी लेवण दी। लूट खसोट अर आक्रमण कर कर नै अंग्रेजा न हैरान-परेशान कर दिया। आगर रा किला न तोड अर नसीराबाद छावणी न लट न देश मे अंग्रेजी सत्ता रै प्रभाव न ई मोळो कर दियो।

ओ ई कारण है के अंग्रेज इतिहासकारा अर वारी नक्ल करणिया भारतीय इतिहासकारा इतिहास मे डू गजी जवारजी न अेक साधारण डकत चित्रित किया है। वारी कथणी मुजब अे स्वतन्त्रता सेनानी चोर, डाकू अर धाडवी मात्र हा जिको आपरी पेट भराई खातर लूट पाट करता। वारै सामी देश री स्वतन्त्रता के विदेशी सत्ता सू विद्रोह जिसो कोई ऊचो आदश नी हो। इतिहास लेखन मे सदीव सत्य न अदीठ इण कारण राखीज के इतिहासकार तत्कालीन सत्ता रै प्रभाव मे होवै। स्वाथ मे लिप्त होवण सू वे सत्ता र विरुद्ध अेक आखर ई नी माडै। वे सत्ता री हा मे हा मिळावता उणर पक्ष मे घटनावा न तोड मरोड न पश करै। जिको व्यक्ति तत्कालीन सत्ता रै खिलाफ अर सच्चाई माथै होवै वान गळत तरीक सू चित्रित करन जन मानस मे वारी तस्वीर बिगाडण री कोशिश करै।

सागण आ इज बात डू गजी जवारजी साग हुई। इतिहासकारा वान डाकू बताय नै वारी तस्वीर बिगाडण री भरपूर कोशिश करी पण वान सफळता नी मिळी। इतिहासकारा री कारीगरी धरी रैयगी अर डू गजी जवारजी स्वतन्त्रता सेनानी रै रूप मे जन मानस माथै छायग्या।

---

who handed Dungji over to the British shows that anti-British sentiment in Rajasthan was at its highest pitch at that time So bitter was the popular criticism against the pro British loyalty of the Jodhpur Darbar that he had to take back Dungji from the British and keep him in his personal Custody

The role of Rajasthan in the Struggle of 1857 By N K Khadgawat, page No 103

राष्ट्रीय विचारधारा रै कवियां अर लोक गायकां वांरी प्रशंसा मे अनेक् गीत, छंद, सवैया, दूहा, पवाड़ा अर छावळियां इत्याद लिख'र लोक नायक र रूप मे वांरी वंदना करी । वांर वीरतापूर्ण कामां साथ प्रेरणास्पद साहित्य री रचना करी । ओ ई कारण है के नक्ली इतिहासकारां री बेहूदी कोशिशां रै उपरांत ई वे जन साधारण मे स्वतंत्रता सेनानी रै रूप मे ओळखीजै । लोगां न वांरै हिम्मत भरया कामां सूं आज ई प्रेरणा मिळै ।

डूंगजी जवारजी रै प्रसंग मे रचित काव्य मे घणकरा डिंगल गीत है, जिको तत्कालीन काव्य परंपरा रै मुजब लिखीज्योड़ा है । इण काव्य मे उण घटनावां रो वर्णन वेसी है जिको वांरी वीरता सूं संबधित है । इण डिंगल गीतां मे ठौड़ ठौड़ इसी ओळियां मिळै जिणसूं ठा पड़ै के डूंगजी जवारजी रो मूळ काम विदेशी सत्ता रै प्रभाव नै कम करणो हो । इण बाबत डिंगल गीतां री की ओळियां ध्यान देवण जोग है—

'भूप डूंग विधूंसी फिरंगी वाळी भोम'
'जाण टेक कंपनी री उडादी जवार'
'रूठो गोरां माथ प्रळ काळ को सो रूप'
'फिरै वोळी भारवखी भूरियां वाळी फौज'
'केवाण भाटकै वाढ भाड़िया भूरियां कंधां'
'कंपनी जड़ाय किलकत्ता रा किंवाड़'
'भाट कढ विलेरदी फाटक फिरंगान की'
'साहबड़ी पुकार बीबी अल्ला नू सलाम'

डूंगजी जवारजी री राष्ट्रीय भावनावां पुष्टि काव्य र माध्यम सूं होवण रै सागै वांरा काम इण बात नै भली भांत उजागर करै । आगरै रै किलै माथै आक्रमण अर नसीराबाद छावणी री लूट अंग्रेजी प्रभाव नै कम करण री दीठ सूं ई आयोजित करीज्या हा । बाकी लूट पाट तो इण उद्देश्य री पूर्ति खातर साधन जुटावण वास्तै अर गोरां र मित्र देशी नरेशां न दंड देवण रै वास्तै करीजी ही । इणमे इणां रो कोई निजू स्वारथ नी हो । लोकगीतां सूं ई इण बात री पुष्टि होवै के उणां धनवानां सूं धन लूट'र गरीब जनता मे बांटयो अर इण भांत दुखी लोगां री सहायता करण री कोशिश करी ।

कवि गिरवरदान रै अेक डिंगल गीत रौ भाव औ है के अंग्रेज नाग है तो डूंगजी जवारजी गरुड है। अे विषधर नाग भारत देस न डसण री कोशिश करै तो गरुड यानै मार नाखै।

ओ डूंगजी वो ई है जिणरै नाम सूं आगरौ ऊभौ धूजै। आकाश सूं तारै रै ज्यूं टूट'र ओ वैरियां री फौजा नै विनष्ट कर नाखै। उणरै भय सूं फिरंगियां रा प्राण छूट जावै।

अंग्रेजां रौ प्रभाव भलांई आखी दुनिया में हुवौ पण डूंगजी माथै इणारौ की असर नी पडै। कवि रै मतानुसार डूंगजी अंग्रेजी सेना रै वास्तै सूरज रै उगमान है। सूरज री उगाळी हुयां जिण भांत अंधकार मिट जावै, इणी'ज भांत इणारौ सामनौ हुयां अंग्रेजी सेना में खलवली मच जावै।

दूहौ

सेलावत जळहळ समर फिर चळवळ फिरगांण।
प्रथी सग कळहळ पडै भळहळ ऊगां भांण॥

गीत

साव आतंक आगरौ लागां न मावै भ्रमाय खळां,
धाव धाव अजाण लगाव चौड धेस।
ऊगां भांण नागवसां माथ खगा राज आव,
दावै लागौ पजाब फिरंगी वाळा देस॥

कपूं मार तेगा तीजी ताळी सो कुरंगी कीधी,
जकां बाद नौरंगी प्रजाळी भुजां जोम।
मानूं तारकोल री विरंगी काळी घडा माथ,
भूप डूगौ विजूंसी फिरंगी वाळी भोम॥

पड धाका दिल्ली बस कूरमा चाढवा पाणी,
आपमत्त सेस धू गाढवा जोम आठ।
काकोदरां खगा धोस खळां ज्यूं काढवा केवा,
लाग केडै वाढवा हजारां जमी लाट॥

तूटौ बोम वाट निराताळ सो बिछूटो तारौ,
के तो छूटौ प्राण ज्यूं आळखा ताक कूप।
कोप रुद्र माळका विहंगां नाथ जूटौ कनां,
रूठौ गोरां माथ प्रळ काल को सो रूप॥

भलो भाई सेला राळै बिखेर सार की भींत,
सारा सिर छावणी मारकी सोज सोज ।
मिल थाट सवोला तारखी काली घरा माय,
फिर दोलो भारवलो भूरिया वाली फौज ॥

लोही खाल पूर पट्टां हजारा वैण नै लागा,
थट्टे रभा हजारा मण नै लागा थाट ।
रुको झाट हजारा देण नै लागा काळ रुपी,
लागा टूक व्हैण नै हजारा जगी लाट ॥

रण डड अडडा गवार भींच वाघरा का,
खागरा का भूर डटां अरडा खाणास ।
पडा धाका खट लडा फौण नाक राका पीधा,
वाही श्रागरा का झडा ऊपरै बांणास ॥[1]

सुप्रसिद्ध कवि शकरदान सामोर ई यारी प्रशसा मे दो डिंगल गीता री रचना करी है । प्रथम गीत री भाव है के डू गजी जवारजी रै हिम्मत री कवणी ई काई ? अग्रेज जिसा प्रबळ साड र ई नाथ घालन इणा कावू मे कर लियो है । भूरा भूरा फिरगिया न देख'र अ उणरै माथै इण भात अरडाय पडै जिण भात भूखो सिंघ आपरै शिकार माथ पड । यारै डर सू कपनी कलकत्ते मे आपरा दरवाजा बद कर री है ।

गीत

दाव लागा जमीं घणा, हियै बूलिया दोयणा दूठ,
प्रवाडा श्राचूकिया, ले भूडडा पाडीस ।
जवारौ भोपाळ डूगो, दुहत्था भूखिया जगा,
सेला चाल ढूकिया, विरत्या गोरा सीस ॥
नाथिया अनत्या वीर विरुद्दां अठोठनाथ,
सिंघ टोळा साथिया, सवोळा लीधा सग ।
घासाहरा दीधा घेर, बिभाडं हाथिया घडा,
बेध लागा कीधा धू, बिलातिया वरग ॥
कठीर काटकं छूटो, साकळा राटक कना,
मेले चम्मू याटक, अेरहा सत्रा मींच ।

1 परपरा गारा हटजा अक पृ स 97

फेवाए भाटके थाढ, भाडिया मूरिया कथा,
विभाडिया लाट के, बूरिया घोरां बीच ॥

पोतरा सेवारा जगो, घुगवै सतारावार,
धाव सळा खतारा, मूडहा धाडधाड ।
अवीह भतारा डका, आवै सदा आठवारा,
कपनी जडावे किलकता रा किवाड ॥[1]

इणी'ज भात दूजै गीत मे कवि आगरै र युद्ध री वणन करता जवाहरसिंह री वीरता री वणन कियो है। गीत मे अग्रेजा री दयनीय दशा री वणन है।

गीत

सज सुरता जानरा साज आरभ आगरा माथ,
सिधवै राग रा सेल गुवाया सवोल ।
खणका पीजरा माथ भडाका खाग रा खेलै,
दूढ किलला नगारा बाजता नावा ढोल ॥

कठीर नौहत्था जेम गणातक गाज केक,
मामी देख हुए ज्यू भाखता मार मार ।
अनेका धारता जोस दुहाई आपणी आख,
ज्की टेक कपणी री उडावी जुवार ॥

रेवता ऊपडी थागा आविया काळ सा रूठा,
तूटा आसमाण गल सावठा तारांण ।
जोरावर घेर लीधो किला नै बाजतां जागी,
आडीगरा कीधो घरां घरा री आराण ॥

गाय गाय भए बगा टोपला नाखिया गोरा,
बाको पातसाही जगा बजाड बाणास ।
उग दीह लागो सिंघ आवियों दलेल माळी,
सागा पाए कीधा वदी खाना नै खलास ॥

सिंघ पदमेस हरा गेह रोस काज सारे,
कर दसा दसा मे ऊबारै इसौ काम ।

---

1 परपरा, गोरा हटजा अक पू स 100

माझो नोहृत्या रै जेथ हाफरां किला मे मारै,
सावडो पुकार बीबो मल्ला नू सलाम ॥[1]

आगरै री युद्ध अर दूगजी नै छुडावण री घटना इण प्रसग मे प्रमुख होवण सू दूजा कविया ई इण बाबत डिंगल गीत छद लिख्या है। कवि लिखमीदान ऊजळ री ओ गीत उल्लेख जोग है।

(छद मोतीदाम)

भिड्यो इम ज्वार लिया भड सग।
इसो फिर ईस सुण्यो नह जग ॥
दीधो खग भाट पराक्रम आण।
घणा गढ छोड भगा फिरगाण ॥
मुड्या नह केक तज्या नह माण।
रह्या थे पूरबिया रढ राण ॥
तठै भड ज्वार तणा पंतीस।
रह्या जग जट धिखता रीस ॥
सेलावता राण खळा भज खेल।
पाछी सब बीध पलट्टण ठेल ॥
सब नर आखत भोक अभग।
रिपु बहु ज्वार हण्या बिच जग ॥
कर जुद्ध जगर ताळा काट।
जठ सब भेद लगायो जाट ॥

(दूहो)

इण विध भेलयो आगरो, सधर किलो जिम सेज।
सक कछवाहा सू सुणो, गयो भाग अगरेज ॥[2]

इणी ज भात कोई अज्ञात कवि रचित अक दूजै डिंगल गीत मे दूगजी नै घोरै सू कैद करन आगर लिजावण रो अर जवारजी रै आक्रमण रौ वणन मिळै। गीत रा कीं प्रमुख अश इण भात है—

1 परपरा गोरा हटजा अक, पृ स 119
2 परपरा गोरा हटजा अक, पृ स 119

गीत

दगो धारियो डूग सू सोब पाकड छावणी दोला,
लोह लाट लगरी अमाप फौजा लेर ।
लाखा मुखा आठा सोबा ऊपर सोभाग लीधो,
जोम अगी सिघ ने आगरै कोधो जेर ॥

जीते फिरगाण साहा केता ही बेडिया जाडा,
थरू किल्ले भेडिया समरा भडा थाट ।
जळाथद जाहूबार छेडिया लाट नू जगा,
केवाण पाण सू सेखा हेडिया कपाट ॥

बूठिया झाळका चक्खा डूग मे पडतो बेध,
भाराथ जूटिया वीर चाळका सा भूप ।
माभो निराताळ का ऊठिया फिरगाण माथ,
राघडा रूठिया प्रळ काल रा सरूप ॥

× ×

चोल मे चडिका हूरा बारगा विमाण छायो,
कसली बार मे आयो करतो कुवाद ।
माणसू लखायो सोबा पति र अथाण माहे,
सेसाणी चखायो होड हत्थी री सवाद ॥

भीम के भुजाट पाणा हेजम्मा लाटक भज,
अबीहा घाट के भडा थाटक आणास ।
केवाट के लाग कीधो अनमी ऊकडा ज्याहो,
बेडिया काट के लेगो झाटक बाणास ॥

लगरी लगाटा पाण डूग नै छुडाय लायो,
सोभा तिहुथान सोक पायो सूर चद ।
पायो फत ज्वार नाम रहायो छवतो प्रभा,
आपो आसमान लागो आयो नेत बद ॥

इण कविया रै अलावा ई दूजा कई कविया इण सदभ मे काव्य रचना करी, जिण मे गगादान सादू, जीवराज सादू, बुधजी आसिया, कविराजा भारतदान, करणीदान, नददान अर राजाराम प्रमुख है ।

कई डिंगल गीत तो घणा उल्लेख जोग है । उदाहरण सरूप करणीदान दधवाडिया रचित अेक गीत, जिणरी छेहली झड है—

'करे इम अरज फिरगाण री कामणी' लूट मत छावणी भवर लाडा !' ओ गीत घणो लोकप्रिय हुयो। गीत मे डू गजी जवारजी रै मू डागे 'फिरगाण कामणी' रै अरज रो ओपतो रूपक बाधीज्यो है।

इणी'ज भात आसिया बुधजी जिको डिंगल गीत लिख्यो उणमे आगरै रै युद्ध री अर इण वीरा रै देशव्यापी प्रभाव रो आछो वणन मिळै। गीत मे 'वाळ कुण उखेडै वदन रा वाघ रै, नागरै मणी दिस कवण नाळै' इत्याद ओळिया मे वारै प्रताप रो उल्लेख करता जवारजी री तुलना हनुमानजी सू करी है—'लाघडो कपी ज्यू राम लायो लडै, लडै जिम जुहारो भ्रात लायो।' पूरो गीत इण भात है—

गीत

अई भोक आकाय सेखावता आंगमण,
देख वेखावता नरा धूठा।
रीत रजपूतवटपणा री रहाई,
कीरती कहाई चहू कूटा ॥1॥

बीकरी दलेलीसिह री देखजो,
अखेली आल आखेल आयो।
साहबा वडाला सरायो साभळ,
थानका वडाला गरव थायो॥

भचक धात सुण जेषहा भाईया,
कायरा सरै नह गरज काई।
भाईया काज सिर आगमै भारया,
भलाई कहाडै जिक भाई ॥

दूसरा जेम नह राचियो देखनै,
अरस रो खाचियो थकी आयो।
लांघडै कपी ज्यू राम लायो लड,
लडै जिम जुहारो भ्रात लायो ॥

धरा रो लोभ नह रिदा मे धारियो,
अग रो ताकियो नहीं ओलो।
कपनी कद सू भ्रात नै काढियो,
रात आधी समै करे रोलो ॥

ओलियां तीस पतीस ले अगाडी,
लगाडो तीस रै खाग लागो।
घडक मन जमांपण बात सुण धारियो,
मारिया जिक मे राख मागो॥

आगरै तखत सू डूगरो आंणतां,
चलोवल लिखाण जगत चाका।
जुहारसिंघ का टालिया जगत मे,
डाकुवां रूप रा सुजस डाका॥

बाल कुण उखेडै बदन रा बाघ रै,
नाग रै मणी दिस कवण नाळ।
ओलिया जिकण विध गयोडा आगरै
वडै कुण खाग र पांण वालै॥

सारका कोट नर जुहारै सारखा,
गिणै तन पारका कुभ गैलो।
कैद सू डूगरो लावतां कोरतो,
फिरग हिंदवांण तुरकाण फैलो॥[1]

डूगजी जवारजी र प्रसग मे मेहडू राजाराम रचित की सोरठा ई उल्लेख जोग है। कवि तुला रै अेक पलडै मे भारत रा सगळा राजा महाराजावा न राख'र दूज पलडै मे डूगजी नै बिठाय, तोलण री कोशिश करै तो डूगजी भारी पडै। कारण डूगर तो डूगर (परबत) रै उनमान है—

सोरठा

मन तो मरणामेह, रात दिवस लागो रहे।
डूगर डरणामेह, सपना मे समझै नहीं॥

राजा रावल राण, अेकरा चेलै आणिया।
त्यां हू तो तुरताण, तू डूगर भारी तुल॥[2]

वीर प्रशस्ति री आ डिंगल परपरा आधुनिक राजस्थानी काव्य

---

1 परपरा, गोरा हटजा अक, पृ स 122
2 स्वतन्त्रता सेनानी डूगजी जवारजी, पृ स 39

मे ई अखी वण्योडी है। राजस्थान रो इतिहास वीरता रै प्रसगा सू भरयो पड्यो। उणनै ध्यान मे लेय'र आधुनिक राजस्थानी काव्य मे ई काव्य रचना चालू है। डूगजी जवारजी रै सबध मे ई आधुनिक राजस्थानी काव्य मे की फुटकर रचनावा मिळै। वा मे सै सू उल्लेख जोग स्व गिरधारीसिंह पडिहार री 'डूगजी जवारजी' शीर्षक वाळी अेक दीर्घ रचना है।

यू रचना इतिहाससम्मत है पण कई प्रसगा मे कल्पना रो पुट है। इणसू जाण पडै के कवि इण रचना रो निर्माण डूगजी-जवारजी रै जीवण माथै रचित 'पड' अर 'छावळी' इत्याद लोक काव्या सू प्रभावित होय नै कियो है। रचना सरल राजस्थानी भाषा मे है अर सगळै प्रसग नै समेटती चालै। रचना मे कथोपकथन अर युद्ध रा प्रसग घणा सजीव अर रोचक है।

डूगजी आगरै रै किलै मे कद है अर अठीन होळी रै मौकै बठोठ पटोदा रै ठिकाणै मे मेहफिल जम्योडी है। जवारजी रागरग मे मस्त है। इण प्रसग सू ई कवि आपरै रचना री सरुआत करै—

डूगजी जवारजी

दारूडी छलकी प्याला मे, चगा पर चोट पडण लागी,
दिल खोल धमाला गाईज, हुडदग भरी होली आगी।
तलवार धार मे उतरणिया, उतरै हा बोतल री धारा,
वे गढ बठोठ मे बैठ्या हा, मोट्यार कर हा मनवारा।
आसो दुवारी दाखा रो, बोतल वाळो खारो पाणी,
पी मिनख हुवै हा मतवाळा, जद डोढ्या आया ठकराणी।
देख्यो जेठूतो ज्वारसिंघ, वध वध मनवारा पाय हा,
काकी रै हिवडै मे होळी, नैणा मे आसू आव हा।
बोली गढ धणी गोरिया रा, बदो बण्योडा दुख पाव।
थारो मन मनवारा लाग्यो, आ दारूडी कु कर भाव।
औ बिना धणी गढ गिरणावै, सूरा बिन सूनो लागै है,
अे बिछी जाजमा देख आज मनड मे दोरप जागै है।
काको तो किलै आगरै मे, कैदी है बाटा जोवै है,
थे लाल नाखदी लाज इसी, मतवाळ मेहफिला होवै है।

राजस्थानी भाषा मे वीरा री प्रशषा मे रचित साहित्यक रचनावा रै अलावा लोककाव्य ई मोकळो रचीज्यो। इणमे प्रवाडा, पड, छावलिया अर ख्यात इत्याद विधावा प्रमुख है। डूगजी जवारजी सू सबधित पड छावलिया अर ख्याल तीनू प्रकार री रचनावा मिळै।

लोक काव्य अर सगीत-निरत रो घणो नेडो सबध है। इण कारण साहित्यक डिंगल गीतां सू इणरी भिन्नता सुभाविक है। लोक गीता मे उणरी विषय वस्तु अर रूप तत्व नै न्यारा नी कर सका। कारण यारो जनम सामूहिक अनुभूति रै पाण ई होवै।

लोक काव्य मे सामूहिक चित्त री सहज अभिव्यक्ति होवै। इण कारण वा रो अेकूको आखर जीवण शक्ति सू सप्रेरित होव। ओ ई कारण है के इणमे मन रा भावा न प्रकट करण री पूरी खिमता होव। इणमे साहित्यक रचनावा रै ज्यू बधो बधाई लीक माथै चाल'र शब्दा न रूढ रूप नी दिरीजै। इण कारण लोक काव्य सीधो मन रो परस करै।

डूगजी जवारजी बाबत रचित लोक काव्य रै रूप मे जिको ई साहित्य मिळै, उणमे विषय वस्तु रो प्रतिपादन आछ ढग सू हुयो है। घणकरो लोक काव्य इतिहास सम्मत याता माथै आधारित है पण कठैई कठैई कल्पना री पुट ई निजर आवै। उदाहरण सरूप लोटिया जाट अर करणिया मीणा री नट रै वेष में रामगढ जावणो *अर साधु रै रूप मे आगरै पूगणो, किल रै सामी महीना लग धूणी* धुखाय न बैठणो, पछ उणी'ज रूप मे डूगजी सू मिळन किल रो भेद लेवणो इत्याद। पण अे सगळी बाता तो लोक काव्य रा जरूरी तत्व है। यारै विना रोचकता नी आवै। इण कारण कल्पना री थोडी पुट सुभाविक है। नीचै दियोडा 'पड' सू आ बात खुलासै *होय जासी—*

लोक काव्य

डूगजी जवारजी रो पड

सिवरू देवी सारदा स कांई तनै भवानी ध्यावू,
ज्या मरदा री छावली म्हैं च्यार कूट मे गावू।
डूग न्हार री कोटडया जुडी कचडी आय,
जाजम ऊपर जाजम बिछ रही खूब पड रजवाय।

मे ई अखी वण्योड़ी है। राजस्थान री इतिहास वीरता रै प्रसगा सू भरयौ पड्यौ। उणनैं ध्यान मे लेय'र आधुनिक राजस्थानी काव्य मे ई काव्य रचना चालू है। डूगजी जवारजी रै सबध मे ई आधुनिक राजस्थानी काव्य मे की फुटकर रचनावा मिळै। वा मे सैं सू उल्लेख जोग स्व गिरधारीसिंह पड़िहार री 'डूगजी जवारजी' शीर्षक वाळी अेक दीर्घ रचना है।

यू रचना इतिहाससम्मत है पण कई प्रसगा मे कल्पना री पुट है। इणसू जाण पड़ै के कवि इण रचना री निर्माण डूगजी-जवारजी रै जीवण माथै रचित 'पड' अर 'छावळी' इत्याद लोक काव्या सू प्रभावित होय नै कियौ है। रचना सरल राजस्थानी भाषा मे है अर सगळै प्रसग न समेटती चाल। रचना मे कथोपकथन अर युद्ध रा प्रसग घणा सजीव अर रोचक है।

डूगजी आगरै रै किलै मे कैद है अर अठीन होळी रै मौकै बठोठ पटोदा रै ठिकाणै मे मेहफिल जम्योड़ी है। जवारजी रागरग मे मस्त है। इण प्रसग सू ई कवि आपरै रचना री सरुआत करै—

डूगजी जवारजी

दारूडी छलको प्याला मे, नगा पर चोट पडण लागी,
दिल खोल धमालां गाईज, हुडदग भरी होली आगी।
तलवार धार मे उतरणिया, उतरै हा बोतल री धारा,
वे गढ बठोठ मे बठ्या हा, मोट्यार कर हा मनवारा।
आसो दुबारो दाखा रो, बोतल वाळौ खारौ पाणी,
पी मिनख हुवै हा मतवाळा, जद डोढ्या आया ठकराणी।
देख्यो जेठूतो ज्वारसिंघ, वध वध मनवारा पाव हा,
काकी रै हिवडै मे होळी, नैणा मे आसू आव हा।
बोली गढ धणी गोरिया रा, बदी बण्योडा दुख पावै।
थारो मन मनवारा लाग्यो, आ दारूडी यू कर भावै।
ओ बिना धणी गढ गिरणाव, सूरा बिन सूनो लाग है,
ओ बिछी जाजमा देख आज, मनड मे दोरप जागै है।
काको तो किलै आगरै मे कदी है बाटा जोवै है,
थे लाल नाखदी लाज इसी, मतवाळ मेहफिला होव है।

रजपूती डूब प्याला मे, कोभा लागौ हो मोटयारा,
जे बैरया जोगा नीं रहया, तो क्यू बायो हो तरवारां ।

बोल्यौ ज्वारौ ठकराणी न, काकीसा कुमख्या मत मारौ,
आखौ हिंदवाणौ झुकग्यौ है, म्हानै तानौ मत मारौ ।

जयुरी मान झुक्यो मोटो, मरुधराधीस बीकाणा रौ,
राठौडा वाळो आन झुको, महाराज झुक्यो बिकाणा रौ ।

उतराद झुको दिखणाद झुको, झुकग्या है हिंदू मुसलमान,
गोरा रौ इसडो जाळ बिछ्यौ, उळझ्यो जिण में सारौ जहान ।

काकीसा कु कर समझावा, भाई तो बैरी बणग्या है,
पण धरण धरा पर जगा नहीं, जे फुरा अपूठा अड जावां ।

× × ×

धूजौ हो गोरा र बळ सू, मन माठौ है भय खावै है,
म्हू रजपूतण हू लाल म्हनै, मरदा क्यू मरणो आवै है ।

भाला मे भिळणो जाण हू, ब धियौ भरतार छुडा लास्यू
बरछा र साग सकू नहीं, तो जूझ आगरै मर जास्यू ।

कह खडग उठायौ ठकराणी, ज्वारौ जद आडो आ बोल्यौ,
काकीसा हिय कपाट जिको, था बोला र खडक खोल्यौ ।

अब आप पधारौ महला मे, गोरा रौ गरब खिडावण न,
म्है जाय आगर अड जास्या, काका रा बध तुडावण नै ।

मुड बोल्यौ ज्वार जवाना नै, रजपूती मे दम बाकी है,
तो आज जूझणो है उणसू, जिण धरतो न मय नाखी है ।

सुण घणा मिनख गूगा होग्या, ऊभा धरती नै ताक हा,
वै घणै उजाळ बता रा, मोटोडा बगला झाक हा ।

जद लोट जाट फटकार कह्यौ, जग कर भरोसौ भाया रौ,
मूछाळा मरदा थासू तो, आछौ है डोळ लुगाया रौ ।

उण डूगसिंघ रा बध आज, खोलण नै जाट चल्या जासो,
मोटेड कोट आगरै पर, जूझण नै मोण चढ जासो ।

अे खारी बाता खरी जको, मिनखा मे खार जगावण न,
रजपूत जाट मोणा चढग्या, बधियौ गढधणी छुडावण न ।

अधारो रात घणी काळी, आधी ढळता गढ घेरै हा,
वे लगा निसरणी कूद पडया, बुरजा मे बदो हेर हा ।

स्यावास तनै है डूग कह्यौ, सिमरथ आयो तोडण ताळौ,
हैं धन्य मावडी थारोडी, जायो रजपूतण रखवाळौ।
जद लोट ज्वार रळिया जोधा, बुरजा रा ताळा तोड दिया,
सित्तर री बेडघा काटी, सै बधिया बधण हीण किया।
गढ भेद आगरो निसर गया, वा फौज फिरंगी रेत रली
सुणता ई छाती फूलै ही, वीरा री शोभा गली-गली।
× × ×
सन सत्तावन सू प'ली ई, अे जोत जगावण वाळा हा,
आजादी वाळै दिवल री, बळती लौ रा रखवाळा हा।
जा जगा जगां छापा मारघा, सिरकार कपनी धूज ही,
गोरा री जात डरी श्रेहडी, ईसा मग्यिम नैं पूज ही।
बरसा लग जूझ्या वैरघा सू, धरती पर अमर नाम कियौ,
चक्कर खाग्या फिरंगीडा, जद हिला नसीराबाद दियौ।
कापी सिरकार कपनी री, जोधा बीका नै बतळाया,
घडसीसर गाव कनै घेरघा, भाया पर भाई चढ आया।
घेर नैं तोड डूग निसरघौ, मगर में जोधा जा पकडघौ,
महाराज रतन रैं साम्ही आ, गढ बीकाण मे ज्वार खडयौ।
बोल्यौ राठोडा धणी खमा, भाया पर चढग्या घात करी,
गोरा सू मिळग्या गढपतिया, राजाजी माडी वात करी।
महाराज रळ है रजपूती, अब आख मींचणी चावा हा,
थ मोट हाथा सू काटो, म्हे छोटी सीस झुकावा हा।
भायां रैं खाधै चढ जावा, जे राठोडा रैं हाय मरा,
गोरा र हाथ मरा उणसू, आछो है आतमघात करा।
म्हाराज रतनसिंघ कह्यौ ज्वार, क्यू इसडा बोल कवै हेटा,
गोरा र हाथ पडो उण दिन, कट जासी भाई बेटा।
थैं करो भरोसो बीका री, अणहोणी नहीं करण वाला,
निबटाला मत फिरगी सू, कैदी ज्यू नहीं मरण वाला।
मरदां ज्यू अडया लडया मरा, लूठा पै खाडो वायो है,
भारत री भोम उजाळी है, सत ऊपर सीस चढायो है।[1]

1 धूडकोट, रचनाकार—गिरधारीसिंह पडिहार।

राजस्थानी भाषा मे वीरा री प्रशसा मे रचित साहित्यक रचनावा रै अलावा लोककाव्य ई मोकळो रचीज्यो। इणमे प्रवाडा, पद, छावलिया अर ख्यात इत्याद विधावा प्रमुख है। डूगजी जवारजी सू सबधित पड छावलिया अर ख्याल तीनू प्रकार री रचनावा मिळै।

लोक काव्य अर सगीत-निरत रो घणो नेहो सबध है। इण कारण साहित्यक डिंगल गीतां सू इणरी भिन्नता सुभाविक है। लोक गीता मे उणरी विषय वस्तु अर रूप तत्त्व न न्यारा नी कर सका। कारण यारी जनम सामूहिक अनुभूति रै पाण ई होव।

लोक काव्य मे सामूहिक चित्त री सहज अभिव्यक्ति होव। इण कारण वा रो अेकूको आखर जीवण शक्ति सू सप्रेरित होवै। ओ ई कारण है कै इणमे मन रा भावा न प्रकट करण री पूरी खिमता होवै। इणमे साहित्यक रचनावा रै ज्यू बधी बधाई लीक माथै चाल'र शब्दा नै रूढ रूप नी दिरीजै। इण कारण लोक काव्य सीधो मन री परस करै।

डूगजी जवारजी बाबत रचित लोक काव्य रै रूप मे जिको ई साहित्य मिळै, उणमे विषय वस्तु रो प्रतिपादन आछै ढग सू हुयो है। घणकरो लोक काव्य इतिहास सम्मत बाता माथै आधारित है पण कठैई कठैई कल्पना री पुट ई निजर आवै। उदाहरण सरूप लोटिया जाट अर करणिया मीणा रो नट रै वेष में रामगढ जावणो अर साधु रै रूप मे आगरै पूगणो, किलै रै सामी महीना लग धूणो धुखाय न बैठणो, पछ उणी'ज रूप मे डूगजी सू मिळनै किल रो भेद लेवणो इत्याद। पण अे सगळी बाता तो लोक काव्य रा जरूरी तत्त्व है। यार विना रोचकता नी आवै। इण कारण कल्पना रो थोडो पुट सुभाविक है। नीच दियोडा 'पड' सू आ बात खुलास होय जासी—

लोक काव्य

डूगजी जवारजी री पड

सिवरू देवी सारदा स काई तनै भवानी ध्याबू,
ज्या मरदा री छावलो म्हें च्यार कूट मे गावू।
डूग न्हार री कोटडया जुडी कचडी आय,
जाजम ऊपर जाजम बिछ रही खूब पड रजवाय।

लोट्यो जाट करणियो मीणो डूगसिंघ सिरदार,
तीनू मिळ मेळा हुव तो करै तीसरी बात ।

बोल्यो डाकू डूगसिंघ तू सुणरै लोट्या जाट !
मिनखा निठगी मोठ बाजरो घोडा निठग्यो घास ।

मरदा मे थू मरद आगळो, हेरया रो थू लाट,
रामगढ की हेर लगादे जद जाणू तोय जाट ।

लोट्यो जाट करणियो मीणो अकला माय उजीर,
भेख पलट ये चल्या रामगढ जाण छूट्यो तीर ।

लोट्यं लीनी ढोलकी ॥ काई करण्यं लीनो बास,
घर घर घालै ख्याल तमासा घर घर भाळै माल ।

रामगढ रै सेठा रो ये लदी कतारा जाय,
सोना री पूतळिया मरदा माय मूगिया भार ।

घुरसामलजी अणतामलजी वा सेठा रो माल,
रामगढ सू चली कतारा अजमेरा नै जाय ।

लोट्यं जाट करणिय मिणं हेरो दियो लगाय,
लूट छ तो लूट डूगजी भ्राडावळे रै माय ।
भ्राडावळो डाकिया पाछ्न बस का रैसी नाय ॥

× ×

सात सवारा निसरया ॥ ये हुया कतारा लार,
चलती बोरी काटदी स वा मूग्या दिया खिडाय ।

चुग चुग हारया बाळदी चुग चुग छक्या गवाळ,
चुग चुग दुनिया धापगी ज बोलती जाय ।

पोकरजी के घाट पै वा जाजम दई बिछाय,
गरीब गुरबा बाभणा नै हेलो दियो मराय ।

रुपियो रुपियो दियो बामणा मोहरा चारण भाट,
असी मोहर दी नानग साही साखो दियो जुडाय ।

धरम पुन्न यू बांट डूगजी झडवासै नै जाय
झडवासै मे सासरो साळा सू मिळवा जाय ।

झडवास का नोलसिघजी अलबेला सिरदार
चाव चौगुण भर्लसिहजी घणी करी मनवार ।

घणा दिनां सू आया पावणा गोठ जोमता जाय,
दूधा धोय'र चावळ रांध्या घिरतां धोय'र दाळ।
बोरी भर भर खाड मगाई घिरत चलाया ग्याळ ॥

× ×

सीकर सूं यें चालो फौजा झडवास मे आई
आस पास खड्या सिपाही घेरो दियो लगाई।

झडवास का भर्रुसिंघ यू भटदे वार आव,
के पकडादे डूग हार न नीं तो घरा मद के मांय।

रोळो बेयो मती करो कोई ना गळय का काम,
जीजो लाग डूगसिंघ म्हें हाथा दूयू पकडाय।

मोरझडी की दारू कढाव आगण भटी तुडाव,
दारू पाय'र कर बावळो मेडी माय चढाव।

च्यार फिरंगी ओट वढ्या च्यार चढग्या मेडी,
डूगसिंघ नै सूतो पकड्यो पगा ठोक दी बेडी।

हाथां घाली हथकडी रे गळ मे तोख जजीर,
आख खुली जद डूग न्हार वो हुयो घणो दिलगीर।

धड धड चाब आगळी स यो कड कड चाव नाड,
नण जग ज्यू दिवला ज्यारी सवा हाथ की नाड।

जद यू बोल्यो डूगसिंघ य सुणो फिरग्या बात
फिट फिट थारी जामण वाळो फिट फिट थारो बाप।

आठ गावडा मिळन आया करी सिंघ सू घात
सूत सिंघ नै धोखें पकड्यो फिट फिट थारो जात।

म्हारी अेकली जान है रे थार पळटण साथ।
अेकर ढीलो छोड दो थान फेर दिखाऊ हाथ।।

भर्रुसिंघ थ भलो विचारी भलो निभायो मेळ,
आछी करी जुवारी मेरी भलो दियो नारेळ।

दुनिया मे तो नाम कढायो मूडो होयग्यो काळो,
भाण बंनाई के लाग यू दगावाज को साळो।

डूग न्हार नें पकड'र बां पिंजस दियो बिठाय,
आगरै के लाल किल मे दोनो छ पू चाय।

आगर' न चल्यो लोटियो ज्यू लका हडमान ,
के ल्यावेलो खबर डूग की के ल्यावेलो प्राण ।

आगर' के बधवा आगे धूणी धाली सात,
अेवड छेवड बळे बळीतो बीच लोटियो जाट ।

मार पालथी मीट लगावे करे गजब का फल,
लोग दिखाऊ अन्न जळ त्याग्यो अेक भख बस पून ।

आय गय सू मुख ना बोल अेसो धारी मून,
छव महीना की लई समाधि खूब तप्यो दिनरात ।
छट्ठ महीनो लागता अगरेजा पूछी बात ।

कुण देसा सू आया बावजी कुण देसा नें जाव ?
पाच पच्चीस थे लेल्यो बाबा धूणी पर हटाव ।

हुकम नहीं है थड साब को, डबल कूच कर जाव,
पाच पच्चीस वे लेसो बच्चा ज्यारे है घर बार ।

साधु भूखा भाव का म्हारे नहीं माया सू काम,
माग्या खावा टूकडा स म्हे रटा राम को नाम ।

आबूजी सू आया उतर म्हे गगा न्हावण जावा,
थारे किलै मे न्हार डूगजी थारा दरसण पावा ।

खाय कायगी फिरगी बोल्यो सुणो सतरिया बात,
ओ मोडो तो कपटी कोनी नाय कपट की घात ।

या साधा को जीवडो भटके भेळो दो करवाय,
डूगसिंघ कठीवध चेलो याने देवो बताय ।

× ×

सूरत पिछाणी जाट की जद नैणा खळक्यो नीर,
छाती भरी हिवडो उळझ्यो छूटो डूग को धीर ।

रग रे थारी जात लोटिया भलो जाटणी जायो,
आ मरवा की घडी बाजगी भल भेरु सू आयो ।

कवरा माय हाथ फेरजो राणी नै हिवळास,
भाई भतीजा मुजरो कहिजो माजी घणा सिलाम ।

कायर छाती का डूगजी स थू कायरता मत लाव,
सात दिना के भीतर थान घर ले जाऊ छुडाय ।

लोट्यॉ जाट करणियॅ मीणॅ माताजी न ध्याई,
दोय घडी कॅ मायनॅ वा नीसरणी लगवाई ।

छटवा छटवा कूद पड्या वे लाल किलॅ रॅ माय,
लार लार बगॅ करणियो ग्राग लोटियो जाट ।

× ×

दरवाज के मूड ग्राग ग्रडी खाट सू खाट,
दरवाज की मोरी ग्राग खूब चल तलवार ।

तलवारा का उडॅ टूकडा लड लोटियो जाट,
सेखावत बीदावत जूझ लडॅ नरका साथ ।

ग्रोडलिया मेडतिया भगडॅ भगडॅ तवर पवार,
लडॅ गुसाईं दादू पथी भली बनाव वार ।

याल्यो नाईं भाठा मार चाकर चरवादार,
भला भला का टूक उडावॅ लडॅ डूगजी न्हार ।

× ×

बठोठ पूग्या डूगजी स बॅ दल बादल के साथ,
राणी महला उतरी स वा भर मोत्या को थाल ।

ग्राघा पधारो सायवा थानॅ मोत्या लेवू बधाय,
म्हानॅ मती बधावो राणी बधावो लोटियो जाट ।

× ×

डूग न्हार जोधाणॅ बठो ज्वारो बीकानेर,
काका भतीजा मन मे रगी लूटण की ग्रजमेर ।[1]

डूगजी जवारजी री प्रशपा मे की 'छावलिया' ई उपलब्ध है । 'छावनी' अेक तरॅ रो वाद्य यत्र है, जिणन बजाय'र इणरॅ साग गायॅ जावण वाळॅ काव्य रो नाम ई छावली पडग्यो । उपलब्ध छावलिया मे अेक रचना खासी लोकप्रिय है । ग्रा अेक दीघ रचना है । इणमे इण स्वतत्रता सेनानिया र काम रो विस्तार सू वणन करीज्यो है । 'पड' रॅ ज्यू इणमे ई इतिहास सम्मत घटनावा रॅ कल्पना रो पुट देय न रचना न रोचक बणावण री कोशिश करीजी है । नीचे इण छावली रा की प्रमुख अश दिया जावॅ—

---

1 परपरा गोरा हटजा अक, प स 125

सुरसत सिवरू सारदा नै तनै जोगणी घ्यावू जो ।
या मरदा री जुडी छावली भली भात सू गावा जी ।।
सीकर नगरी बडो घराणो बठोठ घर को गाव जी ।
गढ बठोठ मे ढळो जाजमा जुड बठा सरदार जी ।
बैठा मद पीवै वे गेहरी खूब उड मतवाळ जी ।
भरी सभा मे बोल्यो धाडवी सुण उमरावा बात जी ।
कुण तो आपणा खेत खडला कुण भरेला डाण जी ।
कोठी लूटा अगरेजा की करा मुलक मे नाम जी ।

× ×

घोडा नाळो घासयास काई ऊठा करो पिलाण जी ।
अगडबंब का घुरघा नगारा पडी नौबता चोट जी ।
सीकर लूट फतपुर लूटी मारो रामगढ फेट जी ।
घाटै ढळता लूट धाडवी मुगा भरी कतार जी ।
मडाव सू कूच बोलिया डेरा छावणी माय जी ।
छावणी रै हुवा बाग मे दिया पाघडा छाट जी ।
भरी सभा मे बोल धाडवी सुणो लोटिया जाट जी ।
कुण जावलो किल आगर कुण हेरेलो माल जी ।
बडके बोल जाट लोटियो सुण सेखावत बात जी ।
म्हैं जायूला किले आगरै म्हैं हेरू ला माल जी ।
लोटयो जाट सावतो मीणो अकल बड़ा उस्ताद जी ।
लावा लावा लिया बासडा कियो नटा को भेस जी ।

× ×

आधी रण पो'र के तडक दियो पागडै पाव जी ।
प्रोळ भाग दरवाजा भाग्या भाग्या लाल किवाड जी ।
चवद तो चपरासी काटघा पनर चौकीदार जी ।
राठा रोठो असो माडियो शहर छावणी माय जी ।
मानवियां की मू डी टूटै वहै रगता खाळ जी ।
बडी छावणी इण विध लूटी आधी दीनो बाळ जी ।
नव गोरां का नाक काटिया बगळा दीना बाळ जी ।
साठ ऊट माया सू भरिया कपडा भरी कतार जी ।

धाडो करवा निसरयास नै सदा भवानी साथ,
लज्जा म्हारी मातुश्री जगदबा थारै हाथ।
रोकड खोसा कपडा खोसा अर खोसा कतार,
पोतेदार र नाम रो सरे बद करा वैपार।
हार धाड चढिया रे सिरदार डूग नै ज्वार जी।
थया थगड या थई था।

सेठ

हा रे माल मत लूटो, माल मत लूटो, माल मत लूटो रे।
ठाकरा कहचो हमारो माल मत लूटो रे। टेर
हू छू बाण्यो दूसरो स नै पोतेदार मत जाण
पोतेदार रै यवळ म्हारो मत ना काढो घाण
ठाकरा कहचो हमारो मान माल मत लूटो रे।
हा रे माल मत लूटो, माल मत लूटो माल मत लूटो रे।
थया थेगड था। थई था।

डूगजी जवारजी

हा रे माल नहीं छोडा, माल नहीं छोडा, माल नहीं छोडा रे।
खरच्या लागो हाथ माल नहीं छोडा रे। टेर
थू क्यू बाण्यो बणै दूसरो म्है छा किसा अजाण
पोतेदार को डीकरो स म्है लीनो सूरत पिछाण
खरच्या लागो हाथ माल नहीं छोडा रे।
हा रे माल नहीं छोडा, माल नहीं छोडा, माल नहीं छोडा रे।
थया थेगडथा थई था।

x x x

अंग्रेज

करता है कुण फितूर रे मुलका रै माहि ?

डूगजी जवारजी

क्यू थू आयो है अगरेज रे जातो रै यहा से। टेर
गलवल गलबल बोलो बोल यो बदर री जात
मोडो वेगो घालसीस काई दगो देय कर घात।

सुरसत सिवरू सारदा नै तनै जोगणी ध्यावू जी ।
या मरदा री जुडी छावली भली भात सू गावा जी ।।
सीकर नगरी बडो घराणो बठोठ घर को गाव जी ।
गढ बठोठ मे ढळी जाजमा जुड बठा सरदार जी ।
ब ठा मद पीवे वे गेहरी खूब उड मतवाळ जी ।
भरी सभा मे बोल्यो धाडवी सुण उमरावां वात जी ।
कुण तो श्रापणा खेत खडला कुण भरेला डाण जी ।
कोठी लूटा अगरेजा की करा मुलक मे नाम जी ।

× ×

घोडा नाखो घासयास काई ऊठा करो पिलाण जी ।
श्रगडबब का घुरच्या नगारा पडी नौबता चोट जी ।
सीकर लूट फतपुर लूटी मारी रामगढ फेंट जी ।
घाटे ढळता लूट धाडवी मूगा भरी कतार जी ।
मडाव सू कूच बोलिया डेरा छावणी माय जी ।
छावणी र हवा वाग मे दिया पाघडा छाट जी ।
भरी सभा मे बोल धाडवी सुणो लोटिया जाट जी ।
कुण जावलो किल श्रागर कुण हेरेलो माल जी ।
वडके बोल जाट लोटियो सुण सेखावत बात जी ।
म्हें जायूला किल श्रागर म्हें हेरू ला माल जी ।
लोटयो जाट सावतो मीणो श्रकल बड़ा उस्ताद जी ।
लावा लावा लिया वासडा कियो नटा को भेस जी ।

× ×

श्राधी रण पो'र के तडके दियो पागड पाव जी ।
श्रोळ भाग दरवाजा भाग्या भाग्या लाल किंवाड जी ।
चवदं तो चपरासी काट्या पनर चोकीदार जी ।
राठा रीठो श्रसो माडियो शहर छावणी माय जी ।
मानवियां की मू डो टूट वहै रगता खाळ जी ।
बडी छावणी इण विध लूटी श्राधी दीनो बाळ जी ।
नय गोरां का नाक काटिया वगळा दीना बाळ जी ।
साठ ऊट माया सू भरिया कपडा भरी कतार जी ।

घाल कतारा निसरचा स वे पोकरजी मे न्हाय जी।
पोकरजी के घाट पर वे गेहरा किया सिनान जी।
गरीब अर गुरबा न वा हेलौ दियो पडाय जी।
नव नव रुपिया दिया गरीबा मोहरा चारण भाट जी।

× ×

झडवास का भरूसिहजी दगो घरयो मन माय जी।
पकडावू जे डूगसिंघ ने गाव मिळे दो च्यार जी।
छान कागद मोकळे स वे ग्रगरेजा के पास जी।
बडा सा'ब थ बेगा ग्राइजो देवा डूग पकडाय जी।
झडवास के ग्रोळी दोळी घेरो दीनो घाल जी।
दो पडदा री सीसी मगाव उणमे घाल जेहर जी।
ग्रोरा ने तो मद रा प्याला सेखावत न जेहर जी।
तीन प्याला भरचा जेहर का पडचा आजमा बीच जी।
हाथा मे हथकडी राळदी पावा मे जजीर जी।
ग्रागरै र लाल किल मे नाहर लियो बिठाए जी।

× ×

पडती गुडती वाता चाली रणीवास र पास जी।
राणी बोली डूगजी री सुण जेठता बात जी।
काको पडचा कंद मे स थे हाथा चूडी धार जी।
नणा सुरमौ सार राडिया मन सू प तरवार जी।
ग्रागर मे ग्राग लगा दू तो तिरिया को जात जी।
क.की मौसौ बोलियौ स वो उठी तन मे झाल जी।
काकजी री बेडी काटू तद बाधू सिर पाग जी।

× ×

कुहाडी चाल जोधपुर री साकल रा बरणाट जी।
बावन बाघदा री बेडी काटी सवा पोहर के माय जी।
ग्रस्सी कोस का गेला करग्या सवा पोहर मे माय जी।
ज्वारसिंघ तो बोल ग्राकरो सुण काकोजी बात जी।
मोतीडा सू थाल भरावो खावद लेवो बधाय जी।
प ली बधावो जाट लोटियो पछ घरा री स्याम जी।
ठाकर तज बेटो देजो रहिजो ग्रम्मर नाव जी।
खार वाली मेडतियाणी भलो डूग नर जायो जी।
ग्रागर रो किलो तोडने निकल सावतो ग्रायो जी।

डूगसिंघ नै सेना जोधपुर जुहारी बीकानेर जो ।
काकै भतीज र मन मे रंगी लूटण की अजमेर जो ।[1]

x x

पद अर छावलिया रै अलावा डूगजी ज्वारजी सू सबधित कौ ख्याल ई राजस्थानी भाषा में उपलब्ध है । ख्याल दरअसल मे लोकनाट्य है जिको परपरागत रूप सू आज ई राजस्थान मे खेलीज । ख्याल अेक स्वतत्र विधा है अर इणरी आपरी न्यारी तकनीक है । बिना कोई मच र अर बिना कोई विशेष साज सज्जा रै खुला मैदान मे यारो प्रदरसण होवै । पात्र स्वाग धारण करन आवै अर गावता थका आपरी ओळखाण खुद ई देवै । जिण भात डूगजी ज्वारजी र ख्याल मे जिको पात्र डूगजी ज्वारजी री स्वाग बणाय न आवै वे खुद इज गावता थका आपरी ओळखाण इण भात देव—'हा रे घाड चढिया रै सिरदार डूग न ज्वारजी !' सगीत री पै'लडी ओळी 'टेर' कहीजै, जिणनै प्रमुख पात्र रै उच्चारण किया पछै गवया री मडळी सभाळै अर टेर र रूप मे वाद्य यत्रा रै साथै बार बार गावै । गवैया जितरी देर टेर गावता रैव प्रमुख पात्र नाचतौ रव । छेवट गवैया ठेको देवता बोल—"थगडया थई था ! अर इतरो कैवता ई प्रमुख पात्र नाचतौ नाचतौ रुक जावै अर सगीत माध्यम सू आपरो कथ्य आग बढावै । आपरी बात पूरी हुया वो फरू नाचण लागै अर गवया टेर न दुहरावता रैव । साजिदा साज बजावता रैवै अर सगीत चालतौ रैवै । इण भात अेक पात्र र पछै दूजौ पात्र आवै अर घटनाक्रम रै साथ कथा आगै बढती जावै । अठ आ बात ध्यान देवण जोग है के लोकनाट्य मे पात्रा री सगळौ कथोपकथन पद्यबद्ध ई चालै ।

डूगजी ज्वारजी रा प्रसग न लेयनै कई ख्याल लिख्योडा है । वा मे सू अेक ख्याल रा की अश इण भात है—

ख्याल डूगजी जवारजी रो

डूगजी जवारजी –

हारे धाडै चढिया रे सिरदार डूग नै ज्वारजी ! टेर

---

1 परपरा, गोरा हटजा अक, प स 125

धाड़ो करवा निसरघास नै सदा भवानी साथ,
लज्जा म्हारी मातुश्री जगदबा थांरै हाथ।
रोकड खोसा कपडा खोसा ग्रर खोसा कतार,
पोतेदार रै नाम रो सरे बंद करा वपार।
हार धाड़ै चढिया रे सिरदार डूग नै ज्वार जी!
थया थैगड था थई था!

सेठ

हा रे माल मत लूटो, माल मत लूटो, माल मत लूटो रे!
ठाकरा कह्यो हमारो माल मत लूटो रे! टेर
हू छू बाण्यो दूसरो स नै पोतेदार मत जाण
पोतेदार र बदळ म्हारो मत ना काढो घाण
ठाकरा कह्यो हमारो मान माल मत लूटो रे!
हा रे माल मत लूटो, माल मत लूटो माल मत लूटो रे!
थया थैगड था! थई था।

डूगजी जवारजी

हा रे माल नहीं छोडा, माल नहीं छोडा, माल नहीं छोडा रे।
खरच्या लागी हाथ माल नहीं छोडा रे! टेर
थू क्यू बाण्यो बण दूसरो म्हे छा किसा ग्रजाण
पोतेदार को दीकरो स म्हे लीनो सूरत पिछाण
खरच्या लागी हाथ माल नहीं छोडा रे!
हा रे माल नहीं छोडा, माल नहीं छोडा, माल नहीं छोडा रे।
थया थैगडया थई था।

× × ×

ग्रग्रेज

करता है कुण फितूर रे मुलका र माहि?

डूगजी जवारजी

क्यू धू आयो है ग्रगरेज रे जातो रै यहा से! टेर
गलबल गलबल बोलो बोलै यो बदर री जात
मोडो वेगो घालसीस काई दगो देय कर घात!

अक ओर ख्याल मे ख्याल लिखणिय सरूपात मे आपरै गुरु री ओळखाण देवता लिख्यो है—

सुरसत माय सारदा सिवरू पूरै मन को काम
ब्राह्मण गौड पुरोहित कहियै नाम प्रहलादोराम
मूरख को पडत कर देवै मुलका मे सरनाम
वे कहियै उस्ताद हमारा जिनकू सात सलाम ।

सवाद डूगजी अर सेठजी रो

सेठ

इसडी मुख सू मतना भाखो दिल मे बात विचार
टोपी वाळो तप फिरगी इणमे फरक न फार
कितराई डाकू गेरया कद मे छीन छीन हथियार
छीन लिया हथियार के मुस्कल छूटणा
ओ अगरेजा रो माल निगे कर लूटणा ।

डूगजी

लूटया बिना जाण नीं पावै धोमो धोल किराड
बीकानेर जोधपुर जपुर राणै की मेवाड
जो कोई अडयो मेरे सू जड सू दियो उखाड
जड सू दियो उखाड जगत छानी नहीं
अगरेजा की आण सदा मानी नहीं

अग्रज

अैसा जुल्मी कुण है जगत मे देख्या सुण्या न कान
मेरे बिना हुकम नीं चाल दरखत का इक पान
कुणसे मुलक का रवण वाळा, कांई है वीं को नाम
अक पलक मे सर करू म्हैं सगळो हिंदुस्तान ।

डूगजी जवारजी र व्यक्तित्व राजस्थानी जन मानस न कितरो प्रभावित कियो इणरो पतो तो इण बात सू ई लागै के इणा री प्रशसा मे मोकळै लोक काव्य री रचना हुई पण इणसू ई इधकी

वात श्रा के जिणा डू गजी जवारजी री मदद करी के युद्ध मे प्राण दिया, वारी प्रशपा मे ई मोकळी काव्य रचना हुई है।

सीकर मे जिण वखत राज गादी वास्तै झगडो चाल हो, डू गजी उण वखत बागी वण्योडा हा। सीकर रै मामला मे उणा न्याव पख लियो। अग्रेज इण बात सू श्रौरू नाराज हुया कारण के इणसू वारै स्वाथ मे अडचण पडती ही। सीकर रावजी अग्रेजा सागै मिळन डू गजी रै खिलाफ कारवाई करण लाग्या।

'डू गजी इण बात माथ नाराज होयनै ई सन् 1836 मे सीकर राज रा की गाव लूट लिया। इणर पछ लोढासर रै ठाकर खुमाण-सिह बीदावत कन वुश्रा गया। लोढासर मे जवारजी रौ सासरौ हो। बीकानेर नरेश रतनसिह न जद श्रा बात मालूम हुई तो उणा अग्रेजा रै इशारै सू लोढासर माथै श्राक्रमण कर दियो। बीकानेर री सेना सागै ठाकर हरनाथसिह मघरासर श्रर माणकचद सुराणा इत्याद हा। लोढासर रो दुग फतेह होयग्यो। डू गजी, जवारजी श्रर खुमानसिह बीदावत उठै सू निकळ'र जोधपुर कानी वुश्रा गया।[1]

इण प्रसग न लेयनै सुप्रसिद्ध कवि शकरदान सामोर ठाकर खुमाणसिह बीदावत लोढासर री प्रशपा मे अेक डिंगल गीत लिख्यो—

दूहो

सरण देय लीधो सुजस, श्राता कुरम श्रधीर।
खूमो श्रखियाता खरी, बाता रहसी थोर॥

गीत

सीकर धणी फिरगी साथै, बिच सिरताज बीकाणो।
श्रामल श्राय लोढासर लूम्यो, सामल हुयो सुराणो॥
सरणो देय सालुळया सेखा, श्राय'र छू्यो श्रोळे।
बीदो राव सरम रो बॉटयो, खूमो दळ हू खोळे॥
फौजा फाटका कीध फिरावा, पलटण फौजा पूरी।
लाखा दळा लोढासर लूम्यो, हाका करे हजूरी॥

---

1 बीकानेर राज का इतिहास दूसरा भाग, पृ स 425

काकड कोट अबोढो कमधज, सिर वैरया रै साज ।
सेजा ही पकडायो सेखो, लार दूरा पुर लाज ॥

काकड कोट अबोढो कमधज, सावत अग्यिा सालै ।
खेटायत तो विना खूमाणा, भोकायत कुण भालै ।।

डग जवाहर राख्या डुलता, जाहर कोरत जाणो ।
पूरण सुत पारवरिया पाळे, खागा पाण खुमाणो ।।

आखो रजवट आज इस्यो को, वड सरणाई बाज ।
गहवरियो जिसडो ओ गढपति, रिधु लोढासर राज ॥[1]

जवारजी डूगजी नै छुडावण वास्तै जद आगरै रै किल मार्थै हमलो कियो उण वखत हणूतसिह मेहडू नाम रो अेक चारण ई भेळो हो । वो इण हमल मे काम आयग्यो । महाकवि शकरदान सामोर उणरी यादगार में कीं सोरठा कह्या, वे इण भात है—

कोटडमल कवपात, कतियक लग महमा करू ।
सूनू करग्यो साथ, भोम अडोळी भोम रा ॥

चित कर सुरग चलह, गढवो गढ़ मेळ'र गयो ।
महडू राण मिळह, अेक'र हणू ता आवज ।।[2]

डूगजी जवारजी सू सबधित की अैतिहासिक 'रुक्का परवाणा' इत्याद ई उपलब्ध है जिको परिशिष्ट हेठळ इण पुस्तक रै अत मे दियौडा है ।

उमरकोट रौ रतन राणो

राजस्थान रै आथूणी दिस मे आयोडी उमरकोट री जागीर ठेट पुराणे जमानै सू ई सोढा राजपूता रै कब्जे मे ही । ओ क्षेत्र थार रेगिस्तान रो आथूणो भाग है । इणसू आगै सिध रो नहरी इलाको सर होय जावै । सिध रा मुसलमान शासक मीर री इण पाडोस री जागीर उमरकोट मार्थै ठेट सू निजर रही । पण उगणीसवी सदी र सरूआत ताई सोढा राजपूत जोधपुर रियासत री देखरेख मे उमरकोट रो राजकाज सभाळता रह्या । जोधपुर जिसी लूठी रिया

---

1 स्वतन्त्रता सेनानी डूगजी जवारजी प स 46

2 स्वतन्त्रता सेनानी डूगजी जवारजी प स 49

सत री सरक्षण होवण सू उमरकोट माथै पावता थकाई मीर री कब्जो नी होय सक्यो ।

महाराजा मानसिंह नै जोधपुर री गादी सभाळया पछै कई मुसीबता उठावणी पडी, जिणरो विगतवार वणन लारल प्रसग मे श्रायग्यो है । मानसिंह पारिवारिक झगडा, सरदार सामता री विरोधी हरकता श्रर अग्रेजा र षडयन्त्रा सू जीवण लग परेशान रह्या । ई सन् 1814 मे अग्रेजा रै अजेंट श्रमीरखा पिडारी मानसिंह रै गुरु देवनाथ श्रर दीवाण इद्रनाथ री कतळ कर दिया । इणसू मानसिंह रो राजकाज सू चित्त उठग्यो । मानसिंह रो नाजोगो राजकुवर छतरसिंह राज रो काम देखण लाग्यो । वो श्रेक अविवेकी मोट्यार हो । उणर हाथ मे राज रो काम श्रावता ई ठ्याऊ मेर श्रव्यवस्था फैलगी । इसी श्रवस्था मे दूरवर्ती उमरकोट जिसी जागीर री देखभाळ समव नी रही । जिणसू मौको देख'र सिंध री तालपुर रियासत र मीर उमरकोट माथ हुमलो कर दियो । सोढा राजपूता मदद वास्तै जोधपुर सदेसो भेज्यो पण श्रठै तो श्रागै ई रापटराळ मच्योडी ही इण कारण सोढा री श्ररज माथै काई ध्यान नीं दिरीज्यो । सोढा श्रापरै बूत मुजब मीर रो मुकाबलो कियो पण छेवट हार खावणी पडी । उमरकोट माथै मीर रो कब्जो हायग्यो ।

पण सोढा स्वाभिमानी श्रर स्वतत्रचेता कौम ही इण वास्तै लडाई मे हारया पछै ई उणा मन सू हार स्वीकार नी करी । वे इण विकट मरुस्थळी इलाक मे रैवता थका स्वतत्रता प्राप्ति वास्तै पूरा तीस बरस ताई झगडता रह्या ।

1843 मे अग्रेजा श्रर मीरा र बिचाळै भगडो होयग्यो । अग्रेजा मीर माथ श्राक्रमण करन तालपुर श्रर उमरकोट दोनू कब्जै मे लेय लिया ।

उमरकोट र तत्कालीन दावेदार राणा रतनसिंह अग्रेजा नै श्ररज करी के जागीर रो श्रसली हकदार वो है, इण वास्तै जागीर उणनै सूप दी जावै । पण अग्रेजा इण बात माथ कोई ध्यान नी दियो । रतनसिंह बगावत कर दी । अग्रेजा री लूठी ताकत र सामी उणरी हैसियत नीजिसी ही पण उण वीर इण बात री कोई परवाह नी करी ।

उणे आपर मामूली साधना सू सैनिक सगठण बणायो अर गुरिल्ला युद्ध पद्धति काम मे लीवी। सैनिक सातरा ऊटा माथै चढ'र अग्रेजी सेना माथै हमला करता अर लूट खसोट करनै दुगम धोरा मे ढळ जाता।

मरुस्थळी जनता री राणा सागै पूरी सहानुभूति ही। इण कारण राणा रा ऊट सवारा नै धोरा मे जबरो आसरो मिळयोडो हो। राणा रा सनिक आधी रै उनमान आवता अर लूटनै बुआ जावता। अेक अेक करन अग्रेजी छावणिया लूटीजण लागी। कपनी सरकार हाक बाक होयगी।

मरुस्थल री हिंदू जनता पूरा तीस वरसा ताई मीर र राज मे फोडा भुगत्योडी ही, इण कारण विदेसी सत्ता सू वा जरा पण नी घबराई। जनता री पीठ बळ मिळवा सू ई राणा रा थोडा सा सनिक अग्रेजा री इतरी लूठी ताकत आगै टिक सक्या। जनता राणा शासन री पाछी थरपणा रा सुपना देखती, इण कारण राजा नै उणै साचा मन सू सहयोग दियो।

बार बार रा हमला मे राणा रा कई ठावा सैनिक काम आयग्या पण प्रबळ जन बळ रै पाण राणो अग्रेजा सू जूझतो रह्यो। ब्रिटिश शक्ति इण बात माथै हैरान ही के अेक साधारण सामत उणरै कब्जै मे नी आव हो।

छेवट अग्रेजा दाम नीति सू काम लियो। अेक देसद्रोही अर विस्वासघाती न धन री लालच देय न रतनसिंह न पकडावण रो कावतरो घडीज्यो। अग्रेजा री दाम नीति काम आयगी अर राणो पकडीजग्यो।

अदालत मे उण माथै मुकद्दमो चाल्यो अर मायड भोम रा उण सपूत नै फासी री सजा हुयगी। पण राणा रो ओ बळिदान अकारथ नी गयो। पूरै थरपारकर इलाक मे विद्रोह फैलग्यो अर ठोड ठोड अग्रेज अधिकारिया री हत्यावा होवण लागी। अग्रेजा रो इण क्षेत्र मे रवणो हराम होयग्यो। छेवट हार खाय न ई सन् 1850 अग्रेजा उमरकोट रो राज सगा हाथा सू सोढा न पाछो सूप दियो।

जन मानस माथै राणा रतनसिंह रै बळिदान रो घणो ऊडो असर हुयो। लोकगायका उणरी पुण्यस्मृति मे माड राग मे अेक

सत री सरक्षण होवण सू उमरकोट माथै चावता थकाई मीर री कब्जो नी होय सक्यो ।

महाराजा मानसिंह नै जोधपुर री गादी सभाळ्या पछ कई मुसीवता उठावणी पडी, जिणरी विगतवार वणन लारले प्रसग मे आयग्यो है । मानसिंह पारिवारिक झगडा, सरदार सामता री विरोधी हरकता अर अग्रेजा र षडयत्रा सू जीवण लग परेशान रह्या । ई सन् 1814 मे अग्रेजा रै अेजट अमीरखा पिंडारी मानसिंह रै गुरु देवनाथ अर दीवाण इद्रनाथ री कतळ कर दिया । इणसू मानसिंह री राजकाज सू चित्त उठग्यो । मानसिंह री नाजोगो राजकुवर छत्रसिंह राज री काम देखण लाग्यो । वो अेक अविवेकी मोय्दार हो । उणरै हाथ मे राज री काम आवता ई च्यारू मेर अव्यवस्था फलगी । इसी अवस्था मे दूरवर्ती उमरकोट जिमी जागीर री देखभाळ समव नी रही । जिणसू मौकी देख'र सिध री तालपुर रियासत र मीर उमरकोट माथ हमलो कर दियो । सोढा राजपूता मदद वास्त जोधपुर सदेसो भेज्यो पण अठ तो आग ई रापटरोळ मच्योडी ही इण कारण सोढा री अरज माथै कोई ध्यान नी दिरीज्यो । सोढा आपरै बूत मुजब मीर री मुकाबलो कियो पण छेवट हार खावणी पडी । उमरकोट माथ मीर री कब्जो होयग्यो ।

पण सोढा स्वाभिमानी अर स्वतत्रचेता कौम ही इण वास्त लडाई मे हारया पछ ई उणा मन सू हार स्वीकार नी करी । वै इण विकट मरस्थळी इलाक मे रेवता थका स्वतत्रता प्राप्ति वास्तै पूरा तीस बरस ताई झगडता रह्या ।

1843 मे अग्रेजा अर मीरा र बिचाळै भगडो होयग्यो । अग्रेजा मीर माथ आक्रमण करनै तालपुर अर उमरकोट दोनू कब्जे मे लेय लिया ।

उमरकोट र तत्कालीन दावेदार राणा रतनसिंह अग्रेजा नै अरज करी के जागीर री असली हक्दार वो है, इण वास्ते जागीर उणनै सू प दी जाव । पण अग्रेजा इण बात माथै कोई ध्यान नी दियो । रतनसिंह बगावत कर दी । अग्रेजा री लूठी ताकत रै सामी उणरी हैसियत नीजिसी ही पण उण वीर इण बात री कोई परवाह नी करी ।

उण आपरै मामूली साधना सू सैनिक संगठण बणायो अर गुरिल्ला युद्ध पद्धति काम मे लीवी। सैनिक सातरा ऊंटा माथै चढ'र अंग्रेजी सेना माथै हमला करता अर लूट खसोट करनै दुगम धोरा मे ढळ जाता।

मरुस्थळी जनता री राणा सागै पूरी सहानुभूति ही। इण कारण राणा रा ऊंट सवारा न धोरा मे जवरो आसरो मिळयोडो हो। राणा रा सनिक आधी रै उनमान आवता अर लूटन बुआ जावता। अेक अेक करन अंग्रेजी छावणिया लूटीजण लागी। कपनी सरकार हाक बाक होयगी।

मरुस्थल री हिंदू जनता पूरा तीस बरसा ताई मीर रै राज मे फोडा भुगत्योडी ही, इण कारण विदेसी सत्ता सू वा जरा पण नी घबराई। जनता री पीठ बळ मिळवा सू ई राणा रा थोडा सा सनिक अंग्रेजा री इतरी लूठी ताकत आगै टिक सक्या। जनता राणा शासन री पाछी थरपणा रा सुपना देखती, इण कारण राजा न उणै साचा मन सू सहयोग दियो।

वार वार रा हमला मे राणा रा कई ठावा सैनिक काम आयग्या पण प्रवळ जन बळ रै पाण राणो अंग्रेजा सू जूझतो रह्यो। ब्रिटिश शक्ति इण बात माथै हैरान ही के अेक साधारण सामत उणर कब्जे मे नी आवै हो।

छेवट अंग्रेजा दाम नीति सू काम लियो। अेक देसद्रोही अर विस्वासघाती नै धन री लालच देय नै रतनसिंह न पकडावण रो कावतरो घडीज्यो। अंग्रेजा री दाम नीति काम आयगी अर राणो पकडीजग्यो।

अदालत मे उण माथै मुकद्दमो चाल्यो अर मायड भोम रा उण सपूत नै फासी री सजा हुयगी। पण राणा री औ बळिदान अकारथ नी गयो। पूरै थरपारकर इलाक मे विद्रोह फैलग्यो अर ठौड ठौड अंग्रेज अधिकारिया री हत्यावा होवण लागी। अंग्रेजा रो इण क्षेत्र मे रैवणो हराम होयग्यो। छेवट हार खाय न ई सन् 1850 अंग्रेजा उमरकोट रो राज सगा हाथा सू सोढा न पाछो सूप दियो।

जन मानस माथ राणा रतनसिंह रै बळिदान रो घणो ऊडो असर हुयो। लोकगायका उणरो पुण्यस्मृति मे माड राग मे अक

करुणा प्रधान गीत री रचना करी। राणै रतन आपरै जीवण रा छेहला दिना मे थोडै वखत ताई आडावळ परबत मे शरण लीवी ही। उठै ई अंग्रेजा राणा न धोखै सू पकड्यो अर फासी माथै लटकाय दियो।

उमरकोट री जनता आपर प्रिय राणा रै दरसणा खातर तरसती रैयगी। लोकगीत मे इणीज भावा री मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है—

लोकगीत - रतन राणो

म्हारा रतन राणा
अेकर तो अमराणै घुडलो फेर
अमराणै मे घोर अधार
बिलखा लागै म्हैल माळिया।
हो म्हारा रतन राणा
अेकरसा अमराणै पाछो आव ॥

ओ जी म्हारा रतन राणा
ऊभी धण छाजइयां री छाह
भटियल ऊभी छाजइया री छाह
आसूडा ढळकावै कायर मोर ज्यू
रे म्हारा रतन राणा
अेकर तो अमराणै घुडलो फेर ॥

अमराणै मे घरट मडाय
ओ जी म्हारा रतन राणा
घर घरियै घरट मडाय
गेहूडा पीसीज आटइयो राणै राव रो
रे म्हारा सायर सोढा
अेकर तो अमराणै पाछो आव ॥

अमराणै मे महूडै रा रूख
ओ जी म्हारा रतन राणा
अमराणै मे महूडै रा रूख
महूडा गळीज मदडो नीसरै
रे म्हारा रतन राणा
महूडो पीवण नै पाछो आव ॥

अमराण मे घडं रे सोनार
ओ जी म्हारा रतन राणा
अमराणं मे घडं रे सोनार
पायलडी घडा दे रिमझिम बाजणी
रे म्हारा सायर सोढा
अेकरसा अमराणं पाछो आव ॥

अमराण मे बोल सूवा मोर
ओ जी म्हारा रतन राणा
अमराणं मे बोले सूवा मोर
वागा मे बोलं छं काळी कोयलडी
रे म्हारा सायर सोढा
अेकरसा अमराणं घुडलो फेर ॥

दूजौ अध्याय

1857 री क्राति सू सबधित काव्य

महाकवि सूर्यमल मीसण

महाकवि सूयमल मीसण री तेजोमयी काव्य प्रतिभा सू अरक उगाळी रै उनमान साहित्य रा आकाश मे चहूंवूट उजास हुयग्यो। उण फगत नामवरी के कविता कामण नै रिझावण खातर नी, आजादी रा सावचेत रखाळा रै रूप मे सिरजण कीधी। रीतिकाळ री कविता रो भवरो तो विधुवदनिया रा रूप सिणगार रा वखाण रा वाग मे ई गु जार करतो रह्यो। वकूवरणी, गजगामण, पद-मणिया री केशराशि मे अटक्योडी काव्य गगा नै जनजीवण री ओक्ळ जमीन माथै मीसणजी लाया। जिण इमरत जळधारा सू सस्कारा रै बीजा री साख नीपजी, वे काळरूपी गजराज रो गड-स्थळ भेदनै वीनै मनचीती दिशा कानी लेग्या। समय रूपी आज रा सगीत नै समझणियो उण जिसो पारखी उण वगत औरू कोई कोनी हो। रीतिकाळ मे राजावा र म्हैल माळिया मे कैद हुयोडी, धनवता रै ढोलियै चढयोडी कविता कामण नै सूयमलजी थोम रा अग्निकु ड मे तपाय नै शुद्ध कीधी। म्हैला रा गोखा सू काढनै बीनै चावटै लाया। आम आदमी री जिनगाणी सू जोडनै उणनै सब पूज्य बणाय दीधी।

उण वखत ताई सैंकडा वरसा री पराधीनता सू राष्ट्र री काया मे मुर्छा लागग्यी ही अर च्यारू मेर नवळाई यापरगी ही। देश री दुरगत देखन मीसणजी रो मन घणो कळपतो। सरूपात में ननी वादळी र ज्यू दीसती परदेशी सत्ता उण टेम ताई वळायण र उन-मान उपड न आजादी रा सूरज नै ढाकण वाळी ही। कवि आपरी दूरदर्शिता सू वरसाळा मे फू फाडा करती नदी रै ज्यू आवती परदेशी सत्ता रा खतरा नै दपण मे छिव रै ज्यू देख लियो। वे इण वात मू वाकव हा वे गोरी सत्ता रो आगळी टिकाव ई हुयग्यो तो वा कायमखाने ग्रठ जम जासी। पछै इण अजगर री कु डळी सू मुक्ति री आशा ई नी राखणी। इण वास्त पाणी पेली पाळ वाधणी

जरूरी वयू कै जीमिया पछै तो चळू हुवै । जोग इसो वण्यो के वारी देखणी मे ई राष्ट्र परदेशी सत्ता र काळिदार रो फण किचरण री तेवड ली । सही अवसर आयो देखनै वे राष्ट्र न इण भात बिडदायो–

इला न देणी आपणी हालरिए हुलराय ।
पूत सिखावै पालणै मरण वडाई माय ॥

गोरा लोगा रो रावळा घोडा नै वावळा असवारा वाळो आचरण अर आपरै स्वाथ खातर बळता मे पूळो नाखणिया राजा-महाराजावा री अगाई निसरमाई रो थिलको देखनै उणा न घणो सताप हुयो । खुद नै शूरा री सतान कवणिया देशी राजावा नै आळस अर दारूडा-मारूडा मे जूण गुमावता देखन, ओहडो देता थका उणा कह्यो—

इक डकी गिण अेक री भूलै कुळ सभाव ।
सूरा आळस अेस मे अकज गुमाई आव ॥

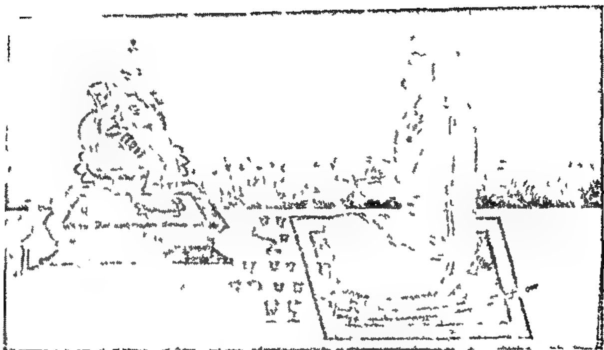
पण धरती बीज नी गुमावै । देश मे साचा शूरवीर पण मौजूद है, जिको अवसर आयो जाण सूरापणा रो स्तवन करता, कवि रो ओ विश्वास यू प्रकट हुयो—

इण वेळा रजपूत वे राजस गुण रजाट ।
सुमिरण लग्गा वीर सब वीरा रो कुळ वाट ॥

आळसिया खातर तो लका भला ई आघी घणी पण शूरवीर तो खाडा रा पळाका अर घोडा रै सूमा रा पोडा सू वैरिया रा काळजा धूजाय देव ।

सूता घर आळसी वृथा गुमावै वेस ।
खग धारा घोडा खुरा दाब अजका देस ।।

ईस्वी सन् 1857 अर विक्रम सवत् र हिसाब सू वरस 1914 मे जाणै सगळो मुलक कु भकर्णी ऊघ सू जाग्यो अर इसो लखायो के वो गोरी सत्ता रै ग्राह सू मुक्त होवण री धारली है । देश मे आजादी रै पेलडे जग रै नगारा माथ डाको पडग्यो हो, पण राष्ट्र री शक्ति तीन तू ग हुयोडी । जठा ताई सगळा अेको नी करता काम पार पडणो मुश्किल हो । राजस्थान रा राजा महाराजा गोरा र बळू हा । आपरा स्वाथ मे आधा हुयोडा । मराठा अर पिंडारिया री धाडा सू काठा धाप्योडा । गोरा री शरण मे रेवणो तो वा रै वास्त



महाकवि सूयमल मीसण

जरूरी वयू कै जोमिया पछै तो चळू हुवै । जोग इसो वण्यो के वारी देखणी मे ई राष्ट्र परदेशी सत्ता रै कांळिदार री फण किचरण री तेवड ली । सही अवसर आयो देखनै वे राष्ट्र न इण भात बिडदायो–

इला न देणी आपणी हालरिए हुलराय ।
पूत सिखावै पालणै मरण बडाई माय ॥

गोरा लोगा री रावळा घोडा नै बावळा असवारा वाळो आचरण अर आपरै स्वाथ खातर बळता मे पूळो नाखणिया राजा-महाराजावा री अगाई निसरमाई री खिलको देखनै उणा न घणो सताप हुयो । खुद नै शूरा री सतान कैवणिया देशी राजावा नै आळस अर दारूडा-मारूडा मे जूण गुमावता देखनै, ओहडो देता थका उणा कह्यो—

इक डकी गिण अेक री मूल कुळ सभाव ।
सूरा आळस अेस मे अकज गुमाई आव ॥

पण धरती बीज नी गुमावै । देश मे साचा शूरवीर पण मौजूद है, जिको अवसर आयो जाण सूरापणा री स्तवन करैला, कवि री ओ विश्वास यू प्रकट हुयो—

इण वेळा रजपूत वे राजस गुण रजाट ।
सुमिरण लग्गा वीर सब वीरा रो कुळ वाट ॥

आळसिया खातर तो लका भला ई आघी घणी पण शूरवीर तो खाडा रा पळाका अर घोडा रै सूमा रा पोडा सू वरिया रा काळजा धूजाय देवै ।

सूता घर आळसी वृथा गुमावै वेस ।
खग धारा घोडा खुरा दाब अजका देस ॥

ईस्वी सन् 1857 अर विक्रम सवत् र हिसाव सू वरस 1914 मे जाणै सगळो मुलक कु भकर्णी ऊघ सू जाग्यो अर इसो लखायो के वो गोरी सत्ता रै ग्राह सू मुक्त होवण री धारली है । देश मे आजादी रै पेलडे जग रै नगारा माथै डाको पडग्यो हो, पण राष्ट्र री शक्ति तीन तू ग हुयोडी । जठा ताई सगळा अेको नी करता काम पार पडणी मुश्किल हो । राजस्थान रा राजा महाराजा गोरा र वळू हा । आपरा स्वाथ मे आधा हुयोडा । मराठा अर पिंडारिया री धाडा सू काठा धाप्योडा । गोरा री शरण मे रेवणो तो वा रै वास्त

जाणै सातू सुखा री छिया । मुलक अर प्रजा से सुख दु ख सू उणा री तलौ वलौ ई नी । उणा री तो फगत आ चावना के अंगरेजी अमल में मौज करता रवा । अर कोढ मे खाज आ के रजवाड़ा मे आपस मे सप नी । ना कुछ वाता नै लेय'र आए दिन राड होवतो अर वारा चढती । चाफेर रापटरोळ मच्योडो । मेवाड री राजकु वरी कृष्णा-कुमारी अर जोधपुर मे धोकळसिंह नै राजगादी रो हकदार वणावण जिसा मामला नै लेय'र राजस्थान मे दो धडा वणग्या अर निरी लडाइया हुयी । गळा मे परदेशी सत्ता रो पट्टो वध्योडो होवण सू सगळा वू वीजता, मन मे घणा ई वटीजता पण राजागण तो वी मे ई मोद मनावता । म्हैल माळिया तो पाणी मे पठगा पण प्रजा अर गिणिया मिणिया जागरूक सरदार सामत आजादी री जोत नै जागती राखण खातर जिको सकल्प कियो, वींरै वास्तै ई सवळ नेतृत्व जरूरी हो ।

कवि सूयमल मीसण इण सगळी वाता माथै कडो विचार कीधो । देश री आजादी रै खातर वारै मन मे घणी हूंस ही अर उण फोरी पुळ मे ई वे वण आयो जिसी ई, आजादी रा यग मे समिधा नाखी । उणा नै इण वात रो अथाग दुख हो के रजवाड़ा गोरा रा खास खवास वणनै आजादी रा जू भारा री घात मे लाग्योडा हा । उण हियाफूटा नै कीकर ई सही मारग माथै लावण री मीसणजी री प्रवळ इच्छा ही । इण खातर वे मोकळी कोसिस ई कीधी । देशभक्ति जगावणिया काव्य री सिरजण करन वानै आजादी रो मरम समझायो । उणा र मन मे मायड भोम रै वास्तै प्रेम जगायो ...अजस सू माथो ऊ चो करनै चालण री प्रेरणा
...यो । ...ू अर भेळा ऊठण वैठण वाळा सरदारा
...नता नै ...री सू आजादी रै जग रा जोधार वणण
...र धणी ... उणा साफ लिख्यो के 'समझणहार सुजाण
...सर ... ओ मौको गुमाय दियो तो पछै पछतावणो
... कायमखात लाग जासी अर वीसू मुक्ति
... सगळी वाता वास्तै कवि नै मोकळा
... दीधा अर मददगार ई रीसाणा ।
...ता ...र ई परवा नी कीधी । वे फरज रा
... । इण मामला मे वे आपरा आश्रय-
नी कीधो ।

इण भात पेलडा भारतीय स्वतन्त्रता सग्राम मे महाकवि मीसण री जबरी योगदान रह्यो । इण अवखा काम मे कवि री भूमिका नै समभण खातर उणा री जिंदगाणी बावत जाणकारी होवणी जरूरी । मिनख रा काम सू ई वी री जिनगाणी री पिछाण हुवै, उणरी सही छिब सामी आवै । इण वास्तै पेली कवि री जिंदगाणी बावत खास खास बाता रो उल्लेख कीधा पछ वा र काव्य री चर्चा करणी ठीक रेवला ।

मु शी देवीप्रसाद रै मुजब महाकवि सूयमल मीसण रो जनम बू दी मे विक्रमी सवत् 1872 री काति वद दूज नै हुयो अर सवत 1925 री असाढ वद ग्यारस नै वे देवलोक हुया । इण हिसाब सू कवि नै लगै टगै बावन तिरेपन बरसा रो आयुष्य मिळ्यो । वारा पिता श्री चडीदानजी डिंगल रा श्रेष्ठ विद्वान अर बू दी दरबार रा मानीता कवि होवण सू घर में अष्टपो'र गुणीजना अर विद्वाना री आगता सागता अर बठका री धमचक चालती । इणसू बाळपणा सू वा री मन सारस्वत साधना रा सस्कार ग्रहण कीधा ।

"पूत रा पग पालण दिस", आ बात उणारा मामला मे सोळू आना साची ऊतरी । बरस पाचेक रा हुया वानै विद्यारभ करा-इज्यो । पाठशाला मे पेलडे दिन ई वे लिखण पढण सू वाकब हुयग्या । अर फक्त तीन दिना मे ई अमरकोष रा तीनू काड कठाग्र करन अरथ समेत सुणाय दीधा । गुरजी नै घणो अचूभो हुयो अर वारा पिताश्री चडीदानजी नै जाय नै कह्यो—'आप तो टाबर नै पेली सू पढाय दियो है पछ सिद्धोवणी मे इणन क्यू रोड नै राखणो ?" चडीदानजी न खुद न अचूभो हुयो अर बोल्या—म्है तो इणन कद ई नी पढायो । आखर ज्ञान री शुरुआत ई आपरै मठै हुयी है । ओ प्रसग इण बात री साख भरै के सूयमल मीसण री प्रतिभा अदभुत ही । आ प्रतिभा कुदरत री देन ही । आपरा नामचीण ग्रथ 'वशभास्कर' री रचना करती वगत वारी प्रतिभा रा चमत्कार निग आया । वे चाक लेयनै काव्य रचना करता । उण टेम चार लेखक उणारा मु डा सू खळकण वाळा सारस्वत प्रवाह न कलम सू बाधता ।

दिन मे जद कदैई उणानै काव्य रचना री स्फुरणा होवती, वे 'हू' रो उच्चारण करता अर सगळा लेखक खडोखम होयन वार बोलणो शुरू करता पाण कलम चलावण लागता । भाँ सुरसत रा

लाखीणा बेटा रा मुडा सू गभीर नद रै प्रवाह रै ज्यू निवळती वीरवाणी अर उण अखूट प्रवाह नै अजरा अमर बणावण खातर खपण वाळा लेखक गण। केडो अलौकिक हुवतो हुवैला वो दृश्य। अर किसी अलौकिक हुवैला वो कवि जिणर ज्ञान री कोई छेह कोनी हो। अठै महाभारत रै लेखन रो वो प्रसग आपोआप याद आवै जद वेदव्यास गणेशजी नै महाभारत री कथा लिखण खातर थोरा कीधा। गणेशजी इण शर्त माथै हामळ भरी के वारी कलम एकर शुरू हुया पछ बिसाई नी खावैला। जे व्यासजी बोलणो बद कर दियो अर कलम ठैरगी तो पाछी नी चालैला। वेदव्यास वारी आ शत मजूर करता थका आपरी तरफ सू ई अेक शत राखी के गणेशजी हरेक श्लोक रो अथ समझिया पछै ई बी नै लिखैला। इण ढग सू महाभारत रो लेखन पूरो हुयो। विद्वत् गण 'वशभास्कर' नै राजस्थान रै महाभारत रो खिताब दीधो है। अठै इण प्रसग री चर्चा रो मकसद फगत ओ है के सूयमल मीसण इतरा पाचवान हा के अलौकिक प्रतिभा रै पाण मोको आया इणा मे राष्ट्र नै सही मारग बतावण री सामरथ ही।

सूयमल मीसण बावत निराई प्रवाद प्रचलित। उणा मे सत्य रो अश पण खरो। उणा सू कवि रै मिजाज री जाण हुव। वे दयालु, भावुक, खुद्दार अर फक्कड प्रकृति रा साधुमना मिनख हा। वारी रीझ अर खीझ दोनू चावी ही। उणा री काव्य लिपिबद्ध करण वाळा घणकरा लेखका नै खीझ री झाळ लागबो करती। इण कारण मोकळा लेखक तो काठा धापग्या। पूरा दुखी। कवि री खीझ सू आती आयोडा लेखका मे मगनजी नाम रा अेक गूजरगौड ब्राह्मण ई हा। अेकर कवि रो अशुद्ध शब्द प्रयोग सुणनै मगनजी हसण लाग्या। कवि रीस मे तबोळ हुयग्या जद मगनजी साची वजह बताय दीधी। जाच कीधा मगनजी री बात सही निकळी। कवि राजी होयन वानै की मागण रो कह्यो तो वे हाथ जोडनै इण नौकरी सू मुक्ति मागी। मगनजी रै रोटी पाणी रो पक्को प्रबध करनै कवि इणा रै नौकरी रो बधण काट दीधो।

इणी भात जोडायत र रामशरण हुया पछै दाग देवण रै पेली घटा ताई तबूरा माथै 'लाडीजी घू घटडो खोलो, म्हानै चाव छै' रो राग अलापणो, लेखक अम्बालाल रै घरा बेटी जनम्या पछै राज कानी

सू दो बरसां ताई रोजीना आधो माशो सोनो अर पाव घी दिरावणो बरसता मेह मे घदा ताई कविता पाठ करता चालतो रेवणो, मोटा सू मोटा लोभ रै सामी नी डिगणो अर आपरा आश्रयदाता बू दी नरेश नै ई मु डा माथै खरी खरी सुणाय देवणो, इत्याद इसा प्रसग है जिको इणारी जिदगाणी रा मोकळा पक्षा नै उजागर करै ।

इसी बात ई कहीजै के 'वशभास्कर' अधूरो रैवण री वजह आ ही के बूदी रै राजवश रो इतिहास लिखता लिखता जद मीसणजी साची साची बाता लिखण लाग्या तो बूदीपति रावराजा रामसिह न घणो बाडो लाग्यो अर इण बात माथ ई वारै लडावोलो हुयग्यो । उणा 'वशभास्कर' लिखणो बद कर दीधो । इण बात री साख सवत् 1914 री पोह सुद दूज नै पीपल्या (जयपुर) ठाकुर पूर्लसिह नै लिख्योडी उणा री चिट्ठी भरै ।[1] मोकळा विद्वाना री धारणा है के 'वशभास्कर' रो ऐतिहासिक पक्ष प्रामाणिक कोनी । उणमे निरी भ्रान्तिया है । इण बात मे सचाई हुवला पण मीसणजी रै अथाग पाडित्य मे रत्ती भर ई शक नी । नामी भाषाविद मीसणजी रा रच्योडा ग्रथ इण भात है—वशभास्कर, बलवद्विलास, छदोमयूख, वीरसतसई, रामरजाट, सतीरासो अर धातु रूपावलि ।

इण सगळा ग्र था मे 'वशभास्कर' उणा री अक्षयकीर्ति रो कमठाण । इण विशद ग्र थ मे सगळै राजस्थान रो इतिहास समा-

---

1 अर माघ सुदी मे बूदी मे आई हाजर हुवो तो वखत तो मरजी ही दीसी छो परतु घणो कान लागै वो को मानी ही जाव ष हीं सा औरा के तो दह अेक साल का हासल को हुवो अर म्हारै रिपिया तीन सै दरसाल दह का लिख दिया । रतलाम सू माघ म आया पछ फालगुन मे अरज कराई छो सो हाल ताई मालुम न हुई छ । असी दीख छै के मूडा सू तो सीख न देणी अर दुख सू कढि भग तो ठीक छ । कवरजी तथा महाराज कुमार के विवाह को बी कोडी अेक हाल ताई बखसी नही । ग्रथ को बणावो बो पर सों ही मोकूप छै । ग्रथ का लेखक वगरह तमाम छुडाय दिया । सुणवाई कर नही तिपू चित्त पर बरस दोय सों निहायत उदासी बढ रही है ।"

(इण चिट्ठी रै मूळ रो जरूरी अश)

योडो। इणी भात वीरसतसई उद्‌वोधन देवण वाळी रचना है जिणरो सिरजण आजादी रै जग र मोके देश वासिया नै प्रेरणा देवण खातर हुयो। मीसणजी रै वोहळा ज्ञान अर भात भात रा विपया मे पाडित्य री जाणकारी रतलाम नरेश नें सवत् 1914 री वैशाख सुद तीज नै लिख्योडो चिट्ठी सू हुवै।[1]

कवि रै अवळथवळ पाडित्य रै उनमान उणारा हेताळू कद्रदान इष्टमित्रा रौ दायरौ ई घणो विशाल। प्रदेश रा सगळा राजा महा राजावा, अमीर उमरावा, साधु सता, कलाकारा सू वारै मोकळी मेळ मुलाकात। मोटा मोटा मुकुटधारिया नें उणा सू बात वतळावण करण री, मिळण री ओळू आवती। उण टैम रा रजवाडा आपसरी मे कजियो-टटौ हुया निवेडो करण खातर वासू सलाह सू त करता। आधा नेडा रा राजा महाराजा वानैं घणै मान सू तेडावता। अर प्रेम री रेशम डोरी मे वध्योडा इण भावुक हृदय कवि रै वास्तै लावा लावा गामतरा नित की बात हुयगी। इण भात आखै मुलक मे वारो प्रभाव हो। इण असर रै पाण ई वे आजादी र पैलडा जग रै मोके देश नै जगावण री बीडो उठायो। इण पवित्र काम न उणा दो तरीका सू पार घालण री कोशिश कीधी। अेक कानी तो वे आपरा खास मुलाकाती सरदार सामता न चिट्ठिया लिख‌न आजादी रा जग रा जोधार वणण वास्तै प्रेरणा दीधी अर

---

1 'अर विनति अेक मालूम होसी अठ तो अव म्हार ग्र थ को निर्माण मौजूद हुवो छै सा मौजूद ही रहतो दीस छै। सो सू आपकी मरजी दो पाच हजार वणावा की होय तो जी विषय की मरजी होय अर जी भाषा की मरजी होय अर जी छदा सू मरजी होय तो छद, अलकार शकुनशास्त्र धमशास्त्र, नीति प्रमुख अथशास्त्र, कामशास्त्र अभिधान कोष, नायक नायिका लक्षण साहित्यशास्त्र सगीत शास्त्र कालनिणय, पुराण वशेषिक, पातजळ, उत्तरमीमासा हयलक्षण शिल्पशास्त्र, गर्यादि पशु परीक्षा वा रत्न परीक्षा इतना सब 21 विषया म स्वल्प परिचय छ। त्या म जी विषय पर मरजी होय तो की इबारत निर्माण करिवा की आना देवा की मरजी होय तो ऊ प्रत्युत्तर का हुक्म क साथ ही फरमाई जावै अरु लिखाई जावै। अर नीं मरजी होय तो ज फुटकर पद्य तो माफिक शहूर के ताजिदगी हाजर होबो ही करसी।
—वीरसतसई सम्पादक डा कन्हैयालाल सहल, पृ 43-44

दूजी कानी वीर रस वपराए करनै देशवासिया नै आपरौ फज समझायो।

राष्ट्रवादी रै रूप मे मीसएाजी रौ तेज अरक रै उनमान अर खरापरा़ो कु दरा़ रै जोडे। वीरसतसई जिसी सातरी रचना अर देश री भलाई खातर कीधोडा काम इरा़ वात रा साक्षी। मुलक मे चौफेर नवळाई, निराशा अर सियाळिया गडक गत देखनै धारो काळजो दाझतो। इग सगळी बीमारी रौ मूळ कारए वे परदेसी सत्ता नै मानता। गुलामी न देख देख नै उरा़ार मन मे किया घपळका ऊठता, आ बात वारी उरा़ टेम री चिट्ठिया सू साफ निगै आवै। 1857 मे आजादी रे सग्राम रौ शख बाजता ई कवि आपरा फरज नै पिछाराए लियो। उरा़ा नै इरा़ चीज री पक्कावट जाराकारी ही के देश री शक्ति तो अथाग है परा़ अेक जुमले कोनी।

किरा़ी भात आ विखरयोडी ताक्त अेकरा़ठाए हुय जाव तो बातडी बरा़ सकै। इरा़ वास्तै वे घरा़ा ई खपिया। इरा़ मौके वे आपरा खास हेताळू पीपल्या ठाकुर फूलसिंघ न जिको चिट्ठी लिखी, उरासू वारै अतस री इच्छा री जाराकारी हुवै। वे लिख्यो—

"अोर शरीर की नित्यचर्या मे निपट सावधानी रखावसी। यो शरीर जी अथ लाग्यो आछो लाग ऊ अथ आया तो तरा़ सो भी तुच्छ गिण्यो जावै छै। सो तो ठीक छ ती को तो म्हान भी निश्चित भरोसो छै पर ऊ अर्थ बिना अोर समय मे सदा ही यो शरीर प्रयत्न-पूवक रक्षा करवा को छै। अर ई नै अथ लगावा को भी समय तो परमेश्वर न पलटायो छ। कदाचित राज्य जिसा सुक्षत्रिया का तथा राज्य के लारै लागा हुमास्त कातरा का अे शरीर क ही अथ लाग तो योगी, ज्ञानी अर भक्त या तीना विना अर यो लाभ अोर कोई भी छै नही। अर योगी, ज्ञानी, भक्त के भी या बात होई तो सोना मे सुगध हुई ज्या अत्यन्त शोभा पाव। तीसो परमेश्वर या बाबत मिळाव तो उत्तमोत्तम छ। परन्तु अल्प परिकर वाळा आपण जिस्या सारा ही ई बात नै चाहा छा परन्तु आपणै तो केवल स्वग प्राप्ति को अर अठै कीर्ति की यो ही फळ छै। अर ये राजा लोग देशपति जमी का ठाकर छ जे सारा ही हिमालय का गळ्या निसरया। सो चालीस सो लेर साठ सत्तर बरस पाछै पटक्या छ तो भी गुलामी कर छ। परन्तु यो म्हारो वचन राज्य याद रखावोगा के जे अबक

(अग्रेज) रह्यो तो ईं को गायो ई पूरो करसी । जमी को ठाकर कोई भी न रहसी । सब ईसाई होय जासी । तीसा दूरदेसी विचारं तो फायदो कोई के भी नही । परन्तु आपरणो आछो दिन होय तो विचारे और राज्य जिसो सूरत म्हारे होय तो बडाई तरीके लिखी जावं तीसू थोडी मे बहुत जाण लेसी । विज्ञेपु अलमिति पौष शुक्ल प्रतिपदा, युजर्वेदाग भू 1914 मित नरेन्द्र वित्तमाक शव सगतया लिपिरिप्यम् ।"[1]

इणी भात नामली ठाकुर बख्तावरसिंघ ने विक्रम सवत् 1915 मे चत सुद नवमी ने लिख्योडे अेक कागद मे कवि लिख्यो —

"धार सो तथा ग्रामभ़रा सो अग्रेज को काई कसूर बरिण आयो सो वी साबिक दस्तूर लिखावसी और राजसिंह के साथ पत्र गयो ती में धर्म के निमित्त युयुत्सा को प्रश्न लिख्यो छै ती को भी प्रत्युत्तर लिखायो नही सो अब ज्या ज्या की जसी जसी तरह दीसती होय सो लिखावसी—म्लेच्छा को इरादो अम्यो दीसं छै कि अबक रह्या तो ईं प्रायचित न परतन्त्र करि ही देसी अर ठिकाणो कोई भी हिन्दू के न रहसी । परन्तु परमेश्वर की इच्छा आय न राखवा की दीस छै क्योकि अबार क्षत्रिया न प्रतिकूळ बाता छ जे सब अनुकूल दीस रही छ तीसा भावी विपरीत ही जाण्यो पड छै । और अठीका तरफ की वतमान जाणसी कि इगरेज की फौज अजमेर सू कोट लडाई पर आई छै । गोरा तो सोळा सं छै । काळा हजार च्यार कै अनुमान छै परतु मन मे बदळ्या हुआ दीसे छ और छक्डा किराच्या, पैट्या वगैरे हजार आठसै के अनुमान छै । वडी तोपा च्यार छै । छोटी तोपा तथा गुवारा असी के अनुमान छै । सो चैत सुदी छठ के दिन चामल सो दोई कोस ओली तरफ जाय पडी छै । अब होसी सो जाणी जावसी ।"

बडाणा रा ठाकुर परबतसिंह रै नाम सवत 1915 मे लिख्योडी भीसणजी री चिट्ठी मे इण भात वर्णन मिळे ।

"और राज्य नै अठीकी खबर के वास्ते लिखी सो परमेश्वर की कृपा सो अठै तो चन चार ही छै । आषाढ मे काळा की फौज हजार बीस के आसर आई छी सो अठा सो तो टळि गई

1 वीरसतसई—पृ 75

सो मेवाड तक होई पाछी जाता झाला की छावणी लूटि साहाबाद की झाडी मे घुसी छ । अर झालो भाजि गयो सो अब तक आयो नही छे । पहली कोटा की फौज नें फिरट होई अजट नें मारचो तौ पर चैत के महीने इगरेज की फौज ने आई लडाई करी । चौथे दिन फिरट फौज तो कढि गई अर इगरेज नें कोटो सब तरह लूटि खराब कियो । बहुत के फासो दो । बहुत बदूका सू मारचा । बहुत स्त्रिया की इज्जत ली । बहुत तोपा फोडि नाखो अर बहुत रुपिया लेर पाछो महारावजी को कोटो दे गया । म्हाका प्रात मे यो ही वता त हुअो सो जाणोगा । अौर देशा की अवाया तो बहुत उड छ पर तु निश्चय विना लिख्यो जाव नी । पहली धार मे तथा आमझरा मे इग्र ज नै अमल करि लियो सो विख्यात नही छ । अबि असी सुणा छा कि धार पाछी दो ही अर पूरव मे पेसवा नें हासाब के पास तीन लाख की फौज की अवाई सुणा छा सो जाणसी ।"

1857 री क्राति नें कवि किण नजरिया सू देखी, इण बात री इण चिट्ठिया सू भम वेसी ठा पड जावे । अर बाकी वाता री साफ खुलासी वा री दूजी चिट्ठिया सू हुय जावे । साची बात तो आ है के मुलक री थाकल हालत अर रजवाडा रै खूटलपणा सू वे ऊमणा दूमणा हा । अवसर आयो देखनै वे गोरा विरोधी ताक्ता नै अेकजुट करनै, की करण खातर आगता हा । पण ढाकियो ढू बियो राखनै ई की करण री जिकी सगवड ही उण मुजब उणा तनतोड न काम कीधो । इणरी साक्षी है आपरा इष्टमित्रा न मौके मौके लिख्योडी वारै हाथ री चिट्ठिया । विक्रम सवत् 1914 री पोह सुद एकादशी न मीसणजी अेक चिट्ठी रतलाम रियासत रा जागीरदार नामली ठिकाणा रा ठाकुर बख्तावरसिंघ नै लिखी । इण चिट्ठी मे स 1914 मे हुयोडी खास खास घटनाआ री विशद वणन है । पत्र सू क्राति बाबत रा दृष्टिकोण री ई जाण हुवै । बागिया रै वास्तै उणा रै मन मे कितरो अपणात हो अर इण मौके वे राजपूत जाति सू काई उम्मीद राखता, इणरी बानगी इण चिट्ठी सू मिळ —

"घर माहि सू काढिबो तो अब ताई हो जातो परतु श्री परमेश्वर नें समय अौर ही कर दियो तौ सो रजपूता मे रजपूती कठ कठै लाधै सो, देस्या सो तथा सुण्या सो । मन के आनद आजावा को व्यसन है अौर कठै ही रजपूती उघडगी अर बूढोही दीसेगी तो

जसी एसी बेरुसी हासिल हुवा कादिबो होसी । लोभ अनेक तरै का होई छै । त्या मे ई रजपूत की रजपूती देखवा को लोभ छ सो अठी की तरफ ज्यादा असर करै छ । अर साथी भी बहुत ही सुणा छा परन्तु हिंदुस्तान को दिन आछ्यो नही, तो सो आपस मे अेक्ता करै नही ।"

"कोटा मे तोपा का मूढा महला पर लगाय राख्या छै । जे राजपूत नाम धरावै छा अर साचा राजपूत नही छा ज्या की बेइज्जती घणी करी । पाच सात सै राजपूता का शस्त्र खोस लिया अर छोडि दिया । कोइला का आपजी सरदारसिहजी का छोटा भाई रामसिहजी है—लाडपुरधा का दरवाजा सो दो स राजपूता माई सो पकड कर ले गया परतु शस्त्र वस्त्र बाका न लिया । महारावजी नै बहुत सी म्हाई सयापि दिन दोई अटक मे राख्या पछ साख तबेला सो घोडो आछ्यो मगवाय सो के सोना की साखत गजगाह लगाई सी पे सवार करि गढ का दरवज्जा मे जाई छोडि आया । माधाणी शिवनाथसिहजी पायगा का मालिक छा अर तोपा का मालिक बणवा का उम्मीदवार छा त्या के परोक्ष वाहि की पायगा मे जाय पड्या ।-असबाव, शस्त्र मबका सब लेर छोड दिया । बदल्यो लोग हजार च्यार के अदाज छै । तो नै या दसा अबार कोटा की करी राखी छै सो जाणसी ।

"ओर पृथ्वी का तथा अप्सरा का आशिक उठी की तरफ का राजा लोको मे राज्य नै प्राण की बाजी लगावा वाळा वीर प्राण बण्या का साथी होता दीसता होई तो पोसीदे लिखसी । जदि तो अठी भी जमी बीज लिया छै सो ओर भी कई साथी होबा तैयार छै अर फेर भी कई तैयार होय जावै । साथी खडा करिवा को बिरलो म्हा लोका का बुळ कमव छै ही । आप उठी सू लिखसी तो अठी सू भी तपसीलवार लिख्या जावसी । परंतु हाल तो पोसीदे ही ठीक छ । राज्य तो इग्रेज को सामथ्य देखता ई बात है नादानगी की ही जाणसी । बात भी नादानगी की छै परतु म्हा लोका न तो परमेश्वर ठेठ [illegible] नादानगी ही दी ही ता म्हा मे दानाई कठा सू होई ।"[1]

इणी भात भिणाय रा राजा बळवतसिंघ नै विक्रम सवत 1909

1 वीर सतसई सम्पादक डा सहल पृ 81

मे सूरापरण रो सचार करण खातर वीणापाणि री वदना कीधी। इण आराधना रो वीरसतसई जिसो ग्रंथ।

इण कृति री रचना बाबत मोकळी बाता सुणण मे आव। पण सगळी शोध खोज पछे आ इज बात सिद्ध हुव के आजादी रै जग जेडी भारतीय इतिहास री महान् घटना वीरसतसई रै माध्यम सू कविता रूप मे पेश करीजी। बी रा हरेक दूहा मे वीर-रसावतार मीसण रै हिवडै रो प्रचण्ड गजन सुणीजै। जुद्ध भूमि मे जायन जोधारा नै बिडदावण री चारण परपरा री छेली जोत ही।[1]

आडा दिना मे जिको बात कैवणी दोरी ही वा ई बात वे इण मौके कविता रै माध्यम सू कही। इण रचना सू वे देश रा वासिंदा नै परदेशी सत्ता सू जूझण री प्रेरणा दीधी। वानै आपरो फरज समझायो। सूरापणो राजस्थान री एक लाठी अर जूनी परपरा। वीरता इण धरती री खास गुण होवण री वजह सू आ धरती वीर प्रसू कहीजै। मौत नै परब मानण वाळो आखा ससार मे फगत ओ इज प्रदेश। वडेरा री उण धरोहर नै याद दिरावता थका वे राष्ट्र-वासियां नै इण गणगौर मे घोडा दौडावण वास्त हाकळ कीधी।

वीरसतसई 1857 रै आजादी रै जग रै मौके ई रचीजी। बी रो प्रमाण उणरा दूहा मे मिळै। भला ई कवि उण बाबत सानो (इशारो) कीधी है पण सानी इतरी साफ है के कठैई शक शुबहो नी रेव। उदाहरण सरूप कृति र सरूपात मे ई अेक दूहा मे कह्योडी आ बात के विक्रम सवत् रो 1914 वा बरस बीत्या पछ जेठ वदी पाचम गुरुवार नै समै पल्टो खायो यानी राजनीति मे उथल पाथल तेजी सू होवण लागी अर इसो लखायो के क्रांति साव नेडी आयगी है।

बीकम बरसा बीतियो गण चोवद गुणीस।
बिसहर तिथ गुरु जेठ बदि, समय पलट्टी सीस॥

आजादी रा जग मे बागिया ठोड ठोड अग्रजा न जमलोक पूगाया अर ब्रिटन री कोमी झडी यूनियन जैक कठै ई निग आयो, फाडनै बाळ दियो। कवि इण प्रसग कानी इगित करता थका वीरागना रै मु डा सू आ बात उणरो सहेली नै कवायी है—

---

1 वीरसतसई पूर्वोक्त, पृ 74

फूटं पुड नोबत पडी टूटं डड निसाण ।
देख सहेली पीव रै पूंच बधियो पाण ॥

याने प्राणनाथ रै पुणचा रो जोर कितरो गजब रो है के वैरिया रो नगारो फूटग्यो अर भंडा रो डडो टूटग्यो । कवि परदेशिया नै 'वगर नैतियोडा पावणा' री सज्ञा दीधी अर कह्यो के अे वैरी न्यूतिया बिना ई माडाणी (धींगाणै) आया है पण वीरागना धण रो भरतार परुसगारी मे निष्णात है, वो किणनै ई भूखो नी जावण देवैला—

बिण नूत घरा पाहुणा हेली ठलिया आय ।
जाण पीव परूसणो भूखो हेक न जाय ॥

अेक दूजा दूहा मे वानै धाडेती सम्बोधन देवता थका उणानै सलाह दीधी के ओर कठै ई जायनै आपरो करतब दिखावो । अठै चोरी री मशा सू आया जिकै तो ठीक पण जे घरधणी री नजर थारै माथै पडगी तो सुरगापुर रो मारग देखणो पडैला ।

सुण सुण बीरा धाडवी आलय देखो ओर ।
घर री खूणै भूरसी चखमग आता चोर ॥

देशवासिया मे सूरापणा रो भाव जगावण खातर कवि उदबोधन करता कह्यो—आ वसुधरा वीरभोग्या । जिको शूरवीर ढाल री छत, भाला रा थाभा बणायनै घोडा री जीण माथै घर माडै, वे इज इण धरती नै भोगवै । आ काइमा रै कब्जे नी रैवै ।

घर घोडा ढाला पटल भाला थभ बणाय ।
वे ठाकर भोग जमी अवर कवण अपणाय ॥

परदेशिया नै वा री गेलाई वास्तै ओहडो देवता थका वे कह्यो—

मूछ न तोडो कोट मे कठिया छोड काळ ।
काळा घर चेजो करै मूसा पण मूछाळ ॥

अे परदेशी सूना काम रो मूछो रै वट देयनै सूरापणो दिखाव । वानै ठा कोनी के काळ माथै चकारा देव है अर वो भख ले'र छोडसी । ऊदरा री आ मजाल अचभाजोग के उणा कालिदर रा दर मे जायनै चुग्गो पाणी लेवण री हिम्मत कीधी है । इसो लागै के अे बापडा ऊदरा आपरी लाबी मूछा रै पाण मन मे महाराजा बण रह्या है । देश रा सरदार सामता नै वा री नवळाई वास्त कवि कह्यो—

सिंह न बाजो ठाकुरा दीन गुजारो दीह् ।
हाथळ पाडै हाथिया सो भड बाजै सींह ।।

तन दुरग श्रर जीव तन कढणो मरणो हेक
जीव विणट्ठा जे कढो नाम रहीज नेक ।।

फिट र नादारा, थानै इतरो ई भान कोनी के परदेशिया नैं आपरो घर सू प नै बार निकाळणो श्रर शरीर सू हसो (प्राण) निकळणो दोनू अेक जेडी बात है। यै तो उण दिन ई मरग्या जिण दिन मुलक री चिंता छोड नै आपर जीव रो जतन कियो। थान करणो तो ओ हो के देश री रक्षा खातिर मरण तवांर मनावता श्रर घर सू थारी लाश निकळती। इणसू देश री रक्षा होवती श्रर थारो नाम श्रमर होवतो।

रूख रूख तीरा रूकडा मुख मुख बीरा मोल।
पू चाळा हेकण पखै दळ मे प्रबळ दरोळ ।।

परदेशिया सू जूभण वाळी भारतीय शक्ति अेक जुमल नी होवण सू अधारा मे श्रठी उठीन डावो जीवणो मरजी पडै जठीन तीर खाडा चलावै। देखो जठीनै जोधार नूजमा निगै आवै। देश मे सबळ नेतत्व नी होवण सू रापटरोळ मच्योडो है।

पूरा श्राकुळ पाठडा भाला पडता भार।
हेकण कवला बाहुरी भाडा भाडा डार ।।

हिंदुस्तान री ताक्त श्राछो नेतृत्व नी होवण सू तीन तू ग हुयोडी है। श्रर परदेसिया नै रूळो राज मिळयोडो। अेक डक्रल सूर (शूकर) रै बिना नानकडा शूर पूरा दुखी। शिकारिया र भाला री श्रणिया सू वीधीज। सूरा री सगळी डारा न श्रापरा जीव री पडी है। श्रठी उठीनै बाटका मे छिपती फिर। शूरवीर रो जीवणो ई साचो जीवणो है, श्रा वात कवि इण भात कही—

श्रठ सुजस उठ श्रवसर मरिया श्राय।
मरणो घर र माझिया जम नरका ले जाय ।।

बिण मायै माढ दळा पोढ करज उतार।
तिण सूरा रो नाम ले भड बाध तरवार ।।

सूता घर घर श्राळसी वृथा गमावै वेस।
खगधारा घोडां खुरा दाब श्रजका देस ।।

जिम जिम कायर थरहरै तिम तिम फलै नर।
जिम जिम बगतर ऊबड तिम तिम फूल सूर ॥

या घर खेती ऊजळी रजपूता कुळ राह।
चढणो धव लारा चिता वढणा धारा बाह ॥

रुंड हुवा जीव जिक सदा न हेरै साथ।
सिहा रै गळ साकळा वै भड घालै हाथ ॥

निधडक सूतो केहरी तो भी विमुहा पाव।
गज गंडा घोर न धर प्रत्य पडै बघवाव ॥

बबी अदर पोढियो काळो दबकै काय।
पूजी ऊपर पाधरो आव योग उठाय ॥

आपरा हेताळू मित्रा नै लिखयोडी कवि री चिटिठया सू आ वात साफ दीसै के राजा महाराजावा रा रवाडा अर वारा रग-ढग देखन उणानै इण वात री धीजो हुयग्यो के रजवाडा सू कोई उम्मीद राखणी गुवार माय सू तेल काढणो है। इण वग री आपरा स्वार्थ आगै आख ई कोनी उघडती। वा री मनोवृत्ति 'रीद मरो, वीनणी मरो वामण री टक्को खरो' र माफक ही। मुसळमानी अमल मे वे उणार गोखा मे झोख करता अर अवै गोरी सत्ता री आमद हुया बी री लूण उतारण मे लाग जामी। इण खातर कवि उठीनै पूठ करन जनता कानी देख्यो। क्यू के उठै फेंटियो फाटोडो तो ई जात री ईंदी वाळी वात ही। कवि नै इण चीज री ठा ही के–

जो करसी जिणरी हुसी आसी बिन नतीह।
आ नहीं किणरै बाप री भगती रजपूतीह ॥

इण वास्त राजा रजवाडा बिचै वानै आम जनता मे बेसी कणूका निग आया। वी री ईमानदारी, देशभक्ति अर वीरता माथै वानै भरोसो हो।

आ इज वजह है के वीरसतसई मे वे घणी ठौड झूपडा री महिमा कीधी है क्यू क मुनक अर समाज रै अडी पडी मे वे इन आडा आवता। म्हैला मे रवणिया नै तो ऊगा आथमिया री ई वेरी कोनी होवतो। वैरिया अर धाडेतिया नै सावचेत करता थका वे कह्यो के मत मे थोडो विचार करनै पछ झूपडा कानी सभजो। कठई नमाज पढता रोजा गळै नी पड जावै। झूपडा वाळा घरधणी

सिंह न बाजो ठाकुरा दोन गुजारी दोह ।
हाथळ पाड हाथिया सो भड बाजै सोंह ।।

तन दुरग अर जीव तन कढणो मरणो हेक
जीव विरणठा जे कढो नाम रहीज नेक ।।

फिट रै नादारा, थानै इतरो ई भान कोनी के परदेसिया न आपरो घर सू प नै बार निकाळणो अर शरीर सू हसो (प्राण) निकळणो दोनू अेक जेडी वात है । थै तो उण दिन ई मरग्या जिण दिन मुलक री चिंता छोड नै आपर जीव रो जतन कियो । थान करणो तो ओ हो के देश री रक्षा खातर मरण तेवार मैनावता अर घर सू थारी लाश निकळती । इणसू देश री रक्षा होवती अर थारो नाम अमर हावतो ।

रुख रुख तीरा टकडा सुख मुख बोरा मोल ।
पू चाळा हेकण पख दळ में प्रबळ दरोळ ।।

परदेशिया सू जूभण वाळी भारतीय शक्ति अेक जुमल नी होवण सू अधारा मे अठी उठीन, डावा जीवणा मरजी पडै जठीनै तीर खाडा चलाव । दखो जठीनै जोधार नूंजमा गिर आवै । देश में सबळ नेतत्व नी होवण सू रापटरोळ मच्योडो है ।

पूरा आकुळ पाठडा भाला पडता भार ।
हेकण कवला वाहरी भाडा भाडा डार ।।

हिंदुस्तान री ताक्त आछो नतृत्व नी होवण सू तीन तूग हुयोडी है । अर परदेसिया नै रूळो राज मिळचोडो । अेक डकरैल सूर (शूकर) र बिना नैनकडा सूर पूरा दुखी । शिकारिया रै भाला री अणिया सू बीधीजै । सूरा री सगळो डारा न आपरा जीव री पडी है । अठी उठीन बाटका मे छिपतो फिर । शूरवीर रो जीवणो ई साचो जीवणो है आ बात कवि इण भात कही—

अठै सुजस उठ अवसर मरिया आय ।
मरणो घर रै माभिया जम नरका ले जाय ।।

घिण माथ घाव दळा पोढे करज उतार ।
तिण सूरा रो नाम ले भड बाध तरवार ।।

सूता घर घर आळसी वृथा गमावै वेस ।
खगधारा घोडा खुरा दाब अजका देस ।।

जिम जिम कायर थरहरै तिम तिम फंले नर।
जिम जिम बगतर ऊवडै तिम तिम फूल सूर॥

या घर खेती ऊजळी रजपूतां कुळ राह।
चढ़णो धव लारां चिता बढ़णो धारां बाह॥

रुंड हुवा जीव जिके सदा न हेरै साय।
सिहा र गळ साकळा ये भड घालै हाथ॥

निघटक सूतो केहरी तो भी विमुहा पाव।
गज गैंडा घोर न घर बच्च पडै बघवाव॥

चबी भ्रदर पोढियो काळो दबकै काय।
पूंजी ऊपर पापरो आव योग उठाय॥

आपरा हेताळू मित्रा नै लिखयोडी कवि री चिट्ठिया सूं आ बात साफ दीसै के राजा महाराजावा रा रवाटा अर बारा रंग ढंग देखनै उणानै इण बात रो धीजो हुयग्यो के रजवाडा सूं कोई उम्मीद राखणी गुंवार माय सूं तेल काढणो है। इण वग री आपरा स्वार्थ आगै आख ई कोनी उघडती। वा री मनोवृत्ति 'बीद मरो, बीनणी मरो बामण रो टक्को खरो' रै माफक ही। मुसळमानी अमल मे वे उणार गोखा मे भोख करता अर अबै गोरी सत्ता री आमद हुया बी री लूण उतारण मे लाग जामी। इण खातर कवि उठीन पूठ करन जनता कानी दख्यो। क्यू के उठै पेंटियो फाटोडो तो ई जात री ईदी वाळी बात ही। कवि नै इण चीज री ठा ही के–

जो करसी जिणरी हुसी आसी बिन नतीह।
आ नहीं किणरै बाप री भगती रजपूतीह॥

इण वारत राजा रजवाडा बिचै बानै आम जनता मे बेसी कुणका निग आया। बी री ईमानदारी, देशभक्ति अर वीरता माथै वान भरोसो हो।

आ इज वजह है के वीरसतसई मे वे घणी ठौड झूंपडा री महिमा कीधी है क्यू क मुलक अर समाज रै अडी पडी मे वे इज आडा आवता। म्हैला मे रैवणिया न तो ऊणा आथमिया रो ई वेरो कोनी होवतो। वरिया अर धाडेतिया न सावचेत करता थका वे कह्यो के मन मे थोडो बिचार करनै पछ झूंपडा कानी समजो। कठई नमाज पढता रोजा गळै नी पड जावै। झूंपडा वाळा घरधणी

री गैर मौजूदगी मे लूटपाट करण वाळा धाडवी नै कवि धरधणि-याणी सू इण भात चेतावणी दिराई है—

> धन ले धीरा धाडवी ग्रब न कीज ग्रबेर ।
> ग्रेथ धणी जे ग्रावसी सो रो विकसी सेर ॥

धाडवी वीरा ! खातावळ कर । जे घर धणी ग्रायगो तो नाठता न मारग कोनी लाधेला ।

> लूट पुलीजै झूपडै बीरा धार विवेक ।
> बालम ग्राया बेचसी ग्रडबा री ग्रण ग्रेक ॥

इणी भात ग्रेक ग्रोरू वीरागना गहिणी धाडविया न ग्रापरा झूपडा कानी ग्रावता देख'र वान लूटपाट करण सू बरजती थकी केव के ग्रठै हाथ घालणो मू घो पडसी । झूपडा रै छज रा तिणकला तीरा रो काम करसी—

> नह धीरा ग्रण झूपड धाडो ग्रेथ खटाय ।
> थावै दादुर थाप री काळा रै फण काय ॥

कालिंदर रा फण माथै थाप मेलणिया डेडरिया वाळी थारी गत हुवेला । इण झूपडा मे रैवणिया शूरमा माथै भलाई लिछमी री रीभ नी हुयी पण सूरापणा जिस वार देवदुलभ गुण री वजह सू गूहणिया किशन री गोपिया बण्योडी है । रैवण न भलाई ग्राकडा ग्रर खीप सू छजियोडो झू पो ई है पण ग्रापरा गुणा री इधकाई सू वे प्यारिया रै हिवडा रा हार बण्योडा है ।

> ग्राक पलासो झूपडो देख कीध न हत ।
> हियै न तो भी ऊतरै कीस सुभाव कत ॥

घर मे भला ई खालीपो हुवो पण शूरवीर ग्रापरी भुजावा र वळ सू बद नै सुद करण री हिम्मत राख । कवि एक वीरागना र मुडा सू केवायो है—

> इसडै टोट हू सखी वारी बार ग्रनत ।
> पोत जणी मे मोतिया चुडलो मैंगळ दत ॥

यू तो घर मे थापा थापा पाणी मेल वाळी वात है पण शूरवीर साजन रै प्रताप सू घर मे गजमुक्ता ग्रर हाथी दात री टोटो कोनी । म्हन चूडा ग्रर हार वास्तै इणा री इज जरूरत ही । ग्रेडा टोटा माथै म्हनै धणो ग्रजस है ।

इण भात कवि री इण कृति सू ओ साफ लखाव के वान झूपडा घरा व्हाला हा अर साधारण जनता री शक्ति माथै पूरो विश्वास हो। देश मे चालण वाळी आजादी री जग वी रै भरोसे ई पार पडणी हो। माटी रा बेटा र अपर बळ रै पाण ई परदेसी ताक्त रो मुकाबलो करणो सभव हो। कवि रसखान ज्यू करील री भाडी माथै हेम रा म्हैला री घोळ करण री वात कही, उणी भात मीसणजी ई झूपडा माथ राजावा रा म्हैल माळिया वारता थका कह्यो—

टोटै सरका भींतडा घातै ऊपर घास।
वारीज भड झूपडा अधपतियां आवास॥

इण दूहा सू आ हकीकत साफ निग मायै के गढपतिया न पाणी मे पैंठोडा देखनै कवि रैयत कानी जोयो। वारो विश्वास हो के रैयत मे सूरापणा रो वापरत हुया ई गुलामी रा सी न मेटण खातर वलिदान री हळ गो हुवैला। इण धरती माथै फगत राजस्थान ई इसो प्रदेश है जठ 'मरण' परव मानीजै। राजस्थान री सस्कृति री अेक खास विशेपता आ के—

सूर न पूछ टीपणो सुकन न देखै सूर।
मरणा नू मगळ गिणै समर चढै मुख नूर॥

कवि इण कृति मे इण परपरा री हवालो देयनै आपरा वतनिया नै मगळीक मरण रो इमरत उपदेश दीधो। अेक वीरागना रै आगणै आणद उछब री घमचक देखन वी री सासू न अचू भो हुवै पण थोडीक ताळ मे उणनै याद आवै के आज उणरो जायो रण मे ज मरण नै जावैला अर बहू सती होवण री तैयारी मे लाग्योडी है। इण वास्तै मोद होवणो तो वाजव।

आज घर सासू कहै हरख अचाणक काय।
बहू बळवा हूलसै पूत मरवा जाय॥

इणी भात अेक दूजा प्रसग मे किणी मावड री सपूत जुद्ध भूमि मे पोढयोडो है। पड रा कटका बटका हुयोडा अर बहू सती होवण नै सज्योडी। कुळ री लाज राखणिया इण दोनू डूगरा नै अेकमेक रै वास्त फरफडीजता देखनै सासू रै हियै हरख माव कोनी—

सुत धारा रज रज थियो बहू बळेवा जाय।
लखिया डूगर लाज रा सासू उर न समाय॥

री गर मौजूदगी मे लूटपाट करण वाळा धाडवी नै कवि घरधणि-याणी सू इण भात चेतावणी दिराई है—

धन ले वीरा धाडवी अब न कीज अबेर ।
अेथ धणी जे आवसी सो रो बिकसी सेर ॥

धाडवी वीरा ! उतावळ कर । जे घर धणी आयगो तो नाठता नै मारग कोनी लाधेला ।

लूट पुलीजै झूपडै वीरा धार विवेक ।
बालम आया बेचसी अडवां रो अण अेक ॥

इणी भात अेक भीरू वीरागना गृहिणी धाडविया नै आपरा झूपडा कानी आवता देख'र वान लूटपाट करण सू बरजती थकी केव के अठै हाथ घालणो मू घो पडसी । झू पडा रं छज रा निणकला तीरा रो काम करसी—

नह वीरा अण झूपड धाडो अेथ सटाय ।
थावै दादुर थाप रो काळा रं फण काय ॥

कालिंदर रा फण माथ थाप मेलणिया डेडरिया वाळी थारी गत हुवला । इण झू पडा मे रैवणिया शूरमा माथै भलाई लिछमी री रीझ नी हुयी पण सूरापणा जिसै बारै देवदुलभ गुण री वजह सू गृहणिया किसान री गोपिया बण्योडी है । रैवण नै भलाई आकडा अर खीप सू छजियोडो झू पौ ई है पण आपरा गुणा री इधकाई सू वे प्यारिया रं हिवडा रा हार बण्योडा है ।

आक पलासो झूपडो देवै कोय न हत ।
हिय न तो भी ऊतरं कीस लुभाय कत ॥

घर मे भला ई खालीपो हुवो पण शूरवीर आपरी भुजावा रै बळ सू वद नै सुद करण री हिम्मत राख । कवि एक वीरागना रं मु डा सू केवायो है—

इसडै टोटं ॥ सखी वारी बार अनत ।
पोत जणी मे मोतिया चुडलो मैंगळ दत ॥

यू तो घर मे थापा थापा पाणी मेल वाळी बात है पण शूरवीर साजन र प्रताप सू घर मे गजमुक्ता अर हाथी दात रो टोटो कोनी । म्हन चूडा अर हार वास्तै इण री इज जरूरत ही । अेडा टोटा माथै म्हन धणी अजस है ।

इण भात कवि री इण कृति सूं ओ साफ लखावै के वां रै झूं पडा घणा व्हाला हा अर साधारण जनता री शक्ति माथै पूरो विश्वास हो। देश मे चालण वाळी आजादी री जग बी रै भरोसे ई पार पडणी ही। माटी रा बेटा रै अपर बळ रै पाण ई परदेसी ताकत रौ मुकाबलो करणो संभव हो। कवि रसखान ज्यूं करील री झाडी माथै हेम रा म्हेला री घोळ करण री बात कही, उणी भांत मीसणजी ई झूंपडा माथै राजावा रा म्हैल माळिया वारता थका कह्यो—

टोटै सरका भींतडा धातै ऊपर घास।
वारीजै भड झूंपडा अधपतिया आवास।।

इण दूहा सूं आ हकीकत साफ निंग आवै के गढपतिया न पाणी मे पठोडा देखनै कवि रैयत कानी जोयो। वारो विश्वास हो के रयत मे सूरापणा री वापरत हुया ई गुलामी रा सी नै मेटण खातर बलिदान री हूळ गी हुवैला। इण धरती माथै फगत राजस्थान ई इसौ प्रदेश है जठै 'मरण' परब मानीजै। राजस्थान री संस्कृति री अेक खास विशेषता आ के—

सूर न पूछै टीपणो सुकन न देखै सूर।
मरणा नूं मगळ गिण समर चढ मुख नूर।।

कवि इण कृति मे इण परंपरा रो हवालो देयन आवरा वतनिया नै मगळीक मरण री इमरत उपदेश दीधो। अेक वीरागना रै आगणै आणद उछब री धमचक देखनै ओ री सासू नै अचू भो हुवै पण थोडीक ताळ मे उणनै याद आवै के आज उणरो जायो रण मे ज मण नै जावैला। अर बहू सती होवण री तैयारी मे लाग्योडी है। इण वास्तै मोद होवणो तो वाजब।

आज घरै सासू कहे हरख अचाणक काय।
बहू बळेवा हूलस पूत मरैबा जाय।।

इणी भांत अेक दूजा प्रसग मे किणी मावड रो सपूत जुद्ध भूमि मे पोढयोडो है। पड रा कटका बटका हुयोडा अर बहू सती होवण नै सज्योडी। कुळ री लाज राखणिया इण दोनूं डूंगरा नै अेकमेक रै वास्तै फरफडीजता देखनै सासू रै हियै हरख मावै कोनी—

सुत धारा रज रज थियो बहू बळेवा जाय।
लखियां डूगर लाज रा सासू उर न समाय।।

इसी ठावी संस्कृति रा बारू अठारा आदमी ई नी, लुगाया पण है। कवि तो इण बाबत लुगाया री इधकाई बतावता कह्यो है—

सुत कटियो बख्तर पहर ब्यावण दूध सवाय।
जौणी मलमल ओढिया बहू वलेवा जाय।।

नारी आद जुगाद सू आदमी री प्रेरणा स्रोत। लुगाई र बखाण्या आदमी रो लो ई सवा सेर वध जावै अर वा फिट केय देवै तो वी नै मरण नै ई ठोड नी लाध। मुलक रा मोटधारा मे सूरापणो जगावण खातर कवि मनोविज्ञान री इण हकीकत नै ध्यान मे राखता थका लुगाया र मुडा सू सूरापणा रा मोकळा बखाण कराया है अर कायरा नादारा र माजना मे धूड नाखाई है। स्यान रा टक्का कराया है। ऐडा प्रसग इण रचना री आत्मा है। वीरसतसई री नारी भलाई धण है, मा है, वन है पण पेलपात वा वीरागना है, पछ औरू की। उणरै मुडा सू निकळघोडा बोल बीरा अतस नै उघाड नै सामी राखै। वा शक्तिरूपा सिंघणी है, इण वास्तै बीनै नबळाई तो अगाई नी सुहाव। घर मे तो काई, पाडोस मे ई चोखी नी लागै।

मह पडोस कायर नरा हेली बास सुहाय।
बळिहारी उण देसडै माथा मोल बिकाय।।

वीरसतसई री नारी री अतस री चावना आ कै म्हनै शूरवीर सायबो मिळै अर मन चितवियो माजन मिळया घणी हरखित हुव। चवरी मे हथळेवा री वेळा ई बीनै पति र सूरापणा रो सबूत मिळ जाव।

ढोल सुणता मगळी मूछा भौह चढत।
चवरी ही पहचाणियो, कवरो मरणो कत।।

पीव न मोडै देसणो करणो सत्रु सिराह।
परणता धण पेसियो ओछो ऊमर नाह।।

अवसर आया इसो आदमी लार नी सिरकै। तो ई युद्ध मे जावण सू पली वीरागना आपरा कत नै भोळावण देव—मिनखा शरीर नाशवान है, दोनू कुळा री लाज आपन राखणी है। इसी नी हुव के आप वरिया नै पूठ दिखाय नै आ जावो। उण हालत मे आपनै सिरातियै राखण नै तकियो भला ई मिळ जासी पण प्यारी री बाहा रा सपना ई आसी।

कत लखीजै दोहि कुळ नथी फिरतो छाह ।
मुडिया मिळसी गींदवो मिळै न घण री बाह ।।

पति जुद्धभूमि मे पूगन काटक मचाय देवै । माथो कटया पछै ई वैरया रा तै खोळा कर देवै । जवरो जोधार पतिरूप मे मिळण सू वीरागना श्रणूती राजी हुवै । कवध नै खाटो चलावतो देखन श्रापरी सखी नै पूछै—श्रे श्राख्या बिना वैरिया र घाव घालै है । कठ ई इणारा हिया मे तो श्राख्या नी उघडगी है ?

मूझ श्रचभो है सखी कत बखाणू कोस ।
बिण माथै दळ वाढियो श्राख हियै के सोस ।।

पति रा बळिदान माथै वीर नारी नै घणो अजस है । पति न खोळा मे लेयनै चिता माथै बैठयोडी वेवै—

सखी नथी घण जीवता श्ररिया पायो खन ।
बळता लीधो गोद मे तो भी मूछ मुडं न ।।

जुद्ध सू नाठ नै श्रायोडा नादारा री माजनो पाडण मे कवि कसर कोनी राखी । निरा ई प्रसगा मे म्हैणा रा भाला सू वा री मोटी खाल नै वींधण री कोशिश कीधी है । बानगी रूप अे दूहा—

कत घर किम श्राविया तेगा रो घण त्रास ।
लहगै मूझ लुकोजियो वैरी रो न बिसास ।।
कत सुपेखो देखता श्रब को जीवण श्राम ।
मो घण रहणो हाय हू घात मुहढ घास ।।
यो गहणो यो बेस श्रब कीज धारण कत ।
हू जोगण किण काम री चूडा खरच मिटत ।।
मणिहारी जा री सखी श्रब न हवेली श्राव ।
पीव मुवा घर श्राविया विधवा किसा बणाव ।।
गधण कूकी र गजब मू डा श्रागम भोण ।
बळण फदायो श्रतर धण मू हगो लेसी कोण ।।

श्रेक कानी तो कवि वीररस काव्य री सिरजण करनै जन-जागरण री शख बजायो श्रर दूजी कानी चारणा, भाटा श्रर ढोलिया जिसी जातिया न सूत्योडा समाज नै जगावण री प्रेरणा दीधी । राजा राज, प्रजा चैन री वखत वे जजमाना सू वेम, वेडा श्रर सीखा लेव तो श्रबै बिखो पडया उणा री पे'लो फरज है, श्राप सू बण

आव जिमी सेवा करै । अेडी मवखी पूळ मे ई चुपचाप रेवणी नुगरा पणी अर देशद्रोह है—

> आधा चारण खावका बीडी मोज बटत ।
> दूरा केम दकालणा हूचकता भड हत ॥

चारणा ! हरख उमाव री वेळा पान रा बीडा लवण मे तो आगीवाण हा, अब जोधार डगूपचू हुय रह्या है तो थानै बिडदा बणिया थै आधा वयू ऊभा हो ?

> रण चालीज चारणां चाहे अर सग चन ।
> करै सुहड जिसडी कहो बिध सो दूर थणं न ॥

चारणा ! अवार ताई तो मोज करता रह्या, अब जुद्ध मे चालो । उठै जू झारा नै सापरत देखनै वखाण करजो । अळगा रह्या औ काम किया हुसी ?

> भोला की चहरी भडा ईखी चारण अेण ।
> के ही कढता कायरां याढांया बुक बण ॥

भोळा सरदारा ! काई म्हेणा देवो ? चारणा री चमत्कार तो देखो । निराई नाठता नादारा न तो म्है शब्दा रा चाबुका सू ई वाळ नाखा ।

> आधा पडवा ओलगण जागड जीमण जाग ।
> रण झडतां भड दूर को सुणसी सिधु राग ॥

अर ढोलीडा ! जीमण चूटण रै टेम अर जान जपान मे तो थे ठोड ठोड भमता फिरो । अब जद जोधार जुद्ध मे जू झ रह्या है अर थे आधा रेवो तो थागो सिधुराग कुण सुणैला ?

इण भात महाकवि सूयमल मीसण समाज रा हरेक वग न प्रेरणा देयन आजादी रा जग री ज्वाळा न तेज करण री कोशिश कीधी । पण उणा री आस्या रै सामी जद क्रांति री धजा हेठी पडगी तो वार हिया री वराळ यू प्रगट हुयी—

> जिण वन मूल न जावता गद गवय गिडराज ।
> तिण वन जबुक ताखडा ऊधम मडै आज ॥
> डोहै गिड बन वाडिया द्रह ऊडा गज दोह ।
> सींहण नेह सके कतो सहल भुलाणो सोह ॥

आऊवा, सलूवर अर कोठारिया सबधी राष्ट्रीय काव्य

(1) ठाकुर खुशालसिंह आऊवा

सन् 1857 ई रा आजादी रा जग मे आऊवै जबरो जस कमायो। आऊवा ठाकुर खुशालसिंह चापावत ओळै दोळै रा ठिकाणा अर बागी सिपाहिया री मदद सू गोरा रो जिको मुकाबलो कीधो, वो अखियाता मे चावो है। आऊवा रै त्याग, बळिदान अर देशप्रेम री आम जनता मायं घणो असर पड्यो। इण इधका काम न अेक कानो तो महाकवि सूर्यमल मीसण अर गिरवरदान, विद्वान-दान अर तिलोक्दान बारहठ जिसा विद्वान कविया आपरा काव्य मे वखाणियो अर दूजी कानी इणसू जनता रै हिवडै मे उपज्यै अजस री गगा लोकगीता रै रूप मे खळका करती बवण लागी जिकी आज लग सूखी कोनी। आऊवा रो बळिदान आज ई राजस्थान मे होळी र मौके फागा में घणै कोड सू गाईजै, याद करीज—

लोकगीत[1]

वाणिया वालो गोचर माय कालो लोग पडियो ओ
राजाजी र मेलो तो फिरगी लडियो ओ
कालो टोपी रो!
हा रै कालो टोपी रो! फिरगी फैलाव कीधो ओ
कालो टोपी रो!

बारली तोपा रा गोला धूजगढ मे लाग ओ
मायली तोपा रा गोला तबू तोडै ओ
भलै आऊवो!
हा र भल्ल आऊवो, आऊवो धरती रो थावो ओ
भलै आऊवो!

मायली तोपा तो छूटै, आडावलो धूजै ओ
आऊवा वालो नाथ तो सुगाली[2] पूज ओ
झगडो आदरियो।

---

1 चावो लोकगीत, जिको होळी रै मौके गाइजै।
2 आऊवा ठाकुर री इष्ट देवी।

हा रे झगडो आदरियो, आऊवो झगडा मे बाको ओ
झगडो आदरियो ।

राजाजी रा घोडलिया काला र लार दोड ओ
आऊवे रा घोडा तो पछाडी तोडे ओ
झगडो होवण दो ।
हा रे झगडो होवण दो, झगडा मे थारी जीत व्हैला ओ
झगडो होवण दो ।

मेलेसन जिसा अंग्रेज इतिहासकार इण झगडा री वजह उण टेम रा मारवाड नरेश तखतसिंह सू आऊवा ठिकाणा री राड बताय नै गोरा री खिलाफत री हकीकत नै लुकावण री कोशिश कीधी है ।[1] पण साची बात दूजी है । विठूडा ठिकाणा रै खोळायत बाबत आऊवा ठाकुर खुशालसिंह री जोधपुर नरेश सू बराजीपो होवण री शक्यता ही[2] पण अंडी नाकुछ बात माथ तिणकला री भारत बणायनै वे खुद अर वारी भाईपो बळती लाय मे कूद जावतो, आ बात हियै ऊतरै कोनी । ओ तो सगळा मुलक मे परदेशी राज रै खिलाफ सुळगयोडी नाराजगी री आग रो नतीजो हो । राजपूताना रा रजवाडा गोरा रै बळ हा, इण खातर वा सू राड होवणी वाजिब ही । ऊपरला लोकगीत मे प्रगटयोडी जनभावना सू ओ साफ लखाव के ओ काळा अर गोरा रै बिचाळै झगडो हो । पण राजाजी रा घोडा तो काळा री बार चढयोडा हा, इण वास्त आऊवा रा घोडा वान हरावण खातर पछाडी तोडण न आखता हा तो इणमे अचूभा री काई बात ?

डीसा कप रा बागी सिपाही 13 सितबर 1857 नै मारवाड री प्रजा रै नाम अक अपील काढी[3], जिणमे साफ लिखयोडो हो के मारवाड अर मेवाड रा मोकळा ठिकाणा (आसोप, आलनियावास,

---

1 मेलेसन ▪ इडियन म्यूटिनी 1857, पृ स 265

2 मेसन री चिट्ठी तखतसिंह रै नाम 22 मई 1857, हिस्टारिकल रेकडस 38 फाइल सख्या 1 म्यूटिनी जिल्द प्रथम, पृ स 112-113

3 फाइल स 1 म्यूटिनी जिल्द चार, रेजिडेंसी रिकाड नेशनल आर्काइव्ज, दिल्ली ।

गूलर, सलू बर, कोठारिया, कानोड, आसीद, लसाणी इत्याद) वा रै साग है। इणी भात गोरा री खिलाफत करण रा कसूर वास्तै मेवाड रा सलू बर अर भिंडर ठिकाणा नै खालसै करण री बात वडा लाट रा अेजंट सर हेनरी लॉरेंस कपनी सरकार नै लिखी।[1]

परदेशी अमल देखनै प्रजा रै माय रा माय बटीजण रा निरा ई कारण हा। गोरा री राजावा सू साठ गाठ, विध विध सू प्रजा रो शोषण, जूना रीत रिवाजा मे यादा घालणा[2], कामधधो नी मिलणो अर ऊदरा रै ई इग्यारस[3] जेडी बाता सू जनता रुष्ट ही। इण वास्तै जिको सूरमाई सू परदेशी सत्ता अर राजावा रै सामी पग माडता वे जनता रै हिवडै रा हार बण जावता। वा री स्तुति करनै कवि धरम निभाइजतो। आम जनता उण काव्य नै कठहार बणाय नै इसा जोगा मिनखा री कीरत धजा नै अजरा अमर कर दैवती। बानगी सरूप अे दूहा—

डूग्रा दुखो हिंदवाण रा, रुको न गोरा राह।
विकट लड सहियो विखो, वाह आऊवा वाह।।

फजरा नेजा फरकिया, रजरा तोपा गाज।
नजरा गोरा निरखिया, अजरा पारख आज।।

फिटा पड भागा फिरग, मेसन अजट मराय।
घाले डोलो घायला, कटक घणै कटवाय।।[4]

किणी री इसी हृदभात महिमा लोक कल्याण रै खातर कोई अबखो काम पार घाल्या अर त्याग कीधा ई करीजे। इण वास्तै आऊवा रा

---

1 एमिसिग चेप्टर आफ इडियन म्यूटिनी पृ स 108 9

2 मू रेटी (ईडर राज) रो निवासी सूरजमल चोहान सती प्रथा न वद करण वास्त कानून बणाण सू अग्रेजा सू लड्यो। उण बाबत एक सोरठो इण भात है—

गोरा कीरा मार राजा पतसा रैण नै।
माथै गोरा मार शिव रो कारण सूजडो।।

3 'मिनखा निठगी मोठ-बाजरी, घोडा निठग्यो घास" डूगजी जवारजी र गीत री अेक चावी पक्ति।

4 जेतराम रा रच्योडा आऊवा बाबत कीं फुटकर दूहा।

झगडा न फगत जोधपुर नरेश तखतसिंह सू राड कैवणो घोर अन्याय है ।

आऊवो मारवाड राज रो चापावता रो लाठो ठिकाणो । गूलर, आलनियावास, आसोप इत्याद वी रा भाईपा मे । उणारा वडेरा आपरा सूरापणा रै पाण मारवाड री अखियात मे नाम दीपायो । अे सगळा ठिकाणा परदेशी सत्ता सू अराजी हा । इण वास्तै ओ कैवणो तो अगाई गळत हुवैला के एरिनपुरा रा बागी सिपाहिया रै भावी जोग आऊव पूगण सू विद्रोह हुयो ।[1] साची बात तो आ है के आसोप, आलनियावास अर गूलर रा जागीरदार तो गोरी सत्ता सू आऊवा विचै ई वेसी खार खाधोडा हा । अे सरदार फगत आऊवा मे होवणवाळी बगावत सू नेहचो धार न नी वैठग्या । वे तो उण पछ बागी सिपाहिया सागै नारनोल ताई गया हा । उणा री मशा ठेठ दिल्ली पूगन बहादुरशाह जफर न राजगादी माथ बिठावण री ही ।[2] मारवाड रा सरदारा अर सलूबर रा रावत री चिटठी पतरी सू ओ साफ हुय जावै के आसोप ठाकुर शिवनाथसिंह री अगुवाई मे मारवाड अर मेवाड रा सात जागीरदार दिल्ली जावण नै सभ्या हा ।[3] दिल्ली सू पच्चीस हजार सिपाही लायनै अजमेर माथै आक्रमण करण री वे तेवड ली ही ।[4] इणसू आ बात साफ हुय जावै के आऊवा री बगावत रो आधार खानगी कारण नी, दूजी ऊंडी वजह ही । इणी कारण खुशालसिंह अर बागी सिपाहिया रै आऊवो छोड्या पछै ई इण बगावत री आग बुझी कोनी । इण हालत सू जोधपुर नरेश ने आपखा लाग्योडी ही क्यू के रियासत री फौजा रो हिंमो आघो अर मन पाछो आळी हालत ही ।

आऊवा रा झगडा मे जोधपुर रो किलेदार अनाडसिंह अर अेजट मेसन काम आया । बागिया मेसन री माथो वाढन प'ली सगळी बस्ती मे घुमायो अर पछ किला र सिरै किवाड माथै टेर दियो । अनाडसिंह री लाश री दुरगत नी करीजी । इणसू साफ

---

1 दस्तरी रेकार्ड जोधपुर, बही स 18

2 आऊवा रा किला म मिळयोडी जूनो चिट्ठियां र हवाले सू ।

3 शावर्स, पत्र सख्या 90 दिनाक 25-3-1858

4 उपयु क्त ।

लखाव के बागी सिपाहियां न फगत गोरा सू अणूती नफरत ही ।[1] आऊवा री महिमा मे रच्योडा काव्य सू आ ठा पडॅ के पेलडा अर दूजा हमला मे फ्तै मिळया पछे जिको उच्छरग हुया उणा मे गोरा सू जीतण रा जस गाईज्या । जोधपुर नरेश सू जीतण री कठ ई चर्चा कोनी । पण महाराजा तखतसिह र मन मे पैठोडो चोर वानै जक नी पडण देवतो । आ वात तो वे जाणता इज हा कै वा रा गाजा वाजा गोरा माथै है, इण वास्तै वे तनतोड नै गोरा री मदद कीधी । पण सगळी मदद प्रजा सू छान । रियासत रा दस्तरी रिकाड सू ठा पडॅ के अेकर वान गोरा री मदद खातर वोहळी रकम अजमेर भेजणी ही । ओ काम आपरा खास विश्वासू मिनखा री मौजूदगी मे रात रा करीज्यो । आ सावचेती इण खातर के प्रजा नै कठई ठा नी पड जावै ।[2] उण टेम खाकी अखाडा रा साधू विद्रोह रो प्रचार करण मे आगीवाण हा । वे घर घर जायनै गोरा रै खिलाफ लोगा नै तयार करता । रैयत इण साधुवा न घणै आव-कारी देवती । ठोड ठोड सू वान न्यू ता मिळता । जोधपुर रा राज-म्हैल मे ई वे तेडीजता पण महाराजा इण बाबत मून झालियोडी ही ।[3] जनता री भावना नै देखता खाकी साधुआ नै बरजणा वा र हाथ कोनी हो ।

इणी भात अेक दूजा दस्तरी रेकाड सू उण टेम री जनभावना अर जोधपुर महाराजा र बू बीजत मन री जाण हुवै । राज रा नौपत खाना मे अष्टपो'र नौपत बाजती । कदेई कोई मातवर आदमी रो मरतग हुया सोग री निसाणी सरूप नौपत बाजणी वद करीजती । आऊवा रा दूजोडा हमला मे अग्रेज अेजट मेसन मारीज्यो । ओ समाचार जद जोधपुर पूगो तो हिसाब सू तो नौपत बाजणी वद होवणी चाइजती पण वद करण रो हुक्म देवण री ताव तखतसिह मे कोनी ही । सै सू मोटो डर हो रैयत रै वैराजीपा रौ । रीस मे भूत हुयोडी प्रजा कठई कोई रोळो नी कर देव ।[4]

रैयत परदेशी सत्ता न अमाई नी चावती । इण वास्तै आऊवा

---

1 मु शी ज्वालासहाय लायल राजपूताना पृ स 281-82
2 दस्तरी रकाड जोधपुर बही स 18, पृ स 372
3 उपयु क्त पृ स 384
4 उपयु क्त, पृ स 387

मे आजादी रै घमसाण री लोगा माथै घणो असर हुयो । इण मौकै रचीज्योडै काव्य मे जनता रै मन री भावनावा री छिब निग आवै । आऊवा मे हुयोडै आजादी रै जग नी एकूकी घटना अर वानै मद्दे-नजर राखनै जिण काव्य री सिरजण हुयो बी नै ध्यान सू देख्या आ बात साफ हुय जावै के कविगण सुना नाम रा बखाण नी कीधा । जनता माथ इण काव्य रो जबरो असर हुयो ।

आऊवा में बागी सिपाहिया रै भेळा हुवण री ठा पडता ई महा-राजा तखतसिह आपरा किलेदार अनाडसिह नै फौजी दस्ता सागै दीवाण कुशळराज सिघवी री मदद खातर वहीर कीधो ।[1]

कुशळराज अेक फौजी दस्ता साग पेली सू ब्यावर रा मारग माथ तान ऊभो हो । बी नै अजमेर सू मिलण वाळा हुकुम रै मुजब पगला उठावण री ताकीद हो । अनाडसिह सीधो आऊवा कानी व्हीर हुयो । उठीनै अजमेर सू जनरल हेनरी लॉरेंस कुशळराज नै अनाडसिह र भेळो मिळन आऊवा माथ हमलो करण रो हुकम दीधो । अेरिनपुर अर डीसा रा बागी सिपाही वहीर हुयन आऊवा मे भेळा हुयग्या हा । लॉरेंस इण बात सू भाळीभाळ हुयग्यो के जोधपुर री फौजा उणा रै आडी क्यू नी फिरी ? इण वास्त जद कुशळराज अनाडसिह भेळा हुया पछ ई आऊवा माथ हमलो करण मे नेराई कीधी तो लारेंस वा रा लक्ता लेवता थका अेक चिट्ठी महा-राजा तखतसिह न लिखी । बी री अेक नकल किलेदार अनाडसिह नै ई भेजी ।[2] जोधपुर री फौज नै काइमा री जमात रो खिताब दवण वाळी आ चिट्ठी पढनै अनाडसिह नै घणो रज हुयो ।

हकीकत आ ही के आऊवा रै किला री किलाब दी जबरजग ही । बारली कानी काची भीत रो परकोटो अर मायन मजबूत पक्को परकोटो । उण माथै तोपा लाग्योडी । किला मे मोकळो गोळा बारूद अर जुद्धकळा मे पारगत सिपाही मोर्चो सभाळ्योडा । इण वास्तै अनाडसिह री मशा किया ई करनै आऊवा री फौज बारै आय जाव, इसो जतन करण री अर पछै मदान मे बी सू भिडण री ही । बारली कानी सू कीधोडी गोळाबारी तो धूड मेळी धूड हो जावती ।

---

1 जोधपुर स्टेट रेकार्ड सनद बही स 126, पृ स 546

2 प्रिचार्ड पृ स 236

अर मायनै सू आवण वाळा गोळा बारली फौज री खगाळ काढता। लोकगीत मे इण बात री वणन इण भात हुयो है—

बारली तोपा रा गोळा धूड कोट में लाग ओ
मायली तोपा रा गोळा तबू तोडे ओ झल्लै आऊवो।
आऊवो मुलका मे चावो ओ झल्लै आऊवो।

अनाडसिह कुशळराज सिघवी सागै आऊवा सू थोडे आतरै विठूडा गाव कनै डेरा कीधोडा हा।[1] पण लॉरंस रा काळजा वीधण वाळा ओळवा सू खार मे भरियोडे अनाडसिह आऊवा माथै 7 सितबर 1857 नै हमलो कीधो। तीन घटा ताई जबरी गोळावारी हुई। अनाडसिह री फौज रा दस सिपाही काम आया जिण मे मीठडी (जाळोर) री कु वर ई भेळो हो।[2] कवि विशनदान आपरा डिंगल गीत मे इण लडाई रो सातरो चित्रण कीधो है। इण मे डिंगल गीता री खास पिछाण अतिशयोक्ति अलकार री बोहळाई होवता थका ई घमसाण री प्रचडता री जाण हुवै—

गीत[3]

जबर अभग जुध सुभट अग कडा जरदा जडै।
प्रगट हद राग जागडी हाका पडै।
धाक सुण डरा असराण दिल धडहड।
खाग कर ताण कित धमण साथा खड॥ 1

लिम कुता अणी गजा लगर खळळ।
भाणकर प्रगट अत तेज तन मे भळळ।
दयधतै प्रलयकज बाहुलै अतर दळ।
कवण सिर आज री रीस बूजा कुसळ॥ 2

× ×

फव दळ कु जरा सीस झडा फरक,
तुरगा हाफरड सघर त्रवक त्रहक।

---

1 जोधपुर स्टेट रेकडस् सनद बही स 216, पृ स 725
2 जोधपुर स्टेट रेकडस सनद बही स 18 पृ स 384
3 नाथूराम खडगावत, राजस्थान स रोल इन स्ट्रगल आफ 1857 पृ स 119

थयो रज तिमिर दिगपाळ फब्बे थरक,
रोस री झाळ किरण माथ कमधां ग्ररक ।
मन घणी सोच पड विमुख पुळ मठानर
ग्रग उछरग लग, ग्ररस सूरां ग्रतर ।
चढ़ी गणाक ग्रणपार ग्रामखचर
ग्रछर वेवाण नभ बीच ग्रडिया ग्रधर ।

किलेदार ग्रनाडसिंह रै की करण री के मरण री तेवडियोडी ही इण वास्तै वो 8 सितबर 1857 नै ग्रोरू हमला री तैयारी करण लागो । उणी टेम लेफ्टिनेंट हेचकेट पाँच सो घुडसवार लयन ग्रनाडसिंह री मदद वास्त ग्राय पूगो । तीजा पो'र र ग्राक्रमण कोधो पण ग्राऊवा री प्रचड गोळाबारी रै सामी की थाग नी लागी ।[1] रात रा लडाई थमगी । दूजे दिन जाजरक ई वागिया जोधपुर री फौज माथ ग्रचाणचक हमलो कीधो । हमलो इतरो माछावूछ रो हुयो के जोधपुरी फौज हाक्वाक हुयगी ग्रर घणकरा सिपाही तो थाळ वूटी थारा कान । कुशळराज सिंघवी ग्रर हेचकेट ई मौको देखनै तेतीसा मनाया । फगत ग्रनाडसिंह ग्रापरा थोडासीक विश्वासू साथिया साग लडतो रह्यो ग्रर काम ग्रायो । बागिया नै मोकळो माल मिळ्यो ।[2]

इण हार री खबर सुणनै लॉरेंस नै घणो सताप हुयो ग्रर वो ब्यावर सू ग्रेक फौजी दस्तो लयन ग्राऊवा कानी वहीर हुयो । इण टुकडी मे गोरा सिपाही हा । बी नै पूरो धीजो (विश्वास) हो के जीत री मोड बी र माथ वधसी । मारग मे भणूतो मेह वूठोडो होवण सू बी नै ठोड ठोड ठेरणो पडयो । छेवट 18 सितबर 1857 न वो ग्राऊवै पूगो ।[3] ग्राऊवा री मारग ग्राभो रोही माय सू जावतो । ज्यू ई वो रोही सू बार निकळनै खुला मदान मे निगै ग्रायो, ग्राऊवा री तोपा सू गोळा छूटण लागा । तीन घटा ताई घोर घमसाण चाल्यो । इणी बीच ग्रेक ग्रखियाता चावी घटना हुयगी । जोधपुर राज रो पालिटिकल अजट मॅकमेसन, लॉरेंस सू

---

1 फाइल स 1, म्यूटिनो जिल्द III प स 65
2 उपयु क्त प् स 74
3 लॉरेंस री चिट्ठी ग्रेडम्सटन रै नाम, 27 जुलाई 1858

मिळण खातर जोधपुर सूं सीधो जुद्धभूमि मे पूगो अर उठै ई फौत हुयग्यो। बागी वी रो माथो वाढ नै लयग्या। पछ बरछी मे पिरोय न सगळा गाव मे फिराय न किले री सिरै पोळ माथै टेर दियो। मेसन री मौत इतरी भ्राद्यावृछ री अर अचाणचक हुयी के लारेंस नै इणरो घणो होरो रह्यो।[1]

रात नै मोडी वेळा ताई गोरा सिपाहिया माथै बागी काटकता रह्या। छेवट लॉरस हार नै लारै सिरक्यो अर आऊवा सू डोढ कोस रै आतरै आयोडो चालावास गाव मे तीन दिना ताई बाट जोवतो रह्यो के आऊवा री फौज मैदान मे आवै तो वी सू मोर्चो झाला, पण वी री मनचीती नी हुयी।[2]

मेसन री मौत अर लॉरेंस री हार सू गोरा ह्वीणो दाव दे दीधो। बडा लाट नै इण घटना सू इण वजह सू घणी चिंता हुयी के कठैई आ सगळा राजपूताना नै लाटो नी दे देवै। इण जीत सू हरखित हुय न बागी घणै मोद सू उच्छरग मनायो। इसी लखाव के निराई कविया न इण जीत सू काव्य सिरजण री प्रेरणा मिळी। कई कविताबा मे तो मेसन री मौत रो खुलासे उल्लेख मिळै जिण-सू आ ठा पडै के इण कविताबा री प्रेरणा इण जुद्ध सू मिळी। इण बावत अेक फाग घणो चावो है अर आज ई कोड सू गाईज।[3]

ढोल बाजै, थाली बाज, भेलो बाजै बाकियो
अजट नै मार न दरवाज नाखियो
जूंझै आऊवो।
हा रै जूंझ आऊवो, आऊवो मुल्का मे चावो ओ
जूंझ आऊवो।

मेसन री मौत बाबत महाकवि सूर्यमल मीसण री अेक डिंगल गीत ई घणो चावो है —'आऊओ खायगो फिरगाण री अजट।' गीत इण भात है—

लोहो करतो झाटका फणा कवारी घडा रो लाडौ
आऊओ जोधाण सू खेंचियो वहै अट।

---

1 प्रिचाड म्यूटिनी इन राजपूताना ए पसनल नेरेटिव, पृ स 240
2 उपयुक्त।
3 परपरा, गोरा हटजा अक पृ स 65

जगी साल हुता हिंदवाण रा आवगो जीं नै
आऊवो लायगो फिरगांण री अजट ।।

× ×

रीठ तोपां चढूकां जुरबां नालां पैंड रोप,
चलं घड़ी ज ज रुद्र पियारा वाराण ।
मारया काज सो वज्र हियारा मूरिया मायै,
कुसल्लेस आयो हाथा लियां रे वेयाण ।।

× ×

भागै भीच गोरा सिर्यां पर्रा रा जिहान भालो,
दावो तेगां झाट दे उत्तालो दसू देस ।
तोसूं नींद न आवै भो कपनी लगाड लाला
कालो हिये न मायै अगजी कुसल्लेस ।।[1]

महाकवि सूर्यमल मीसण आऊवा ठाकुर खुशालसिंह रा वखाण करता थका अेक ओरू गीत इण भात लिख्यो—

गीत[2]

ढोण ठैलै तू मातणा भडा डाचरा उवाड डाको
मू घ्रां तारा पैलै तू कपनी गज माल ।
फाट धाणी रेल तू समाणां जमीं ओस लायै
लसतो लपाणां माथ झेलै तू खुसाल ।।

× ×

मेवाड ढूढाड ज्यू हो हाडौती माळवो मोळो
दोळो काळचक्र सो किणीन आव दाय ।
झालै किसो तो विना पयाळ जाती काळ झाप
लाडली पगुती चांपा अगुळी लगाय ।।

आऊवा माथ हुयोडा पेलडा हमला रा जवाब मे आऊवा री फौज दूजे दिन वेगो हमलो कीधो । वीं री वर्णन कवि तिलोकदान बारहठ रा अेक गीत मे मिळै । इण मे आऊवा री फौजा री मरदाई, चतुराई अर वरियां री कायरता रो आछो वर्णन है—

---

1 नाथूराम खडगावत, पूर्वोक्त पृ स 55 56
2 उपयुक्त, पृ 121-122

गीत

कळह दगो कर ग्राऊवं जेट ग्राया करण,
भेट रण रचण ग्राखेट भाई ।
विदेसा नेट मिळिया प्रसण बुलाया,
थेट सिरकार लग फतं थाई ।।

ग्रादरत ग्रोट खळ चाल ग्रडिया ग्रडर
दुभन्न खग चाळ से लोट देता ।
वंरहर जठ पगवाळ खग बजावं,
कठ खुसियाळ खुसियाळ केता ।।

इतं सुण सबद समरा भडथ ऊठिया,
वसू विखियात कोरथ वदीतो ।
धात भड सोरसा वात कह धेरिया,
वात करता इतं रात वीती ।।

चोळ चखचूर वीरा मना चाविया,
धोट वतळाविया हिय धरिया ।
सुत वगत प्रवळ तपतेज सरसाविया,
मारवा ग्राविया जिक मरिया ।।

कायरा चेत उड प्रेत जोगण किळक,
उग्रवट भूभट विरदत ग्रडिया ।
जैतहर जीत पाई समर जीतियो,
पाच ग्रर ग्रसो जुध खेत पडिया ।।[1]

दूजोडा हमला मे मेसन री मौत, लारेंस री हार ग्रर ग्राउवा री ग्रजसजोग फत सू दूजा निराई कविया नै गीत, छप्पय ग्रर फुटकर दूहा रचण री प्रेरणा मिळी । भारतीय शक्ति री इण सरावणजोग विजय सू कविया न परदेसी सत्ता रै खिलाफ मन रा भाव प्रगट करण रो मौको मिळयो । उणा ग्राऊवा ठाकुर खुशालसिंह रा जूनी परपरागत शली मे ग्रणूता वखाण कीधा । ग्राऊवा री धरती न श्रेष्ठ बतावता थका गोरी मत्ता नै साव माडी ग्रर नाजोगी सिद्ध कीधी ।

---

1 नापूराम खडगावत, पूर्वोक्त पृ स 120

वानगी सरूप श्री नमूना—आऊवा बाबत फुटकर दूहा[1]—

चवदा उगणीसे चढ़ै, जे दळ आया जाण ।
रह्या आउवै खेत रण, पूतळियां पहचाण ।।

फिर दोळा अळगा फिरग रण मोळा पड रांम ।
ओळा महल आउवी गोळा रोठण गाम ।।

घुडला घण घूम घणा घट बहु लागां घाव ।
कटिया फोंफर काळजा, आतडियां पण आव ।।

अजट अजलो आवियो, ताता खडे तुखार ।
काळा भिडिया कडकनै, बीबलियो सगधार ।।

फिरिया वळ फिरमाण रा, थरहरिया लख थाट ।
करिया जुध कुसियाल सू , मरिया आळै माट ।।

असणां करया पाधरा, घट री काढण घू छ ।
कोधीला कुसियाल रो, मिळ भु हारी मू छ ।।

उडडा वागा ऊपड तेग भडै जिण तत ।
फर मोठी खुसियाल सू , कुसळ मनाजो कत ।।

काला सू मिल खुसलसो, टणक रासी टेक ।
है ठायो हिंदवाण मे, मो आऊवो अेक ।।

घनघोरा तोपा घुरै, बज हाक बिकराल ।
लूहर ल अग्ररा लसो, कमडी खेलै काल ।।

थिर रण अरियां थोभणो, नवपुर पूगो नाम ।
आऊवो खुसियाल इल, गाव गामो गांम ।।

अेक अग्यात कवि आपरा गीत मे आऊवा री पवित्र धरा न ससार मे सिर अर पूजनीक बतावता थका नवकोटिनाथ बाजणिया नुगरा जोधपुर नरेश अर अपची गोरा रै माजना मे धह नाखी है ।

गीत

फन पाई जगा थकाई पातसाही फौजा ।
अप्रताई पीढो पीढो दिखाई अरोड ।

---

1 अज्ञात कवि रा रच्योडा ।

चित ऊच कीत जाता, लेणवाली राव चापा।
रीत बाप दादा वाली नीं चूकी राठोड ॥

× ×

नवा कोटा नाथ रा सुभट्टा छोग्रा ग्रापनामो
बामो बध लाखा पात ग्रायरा वरीस।
ठिकाणै पाटवी चापा पाथरा प्रवाडा ठावो
धरा चावो दानो कहा तरां सूरा घोस ॥

× ×

चालागारा भूपाला ऊमरा माला मेर चपा।
उजाला दीपका ढाला विरद्दा ग्रमाम ॥
ग्राउवो ग्राचारसार सदा जिहान सू ऊचो।
तवा ग्राउवा सू नीचो जहान तमाम ॥

ग्राऊवा रै सागै ग्रालनियावास, गूलर ग्रर ग्रासोप जिसा ठिकाणा ई त्याग करण मे पाछ नी राखी। ग्राजादी रा जग मे वे पाटवी ठाकुर खुशालसिंह रै भेळा तो ग्रायडिया ई पण इतरा मे ई नेहचो करनै नी बठा रह्या। वी सू ई दो पावडा ग्राग भरनै दिल्ली री मदद सू ग्रजमेर माथ हमलो करण री चीतवी। ग्रा योजना वणावण मे ग्रालनियावास ठाकुर ग्रजीतसिंह ग्रागीवाण हा। इण प्रसग नै ध्यान मे राखता थका ग्रेक ग्रज्ञात कवि ग्रापरा काव्य मे कह्यो के खुशालसिंह ग्रर ग्रजीतसिंह जिसडा मातभक्त सूरमा राजस्थान मे ग्रोरू होवता तो गोरा रो पापो कट जावतो।

(मनहर कवित्त)

फाड'र फिरगी फौज ग्र्र्‌ वधग्रा रट्ठवड
ग्रलग उडाई ग्राभ ग्राण बाण साण मे
भोम गई हाण भई गुमानो गुमान हेक
हिंद परपत्र दिये केम दुनियाण मे
ग्राग्ल ग्रटाट ठाट मौत घाट उतारण
ग्रागतो ग्रजीत ग्राण घाल धमसाण मे
होता जे हरेक राज ग्रजीत कुसाळ जेड
काल ग्रास गोरा होता सारा रजयाण मे।

जोधपुर राज ग्रर गोरी फौजा रा दो सीरोळा हमला पछै ई

वानगी सरूप की नमूना—आऊवा बावत फुटकर दूहा[1]—

चवदा उगणीसे चढ, जे दळ आया जाण ।
रह्या आउवं खेत रण, पूतळिया पहचाण ।।
फिर दोळा अळगा फिरग रण मोळा पड राम ।
ओळा नहलं आउवो गोळा रीठण गाम ।।
घुडला वण घूमै घणा घँट बहु लागा घाव ।
कटिया फोंकर काळजा, आतडिया पग आव ।।
अजट अजखो आवियो, ताता खडै तुखार ।
काळा भिडिया कडकनै, धीबलियो खगधार ।।
फिरिया वळ फिरगाण रा, थरहरिया लख थाट ।
करिया जुध कुसियाल सू , मरिया आळ माट ।।
प्रसणा करवा पाधरा, घट री काढण घू छ ।
कोधीला कुसियाल री, मिळे भ हारा मू छ ।।
उडडा वागा ऊपड तेग झड जिण तत ।
कर मोठी खुसियाल सू , कुसळ मनाजो कत ।।
काला सू मिल खुसलसी, टणक राखी टेक ।
है ठावो हिंदवाण मे, मो आऊवो अेक ।।
घनथोरा तोपा घुरं, वज हाक विकराल ।
लूहर स अछरा लखो, कबडो खेलै काल ।।
थिर रण अरिया थोभणो, नथपुर पूगो नाम ।
आऊवो खुसियाल इल, गावै गामो गाम ।।

अेक अनात कवि आपरा गीत मे आऊवा री पविन्न धरा न ससार मे सिरै अर पूजनीक बतावता थका नवकोटिनाथ बाजणिया नुगरा जोधपुर नरेश अर अपची गोरा रै माजना मे धड नाखी है ।

गीत

फतै पाई जगा थकाई पातसाही फोजा ।
अप्रताई पोढी पोढी दिखाई अरोड ।

---

1 अज्ञात कवि रा रच्योडा ।

चित्त ऊचँ श्रोत जाता, लेणवालो राव चापा।
रीत वाप दादा वाली नीं चूको राठोड ।।

× ×

नवा कोटा नाथ रा सुभट्टा छोग्रा ग्रापनामें
वामी वध लाखा पात ग्रायरा वरीस ।
ठिकाणें पाटवो चापा पायरा प्रवाडा ठावो
धरा चावो दानो कहा तरा सूरा घोस ।।

× ×

चालागारा भूपाला ऊमरा माला मेर चपा ।
उजाला दीपका ढाला विरद्दा ग्रमाम ।।
ग्राउवो ग्राचारसार सदा जिहान सू ऊचो ।
सवा ग्राउवा सू नीचो जहांन तमाम ।।

ग्राऊवा रै सागै ग्रालनियावास, गूलर ग्रर ग्रासोप जिसा ठिकाणा ई त्याग करण मे पाछ नी राखी । ग्राजादी रा जग मे वे पाटवी ठाकुर खुशालसिंह र भेळा तो ग्रायडिया ई पण इतरा मे ई नेहचौ करनै नी वठा रह्या । वी सू ई दो पावडा ग्राग भरनै दिल्ली री मदद सू ग्रजमेर माथै हमलो करण री चीतवी । ग्रा योजना बणावण मे ग्रालनियावास ठाकुर ग्रजीतसिंह ग्रागीवाण हा । इण प्रसग नै ध्यान मे राखता थका ग्रेक ग्रज्ञात कवि ग्रापरा काव्य मे कह्यौ के खुशालसिंह ग्रर ग्रजीतसिंह जिसडा मातभक्त सूरमा राजस्थान मे ग्रौरू होवता तो गोरा री पापी कट जावती ।

(मनहर कवित्त)

फाड'र फिरगी फौज ग्रधुवधजा रट्टवड
ग्रलग उडाई ग्राभ ग्राण बाण साण मे
भोम गई हाण भई गुमानी गुमान हेक
हिंद परपत्र दिये केम दुनियाण मे
ग्राग्ल ग्रटाट ठाट मौत घाट उतारण
ग्रागतौ ग्रजीत ग्रसि घाल घमसाण मे
होता जे हरेक राज ग्रजीत कुसाळ जेह
काल ग्रास गोरा होता सारा रजथाण मे ।

जोधपुर राज ग्रर गोरी फौजा रा दो सीरोळा हमला पछै ई

आऊवा री मू छ ऊची रैवरण सू महाराजा तखतसिंह नै आपरै जीव री पड़ी ही अर दिन भराग लागता पण 20 सितंबर 1857 नै दिल्ली पाछी गोरा रै कब्ज में आवण सू वा र छाती माथलो भाटो आघो सिरकग्यो।[1] इण पछै अंगरेजा पाछी आऊवा री खातो खोलियो। जनवरी 1858 मे मु बई सू फौज बुलाइजी अर ले क्नल होम्स री अगुआई मे आऊवा माथै हमलो करण री योजना बणी। इण फोज मे सात सौ घुड़सवार, ग्यारै सो पदाति (पाळा) अर मोकळा इजीनियर पण हा।[3] उगणीस जनवरी न मोर्चा बधोणा।[3] खुशालसिंह नै आ नक्की ठा ही के अबकाळै आऊवा माथै हमलो पूरी ताकत सू हुसी। इण वास्त आपरी गर मौजूदगी मे सगळी जिम्मेदारी आपरा छोटा भाई पृथ्वीसिंह नै सू पनै सनिक मदद वास्तै मेवाड़ गयोडा हा। तीजोड़ा हमला री वखत वे आऊवा सू बारै हा।[4] पाच दिना ताई दोनू कानी सू तोपा रा हब्बीड़ उडता रह्या। 24 जनवरी नै इजीनियरा बतायो के काले सुबह नव बजिया ताई बारली काची परकोटो ढुड जासी अर पछै फौज किला रै औरू नैडी पूगनै हमलो कर सकैला।[5] पण भावी जोग सू उण दिन रात मे ई जबरो तूफान आयो। गोरी फौज रै सामी बागी आपरी नफरी अर ताकत री टू काई नै जाणता हा। इण वास्तै वावळ मेह ढबण सू पली वे रात रा अधारा मे किलो छोड नै बारै आयग्या।[6] इण पछै जोधपुर री अर गोरा री फौज मिळन किला अर बस्ती नै इसा तेस मेस कीधा के कुण केव ब्याव भू डो।

ठाकुर खुशालसिंह री रहवास तोपा अर सु रगा सू धूड भेळो कर नाख्यो। बस्ती मे आडेकट मारकाट हुयी। महाकाळी री मदिर तोड नै मूरत अजमेर ले जाइजी (जिको आज ई अजमेर रा

---

1 दिल्ली माथ गोरा री अमल हुया तखतसिंह इकवीस तोपा दाग नै खुशी मनायी।

2 लारेंस री चिट्ठी ऐडमस्टन रै नाम 27 जुलाई, 1858

3 लारेंस री चिट्ठी भारतमत्री रै नाम 6 फरवरी 1858

4 लारेंस रै नाम मारिसन री चिट्ठी 6 फरवरी 1858

5 लारेंस री पत्र भारतमत्री रै नाम, 6 फरवरी 1858

6 मारिसन री चिट्ठी लारेंस रै नाम 14 फरवरी 1858

म्यूजियम मे रास्योडी है ।) लूट रौ माल गोरा अर जोधपुर महाराजा आपसरी मे वाट लियौ । आऊवा रैं भेळा जुतणिया दूजा चापावत सरदारा नै ई ओ इज परसाद मिळ्यौ । इण पछै ई ठाकुर खुशालसिंह निरा बरसां तांई गोरी सत्ता सू जू झता रह्या । इण बिखा री बखत वे अठी उठी घणा ई भटका मारया । फौजी मदद वास्तै ई कोशिश करता रह्या पण किणै ई हूंकारो नी भरयौ । उण टेम उण री मदद करणो या वा नै शरण देवण रौ मतळब हो सीधी अगरेजा सू राड मोल लेवणी । इण वास्तै कोई सामत उण नै नेडा अडण ई नी दिया । सूता बैठा कुण गिरै मोल लेवतौ । छेवट मेवाड रा कोठारिया ठिकाणा रा रावत जोधसिंह उण नै शरण देवण री हिम्मत कीधी ।

जे आऊवा रा झगडा मे जोधपुर महाराजा ठेठ सू ई गोरा री मदद नी करता तो राजस्थान रौ इतिहास दूजा ढग सू लिखीजतौ । कवि गिरवरदान बारहठ रौ अेक छप्पय इण बाबत मिळै जिण मे इण बात रौ साफ उल्लेख है के बगावत शुरू होवण सू पैली खुशालसिंह आपरा भाई सैणा सू सलाह सूत करनै जोधपुर महाराजा नै इण झगडा सू आघा रैवण री अर अगरेजा री मदद नी करण री अरज करवायी पण जद महाराजा इण बात री गिनर नी कीधी तद खुशालसिंह नै मजबूरी री हालत मे जोधपुर सू भिडणो पडयौ । गिरवरदान बारहठ रौ रच्योडो छप्पय इण भात है—

वरसौ चवदह बरस पड इलवेध अपारा ।
विकट लोग बदलियौ, सोच लागौ उर सारा ।
कानी कानी कलह, दाय कपनी उर दीधौ ।
खोज खजानो खास, लूट ऐरणपुर लीधौ ।
बजराग झाट लागै वहै, धकै दिली दिस धाउवे ।
महाराज खोज लेवा मदत, आचर रुपिया आउवे ॥

काला बाधी कमर, कमर बांधी कुसियालै ।
विसना सिव सांवलै, भडा ज्या जोगण भालै ।
लाग सिंघवा ललक, खलक हक बक चूज खित
करण टूक केविया रुक रण हत्थ करत रित
वजराग झाट बेडा बधै, घाट चमू दिस घेरणा
कवादी लोक लोह लाटकर, फजर फाटका फेरणा ॥

सुरा चार्यं रचसला मित्र परधाना मेलैं
खामद बखसो खून, बधो मत दुसहों वेल।
सहमत्री मिळ सला, थाप जुध करण थटाई,
होणहार ज्यू होय, मिट किण भात मिटाई।
भरोसे खुसाल सकती भिडण, सभियो सगळा साथ रे,
आजाद हिंद करवा उमग, निडर आऊवा नाथ रे।

मौजूदा आऊवा ठाकुर श्री नाहरसिंह सू आऊवा रा आजादी रा जग बाबत खासी जाणकारी हासिल हुयी। ब्रिटिश सरकार री भेळी कीधोडी सामग्री सू वीं रो मिलाण किया मोकळी ठोड फरक निग आयो। श्री नाहरसिंह री मेल्योडी सामग्री सू आ जाण हुवै के आऊवा माथै छेला हमला री वेळा अगरेजा री फतै कूटनीति रै पाण हुयी। आऊवा रा फौज मुसाहिब अर कामदार लोभ रै खातर गोरा भेळा भिळग्या। बा नै गोरा आऊवा अर बालोतरा रा पट्टा यत बणावण री लोभ दीधो। अे दोन जणा बागिया नै किलौ छोडनै जावण री सलाह दीधी अर अगरेजा नै किला मे बडण री न्यू तौ। आ कोई अणहूती बात कोनी। भारतीय चरित्र री आ अेक मोटी खामी के अठै घरभेदुआ सत्यानाश करवायो। इण सामग्री मे आऊवा माथ पेलडा हमला बाबत अेक छावली भेळी है, जिण मे जोधपुर रा किलेदार अनाडसिंह री मोत री वणन है—

छावली

शारदा भवानी थन वीनवू, लागू गुरा रै पाय
गढ जोधाणा सू भेजिया परवाणा रे जाय मोकळै दीजो
अबकै भळावण पालो कोट री ओ जी।
चढियो अनाडसिंग अभैसिंग रो, घुडला घूमर घालै
डावो भुजा माथ बोल कोचरो, जीमणो पलाऊ पालै
सूरा न मरदां री अमर छावलो ओ जी।
आगडधो आगडधो था रै वाजिया नगारा नै फोज फिरगी दोळी
अनाडसिंगजी अभैसिंग रा थारा घोडा मागगी गोळी
आउवै गयोडा नर पाछा नीं बावड ओ जी ।
दोनू ई कान माथ चढो र टोपिया घणा सोर रो धाई
इण सगतसिंग सिणली रै चापावत अनाडसिंग रै वाई
मोतिया री माळा तो रण मे राखगा ओ जी ।

घारी वगला री थार लागी दुनाळी रे, लागी रै दडी रै जाए दोटी
अनाडसिंग अभैसिंगजी रा गया लटकती चोटी
काळा री भगडो तो याद रेला ओ जी ।

इण छावली सू ठा पडै के अनाडसिंह री मोत सिंएली रा चापावत सगतसिह री गोळी सू हुयो ।

आऊवा री आजादी री जग बावत जेतराम नाम र कवि घणा फूटरा दूहा रच्या है । आदि सू अत ताई इण वाका रै क्रम री प्रामाणिक वर्णन इण में हुयो है । परपरागत कविता री लीक सू हट न इण मे साची वाता रो चित्रण करीज्यो । अखियात मे चावा जुझारा रा नाम ठाम, सूरापणो अर घटनाआ री विगत अे सगळी वाता इण दूहा मे समायोडी है । दाखला तरीकै अे दूहा—

दूहा[1]

वणी गदर री वात सू, घणी कमध रै घेक ।
काला सू वधियो कलह, लिखिया मिटै न लेख ।।
ऊसस मेली फौज अत, जोडै नृप जोधाण ।
वीठोड डेरा, किया, अकड जाण आपाण ।।
जाणी हलकारा जरा, अरजी कोधी आण ।
माफो छेडे महपती, जग मचावण जाण ।।
गढ आऊवो थेह गण, वीर भूप जित वाग ।
नवहृयो सूतो निडर, नोज छेडियो नाग ।।
सिंघ ऊठियो सजग ह्वै कोधीलो कुसियाल ।
समर करण हाथल सज, अग्राजत अरिसाल ।।
फजर हुकम वो फोज नै, सूर चढो सह साथ ।
आज विठोडा ऊपरा, भिडसा अरि भाराथ ।।
कसिया दल बखतर कडा, कर पाखर केकाण ।
तोपा तुपक त्रबागला, नादा खुल नीसाण ।।

1 मौजूदा आऊवा ठाकुर श्री नाहरसिंह सू मिळयोडी सामग्री सू ।

सुण चापै रचसला मित्र परधाना मेल
सामद वखसो खून, बधो मत दुसहा वेल ।
सहमत्री मिळ सला, थाप जुध करण थटाई,
होणहार ज्यू होय, मिट किण भात मिटाई ।
भरोसे खुसाल सकती भिडण, सभियो सगळा साथ रे,
आजाद हिंद करवा उमग, निडर आऊवा नाथ रे ।

मोजूदा आऊवा ठाकुर श्री नाहरसिंह सू आऊवा रा आजादी रा जग बावत खासी जाणकारी हांसिल हुयी । ब्रिटिश सरकार री भेळी कीधोडी सामग्री सू वीं री मिलाण किया मोकळी ठोड फरक निगे आयो । श्री नाहरसिंह री मेल्योडी सामग्री सू आ जाण हुवै के आऊवा माथै छेला हमला री वेळा अगरेजा री फर्ते कूटनीति रैं पाण हुयी । आऊवा रा फोज मुसाहिब अर कामदार लोभ र खातर गोरा भेळा मिळग्या । वा न गोरा आऊवा अर बालोतरा रा पट्टा यत बणावण री लोभ दीधो । अे दोनू जणा बागिया नै किलो छोडन जावण री सलाह दीधी अर अगरेजा नै किला मे बडण री न्यू ती । आ कोई अणहूती वात कोनी । भारतीय चरित्र री आ अेक मोटी खामी के अठै घरभेदुआ सत्यानाश करवायो । इण सामग्री मे आऊवा माथै पेलडा हमला बावत अेक छावली भेळी है, जिण मे जोधपुर रा किलेदार अनाडसिंह री मौत री वणन है—

छावली

शारदा भवानी थन वीनवू, लागू गुरा रै पाय
गढ जोधाणा सू भेजिया परवाणा रे जाय मोकळे दीजो
अबकै भळावण पाली कोट री ओ जी ।
चढियो अनाडसिंग अभैसिंग रो, घुडला घूमर घाल
डावी भुजा माय बोलै कोचरी, जीमणो पलाऊ पालै
सूरा नै मरवा री अमर छावली ओ जी ।
आगडधो आगडधो या र वाजिया नगारा न फौज फिरगी दोळी
अनाडसिंगजी अभैसिंग रा थारा गोडा भागगी गोळी
आउव गयोडा नर पाछा नीं बावड ओ जी ।
दोनू ई कान माय चढ़ी र टोपिया घणा सोर री धाई
इण सगतसिंग सिणली रैं चापावत अनाडसिंग रैं वाई
मोतियां री माळा तो रण मे राखगा ओ जी ।

घारी बगला री थारै लागी दुनाळी रे, लागी रै डडी रै जाण
दोटी
अनाडसिंग अभसिंगजी रा गया लटकती चोटी
काळा रो झगड़ो तो याद रेला श्रो जी ।

इण छावली सू ठा पड़ै के अनाड़सिंह री मोत सिंणली रा चापावत सगतसिंह री गोळी सू हुयी ।

आऊवा री आजादी री जंग बावत जेतराम नाम र कवि घणा फूटरा दूहा रच्या है । आदि सू अंत ताई इण वाका रै क्रम री प्रामाणिक वर्णन इण मे हुयो है । परपरागत कविता री लीक सू हट न इण मे साची बाता री चित्रण करीज्यो । अखियात मे चावा जुझारा रा नाम ठाम, सूरापणो अर घटनाश्रा री विगत अे सगळी बाता इण दूहा मे समायोडी है । दाखला तरीकै अे दूहा—

दूहा[1]

धणी गदर री बात सू, घणी कमध रे घेक ।
काला सू वधियो कलह, लिखिया मिट न लेख ॥
ऊसस मेली फौज अत, जोडै नृप जोधाण ।
वीठोड डेरा किया, अकड जाण आपाण ॥
जाणी हलकारा जरा, अरजी कीधी आण ।
माझी छेडे महपती, जग मचावण जाण ॥
गढ आऊवो थेह गण, वीर भूप जित वाग ।
नवहत्यो सूतो निडर, नोज छेडियो नाग ॥
सिंघ ऊठियो सजग ह्वै क्रोधीलो कुसियाल ।
समर करण हायल सज, अग्राजत अरिसाल ॥
फजर हुक्म वो फौज नै, सूर चढो सह साथ ।
आज विठोडा ऊपरा, भिडसा अरि भाराथ ॥
कसिया दल बखतर कडा, कर पाखर केकाण ।
तोपा तुपक त्रबागला, नादा खुल नीसाण ॥

1 मौजूदा आऊवा ठाकुर श्री नाहरसिंह सू मिळयोडी सामग्री सू ।

जोरावर चढ़िया जुडण, मूछा मरद मरोड ।
बिन माथ खग वाहणा, रण रसिया राठौड ।।

× ×

आभ खेह लागी उडै, खेगा री खुरताल ।
रगडा हकिया राड मे, कडको खाग कराल ।।

घर अम्बर धक धूजिया, लचक सेस फुण नाग ।
खेलत खागां खागडा, फागण डाँडा फाग ।।

प्रसणां काटै पाडिया, भागल रिपु गा भाग ।
लूट डेरा तोपा लिया, वलिया पाछा वाग ।।

जुद्ध रा ऐ समाचार जद जोधपुर महाराजा तखतसिंह कनै पूगा तो उणा मन मे विचार कीधो—

इसी बात सुण नृपत उर, आयो सोच अपार ।
यू बरसा लग आउवे, पाऊ न लडिया पार ।।

तद गोरा नै तेड़वा, तखत करी तदवीर ।
लड आउवो लेण री, प्रो उपाय अकसीर ।।

लिखिया रुक्का लागणा, अंगरेजां अजमेर ।
ऊभो बदलै आउवो, फतै न होवै फेर ।।

धुटिया सुण अगरेज घण, भुटिया रगवा भग ।
उठिया दाबण आउवो, जुटिया करवा जग ।।

गोळा रीठा गोळियां, झड रण खाग झपट्ट ।
खाळां लोही खळकतां, वीरां हाक विकट्ट ।।

भुजां आभ लागा भडां, जुडिया भारत जाय ।
हारे भागा हुरिया, लालन गयो लुकाय ।।

अजट इत जो आवियो, ताता लडे तोखार ।
काळा भिडिया कडकन, धोवलियो खगधार ।।

फीटा पड भागा फिरग, मेसन अजट मराय ।
घाले डोळी धायला, कटक घणो कटवाय ।।

इण हमला माय सागोडी मार खाया पछ गोरी फौज महाराजा री फौज सागै मिळ न पाछो लडण रो मतो कीधो—

लालन मिळ लारेंस सू, सला विचारी सार ।
जोतां जुध कुसियाल जुड, लाख फौज ले लार ।।

फौजा मरुधर फिरंगियां, तोपां घटकर त्यार ।
सवळौ दळ आया सज, भेळण गढ ले भार ॥

भडा आज वेजौ भला, अख कुसाळौ अेम ।
राखा आउवौ जीत रण, को तज जावा केम ॥

गहरा कोरा गाळमा, लिया अमल लकाळ ।
झगडण गोरा झाट दे, वट मू छा वकाळ ॥

मारु अडिया मोरचा, रड़िया सिंघव राग ।
लालन लडियौ लाग सू, अवर झडियौ आग ॥

कुपिया भड कुसियाल रा, गोरा सीस गजब्ब ।
पड अेक दस पाड़ न, अरि इण खेत अजब्ब ॥

कढिया सिर कुसियाल रा, खेत वीर झड खाग ।
धर पडिया मुख धाकलै, लख उर रिपुवा लाग ॥
× ×
वाहता खग माथा बिना, धड लोही धकधक्क ।
घुकं सीस पडिया धरा, हुआ अरी हकबक्क ॥

हिमती गोरा नह हट, केम मुड कुसियाल ।
घुकत वीर लोटत धरा, घण मू छा कर घाल ॥

आठ दिवस लग अेकसी, धडा उडी धमरोळ ।
किलकत तोपा काळका, झड खग सेल झबोळ ॥

असवागा खग ऊपडी, वजी हाक वजराग ।
जीत ऊभौ कुसियाल जुध, भिड वरी गा भाग ॥

कशायवी कुसियाल रा, चखरत मू छा चोळ ।
घोळ उभा दळ वैरिया, छकिया रण रग छोळ ॥

दिल्ली पत डोळौ दियौ, हार खाय जुध हेर ।
उण दिन वरवण आउवै, धडा वरी अरि घेर ॥

फत झडा फरकावियां, वाज डका वेर ।
गढा सिरोमण अेसगत, हुवौ आउवौ हेर ॥

आग अो गढ आउवो, जीतौ सगळा जंग ।
कुण लडिया लीधो कहा, दीधा गयो दुरग ॥

फौजी मदद वास्त ठाकुर खुशालसिंह मेवाड गया अर लार आऊवो गोरा फतै कर लीधो । इण प्रसग बाबत कवि लिख्यो—

कुसळ गयो लेवा कटक, भार पृथी दे भ्रात ।
मोळो सला दी मंत्रिया, रच जाळ इण रात ।।

अगरेजा सू लड अब, पाणो मुसकल पार ।
पाछो ले लेसा पछ, आपा देख उवार ।।

वस भावी उण निसवणों, दुरग खाली कर दीघ ।
वळगा सह आडावळ, लारै गढ़ अरि लीघ ।।

माठो बात न मानता, जूझत दो दन जूट ।
आय कुसालो आउवै, काढत सत्रुवा कूट ।।

जपियो गढ तज जावता, सुणजो अणिया सार ।
म्हनै दोस दोजो मतो, सिर कलक सिरकार ।।

उगणीसो चवदा अखू, खनियां उगट खार ।
यू गढ भिळियो आउवो, सुद नम मा सनिवार ।।

अगरेजा किम अजसो, जाजा धणी जोधाण ।
अवक छूटो आउवो, जिको लेल विध जाण ।।

माधव राजा मान न, दीधो मरुधर देस ।
जुध अरिया सू फेर जुड, बचा लिया वगतेस ।।

× ×

तिको पाट तोने तगत कमधज दियो कुसाल ।
गयो मूल नृप सरव गुण, सह जग कर सवाल ।।

कर दिखात सच कोल नै कमध लड कुसियाल ।
अमल गोरा उठ जावतो, नृप हिंद होत निहाल ।।

दिली तगत तो देवतो, दळगोरा रण दोट ।
सामी राजन विन समझ थापा सू की चोट ।।

करत मदत कुसियाल री, लड भारत ले लेत ।
जस आतो जोधाण नै, राज हिंदवा रेत ।।

हुतो अेकता हिंदवा, काढत गोरा कूट ।
आय पडी विधि अक सू, फेरू आडी फूट ।।

प'ली इण बात री चर्चा करीजी है कै ठाकुर खुशालसिंह नै निरा बरसा ताई अठी उठी भटकणो पडयो । पण उण कुवेळा मे ई वे पुरुषाथ मे पाछ नी राखी । आऊवा माथै काबिज होवण

वारतै कई वेळा कोशिश कीधी पण बातडी बणी कोनी । छेवट सन् 1862 ई में उणां नै अजमेर मे फौजी अदालत रै सामी हाजर होवणी पड्यो, जठै वे बरी हुयग्या । 1863 ई मे उदैपुर मे वा रो सुरगवास हुयग्यो । पण आऊवा रो आजादी रो जग बद नी हुयो । वा रा कुंवर देवीसिह आऊवा माथै कब्जो करण री लाग राखी अर बी रै वास्तै लडता भिडता रह्या । पछ पोकरण, कुचामण, नीमाज, रायपुर रास, खेजडला अर चडावळ इत्याद ठिकाणा री मदद सू सन् 1868 मे आऊवा माथै चापावत पाछा काबिज हुयग्या । इण हमला मे फौज री अगुआई मेडतिया सरदार देवीसिह कीधी । इण प्रसग रो अेक फाग गीत मशहूर है जिको आज ई गाइजै—

फाग

देवजी मेडतिया थारै डाव कान मुरको रे
बार बरस बिखा मे रिया आख फुरको रे
    लेणो आऊवो ।
हा रे लेणो आऊवो, झगडा मे थारी जीत होसी ओ
    लेणो आऊवो ।

सन् 1957 ई मे आजादी र पे'लडा जग री शताब्दी समारोह आखा देस में मनाईज्यो । इण मौके आऊवा मे ई समारोह हुयो अर ठाकुर खुशालसिह री यादगार मे स्मारक बणाईज्यो । उण मौके आऊवा विकास खड खानी कानी सू निमत्रण पत्र भेजीज्या । उणा माथै मौजूदा आऊवा ठाकुर नाहरसिह रा रच्योडा अे दूहा छापीज्या—

अग्रेजा रा आउवै, दळ चढ आया दूठ ।
कियो जुद्ध कुसियाल सू, पाछी फेरी पूठ ॥
कुसियाल चाह्यो करण, देस सुततर सूर ।
हद लडियो जिणरो हुवो, पर मुलका जस पूर ॥
इण भारत सरकार अब, जाच कदर की जोय ।
उणरो स्मारक आउव, अब रह्यो है होय ॥
वरस अेक सौ बीतगा, कीरत मिटी न काय ।
सामिल उत्सव सज्जना, आउवै होवो आय ॥

गोरा रै वळू हुयनै आऊवा नै तेममेस करण मे जोधपुर महा-राजा पाछ नी राखी। उण री ओ काम प्रजा री नजरा मे केडो हो, इणरी सही छिब लोकगीता, खासकर फागा, मे मिळै। होळी रै मोके गेरिया जोधपुर नरेश नै मुजरो अरज करता थका केवै—

मुजरो लेलो नीं वावलिया होळी रग राची
मुजरो लेलो नीं।

भाईया री शिकार मायं थारा हाकम चढ़िया ओ
गोळी रा लागोडा भाई भासर भिळिया ओ
झाडी झगा मे, हां रे झाडी झगा मे
टोळी रै टोकायत माथै गोरा लेने आया हो
कोट री बुरजा रै ऊपर भाटी लडिया ओ
के मुजरो लेलो नीं।

मुजरो लेलो नीं वावलिया होळी रग राची
मुजरो लेलो नीं।

भालां मे भळका मे घणियां तरवारा तोलीजी ओ
भाटी न उदावत भिडग्या चलती गोळी ओ
के मुजरो लेलो नीं।

वावा मुजरो लेलो नीं महलां री ठोडा गायां चरगी ओ
मुजरो लेलो नीं।

वावलिया होली रग राची मुजरो लेलो नीं।

इणी भात अेक दूजा फाग गीत मे गरिया आऊवा न इसी अवखी पुळ मे अेकजुट रेवण री सनेसो देव। गोरा रा हिमायती व्रण नै जोधपुर राजाजी लाबी चोडी फौज लेय न आऊवा मार्थ आया है। फौज रै हरावळ री नगारो आऊवा रै फळसै वाजे तो छेलो रातानाडा (जोधपुर) मे सुणीज। कितरी मोटी फौज है। पण आऊवा ठाकुर खुशालसिंह रजा देवै तो अबार इण नगारा रा फीफरा बिखर देवा। जोधपुर री सेना रा सेनापति कुशलराज सिंघी परवाणा लिख लिख नै जोधपुर भेजै है। गाडिया भरनै गोळा बारूद मगावै है। अठी नै आऊवा मे घरफोडण वास्ते चादी री गोळिया ई चाल है, पण कठैई थाग नी लाग। आऊवो तो अगद रो पग है।

लोकगीत

आऊवे वाले बाग मे बावलियें वाली घेरी रे
माय फौजा आई नें अगरेज मेलो रे
भाईया शामल रहोजो
हा रे भाईया शामल रहोजो
ठाकर रो ठिकाणो छूटे ओ
शामल रहोजो ।

अेक तो नगारो धणिया रातानाडे वाजे ओ
दूजोडो नगारो धणिया ठेट वाज ओ
झडो रोपियो ।

हा रे झडो रोपियो, मरा रा माथा कु वरा लीधा ओ
झडो रोपियो ।

आऊवा वाला धणिया थार नीलो मुरको झलरी ओ
गेरिया फुरमाव धणिया काई मरजी ओ
छूट्टी दे दो नीं ।

हा रे छूट्टी दे दो नीं, नगारा रा फडदा करदा ओ
छूट्टी दे दो नीं ।

सिघीजी परवाणा मेले भडारी नें दीजो ओ
सोर नें सीसा री गाडी वेगी मेलो ओ ।

के लिखिया परवाणा, हा रे लिखिया परवाणा
गोलिया चावी री चालें ओ, लिखिया परवाणा ।।

गोरी सत्ता अठे काबिज हुयनै कीकर देश नें बरबाद कीधो, वी री सातरो वणन अेक ओरू फाग मे हुयो है । फाग मे सवाल जवाब है । सवाल पूछीजें के गोरा अठे आया तो आपरें साग काई लाया ? जवाब है—कुसप, बेगार अर भूख । घोडा घास रें खातर अर टाबर रोटी वास्तें तरस रह्या है । आ सौगात लैय नें अगरेज आपणा मुल्क मे आया ।

लोकगीत

मोडको मगरो रो पाणो ढालो ढाल ढलियो ओ
आबू थार पहाडा मे अग्रेज चढियो र
काली टोपी रो ।

हां रे कालो टोपी रो, देश मे छावणियां नांखे रे
कालो टोपी रो ।

देश मे अंग्रेज आयो काई काई लायो रे,
फूट नाखो भाईया मे बेगार लायो रे
कालो टोपी रो ।

हा रे कालो टोपी रो, देश मे छावणिया नाख रे
कालो टोपी रो ।

घोड़ा रोव घास नैं टाबरिया भूंगैं रोटी न
बुरजां मे ठकुराण्या रोव जामण जाया न
के रोलो थापरियो ।

हां रे रोलो थापरियो, देश मे अंगरेज आयो रे
रोलो थापरियो ।

इण भात लोकगीता मे जनभावना ओपता ढग सू प्रगट हुयी है। अँ लोकगीत आज ई लोकमानस मे बस्योड़ा है अर होळी र मौके घण कोड सू गाईज ।

(2) रावत केसरीसिंह सलूबर

उदयपुर रा महाराणा भीमसिंह अगरेजा सू सधि मे बध्योड़ा । इण सधि र मुजब मेवाड राज अर उणरा जागीरदारा रा मोकळा हका र मामला मे करण काजवण अगरेज बणग्या । महाराणा तो सधि नैं राजी खुशी कबूल कीधी पण औ इकरारनामो दस्तखता वास्तै सलूबर रा रावत केसरीसिंघ कनै पूगो तो वी नैं फाडता थका उणा कह्यो—म्हारी भुजावा मे हाल परदेशी सत्ता सू भिडण री ताक्त है । इसी सधिया न म्हू छू तवा बराबर ई कोनी गिणू ।[1] 1857 रा आजादी रा सग्राम मे जिण भात आऊवा ठाकुर खुशालसिंघ मारवाड मे बागिया री नेतृत्व कीधो, उणी भात मेवाड मे ई रावत केसरीसिंह भिडर, कानोड, कोठारिया, आसींद अर लासाणी इत्याद ठिकाणा री मदद सू क्रांति री शख बजायो ।

आजादी रा जग मे उणा भारत रा नामी गिरामी क्रातिकारिया री हर तरह सू मदद कीधी । तात्या टोपे खुद दो वेळा सलूबर

---

1 परपरा, गोरा हटजा अक, पृ स 147

श्राय नै मोकळी मदद लेय नै गयो । क्राति रा जज्ञ मे श्राहुति देवण खातर उणा हजारा सिपाही तैयार राख्या हा । बगाल रा निरा ई क्रातिकारिया श्रर वा री साजवण (परिवार) नै उणै श्रापरै श्रठै शरण दीधी । वा री खरचो पाणी वे ई देवता । क्राति री वेळा मे केसरीसिंह राजनीति श्रर समरनीति री श्रेडी चाला चाली के गोरा फौजी श्रफसर ई गतागम मे पजग्या । मोकळी कोशिश कीधा ई वानै काबू करणा कनल ब्रुक, मेजर विलियम, वेसली इत्याद गोरा श्रफसरा रै समचै नी श्रायो । इण वास्तै कवि राघोदास सादू अगरेज रूपी जळ प्रळै रै बिचाळै वा री तुलना श्रक्षय वट रा पान सू कीधी, जिको इण प्रळ मे ई तिरतो रह्यो श्रर शरणागता नै श्रासरो दीधो–

फिरग प्रलै जल फैलियो, तज डूह राहा टेक ।
पान श्रखै वड पदम रो, ऊचो रहियो हेक ॥[1]

केसरीसिंह देशभक्ति, वीरता, शरणागतवत्सलता, दृढ निश्चय जिसा श्रापरा इधका गुणा रै पाण जनता रै हिवडै रा हार वणग्या । कविगण श्रापरा मन रा भाव प्रगट करता थका वा रा घणा वखाण कीधा । जद राजपूताना रा सगळा राजा गोरा रा होका भरणा हुकर लिया, लाठा जागीरदार नीची धूण घालनै बैठ्या हा, उण टम रावत केसरीसिंह जिसा विरला मिनख ई अगरेजा री खिलाफत करण री तेवडी ही । श्रेक श्रज्ञात कवि रा डिंगल गीत मे श्रो भाव इण भात प्रगट हुयो है—भारत रूपी रथ कादा मे कळीजग्यो है । बी नै वारै काढणी छोटा मोटा राजा रजवाडा श्रर सामत सरदार रूपी धाकल बळदा रै सारै कोनी । श्रो काम तो थारै जिसो मातो धोर, हिम्मतवर साढ (वृषभ) ई पार घाल सकै ।

गीत[2]

भड थका श्रवर निबाहै भूपति,
कहि विरदाव थको कथ ।
कळियो कुण काढ़ केहरिया,
रावत कवि खूचियो रथ ॥

---

1 परपरा गोरा हटजा अंक पृ स 92
2 उपर्युक्त ।

दरगह राण कळण मभ्र डारण
गयो नाई ताई गळण ।
काधो कुण माडे कांधळका
बेगड धोरी तूभ्र विण ।।

धारण धारण धुरतळ श्रोठविया,
समजत श्रोछडिया सकळ ।
जूना धवळ श्रोढ कध जूसर
श्रोहळिया छोडियो बळ ।।

जग जाणियो श्रमिनमा जता
सुकवि करे वाखांण सही ।
तो भुजभार चित्रगढ तिसडो
की कविरय वो भार कहो ।।

कवि रायोदास सादू मेवाड री मरजादा भग मरण वाळी मधि री हवालो दवता थका अेक श्रोरू डिंगल गीत लिख्यौ है—

गीत

जगी रिसाला हलता श्रळे सामद हिलोळा जेहा,
छातरगी हसम्मा भळता काळ चोट ।
जोर दीधो फिरगी लिखायो कौलनाम जठ,
श्रापरगी चूडा तें मेवाड राखी श्रोट ।।

× ×

धमै तोपा जिसू श्रहीराट रा सिनाण धूज,
रोक जगा लेसो हो श्रोधाट रा रकत ।
ये मुवेत थाट रा फडाया भुजा श्राभ थाभ,
लाट रा लिखाया मेदपाट रा लिखत ।।

इणी भात अेक दूजा डिंगल गीत मे रावत केसरीसिंह रै सूरापणा नै वखाणता थका वानै घणा रग दिरीज्या है । श्रो गीत किणी श्रज्ञात कवि री रचना है—

गीत

श्ररक तेज ऊफण श्रवी श्रार बळ श्रवीडा,
क्रोध जजराट चख धका कोप ।

फसे करमरा लोह लाट भड केहरी,
अडग खत्रवाट दुहु भुजा श्रोपै ॥
× ×
सबळ भोमहारा पाट री सहायक,
गोमसर थाट री नगा गाडो ।
सारधण भाट री लाट री विवूसण,
जोर रजवाट री तोर जाडो ॥
× ×
सवादा बरदहद खाट री सोगुणो
असोवत तणोछक राण थारं
ऊभरड घणो खगराव भड आवगो
थभ खत्रवट पणो भुजा थारं ।[1]

इण भात सन् सत्तावन रा आजादी रा जज्ञ री ज्वाळा नै सुळगती राखण वास्तै रावत केसरीसिंह तन तोड नै कोशिश कीधी । उण री प्रशस्ति मे रच्योडो काव्य सरावण जोग है ।

(3) रावत जोधसिंह कोठारिया

सन् सत्तावन रा आजादी रा सग्राम मे ढोल रै ढमक शरीक होवण वाळा राजस्थानी वीरा मे कोठारिया (मेवाड) रा रावत जोधसिंह रो नाम चावो है । ब्रिटिश सत्ता नै उण धावधाड धाकळ कीधी अर वागिया रै भेळा मिळिया । आऊवा ठाकुर खुशालसिंह कई वरसा ताई आडावळा मे अठी उठी भमता रह्या पण वा नै शरण देवण री हिम्मत किणै ई नी कीधी । सलूवर रा रावत केसरीसिंह ई थोड थाड मदद ई कीधी । इसी अबखी पुळ मे रावत जोधसिंह आगै आयन वानै आदर मान सू आपर अठै राख्या ।

भारत रा दूरदराज इलाका सू आयोडा क्रातिकारिया न कोठारिया सू मुडे मागी मदद मिळती । खुद नानासा'ब, वा री वृद्धा माता, गुरु खाकपुरी अर उण रा साथी गणेशसिह, गणपतसिह, भोळासिंह इत्याद बिठूर सू आय नै कोठारिया मे शरण लीधी ही । अे लोग उठै ही हाडका नाखिया । पाडुरग पेशवा अर तात्या टोपे जिसा चोटी रा बागी नेतावा नै ई रावत जोधसिंह सू मदद मिळी ।

---

1 राजस्थानी शोध सस्थान चोपासनी रा सग्रह सू प्राप्त ।

इण बात री अन्दाजो आसानी सूं लाग सकै के जोधसिंह रा इण कामा री वजह सूं अंगरेजा रै कितरी भाळ लागी हुवैला। अर उणानै घाइणै लावण वास्तै वे कितरी ताकत लगाई हुवला। पण इतिहास इण बात री साख भरै के ओ वाघियो आपरै घरियोड़े मारग सूं कदई लारै नी सिरक्यो। अेकर जबान सूं जिकी बात निकळगी वा जाणै लोह री लकीर। ताजिंदगी आपरो प्रण निभावणो जोधसिंह जिसा जोधार रै ई बस री बात ही। इण खातर वा रै बाबत कह्योड़ी आ बात सोळ आना साची है के—

जोध भलां ई जनमियौ, सम्रवा रै उर साल।
रावत सरणै राखियो, कमधा तिलक कुसाल॥

लग ऊँच खडिया सरब, भुजरज वडिया भार।
जडिया रावत जोध रै, समवडिया सरदार॥[1]

जोधसिंह खुद वीर हो, इण वास्तै उण खुशालसिंह जेड़ा सूर वीर नै आवकारो दीधो। खुशालसिंह उण वखत बिखो भुगत रह्या हा। घर बार, भाई-सण सगळा छूटग्या। असैंदी ठौड अर परायी भोम मे भटकणो पड्यो। गोरा री फौज वा रै वार चढ्योड़ी। अेड़ी फोरी अर अबखी वेळ मे जद राम ई रूठ जावै, जोधसिंह आऊवा ठाकुर रै आडा आया। अेड़ा वीरोपम अर घणा रंग देवण लायक काम नै उण वखत कवियां घणो सरायो अर इण प्रसंग सम्बन्धी काव्य सिरजण कीधो। वागदेवी रा बेटा इसी जबरी अर ओपमालायक बात री अनदेखी कीकर करता? इण मौके वारा भाव यूं प्रगट हुया। अेक अज्ञात कवि लिख्यो—

दूहा[2]

मरुधर छोड खुसालसी, भागो चापो भूप।
रावत जोधै राखियो, रजवट हंदै रूप॥

कळजुग मह कोठारिये, सतजुग लायो सोध।
अंगरेजा आडो खड्यो, जाडो रावत जोध॥

---

1 अज्ञात कवि रै रच्योड़ी—परपरा, गोरा हटजा अंक, पृ स 111

2 उपर्युक्त, पृ स 112

छप्पय[1]

पड्यो विखो अणपार, लार मे सरब जमानो ।
नह हाथी सुखपाल पमग नह फेर मियानों ।
दुरग छूट आऊवो, भूप चापो सह फिरियो ।
धर माळव ढूढाड, कणो नह आदर करियो ।
कपनो खून सुणियो कहर, भड मुख उत्तर भाखियो ।
पलटियो देव दूजो दसा, (जिण) रावत जोध राखियो ॥ 1 ॥

मार दोय अजट, खून मरुधर मे कीनो ।
फिर फौजा चहू ओर, जोर अगरेजा दीनो ॥
मगरा बिच फिरता फिरत, सहर सलूबर आखियो ।
केहरी हूत मिळियो कमध, भड मुख उत्तर भाखियो ।
पलटिया देव दूजी दसा, सगा सरब ही पलटिया ।
कमधज खुसाल चापा तिलक, रावत जोध राखिया ॥ 2 ॥

बिखा रा मारचोडा खुशालसिंह नै शरण देवण सू जोधसिंह र वास्तै लोकहृदय मे अणूतो आदर,भाव ऊपज्यो । बी रो प्रमाण इण प्रसग न लय नै रच्योडा लोकगीत है। लोकगीत उण वखत ई रचीजै, जद किणी घटना रो आम जनता माथै ऊडो असर हुव । कोठारिया मे खुशालसिंह नै शरण मिळण विषयक अेक लोकगीत इण भात है –

लोकगीत

बाकडलो मूछा रो ठाकर कोठारिया मे आयो रे
अगरेजा रा दुसमण नै मेवाड वधायो रे
भगडो भालियो ।

हा रे भगडो भालियो धरती मे थारो नाम रेला ओ
भगडो भालियो ।

राजड राणै दुरगा न मोत्या र थाळ वधायो रे –
अगरेजा सू आथड नै राठौड आयो रे
भगडो भालियो ।

1 प्रभात कवि रा रच्योडा—परपरा गोरा हटजा अक, पृ. स 112

हा रे भगड़ो भालियो धरती में अमर नाम रेला ओ
भगड़ो भालियो।

प्रसिद्ध चारण कवि कमजी दधवाड़िया ई जोधसिंह रैं सूरापणा री वखाण करता थका अेक डिंगल गीत लिख्यौ—

गीत

खागा भाट समराट लोह लाट भाजण खळा
तोल खग्रवाट घरवाट तोरा।
जणतो नाह रजवाट वट जोधड़ा,
वे गमाता जमीं नर बीज गोरा।।

डाकिया धसल सरबेत डक डोलड़ा,
पीयहर चोलड़ा ग्रमल पोधा।
हाथता भ्रज खागा जगत ढोलड़ा,
श्रीत जग बोलड़ा अमर कीधा।।

मोहकमा सुतन फिरंगाण लोपे हुकम
कहे हिंदवाण साबास काळा।
जाणता जिसा अेहलाण ग्राया निजर
ये उदेभाण नृप चहुआण वाळा।।

पड़े मचकूर सधन दावर पाड़िया,
जोध खग भाड़िया धको जमरो।
राय बिना फिरंग भेले कवण राड़िया
भम नव नाड़िया बीच भमरो।।[1]

इणी भांत अेक अग्यात कवि रो लिख्योड़ो डिंगल गीत ई मिळै जिणमें जोधसिंह रा राष्ट्रीय भावां री हवालो देवतां थकां वां री धवल कीरत रो वखाण करीज्यो है—

गीत[2]

हाथा खगाटा हमीर हथा बापदादा वाट हाल,
भ्राता बाप धणो लाळो मेलियो अरोड़।

---

1 राजस्थानी शोध संस्थान, चोपासनी रा संग्रह [illegible] प्राप्त।
2 उपर्युक्त।

घुवाते आऊवा तोपा लारै फिरगाण धायो,
मेल आयो मारु छत्रीपणा री मरोड ।।
राडीगारा चहुआण जाती राड योव राखी
साखो चद सूरज न वाता महासूर ।
प्रथी राज पणो जोधा ऊजळो देखायो प्रथी
जुद्ध काज सामो कोस दोय गो जरूर ।।
चहू छत्रधारी सुण वाखाणिया रायथाना,
हका वका फदे सका ऊजवके हठेन ।
सेवा आयो छाक जक जकं पाछो माग लागो,
ऊभो जतखभ हुवा समरी अठेल ।।

इण विवरण सू इण बात री जाण हुवै के 1857 री क्रांति री वेळा राजस्थान मे आऊवा ठाकुर खुशालसिंह, सलू बर रा रावत केशरीसिंह अर कोठारिया रा रावत जोधसिंह आगीवाण हा । अे सगळा आपरी शक्ति अर सामरथ रै मुताबिक सरावणजोग काम कीधौ । तीनू अेक ई प्रसग सू जुडयोडा । इणी कारण अेक री वखाण करती वखत दूजोडो आपो आप याद आव । खुशालसिंह क्राति री अग्नि नै सुळगावण वास्तै आपरो स कुछ होम कर दीधो, केसरीसिंह मदद राख नै इण अगन नै बुझण कोनी दी अर जोधसिंह विखा मे वीर नै आसरो देय न सूरापणा रो सबूत दीधो । इण त्रिमूर्ति नै कविगण आपरी श्रद्धा री अध्य चढायो ।

हाडौती री स्वतत्रता सग्राम

सन् सत्तावन रै आजादी रै जग मे कोटा री बगावत अेक उल्लेखजोग घटना । स्वतत्रता सग्राम मे राजस्थान रै योगदान री वात बी री वणन किया बिना अधूरी रेवै । इण बगावत मे कोटा रा पॉलिटिकल अेजट बटन अर उणारा दो बेटा नै रेजीडेंसी री इमारत मे बागिया गोळिया सू वीध नाम्या । कोटा री महाराव रामसिंह परवसू हुय नै राजम्हेल मे लवा अरसा ताई नजरबद रह्यो अर शहर मायं छ महीना ताई बागिया रो कब्जो रह्यो ।[1]

विद्रोह री आग दूजा स्थाना बिचै कोटा मे तेजी सू सुळगण रा

1 ट्रेंमर म चेप्टर ऑफ इंडियन म्यूटिनी, पृ स 12

वखतवायरा की कारण जरूर हा । पण ओ सगळो रोळो अचाण चक हुयग्यो, इसी वात कोनी । हाडोती क्षेत्र मे गोरी सत्ता र खिलाफ बेराजीपणा री अग्नि मोकळा टेम सू भरियोडा बीरा र उनमान चेतन ही । होळै होळै उणै जोर पकड्यो अर सन् सत्तावन मे वखतवायरै आग मे घी रो काम कीधो, कोटा मे लाय लागगी । वी री झाळ दिल्ली सू, लेय नै सात समदरा पार ठेठ लदन ताई पूगी ।

महाकवि सूयमल मीसण री अेक चिटठी में इण हालत री प्रामाणिक वर्णन मिळै ।[1] पण हाडोती मे गोरा सू नाराजगी नै समझण खातर इतिहास रा लारला पाना उथेलणा पडसी, जद ई इण वात री खुलासो हुवैला । अगरेजा सन् सत्तावन सू प'ली ई राजस्थान री राजनीति मे टाग अडावणी शुरू कर दीधी ही । वा री भात भात री कारगुजारिया री अठ रा सामाजिक अर धार्मिक जीवण माथ ई असर पड्यो । रजवाडा री राजनीति मे तो वा री पूरी दखल्दाजी ही । आजादी रा सग्राम सू तीसेक वरस पेली कोटा रा पृथ्वीसिंह अर बू दी रा वळवतसिंह हाडा रो बलिदान इण री साख भरै । अे दोनू वीर गोरा रै खिलाफ लडाई मे काम आया । उण री प्रशस्ति मे रच्योडो काव्य इण बात रो सबूत है कै इण वीरा रै वळिदान रो लोगा माथ कितरो असर पड्यो । इण सू लोगा री अगरेज विरोधी भावना री उडाण री पण जाण हुव ।

पथ्वीसिंह कोटा र महाराव उम्मेदसिंह (प्रथम) रो तीजो कु वर हो । वी रा बडा भाई महाराव किशोरसिंह (द्वितीय) राजगादी माथै हा । उण वखत रियासत रा मुसाहिब झाला झाला जालमसिंह सू किणी वात माथ बोलचाल हुयगी । अगरेज तो अेडा मौका री वाट ई जोवता । वा री कोशिश आ ईज रैवती के रजवाडा मे राजा राज अर प्रजा धन हुवै तो उण मे धादो घाल नै पचायती करण री रास्तो काढणो । इण वास्त कोटा री इण राड सू फायदो उठावण मे वे नेराई क्यू करता ? आछो अवसर आयो जाण नै अगरेजा जालमसिंह रै थापी देय नै वी न कोटा राजघराणा सू राड मोल लेवण खातर तैयार कीधो । जुद्ध मे अेस मिलन, ले क्काक,

---

1 वीरसतसई स डॉ कन्हैयालाल सहल, पृ स 76

ले रोड अर कर्नल जेरिंग नाम रा गोरा फौजी अफसर जालमसिंह रै कानी सू लड्या। श्रो जुद्ध सन् 1821 मे मागरोळ मे हुयो। झाला री मदद वास्तै आयोडी गोरी फौज रो मुकाबलो करण वास्तै सज्योडी महाराव री फौज रा सेनापति वा रा छोटा भाई पृथ्वीसिंह हा। इण जुद्ध मे पृथ्वीसिंह आपरी वीरता अर जुद्ध कौशल सू वरिया रा तै खोळा कर दीधा पण छेवट घायल हुय नै वीरगति पाई।

पृथ्वीसिंह रै बळिदान रो प्रजा माथै घणो असर पड्यो। कवियां वी री प्रशस्ति मे काव्य सिरजण कीधो। किशनजी आढा रा लिख्योडा की दूहा अर अेक डिंगल गीत मे गोरा सू हुयी भिड त मे पृथ्वीसिंह रै सूरापणं रो वणन मिळै। जिण वखत गोरा नै हत के तत करणो ई हिम्मत रो काम हो, पृथ्वीसिंह वानै खाडा री धार रो प्रसाद देय नै जबरो काम कीधो—

जीभ उपाड कुण जठै, अेस कथ अंगरेज।
पाण उपाडे पीथला, तू हो रजवट तेज॥

जुदभूमि मे वैरयां कानी पूठ फरण बिचै खाग्रा सू कटका बटका हुय नै मरण न अजसजोग मानण वाळा भड नै रंग दैवता थका कवि कह्यो—

पड नह भागै पीथला, घट भागो खग घाव।
तै जाडा अमला तणा, रंग छै हाडा राव॥

आपरा अग्रज महाराव किशोरसिंह सागै हुयोडो जुलम इण शूरवीर नै अगाई वाडो लाग्यो। उण आपरी पूरी ताकत सू विरोधिया रो मुकाबलो कीधो। पृथ्वीसिंह री इण कत्त व्यनिष्ठा अर सूरापणा नै कवि किसनजी आढा परमपरागत शैली मे इण भात वखाणिया है—

गीत

सज उम्मरा है निहग भाग खच सूर,
धोम जागो अरावा तवरा फैल धींग।
अबरा विलागो धू किसोर महाराव आग,
सार धारा इसी रीत वागो प्रथीसींग॥

घोर मोर तोपां गाज अग्राज असाढो घटा,
घाढो नीर कुला वाढो रावला चैन साव।

जेठी वधु आगलै कणेंठी भार झेल जाडो,
हुवो लाडो फ़ वारो घडा रो राव ॥

पृथ्वीसिंह रै दाई बूंदी रै बळवतसिंह हाडा न ई अगरेजा रै नाम सू झाळ छूटती । पृथ्वीसिंह रै ज्यू वो ई नामी भड । अगरेजा भात भात रा लोभ देय नै बी नै विलमावण री कोशिश कीधी पण आजादी रा मतवाळा इण वीर माथै धींगला भर ई असर कोनी हुयो । छेवट वो ई अग्रेजा सू लडता लडता काम आयो ।

बळवतसिंह गोरी सत्ता नै घणो दियोडो हो । अगरेज बी सू इतरा वराजी के उण रो नाम लेवता ई मिपोडी रै ज्यू उछळता । वा रै काळजा मे जाण धपळका ऊठता । आ वात कवि चडीदान मीसण रै सोरठा मे इण भात प्रगट हुयो है—

लोहा बळ हृद लाग, पग पग दो मण पाडिया ।
अगरेजा उर आग, बाळी भली बळूतसी ॥

दिल्ली अर दिखणाद सू आवणवाळी फौजा रो मुकाबलो उण आपरा भुजबळ सू कीधो । मायड भोम माथै अेडी विपदा औरू कदैई आया, उण अबखी पुळ मे बळवतसिंह हाडा जिसडा सपूत न ई सगळा चितारैला । कवि इण भाव न यू दर्शायो है—

दल दिल्ली दिखणाद, आहसो अगरेज सू ।
उण दिन आसी याद, बिलमी बेला बत तसी ॥

बळवतसिंह नै वखाणता थका कवि चडीदान मीसण अक डिंगल गीत लिख्यो है, जिण मे दोनू पक्षा री मशा रो चित्रण करीज्यो है—

गीत

अगरेज कहे मत मरे उलाळा तोडण गढ ताळा तरजूत ।
अब तो मान बटादर वाळा, रे ओगण गाळा रजपूत ।
कीधो घण परदेस कजा को, दळ लाखा सिर घाव दिया ।
तो जुध बना अमावड तोन, बावड आवै भोज विया ।।

× ×

अगरेजा धड सीस उतारू मारूं जद आळग मन

× ×

कहता झटक बाजनद काळा त्रवक अकळ कटक तणा

पड तोपा इक साय पळोला घु वाघोर गोला घमरोल

× ×

वूठो वेहर निघात वलोवेल सात पहर जूटो सादूल ॥

वळवतसिह हाडा रै बळिदान री महत्ता इण बात सू ई प्रगट हुवै के महाकवि सूयमल मीसण ई उण बाबत काव्य रचना कीधी है। वळवतसिह रै गामतरै वहीर हुवण री ठा पडता ई गोरा उण माथै हमलो कर दियो। इण भिड त रो वणन करता कवि कह्यौ है—

अगरेजा सुणता खबर सज फौज ससतर
मिलिया झाला माथवेस घलिया मू छा कर
घरहरिया तासा घुमड घरहरिया भवखर
गैवर माता गज्जिया हाकरिया हयवर ॥

गोरा अर वळवतसिह विचाळै हुयोडा जुद्ध रै विषय मे कवि दुर्गादत्त बारहठ अेक डिंगल गीत लिख्यो है। इण गीत मे जुद्ध रो सजीव चित्रण मिळै। सूरापणा रा कीरतमान थापणियै इण सग्राम रो जनमानस माथै ऊडो असर हुयो। इणी कारण उण वखत रा घावा अर ठावा कविया कविता रै माध्यम सू इण प्रसग नै घतियो वणावण री कोशिश कीधी।'

गीत

जुड सेन घडा जाडावाळी घोम जाळा री सावत जागो,
खडा आडावळा री लागी हाला री खुलास।
जोम गाडावाळी प्रलय काळा री उनागो जठ,
यागी हाडावाळी नराताळी री बाणास ॥

छायो धूम्रे अयास घमका सोर भका छूट
घोर तोपा अमला चरेल पखा घाण।
कतोर अडार टका ऊघडो परीर कका,
झडो थोर बका सीस असका झूसाण ॥

गज गाडा जबूरा जजाळा दागो गोम गाज,
दळां आडा अच्छरा अच्छरा लागी दोट।
जाडा घडां ऊपर जोसेल आग जागी जठे,
रोसेल गुराडां हाडा यागी खागा रीठ ॥

चगी फौजा विलूबै बडक्कै डाढ फुणी चौल,
उमग जोगणी काछा धडक्क उरेव।
हैजम्मां फडक्क बीज जगी होदां रगी हाड,
जडक्क फरगी सीस बग्गी जनेव॥

सुलै सिद्धा ताळिया रूप रा नचै वीर खेला,
रच गान चाळिया धूप रा रखा राज।
घमक्के झाळियां बीच भूपरा हाथियां चलो
नाळिया ऊपरा प्रळ काळियां नाराज॥

गोम बोम गाजियो उडातो सोर घोर गोळा
सेना भारतचोळां साजियो माथा सेस।
आराण साजियो डाय सवेगो कपनी आता,
न धातो बाजिया लेगो सभरो नरेस॥

ईख नरा नींदवा यचायो जीव बुद्ध ओरा,
वरगा बीदवा घोरा यचायो बीराण।
राटणी तबल्ला सोरां रचायो सयेरो राग,
पाटणी हिंदवा गोरां मचायो पीठाण॥

झुक परी यरेवाद रेवा काळ कूक झप,
चूकै डाक भरवा गडूक मच चार।
कठ रुक कायरां जुवाणा लुक सुक कई,
धुकै प्राण मुकै कै भमक्क थोणधार॥

सुणै दीधा दादरैं यटक्का भडा लीधा साथ,
पीधा चडी स्वाद रे गटक्का श्रोण पूत।
जग नाथ भात सीधा अटक्का ज्यू हो,
बाध र गटक्का कीधा बटक्का बळूत॥

पख्ब धारा पाए मौत रळेगो अमरां पुरा,
ऊजळेगो गोत बूंदी समरा अयाण।
ऊमरा घुल ता बास मलैगो अदोत दीहा,
चमरा ढुल ता गोत भलेगो चहुआण॥[1]

---

1 चारण साहित्य का इतिहास, भाग 2 पृ स 95 लेखक डॉ माहनलाल जिज्ञासु।

इण रचनावां सूं आ जाण हुवै के हाडोती मे 1857 सूं पे'ली ई गोरा रै खिलाफ मोकळो असतोष हो । उत्तर भारत मे हुयोडी फौजी बगावत इण आग मे घी रो काम कीधो । उत्तर भारत में विद्रोह री शुरुआत सन् 1857 रा मई महीना मे हुई पण राजस्थान मे विद्रोह री धम्मीडो पे'लपात आठ सितम्बर नै आऊवा मे अर पछै पनरै अक्टूबर नै कोटा मे सुणीज्यो । विद्रोही सैनिक ठोड ठोड गोरा नै जिण ढग सूं जमलोक पुगाया बी रो असर आखै मुलक माथै पड्यो । गोरा अफसर धेलीज गया । राजस्थान मे नौकरी करण वाळा अगरेज अफसरा रै जीव नै भिरै हुयमी अर वे आपरी हिफाजत रो पक्कावट इतजाम करण लागा । कोटा रा पॉलिटिक्ल अेजट बर्टन नै कमाडिंग अफसर कर्नल मैकडानल्ड जरूरी सलाहसू त वास्त नीमच बुलायो । बारै अक्टूबर नै पाछो कोटे आया बी नै ठा पडी के महाराव री फौज मे बगावत री लाय लागगी ही ।

बी रै धावडिया महाराव उणसूं मिळण न गया अर दूजै दिन वा सूं मिळण वास्त बर्टन गढ मे गयो । जरूरी बातचतळ पछै महाराव नै अेकण कानी ले जाय नै उणै पाटी पढायो के फौज मे विद्रोहिया रा सरगना जयदयाल अर बी रा दूजा सात सगी साथिया नै तुरत अगरेजा नै सूंप दो जिणसूं विद्रोह री अग्नि नै बुझावण री गोठवण हुय सकै ।

आ गुप्त मत्रणा कोटा राज रा अेक ठाणपूर वकील री मौजूदगी मे हुयी । उणै सैनिका नै सावचेत कर दीधा । दूजोडै दिन ई बागिया बटन नै बेटा समेत परमधाम पठाय दियो ।[1] महाराव रामसिंह गोरा रा खास हुकम बजावणिया तावेदार हा पण जयदयाल वगैरा न दडण वार हाथ कोनी हो । इण वास्त इण बाबत वे बटन न हाथ जोड दीधा ।[2] उठी नै नेतावा नै गिरफ्तार करण री मेजर बटन री धालमेल री ठा पडता ई फौज तो बिफरघोडा भवरा दाई हुयगी अर पनर अक्टूबर नै प्रभात रा फौज अर जनता पालिटिकल अेजट रा बगला न घेर लीधो । बागिया बगला रा हत्या मे रैवणिया डॉ सेडलर अर अेक भारतीय ईसाई सेवील नै मार

---

1 बीरसतसई, पूर्वोक्त, पृ सं 72

2 ट्रेंचर, अ चेप्टर आफ इडियन म्यूटिनी, पृ स 12

नाख्या। इतिहासज्ञ डा मथुरालाल शर्मा इण घटना री विगत दवता थका लिख्यो है—बगळा माथै गोळाबारी शुरू हुयी। माय नै मेजर बटन ग्रर बी रा दो बेटा सागै वा री सामधरमी नौकर अेक रबारी पण हो। लगता चार घटा ताई बगला माथै गोळा गोळिया री ग्रामझोक चालती रही। च्यारू जणा हिम्मत सू ग्रात्मरक्षा करता रह्या। छेवट बागिया बगळा र लापो लगाय दीधो। निसरणी माड न वे बगळा मे बडग्या। डागळै पूगा ग्रर मेजर ग्रर बी रा दोनू बेटा न धन तेरस र दिन जमलोक पूगाय दीधा। बर्टन री माथो कोटा शहर मे फरनै पछे तोप सू उडाय दियो। इण पछ कोटो नगर विद्रोहिया रै कब्जा मे ग्रायग्यो। महाराव की राजपूत सरदारा सागै गढ बद कर नै मायन बठग्या। ग्रा कोई जोग री बात ही के बटन धन तेरस नै मारीज्यो ग्रर उण बरस री दीवाळी कोटो नगर शोणितस्नात हुयन मनायी। कोटा नगर माथ बागिया री कब्जो 20 ग्रप्रल 1858 ताई रह्यो। इण छ महीना रा गाळा मे महाराव री फौज ग्रर गोरा मे कोटा शहर री गळिया ग्रर सडका माथ घमसाण चालतो रह्यो।[1]

नीमली ठाकुर नै लिख्योडी ग्रापरी अेक चिट्ठी मे महाकवि सूयमल मीसण इण सगळा तथ्या री ताईद कीधी है। उणा लिख्यो "ग्रोर कोटे दुपालो हो रह्यो छै। परदेसी लोग ग्रर तोपा तो अेक तरफ छै ग्रर महारावजी ग्रर भाई अेक तरफ छ। जोधपुर की फौज ग्रासोप पर ग्राई छी सो बिगड कर पाछी गई। तोपा ग्रसबाव खुल्यो गयो, फौज मे मालिक सिंघी कुशलराज छौ सो पाछो जोधपुर जाता ई राजा, जी नै कद कियो। लडाई ग्रासोप का पट्टा गाव बहलू मे हुई ग्रर पूरब की तरफ सो पेसवा नै हा साहब नखलेऊ वाला है तथा इगरेज का बदल्या लोग है। सामिल लै'र अतरवेद मे ग्रागरा सौं नजदीक ग्राई गया छ। परतु ग्रागरै तो न ग्रटकै ग्रर चल्या ग्रावै तो ठीक दीसै ▪। श्री गगा के घाट थाग उतरघा सुण्या छ ग्रोर बडोदा सो राजाजी नै तथा कवरजी न सौपुर मे ग्रमलजाई कियो छै सो जाणसी ग्रोर कोटे काति वद तेरस के दिन ग्रफ्फट बरटन साहब बेटा दोई सहित

---

1 डा मथुरालाल शर्मा, हाडोती का स्वतत्रता ग्रादोलन पृ स 2 3

मारयो सो तो पहिला सुणी ई होसी। ऊ बदल्या लोगा मे वतन कामा को कायस्थ लाला जयदयाल छै। नीमच सो वरटन कोटे आयो जद महारावजी सो पाच सात आदमी गल देवा वास्त माग्या त्या मे ओ जयदयाल बी छै। महारावजी तो कही या म्हारा काबू मे नही फेर ऊ ही रात ई जयदयाल नै परदेसी लोग तमाम इक्मनो कियो। तडक ई बगल तोपा लगाई। इगरेज मारि लियो ती पछो मुसायब मु शी रतनलाल महारावजी की खास डोढी पर सो पकड ले गया। वहोत वेइज्जती करि कद कियो। और भी सब किल्लेदार कैद किया। धा भाई लालजी अर देवता छोटूजी ये दो ही महारावजी नै छिपाय राख्या छ। लोग तो या बी नी खै बी आपका चाकर भाई सगा तो पहली ही छा अर अब मेवाड की मदद आ गई छै ती सहित हजार पाच छै हो गई छै। परतु कोटे तोपा वडी छोटी कर नग 127 छै। परतु तमाम वदल्या लोग के हाथ छै। तोपा का मू डा महला पर लगा राख्या छ। जे रजपूत नाम धराव छा अर साचा रजपूत नही छा ज्या की वेइज्जती घणी करी।"[1]

सरपात मे विद्रोही महाराव रै घणा खिलाफ कोनी हा। पण नजरवद हुया पछै महाराव अगरेज अफसरा नै खरीतो लिखनै मदद मागी। खरीतो ले जावणियो कासिद नगर सू बारै निवळता ई बागिया रै हत्थै चढग्यो। खरीता मे लिख्योडी हकीकत बाच नै वे महाराव माथै घणा रीसाणा। खरीतो बागिया र हाथ लागण री ठा पडया महाराव नै घणो सताप हुयो। बागी नेतावा नै वे राजीपा री सदेश मोकळायो। मथुराधीश मदिर रा स्वामी गोस्वामी कन्हैयालालजी महाराज वीच मे पड नै सुलह करायी। सुलहनामा मे नव शर्तों ही। वी मे महाराव सू आ बात हकराइजी के मेजर वटन री हत्या वा रै हुक्म सू हुयी। राजीपा पछ की अठवाडिया ताई शाति रही। - - महाराव री मदद वास्तै जनरल रॉवट्‌स री अगुवाई मे गोरी फौज बीस मार्च 1858 न पूगी। योजना बणाय नै इगतीस मार्च न बागिया माथै जवरो हमलो करीज्यो। तोपा सू भारी घमसाण हुयो। सिझ्या ताई सगळा शहर माथै पाछो अगरेजा रो कब्जो हुयग्यो। पछै शहर मे कत्लेआम

---

1 वीरसतसई, डॉ सहल री सम्पादित कीयोडी पृ स 72

हुयो । वागी नेता लाला जयदयाल अर वा रा साथिया न पकड नै तोपा सू उडाय दीधा ।[1]

ट्रेवर अर लारेंस सरीखा अगरेज लेखक अर वा रा दूजा भाई वधुआ कोटा विद्रोह नै फगत फौज रा की अफसरा री बगावत मानी है । पण उण वखत री घटनावा री छाणबीण सू कोटा री जनता अर अेलकारा रै विद्रोहिया रै वळू हुवण री साफ ठा पड़ै । विद्रोह री नेता जयदयाल कोटा रो वाशिदो हो । दूजो करोली रो महरावखा हो जिण रो कोटा मे थतियो मुकाम हो । तीजोडो नेता इसरार अली उजीटन ई कोटा रो इज हो । इणसू प्रजा माथै वा रै असर री जाणकारी हुवै ।[2]

दूजी वात आ के वगावत री लाय फगत कोटा शहर पनाह न ई नी, रियासत रा परगना नै ई दाझ्या । छ महीना ताई रियासत माथै विद्रोहिया री कब्जो रवणो विद्रोह री कामयाबी री प्रमाण । जनता रै पीठबळ विना अेडी कामयाबी कोकर मिळती ? इणरै असावा अेक ध्यान देवण जोग बात आ के बागिया लूटपाट अर तोड भाग री निसाण सरकारी इमारता न ई वणाई । जनता र कठै ई अेल ई नी आई । जनता न लूटण री पराक्रम अगरेजी सेना कीधो । इणसू ओ साबित हुवै के आम जनता विद्रोह सू जुडयोडी ही । बी न फगत सिपाही विद्रोह केवणो सूनी मगजमारी है ।

इतिहास लेखन म्हारो विषय नी होवता थका ई कोटा री बगावत री बात माड नै कवण री वजह आ के विद्रोह री महत्ता इणरै माध्यम सू समझायी जा सकै । इसा जबरा विद्रोह नै कवियां किण दीठ सू देख्यो ? ओ घटनाक्रम वा रै हियै उतरियो के नी ? अर वे इणन बखाण्यो के नी ? इण सगळी बाता रा खुलासा वास्त इण घटना री लेखो जोखो सामी होवणो जरूरी । कोटा री विद्रोह आजादी रै सग्राम री अेक ठावी अर चावी घटना । पण अचभो इण बात री के उण टेम रा कोई कवि (सूर्यमलजी मीसण री चिट्ठिया रा अपवाद नै छोड'र) इण विषय मे काव्य सिरजण नी कीधो । इण शोधप्रबध रै खातर राजस्थान रा सगळा खूणा खोचरा सू

---

1 डा मथुरालाल शर्मा, पूर्वोक्त पृ स 4-5

2 डॉ मथुरालाल शर्मा, पूर्वोक्त, पृ स 4-5

सामग्री भेळी करण री पूरी कोशिश करीजी। खास खास घटनावा बाबत कविगण आपरा मनोभाव कीकर दर्शाया है, आ बात खास तौर सू ध्यान मे राखी। पण कोटा विद्रोह जिसी नामचीण घटना री कविया गिनर ई नी कीधी, ओ अेक विचारजोग मुद्दो है।

इणरै पे ली नै पछै स्वतन्त्रता सग्राम सू जुडचोडी घटनावा अर उठै काम आवणिया जु मारा रो यशोगान कविया घणै मोद सू कीधो। तो पछ कोटा रा अजसजोग सघष अर शहीदा नै कवि माव डावा नाख दीधा, इणरी वजह काई ?

म्हनै इसी लखावै के इणरी वजह आ हुय सकै के उण वखत री कविता सामती वातावरण मे जनमी अर पागरी। बी री आपरी न्यारी मठोठ अर मिजाज है अर वा अेक खास रग मे रगीज्योडी है। घणकरा कवि चारण हा। कविता करणी ज्यारो पेशो। बा री रोटी रोजी सरदार सामता रै पाण चालती। जनता सू वा रै कोई लवलेस नी हो। कोटा री बगावत मे कोई सामत आगीवाण नी होवण सू चारण कविया इणरी तियना ई कोनी करी। इण विपय मे की कवण री बा नै जची कोनी। लाला जयदयाल, महरावखा अर इसरार अली अे सगळा आम आदमी हा। वे भला ई आपरा प्राण होमिया पण कविया नै उणा रा बळिदान सू काव्य सिरजण री प्रेरणा नी मिळी। वे इण लायक नी हा के वा री प्रशस्ति मे फौजा रा भार सू शेपनाग रो माथो हिलाईजतो, तोपा र धम्मीडा सू आभो कपायमान करीजतो अर वीरा नै वरमाळा पैरावण नै अप्सरावा बुलाईजती। जे आ बात साची नी है तो पछै इसी अजस जोग घटना री गिनर नी करण री काई कारण ? इतरा देशभक्ता र नि स्वार्थ बळिदान बाबत चू कारो ई नी।

उण वखत रा चारण कवि भला ई कोटा विद्रोह री अनदेखी कर दीधी पण इण जन विद्रोह र विपय मे अेक अनात जनकवि 'ककका बत्तीसी' री रचना कीधी। जिण मे इणरी पूरी विगत मिळ। 'ककका बत्तीसी' उण टेम रा लोककाव्य री जनता मे बहु-प्रचलित विधा ही। कीणी खास घटना नै लेय नै वर्णमाळा रा वर्णा रा क्रम सू इण ढग सू तुकबदी करीजती के वा जनता रै हिवडै रो हार बण जावती। 'ककका बत्तीसी' मे कोटा विद्रोह री विशद वर्णन जिण भात हुयो है, वीं री बानगी इण भात है—

कक्का खोटो दन कोटा तणो, कह गरथ विस्तार,
पल्टी फौज महाराव की, सो 'बरटन' लीनो मार ।

खखा खडमड लालो[1] चढ्यो लेकर सारी फौज,
'बरटन' बगलै मारियो, घन तेरस के रोज ।

गगा गोला चालिया, बगलो टूटी नाई,
कुटुम समेत 'बरटन' मरयो, धुर कोटा के मांई ।

घघा गेला तो महारावजी, गाड़ू बाकी फौज,
दुनिया बगडी सेर की, सबको खोयो खोज ।

× ×

डडा डरप गया महारावजी, वई फौज न गोठ,
लडबो मरबो छोड दो, आपडै काल पर चोट ।

दद सू तो कागद लिख्या, भेज दिया अजमेर,
चढ़ी फौज अगरेज की, लाला न लीनो घेर ।

थथा थर थर तो कोटो करै, तो पाव है असराल,
लालै लूट्यो सैर ने, दुनिया काढ गाल ।

बबा बूदी मे आ घुस्या धुर कोटा का लोग,
गलियारों रोता फिर, नहीं ढोल मे धोग ।

इण भात 'कक्का बत्तीसी' मे कोटा विद्रोह री पूटरो अर सातरो प्रामाणिक वर्णन मिळ । अेकरण कानी महाराव रामसिंह अर बी री सेना नै 'गेला तो महारावजी अर गाडू बारी फौज' री सज्ञा देय नै गह उडाईजी है अर दूजी कानी बागी मनिका शहर मे जिकी लूटपाट कीधी, वी न याद कर न विद्रोही नेता न ई वागा पराईज्या है—'लालै लूट्यो सैर न, दुनिया काढै गाळ ।' मेजर बटन री हत्या महाराव री विद्रोहिया सू सुलह अर गोरा रै हमला इत्याद बाता री भय सू इति ताई वणन 'कक्का बत्तीसी' मे मौजूद है ।

आजादी रा जूझार—शकरदान सामोर

महाकवि सूयमल मीसण र दाई शकरदान सामोर ई भारत री आजादी रै पेलडै जग रा प्रत्यक्षदर्शी कवि । परदेशी सत्ता री पापो

---

1 विद्रोही नेता लाला जयदयाल ।

काटण वास्तै हुयोडा विद्रोह नै वे निजरा देख्यौ। उणा जिसौ स्वतन्त्रचेता कवि बी मू अळगो रैय न तमाशो कीकर देखतो ? उणा इण यज्ञ री अग्नि नै कविता रूपी समिधा सू चेतन राखी। वे पक्का राष्ट्रवादी अर निडर प्रकृति रा कवि हा। परदेशी सत्ता वा न आखा दीठी नी सुहावती। आ भावना वा री काव्य वेलडी रौ जीवण रस। इण वजह सू वा र विषय मे ओ दूहो क्हावत रै उनमान मिनखा री जुवान माथ—

> मीत ज साचो देश रौ, अरिया उल्टी रीत।
> शकरिय सामोर रा, गोली जिसडा गीत।।

कवि र रच्योडा गीत गोळी रै ज्यू मार करता। उणा आम आदमी रै खातर सत्ता सामी पग माडिया। काळजै री कोर सू निकळयोडा वा रा बोल वदूक री गोळी रै ज्यू असर करता।

> रह्यो हितु यण रयत रौ, लाग लपेट सह तोड।
> ना'हा मिनखा हित लड्यौ, मुलकतणो सिरमोड।।[1]

अेक समकालीन कवि शकरदान री काव्य प्रतिभा नै नमन करता थका विधाता नै अरज कीधी—

> नह जणजै जग मे निलज, दीण हीण दबकैल।
> वेमाता हेकण भल, जण शकर जबरैल।।[2]

उण वखत रा राजस्थानी कविया मे परदेशी सत्ता रै खिलाफ इतरी थवड धाड लिखण वाळा कविया मे सूयमल मीसण र पछै शकरदान सामोर ई निगै आवै। मीसणजी रै ज्यू काव्यरचना रै अलावा वे निजू कोशिशा सू उण टेम रा जोगा सामत सरदारा नै आजादी री लडाई मे शरीक होवण री प्रेरणा दीधी। जठ जरूरी हुयौ वा री मरदाई नै जगावण खातर खरी खोटी बाता ई सुणाई। महाकवि मीसण र अलावा फगत शकरदान सामोर मे ई प्रखर राष्ट्रीय भावना रो तेज दीसै। आपरा मायडभोम सू अणूतो प्रेम अर कविता मे अद्भुत ओज वा री खास विशेषतावा।

अेडा तेजवान राष्ट्रवादी कवि री निजी जिनगाणी बाबत ई धी

---

1 मिनायच दयाळदास री क्ह्यौ।
2 गिरधारीसिंह गारवदेसर (बीकानर) रचित।

जाणणौ ठीक रैसी। कवि चूरू जिला रा बोबासर गाव मे ई सन् 1824 मे जनम्या। पिता री नाम शेरजी अर मातुश्री जीवूबाई। वा रा जोडायत हा चद्रक्वर। कवि रै सतान फगत अेक बाया सरदार कवर। इडाळी गाव मे परणायोडी। उठै वा री खुदायोडो अर बेटी नै दायजा तरीक दियोडो कुवो आज ई मौजूद। श्री शकरदानजी रै कुव रै नाम सू ओळखीज। ई सन् 1878 मे वा रो सुरगवास हुयो।

राजस्थान रा दूजा हिस्सा रै ज्यू 1857 रै आजादी सग्राम मे शेखावाटी मे ई विद्रोह री अग्नि सुळगी। इण क्षेत्र रा घणकरा सरदार सामत इण यन मे पे'लडी आहुति दीधी। शकरदान सामोर शेखावाटी रै क्रातिकारिया रा आगीवाण अर मागदशक कवि हा। वे इण क्षेत्र मे आजादी री लडाई री किण अकल हुशियारी सू सचालन कीधी, नादारा अर देशद्रोहिया रै माजना मे कीकर धड नाखी, राष्ट्र प्रमिया न किया विडदाया, आ बात आगै रा प्रसगा सू साफ हुय जासी। इणसू पै'ली वे परदेशी सत्ता री कुटळाई री कितरी ऊडाण सू पारख कीधी अर राष्ट्रोद्धार री काई मारग बतायो, इण माथ विचार करणो जरूरी।

महाकवि बाकीदास अर सूयमल मीसण रै अलावा शकरदान सामोर ई गोरी सत्ता री नब्ज रा पारगत पारखू कवि हा। आ बात वा रा उण गीत (शुद्ध साणोर) सू साफ भळक जिण मे गोरा री कुटळाई रौ वणन है। भारत मे आपरा पगफेरा सू लगाय नै चौफेर आपरो अमल जमावण ताई गोरा जिको ऊधा पाधरा काम कीधा, वा री मगळी विगत इण गीत मे है। गीत रै छवाडे कवि देशवासिया नै उदबोधन ई दीधो है।

गीत[1]

बडो आणोजा नीत हित देस जाणै बुरी,
नफ [illegible] भलौ ओ बुरो नाप।
कुलखणा देसहित काज करसी किसा,
दुखिया री लूट हू नहीं धापै॥

---

1 श्री कैलाशदान उज्ज्वल, आई ए एस रा सग्रह सू प्राप्त।

बिग्रज रो नाम ले आया वरा बापडा,
तापडा तोडिया राज ताई ।
मौको या मुगला रो मान जिरा मारियो,
पोखा था कुरा कया समझ काई ॥

धोळ दिन देखता नवाबी धपाई,
सताई बेगमा श्रवध साई ।
खोडला फौज हिंदवाण री खपाई,
सफाई नाखी मत सरम खाई ॥

धरा हिंदवाण री दाव रह्या दग सू,
प्रगट मे लडया ही पार पडसी ।
सकट मे इक होय भेद मेटो सकळ,
लोक जद जोस सू जबर लडसी ॥

मिळ मुसलमान रजपूत ओ मरैठा,
जाट सिख पथ छड जबर जुडसी ।
दौडसी देस रा दव्योडा ढाकल कर,
मुलक रा मीठा ठग तुरत मुडसी ॥

भरोसो छोड फिरगारा रा भ्रम्योडा,
निरखसी नफो मुकसारा नक्की ।
नवोनित धान करसारा निपजावसी,
(तो) पावसी फतै हिंदवारा पक्की ॥

भारतखड री रिध सिध री कहाणिया सुरानै निरा ई हमलावर अठ लूटपाट करण नै आया अर भालमत्तो लेय नै वुम्रा गया । कवि री नजर मे अग्रेज प'छी वाळा हमलावरा विचै घणा कुटळ अर छपनदूता हा । पे'लीवाळा लुटेरा री असर तो फगत म्हैला मायै ई हुयो पण गोरा री लूट रो रेलो तो झू पडा ताई पूगग्यो । इण वास्त अेकमतै होय नै वा रो मुकावलो करणो घणो जरूरी । कविता रै माध्यम सू कवि आ वात इण भात कही है—

दूहा

फद होयगो फोगडां, ज्ञान तणो आ गध ।
सरलाई मेटण सज्या, अब गोरा मद अध ॥

महलज लूटण मे फळा, घळ्या सुण चगेज ।
लूटण भ रा लालची, आया बस अगरेज ॥

मेट फूट हुय इकमत, गोरां ढिग कर गाज ।
तेलडिया नै मिळ तुरत, ओज दिखावौ आज ॥

1857 ई री क्राति रै मौकै उणां ओजस्वी वाणी मे राष्ट्र नै जगायो । सगळा देशवासिया नै उणा कह्यो के परदेशी सत्ता रा गिरै न मेटण रो अवसर आयगो है । इण वास्तै अब जम नै रीठ उडा-वणो है । जे आळस अर कुसप री वजह सू ओ मोको चूक गया तो पछ सपनै देखज साबलो नापासर रा रूख ।

छप्पय

आयौ ओसर आज, प्रजा पख पूरण पाळण ।
आयौ ओसर आज, गरब गोरा रौ गाळण ।
आयौ ओसर आज, रीत राखण हिंदवांणी ।
आयौ ओसर आज, विकट रण खाग बजाणी ।
फाळ हिरण चूक्या फटक पाछो फाल न पावसी ।
आजाद हिंद करवा अवर, ओसर इस्यो न आवसी ॥

आजादी रा सग्राम मे शरीक होवण वास्तै कवि आपरै भेळा ऊठण बठण वाळा न कीकर तयार कीधा, इणरा अनेक दाखला मौजूद है । चूरू जिला मे गोपाळपुरो बीदावता री पाटवी ठिकाणो । द्रोणपुर बी री जूनो नाम । उठा रा ठाकुर हमीरसिह न आजादी री लडाई मे शामिल हुवण अर क्रातिकारिया री मदद वास्त हियो आधो मन पाछो करता देखन कवि कह्यो—

तन मोटो मोटो तखत, मोटो पख गभीर ।
हुयौ देशहित पग्र अब, मन छोटो हम्मीर ॥

इण दूहा री गोपाळपुरा ठाकुर हमीरसिह माथै इतरो असर हुयो कै वे तुरत स्वतंत्रता सग्राम मे शामिल हुयग्या । जद चूरू माय फिरगी फौज र हमला रो डटनै मुकाबलो कीधो तो कवि री रीझ इण भात प्रगट हुयी—

धणी द्रोणपुर धाबियो, बीदो बोलर बोल ।
फबै फिरगी फेरणो, शकर सबद सतोल ॥

अर साचाणी कवि शकर रा सबद सतोल (वजनी) हा । जदै ई तो श्रोता माथै इतरो असर हुवतो ।

मारवाड रै दाई शेखावाटी रा ई मोकळा जागीरदार 1857 रा आजादी रा जग री हरावळ मे रह्या । मारवाड नरेश तखतसिंह अगरेजा रा इशारा माथ आजादी रा जू भारा नै दबावण वास्त आपरी फौज भेजनै आऊवा अर आसोप ठिकाणा नै माटी मे मिळाय दीधा । सागै इ बात शेखावाटी मे वखाणी । उठै अगेजा री हाजरी बीकानेर नरेश सरदारसिंह बजायी । बागिया नै दबावण खातर बीकानेर री फौज गोरी फौज रै आडे जोडे ढोल रै ज्यू डीडिया रै ज्यू तैयार । आखा राजस्थान मे रजवाडा आपरा क्षुद्र स्वार्थो खातर आपरा भाई बाधवा रा इज गळा वाढिया, इणसू वेमी अजोगी बात काई हुवती ? शेखावाटी मे बहल शेखावता री मोटी ठिकाणी । बहल परदेशी सत्ता रै खिलाफ विद्रोह री भडो ऊभो कीधो । लगेटगै तीन सौ शेखावत सरदार आजादी रा जग मे शरीक होवण खातर बी री अगुआई मे भेळा हुया । गोरा बीकानेरी फौज री मदद सू बहल माथै हमलो कीधो । जम'र लडाई हुई जिण मे सैकड जू भार काम आया । अेक कानी तो देश री आजादी रै वास्तै परदेशिया सू भिडणिया शेखावाटी रा शूरवीर अर दूजी कानी सैणा सू दोखीपणो कर, वैरया भेळा भिळ न आपरी राठोडी री सबूत देवता थका बीकानेरी राठौड ।

शकरदान जेडा राष्ट्रभक्त, निडर अर खुद्दार कवि रै गळै आ अणहूँती बात कीकर उतरती ? बीकानेर नरेश सरदारसिंह माथ वानै घणी रीस आई । इतिहास इण खूटलपणा नै अक्षम्य मानैला, कवि री ओ हुक्मत । सत्य रै पुजारी इण कवि इमी ओछी करणी वास्तै बीकानेर माळा न आडै हाथा लीधा । खरी-खरी सुणाई । कवि रा वे वचन अजरा अमर है । जद कदई राजस्थान मे आजादी रै जग री बात चालसी, इण स्वतत्रचेता कवि रा बोल मतैई काना मे गू जला ।

बिना कोई डर भौ के लिहाज रै खरी बात कैवणी, आ कवि रै व्यक्तित्व री खास खूबी । अेक सरावणजोग इधकी बात । घणाकरा चारण कवि इण कळक सू दागल हुयोडा के पेट रै पडपच रै खातर वे फगत झूठी तारीफा रा डू गर ऊभा करता । सगळी तोतै तोत ।

नाडा नैं समदर बतावता। पण इणीज चारण परपरा मे शकरदान जिसडा निडर अर नि स्वार्थ कवि ई मौजूद, जिण ऊध मारग जावता अर अजोगो काम करता देखनै बीकानेर नरेश जिसा टणक चदजी री स्यान रा टक्का करता जेज कोनी कीधी। अर निधडक हुय नै कह्यो—

'सरदारा तोने सदा, कहसी जगत कपूत।'

राजा रै सागै सागै बीकानेर रा सगळा राजतत्र रा नाजोगापण न उजागर करता थका कवि कह्यो—

डफ राजा, डफ मुसद्दी, डफ ही देश दीवाण।
डफ हो डफ भेला हुया, बाज्यो डफ बीकाण॥

राज काज मे अेकाघो ई दानो आदमी होवतो तो राजा नै सही सलाह जरूर देवतो पण उठ तो सगळा डोफा री जमात भेळी हुयगी ही।

वहल री महिमा चित्तोड र आडे जोडे बतावता थका कवि घणा अजस सू वी रो बखाण कीधो—

सम्पत लडे सिसोद सम, बहल बहुरि चित्तौड।
बीका सू लाजा मर लाज करो राठौड॥

तीन सहस भड भोज रा, चढ्या गुडा सू चेत।
गोरा रौ प्रभ गालवा, रखवा रयत हेत॥

अलादीन अकबर बण्या, थे बीका सिर मौड।
वहल बणी चितौड अब, बणई सर राठौड॥[1]

शेखावता कानी सू राठोडा नै समझावता थका कवि कह्यो —

फौज भोज री ना मुड, सुण बीका सिरताज।
गोरा जदवद जावसी, थ म्है रहस्या राज॥

भोजाणी भड भिड रह्या, गोरा सू कर काज।
गन्नो साधो गिनायता, कौं तो खावो लाज॥[2]

कवि राठोडा न धुरकारिया अर कह्यो, करणो हुव तो की

---

1 राजस्थानो शोध सस्थान, चोपासनो रा सग्रह सू प्राप्त।
2 उपयु क्त।

नामवरी जोग काम करो। गोरा रा हमगीर बण नै काई नव री तेर कर रहया हो—

बणणो हुवै तो भल बणो, रे जयमल राठोड।
बीकाणै बहुरण चढै, अखियातां ले मोड ॥

सोगन थारै इष्ट री, जे थार कीं होय।
गोरा रा हमगीर बण, मतो निवावो लोय ॥[1]

इण मोके शेखावता अर राठोडा री फरक बतावता कवि कवै—

अे गोरा सू अड रह्या, ये गोरा हित आज।
बीका सेखा अो फरक, इक रैयत इक राज ॥[2]

गोग रा मददगार बण नै म्हल माथै चढाई करण नै आयोडा बीकानेर नरेश नै कवि शेखावता रै मुंडा सूं केवायो के जे थारी नीयत मे खोट आयगी है तो म्हैं बहल राजीखुशी देवण नै तैयार हा, पण इण फिरंगिया नै तो पाछा वाळो। इणा नै बीद बणाय नै सागै क्यूं लाया हो ?

निजर करा नृप निमण कर, (जे) बहल आयगी वाय।[3]
पूठो फेर फिरंग नैं, गाजा बाजा गाय ॥

इण दूहा सूं साफ ठा पडै के कवि नैं परदेशी सत्ता सूं कितरी घृण ही। बहल भलाई शेखावाटी मे रैवो के बीकानेरी मे, इणसूं की फरक नी पडणो हो पण बहल परदेशिया रै हाथा में जावण सू सुद री बद होवणी ही। कवि नै इण बात सूं घणो रंज हुयो के बीकानेर री राजा दुसमणा री पल्लो पकड नै बहल माथ चढाई कीधी। इण वास्त बळतै काळजै उणै कह्यो—

सोरठो

दास बाधवा खीज, सैण गेरिया जिण सदा।
(तू) वाया अेहड़ा बीज, फोग फोग फळ भोगसी ॥

---

1 राजस्थानी शोध सस्थान चौपासनी रा सग्रह सूं प्राप्त।
2 उपयुक्त।
3 उपयुक्त।

दूहा

लाज न कर घोटेह लड, देस बचावण दीन।
घळिदाना बिन वापडा, रजवट कदे रही न ॥

देस मरै हित देस र, देख सचौ रजपूत।
सरदारा तोन सदा, कहसी जगत कपूत ॥

आजादी रै जग री वणन करती वखत कवि री दीठ मे फगत राजस्थान ई नी रह्यो। पूरा भारत मे चालण वाळा स्वतन्त्रता सग्राम री कवि नै जाणकारी ही। इण वजह सू आजादी रा जग मे जूझणिया सगळा वीरा नै वे आपरा श्रद्धासुमन चढाया। चावा स्वतन्त्रता सेनानी तात्या टोपे रै विषय मे कवि कह्यो—

जठै गयो जग जीतियो, खटक बिन रणखेत।
तकडो लडियो तांतियो, हिंदवांन र हेत ॥

इण जू भार री तारीफ में कवि रो लिख्योडो अेक डिंगल गीत इण भात है—

गीत (सु पखरो)

मचायो हिंद मे आखो तहलको तांतियै मोटो
घोम जेम घुमायो लक मे हरण घोर।
रचायो रळती राजपूतो रो आसरी रग
जग मे दिखायो सुवायो अथाग जोर ॥

× ×

हुय हतास राजपूती छोडियो छत्रिया हाथ।
साथ चगो सोधियो दिवखणी महासूर ॥
खिडदधार छतोसा वस री वण वाको वीर।
नीरधारी हिंद री बचायो तागो नूर ॥

× ×

पळकती आकास बीज कठै ई जोवती पड
छड तातिय री व्हैगो इसी ही छलाग
खळकती नघा रा खाळ माहे हूतो पाड खड
लड रण विध्ध लाखा हूत इकलाग ।[1]

1 राजस्थानी शोध सस्थान (चोपासनी) रा सग्रह सू ।

गीत मे 'रचायी रूळती रजपूती री आखरी रग' अर 'पळकती आकास बीज कठ ही पडै' इत्याद उक्तिया तात्या बाबत कवि रै अध्ययन रै उडाण री साक्षी है। तात्या जिण ढग सू बरसा लग अलोप रह्या अर शत्रुवा माथै आछावूच सू जोरदार हमला करता रह्या, आ बात समझावण वास्ते 'पळकती अकास बीज कठै ही जावती पडै', घणी ओपती उक्ति है। थोडासीक शब्दा मे बात री मरम दर्शाय नै तवा मे कडाव नै समेट दियो। इणी भात उण वखत मोकळा राजपूत शासका रा घरफोडू कामा रा घटाटोप मे आजादी रा जग रा जूझार रै अतुल पराक्रम रो उजास देख नै कवि हरखित हुय नै कह्यो—"रचायो रुळती रजपूती री आखरी रग।" आ उक्ति हेम रा गेहणा मे जडचोडा हीरा रै ज्यू पळका करै। स्वतत्रता री वळिवेदी माथै प्राण होमण वाळी वीरागना लक्ष्मीबाई नै कवि आदरभाव सू इण भात चितारी—

हुयो जाण वेहाल, भाल हिंद री भोम रो।
झगडो निज भुज झाल, लिछमी झासी री लडी॥[1]

देश मे जठै कठ ई आजादी रै जग रा नगारा माथै डाको पडियो, कवि उठी नै ध्यान दीधो। सगळा चावा क्रातिकारिया नै उणै प्रशस्ति र पुष्पा री माळा अर्पित कीधी है। अवध रा क्रातिकारिया बाबत उण कह्यो—

फिरगा तणी फजीत, करवा नै कस कस कमर।
जण जण वण जग जीत, लडचा अवध रा लाडला॥[2]

आउवा ठाकुर खुशालसिंह अर वारा साथिया रा तो कवि मोकळा वखाण कीधा। हिवडै री कोर सू वारा मोर थापटता कवि कह्यो—

खेल्यो रण मे खाग हू, जबकर जूझ्यो जग।
दियो सरब हित देस रै, रग खुसाला रग॥[3]

फगत आउवा न कवि प्रशस्ति रा पुष्प नी चटाया। वी रा

---

1 राजस्थानी शोध सस्थान (चौपासनी) रा सग्रह सू।
2 उपयुक्त।
3 आऊवा ठाकुर श्री नाहरसिंह सग्रह सू प्राप्त।

मददगार दूजोडा ठिकाणा नै ई कवि घणा रंग दीधा। मडावा (शेखावाटी) रा ठाकुर आनदसिंह शेखावत, आलनियावास (नागौर जिलो) रा ठाकुर अजीतसिंह मेडतिया रा बनोई हा। आलनियावास ठिकाणो सन् सत्तावन री ऋांति मे आऊवा री मदद मे अगरेजा सू लडयो। इण वास्तै आलनियावास माथे गोरा री कोपदृष्टि हुई। आनदसिंह शेखावत नै इणरी ठा पडता ई वो आपरै साळा री मदद वास्तै मडावा सू तुरत रवाना हुयो। शेखावता गोरी फौज माथ अचाणचक लारा सू हमलो कीधो। अगरेजा नै इसा आक्रमण रो कत्तई अदेशो कोनी हो। सामली अर लारली दोनू कानी सू शत्रु सेना सू घेरीज्योडी गोरी फौज न दिन रा तारा नजर आयगा। आनदसिंह शेखावत री कोशिश सू ई आलनियावास नै अगरेजा सू मुक्ति मिळी। कवि उणरी तारीफ करता थका लिख्यो–

मोद 'मडाव' मोकळो, ढोल ढमके पोळ।
फवच कढ कोठार सू, गोरा घेरण गोळ॥

साळो बनोई स्यार सा, झाली जुध री ज्वाळ।
नवल हुरी आनदसो, मेडतियो अजमाल॥

आनद तोरण आवियो, घण उमाव आलवास।
उणी उमाव आवियो, (जद) गोरा घेरयो ग्रास॥

आलनियास अजस अजे, सरासरा सेखाण।
गोरा मुख गढ ग्यो परो, पाया सेखा पाण॥[1]

इण कविता सू आ साफ ठा पडै के जे इण विखा मे अजीतसिंह नै आपरा बैनोई आनदसिंह शेखावत री मदद नी मिळती तो आलनियावास माथै शत्तिया गोरा री कब्जो हुय जावतो। इण लडाई मे जमीयत री जमादार मीरूखा नाम री मुसलमान ई गोरा रै खिलाफ लडतो काम आयो। बी नै याद करता थका कवि कह्यो–

जमादार जमीयत रो, मीरूखा मरदांण।
मरयो मरद री मौत वो, गोरा रो कर घाण॥[2]

भारत रा स्वतत्रता सग्राम मे बीकानेर राज रो चूरू ठिकाणो ई

1 राजस्थानी शोध सस्थान (चौपासनी) रा सग्रह सू।
2 उपयु क्त।

आगीवाण हो। पण बीकानेर री फौज गोरा री मदद वास्तै ताकड़ी ऊभी ही। चूरू ठाकुर शिवनाथसिंह (स्योजी) नै देशदाफ ही। इण वास्तै वे गोरा सू भिडता वखत पाछळ नी फेरी। चूरू री जनता आजादी रै जू भारा रै वळ होवण सू उणै ई सेतुबध मे पूरी मदद राखी। अंग्रेज मोकळा दिना ताई चूरू रै घेरो घाल नै नगर माथै गोळाबारी करता रह्या। चूरू री कानी सू ई गोळा रा धम्मीड चालता रह्या। जद लड़ाई मे तोपा रा गोळा वास्तै सीसा रो तोटो पड़ग्यो तो चूरू रा लिछमीपति आगीनै आया अर दूजी कोई कारी नी लागती देख नै सीसा री ठौड चादी हाजर कीधी। इण काम मे चूरू रा अेक मठ रै महत री ई मदद रही।

तोपा सू निखालस चादी रा गोळा छूटता देख'र शत्रु सेना थरकमान हुयगी। वे हिम्मतहार हुयगी। वी र आ बात समझ मे आयगी के जिण प्रजा री इतरी ऊचो मनोबळ अर अेको है, वी न डरावणी हसा खेल नी है। कवि पण आपरी कविता मे चादी रा गोळा री बात कही है। इण वास्तै मनगढत तो नी। "चूरू रो जस" नाम सू कवि आ कविता लिखी—

चूरू रौ जस चहु दिसा, सखरा जिण रा सेठ।
सत सतो अर सूरमा, पहु भी ऊपर पेठ॥

जग जाहर चूरू जठ, काची रही न जेट।
सावत राखी सुतत्रता, सतां सेठा पेठ॥

बीदावत वणिरोत सग, सेखा रा पोताह।
लडचा देसहित लाडला, (वे) रण गगा गोताह॥

बीदा अर बणीर भड, टणका घण टण कल।
गोरा हित बीको लडयो, चूरू रै रणखेत॥

बीको फीको पड गयो, बण गोरा हमगीर।
चांदी गोळा चालिया, आ चूरू री तासीर॥

धोर ऊपर नींबडी, धोर ऊपर तोप।
चांदी गोळा चालता गोरा नांख्या टोप॥
सीसो नीठ्यां सावतां, मत पडिया मोळाह।
चूरू चाल चाव सू, चादी रा गोळाह॥
चादी चेपी तोपगळ, जग कियो जोधार।
झुवयो न झगडा में जबर, स्योजी सो सिरदार॥

इण स्योजी नै आज भी, चूरू रही चितार।
फेरघो राव बीकाण नै, चादी गोळा मार।।

× ×

नींवडो घोर नाळता, आव वे दिन याद।
जुल्मी राव बीकाण रो, गोरा हेत फिसाद।।

चूरू चित्त कवियां चढो स्योजी सिंघ रै पाण।
जुल्मी राव बीकाण रा, घणा थकाया हाण।।

साजे पोढिया सारलो, रे बीका बुधहीण।
गोरा खातर मारिया, सगा गिनायत सीण।।

चूरू होसो चोगुणो धोरा होसो धींग।
बीखोडा उड जावसी ज्यू सावण री भींग।।

काथळ भर वणीरसा, वणीरोत विकराळ।
बीक वशज भाजिया, कर गोरा प्रतिपाळ।।

चूरू चप्पाई चासरणे, फिरघो फिरगो फेर।
आखर अखियाता रह्या भू डज बीकानेर।।

नाथ महत नामी जठै, भर रह्या मठ भी साख।
भाठा हुव किम मानसी, पुरसारथ री साख।।[1]

झू भनू राज री थापना दादू लसिह शेखावत रै हाथा हुयी। वा रा छोटा भाई सलेदीसिह बहल ठिकाणा रा जागीरदार। अे दोनू भाई भोजराज रा बेटा होवण सू सलेदीसिह रा वशज सलेदीसिघोत भोजाणी वाज्या। उणा गोरा सू सघप कीधो। बहल छूट्या पछ ई वे नी तो हिम्मतहार हुया अर नी गोरा न नेहचा सू बैठण दिया। खिरोड उणा री जागीर री दूजो मोटो ठिकाणो। बहल अर खिरोड मिळ नै अग्रेजा रो जम नै मुकाबलो कीधो। घणा बरसा पछै वा रै अर गोरा मे अेक अलिखित राजीनामो हुयो। बाद मे वे गोरा री लारी छोडघो। उणा री प्रशसा कवि इण दूहा में इण भात कीधी है—

आजादी री आन अड, जुध लडिया जो तोड।
मेदपाट चीतोड मझ, सेखघरा चोतौड।।

---

1 राजस्थानी शोध सस्थान (चोपासनी) रा सग्रह सू प्राप्त।

सिसोदिया सारा लड्या, बस छतीस विख्यात।
बस सलेंदी श्रेकलो, दीधी सारा मात।।

राज मामलो नह दियो, रख श्राजादी रेख।
बस सलेंदी वस रा, लिखिया कविया लेख।।

मुगल मरघा, गोरा मरघा, आती फौजा दौड।
मरण माडता जो मरद, खगधारो खीरोड।।

बहल रा घेरा री वखत गुडा (शेखावाटी) रो ठाकुर धीरसिंह अगरेजा रै खिलाफ लडतो काम श्रायो। मेजर फॉरेस्टर, धीरसिंह रो माथो वाढ नैं झूझनू ले जाय नैं छावणी रा दरवाजा माथै टेर दियो। उठीन ठकुराणी सती होवण रो अेलान कीधो श्रर इण वास्तै ठाकुर रो माथो जरूरी हो। वातडी श्रा श्रडगी के छावणी रा द्वार सू माथो ऊतार नै कुण लावै? छेवट मीणा जाति रो अेक मोटयार श्रो बीडो उठायो। वो रातोरात पनर कोस जाय नैं दरवाजा माथै टिरता माथा नै ले'र श्रायगो। दिन उग्या ठा पडी जद मेजर फॉरेस्टर घणा ई पग पटक्या, पण काई कारी लागती? उठी नैं ठकुराणी सती होयगी। मीणे मोटयार मरदाई रो कॉम कीधो। वी री तारीफ मे ई कवि अेक दूहो लिख्यो। इणसू ठा पडै के कवि शुद्ध राष्ट्रवादी श्रर वीर पूजक हो। वी रै मन मे छोटा मोटा रो कोई विचार नी हो। मीणा मोटयार मे हिम्मत री चमक देखनै कवि श्रो दूहो कह्यो—

फॉरेस्टर फीको पडयो, सिर न देख्यो सु वार।
सिर ल्यायो सावत रो, मीणो जायो नार।।

शकरदान सामोर सो टक्का जनकवि हा। वे निडर श्रर निशक हुय नैं जनता रै मन रा भावा नै श्रोपती वाणी दीधी। श्राजादी रा जग मे अेकण कानी भारत रा राजा, महाराजा, रईस श्रर गोरा हा श्रर दूजी कानी गरीब, जनता, की देशभक्त सरदार, सामत श्रर सिपाही। श्रापरी रोटी नीचे खीरा देवणा होवता तो कवि रैं वास्तै साधारण जनता नैं जुहारडा करनै राजा महाराजावा रो जजकार करणो घणो सोरो हो। पण उणा न तो खीर विचै रावडी मे इध काई लखायो। वे काव्यरचना करनै जनशक्ति नैं जगायो। श्राजादी रा श्रादोलन मे जागरण रो शख वजायो।

कवि रैं गीता री डिंगल भाषा घणी सरल। श्राम श्रादमी र ई

समझ मे आसानी सू आवै जेडी । दूहा भर दूजा छंदा री भाषा तो ओर ई सरल अर सुबोध । लोकगीत मिनखा रै हियै वेगा ऊतरै । शास्त्रीय छंद वा रै पल्लै नी पड़ै । इण खातर कवि स्वतन्त्रता संग्राम बाबत लोकगीत ई रच्या । बड़ल ठाकुर कानसिह सलेदीसिघोत गोरा री सटनै मुकाबलो कीधो । वा री तारीफ मे कवि अक धमाल लिखी । उण इलाका मे वा आज ई गाईजै—

हृद करग्यो कान सलेदी को
हृद करग्यो !
अेक तो कान बिरज को वासी
दूजो कान सलेदी को
हृद करग्यो !
लूट तिहाप स्याहवळी लूटी
लूटयो बगळो ठेडी को
हृद करग्यो !
हृद करग्यो कान सलेदी को
हृद करग्यो !
ब्रज को कान तो काळ कस को
ओ तो काळ फिरगी को
हृद करग्यो कान सलेदी को
हृद करग्यो !
ब्रज को कान महि दधि लूटै
ओ तो फौज फिरगी की
हृद करग्यो !
हृद करग्यो कान सलेदी को
हृद करग्यो ![1]

कानसिह सलेदी न वखाणता थका कवि अेक लोकगीत ई लिख्यौ है । लोकगीत इण भात है—

आई आई ओ मारू जी
कानसिंघ सा री फौज

---

1 राजस्थानी शोध संस्थान (चोपासनी) रा सग्रह सू प्राप्त ।

घूसो तो श्रायो वैरी बाजतो
जी म्हारा राज !
गढ रा तो मारूजी जडादयो किवाड
श्रागळ तो जडा दो बीजळसार री
कानसिंघ सा रो जलद सुभाव
घूसो तो श्रायो वैरी बाजतो ।
भिडिया श्रे भडा कानोजी नीं हटै
होसी जुलम जिसी बात
श्रागळ तो जडा दो बीजळसार री
श्राई श्राई श्रो मारूजी कानसिंघ सा री फौज
घूसो तो श्रायो वैरी बाजतो म्हारा राज ![1]

बहल माथै अगरेजा हमलो कीधो । बीकानेर राज री फौज वगा री मदद मे ही । पण शेखावता सू भिडन्त होवता ई बीकानेरी फौज पड भागी । कवि इण प्रसग नै लेय नै अेक फाग लिख्यो । शेखावता री तारीफ रो श्रो फाग श्राज ई उण इलाक मे होळी रै मौके चाव सू गाइज ।

फाग

कुण रोक रे शेखावत थारी फौजा न
कुण रोकै रे !
गोरा तो नाख टोपला भाजै, भाज राव बीकाणा को
कुण रोकै रे !
कै तो रुकावै थारा भाई भतीजा
कै रुकाव बेटा बामण का
कुण रोकै रे !
काई नै रुकावै थारा भाई नै भतीजा
काई नै रुकावै बेटा बामण का
कुण रोक रे !
मनवारा रुकावै थारा भाई नै भतीजा
श्रासीसा रुकावै बेटा बामण का
कुण रोकै रे !

1 राजस्थानी शोध सस्थान (चौपासनी) रा सग्रह सू ।

के तो रुकावै थारा सगा र गिनायत
के रुकाव बेटा वाण्या का
फुण रोकै रे !
काई र रुकाव थारा सगा र गिनायत
काई रुकावै बेटा वाण्या का
फुण रोक रे !
ब्याव रचावै थारा सगा रे गिनायत
निजरघा करै बेटा वाण्या का
फुण रोक रे !
फुण रोक रे शेखावत थारी फौजा ने
फुण रोकै रे !
गोरा तो नाख टोप भाज, भाज राव बीकाण को ।
फुण रोक रे !

स्वतन्त्रता संग्राम रा जोधार डू गजी जवारजी री तारीफ मे ई सामोर मोकला पूटरा डिंगल गीत लिख्या । कवि री फुटकर रचनावा रै अलावा की प्रकाशित अर अप्रकाशित कृतिया री विगत इण भात है—देश दपण, साकेत शतक, बखत बायरो, पाबूजी रा गीत, शक्ति रा गीत, भैरुजी रा गीत अर गगाजी रा गीत इत्याद ।

इणा मे देश दपण कृति उल्लेख जोग । कवि री देश भक्ति री भावना री रूपाळी छिब रै सागै सागै इणमे काव्य प्रतिभा री उजास ई दिसै । मामूली लागणवाळी बाता न ई कवि कीकर रळियामणा रूप मे पेश कीधी है—आ बात देखण जोग है । कवि न आपरी धरती अर वी रा वाशिन्दा सू प्रेम हो । उणा न झूपडा मे रवणवाळा गरीब गुरबा माथै पूरो विश्वास हो । वा रै मन रा देवरा मे म्हैला री नी, झूपडा री मूरत बस्योडी ही । गरीब जनता री मरजाद अर आनवान सू वे वाकिफ हा । वा न पूरो धीजो हो के पृथ्वी माथ जठा ताई झूपडा कायम है, मिनखपणा रो क़ाळ नी पडैला । 'देश दर्पण' मे वे आपरा भाव इण भात प्रगट कीधा है—

झूपडिया रहसी जितै, इण धरती पर हेक ।
मिनखपणो रहसी मत, छळो कपटिया छेक ।।

राजस्थान री वीरप्रसू धरती मे मेह री खच बण्योडी इज रवै । इण री वजह कवि रा शब्दा मे—

पाणी री काई पिय, रगत पियोडी रज्ज ।
सक मन मे ग्रा समझ, घण नह बरसे ग्रज्ज ॥

उन्हाळा मे लूग्रा क्यू चालै ? इणरो कारण वतावता कवि लिख्यौ –

सगळा पूत सुवारथी, किसडा मन मे कोड ।
ग्रतर मे लागी ग्रगन, बण लूवा बेजोड ॥

कवि जुद्ध नै सृष्टि रै वास्त स सू मोटी विपदा मानी है पण कई मौका माथै युद्ध टाळ ग्रोर कोई उपाय नी रेवै, इण तथ्य नै ई वै उजागर कीधो । ग्रापसरी मै विरोधी भाव दर्शावती वारी काव्य-प्रतिभा री नमूनो—

धरण हू जुध न बुरो, कारण ग्रवर न कोय ।
दीप सुभाष देश रा, लाखीरणी नह लोय ॥

पण इण जग जीवण ग्रतरा, जुद्ध जरूरी जाण ।
मतिभ्रष्ट नह मानवै, जूता बिना ग्रजाण ॥

मरस्या तो मोटै मत, सह जग कहै सपूत ।
जीस्या तो देस्या जरू, जुल्मी रै सिर जूत ॥

महाकवि शकरदान सामोर रै व्यक्तित्व रा सामाजिक ग्रर राष्ट्रीय दोनू पक्ष सतेज है । समाज री हळचळ माथै ई उणा री चोखम नजर रैवती । चारण समाज माथ जठै कठ ई जुलम होवती वै तुरत उठै पूग नै ग्रापरो फरज निभावण री कोशिश करता । वा री देखणी मे ई ग्रलवर राज मे चारणा री जागीरा जब्त होवण रो खिलाफत मे चावो 'धरणो' दिरीज्यो । इण 'धरणा' रा ग्रागीवाण हा डिगल रा ख्यातनामा कवि श्री रामनाथजी कविया । ग्रलवर सू निरो ग्राघो थळी रा वाशिन्दा होवता थका ई शकरदान सामोर इण धरणा मे शरीक हुग्रा । पण ग्रलवर रियासत रा ग्रेक नामी गिरामी चारण जतदान जगावत धरणा कानी फरूकया ई कोनी । इण प्रसग र सबध मे ग्रो दूहो घणो चावो—

जागावत जता जिसा, ग्रसली भया ग्रनेक ।
कळिपी गाडी काढवा, ग्रायो कळिपी ग्रेक ॥

इण विवेचन सू ग्रो तथ्य साफ हुय जावै के सूयमल मीसण र दाई शकरदान सामोर ई राष्ट्रीय विचारधारा वाळा कविया मे सिर नाम । राजस्थान मे ग्राजादी रा-जग रै सम्बध मे रचित वा री

के तो रुकाव थारा सगा र गिनायत
के रुकावै बेटा बाण्या का
　　　कुण रोकै रे !
काई रे रुकाव थारा सगा र गिनायत
काई रुकावै बेटा बाण्या का
　　　कुण रोक रे !
ब्याव रचावै थारा सगा रे गिनायत
निजरया करै बेटा बाण्या का
　　　कुण रोकै रे !
कुण रोक रे शेखावत थारी फौजा ने
　　　कुण रोकै रे !
गोरा तो नाख टोप भाज, भाज राव बीकाण को ।
　　　कुण रोकै रे !

स्वतन्त्रता सग्राम रा जोधार डू गजी जवारजी री तारीफ मे ई सामोर मोकला फूटरा डिंगल गीत लिख्या । कवि री फुटकर रचनावा रै अलावा की प्रकाशित अर अप्रकाशित कृतिया री विगत इण भात है—देश दपण, साकेत शतक, बखत बायरो, पाबूजी रा गीत, शक्ति रा गीत, भैरूजी रा गीत अर गगाजी रा गीत इत्याद ।

इणा मे देश दपण कृति उल्लेख जोग । कवि री देश भक्ति री भावना री रूपाळी छिब र सागै मागै इणमे काव्य प्रतिभा रो उजास ई दिसै । मामूली लागणवाळी बाता नै ई कवि फीकर रळियामणा रूप मे पेश कीधी है—आ बात देखण जोग है । कवि न आपरी धरती अर बी रा बाशिन्दा सू प्रेम हो । उणा न झू पडा मे रैवणवाळा गरीब गुरबा माथै पूरो विश्वास हो । वा रै मन रा देवरा मे म्हैला री नी, झू पडा रो मूरत बस्योडी ही । गरीब जनता री मरजाद अर आनबान सू वे वाकिब हा । वा न पूरो धीजो हो के पृथ्वी माथै जठा ताई झू पडा कायम है, मिनखपणा रो काळ नी पडला । 'देश दपण' मे वे आपरा भाव इण भात प्रगट कीधा है—

　झूपडिया रहसी जितै, इण धरती पर हेक ।
　मिनखपणो रहसी मतै, छळी कपटिया छेक ॥

राजस्थान री वीरप्रसू धरती मे मेह री घच बण्योडी इज रेव । इण री वजह कवि रा शब्दा मे—

बिसाऊ ठाकुर श्यामसिंह शेखावत स्वतन्त्रता सग्राम मे जूझिया । गोरी फौजा सू लडता वे काम आया । वा रो यशोगान श्यामपुरा रा कवि मेघराज किसनावत इण भात कीधो—

कळनामा करण हगामो करगो, वरियामा जुध उच्च वरं
सेखधरा आवजो स्यामा स्यामा तोसा गरज सरै
फिर फिर भरम काढियो फिरगो, घर घर हिंदू धरम घट
रणचाळो मिळियो रजपूता, कुळ उजवाळो गयो कठं ।

इणी प्रसग मे अेक अज्ञात कवि रा रच्योडा दूहा, सोरठा, छप्पय इत्याद ई मिळै जिणा मे शेखावाटी री उण सगळी ठौडा री उल्लेख है, जठै आजादी री लडाई लडीजी । आजादी रै जग रा जूझारा रा नाम ई इण काव्य मे आया है—

दूहा

पज्यो मुकद सीकर प्रमुख, फाडण फौजा फद ।
ताख्या टोप तातमो, दळ गोरा दळ वद ।।

गुडा पू ख रा गाढ धर, भिड भोम्या भाराथ ।
गोरा घड गजी घणी, हुज हेजमरा हाथ ।।

मडाव माधु मरद, बपुबळ ठाट विराट ।
कियो मुकत बधी किसन, दळ गोरा रा बाट ।।

दमगळ डूग जवारदे फेय्यारे फावाह ।
छत्र कर गोरा छावण्यां, चोचक हुव चावाह् ।।

प्रबळो भड लोहारपत, जुडयो जग रणजीत ।
सेखो बिसाऊ श्यामसी, पळ पाळी कर प्रीत ।।

सोरठा

विग्रह वळी कुबिलेत, तायल अळसी सरतणो ।
दटलज राखण देस, कजियो गोरा हुत करयो ।
सिलेदी वशज सूर, दट मगळ दोख्या दळघा ।
कट कट करगा क्रूर, भरयापि दीधो न मामलो ।

छप्पय

बहल कानसी वीर, घडा गोरा री घालै
सेखा बीदा सकळ, साथ दे सत्रु बसालै

रचनावा राजस्थानी साहित्य नै चिरस्मरणीय देण । कवि न मोकळो मान सम्मान मिळियो । वा र देवलोक हुया पछै जिकी श्रद्धाजलिया अर्पित करीजी, उणा सू कवि री महत्ता री जाण हुवै । गुसाई गणेशपुरी वा नै डिगल रा डूगर री ऊपमा देवता थका कह्यो—

बळी बोकपुर भाजतो, शकर रौ सिरताज ।
गिरवर डिंगल री गुडग्यो, इण मुरधर मे आज ॥

पुगला कवि रामनाथजी कविया (अलवर) हिवडै तणौ दुख इण भात प्रकट कीधो—

सूजो ग्यो शकर गयो, सोनो सुगध साख ।
हे हर की करसी हमैं, रामनाथ नै राख ॥

इण बात री उल्लेख सरूपात मे करीज्यो है के शकरदान सामोर शेखावाटी क्षेत्र रा आजादी रै जूझारा रा अगीवाण अर मार्गदर्शक होवण सू शेखावाटी री स्वतन्त्रता सग्राम उणा रै काव्य रो खास विषय । इण बाबत दूजा कविया ई काव्य रचना कीधी । अठै बा रो उल्लेख करणो मौका मुजब रेवला ।

विद्रोही शेखावता री लडाई जॉज फ्रासिस सागै फतैपुर (शेखावाटी) मे ई हुयी । उण लडाई मे ठाकुर रणजीतसिंह नाथावत चौमू अर ईसरदा ठाकुर अभयसिंह राजावत जयपुर री सेना सू शेखावता री मदद मे लड्या । अेक अज्ञात कवि रा रच्योडा दूहा अर कवित्त मे इण प्रसग री ओपतो वर्णन हुयो है—

सहर फतपुर मे फतै, करी नद रतनेश ।
भाज गयो आपाण तज, लख रणजीत नरेश ॥

कवित्त

फैल्यो फैल भूमि पर फिरगी जगी जाझ को
मीर उमराव राव राणा रतन जुरै
केते देस देसन तें पेस ले असक मन
सुनत चढायें नाथ कुळ मणि सान र ।
काटि डारि यरिन के झुड किरपान तें
नाच्यो मु ड माळी रुड डोलत क्तिं करै
भूप रणजीत रण जीत कर बढाई कीत
विजय के बब धनराज से घने घुरै ।

बिसाऊ ठाकुर स्यामसिंह शेखावत स्वतत्रता सग्राम मे जूझिया। गोरी फौजा सू लडता वे काम आया। वा रो यशोगान स्यामपुरा रा कवि मेघराज किसनावत इण भात कीधो—

फळनामा करण हगामो करगो, दरियामा जुध उच्च दरं
सेखधरा आवजो स्यामा स्यामा तोसा गरज सरं
फिर फिर भरम काढियो फिरगी, घर घर हिंदू धरम घटं
रणचाळो मिळियो रजपूता, कुळ उजवाळो गयो कठ।

इणी प्रसग मे अेक अनात कवि रा रच्योडा दूहा, सोरठा, छप्पय इत्याद ई मिळै जिणा मे शेखावाटी री उण सगळी ठौडा रो उल्लेख है, जठै आजादी री लडाई लडीजी। आजादी रै जग रा जूझारा रा नाम ई इण काव्य मे आया है—

दूहा

पज्यौ मुकद सीकर प्रमुख, फाडण फौजा फद।
ताल्या टोपै तातमो, दळ गोरा दळ दद॥

गुडा पू ख रा गाढ धर, भिड भोम्या भाराथ।
गोरा घड गजो घणी, हूज हेजमरा हाथ॥

मडावै माधु मरद, बपुबळ ठाट विराट।
कियो मुकत बबो किसन, दळ गोरा रा दाट॥

दमगळ डूग जवारदे फेज्यारे फावाह।
छत्र कर गोरा छावण्यां, चौचक हुव चावाह॥

प्रबळो भड लोहारपत, जुड्यो जग रणजीत।
सेखो बिसाऊ स्यामसी, पळ पाळी कर प्रीत॥

सोरठा

विग्रह बळी कुविलेत, तायल अळसी सरतणो।
दटलज रासण देस, कजियो गोरा हुत करचो।
सिलेदी यशज सूर, दट मगळ दोल्या दळधा।
कट कट करगा क्रूर, मरघापि दीघो न मामलो।

छप्पय

बहल कानसी वीर, घडा गोरा री घाल
सेखा बीदा सकळ, साथ दे सत्रु वसालै

हूट करै फिरग जिण चार दीधौ हुकम,
करो मत फल अणफल काजा।
अब लिखू हुकम लदन तणो आवसी,
रीत तद थावसी तिको राजा॥

जठै कर मसल अगरेज आया जबर,
दाटवा भडारा देर दूबौ।
धरा सो हिंदवाण लाज राखण धरम
अठी खतेस भुज ठोर ऊभो॥

[illegible] थपू भूप मुलक म्हारो हुकम,
बराबर न पूछू कवण बीज।
पडी वपू सतारो तुझ रख पख रो,
(थारो) ललेरी कोडिया उरी लीज।
तस धरै मू छ खतेस बोल समस,
हुआ विध लिख म्है कीध हाथा।
पोळ बारां हमे छावणो पधारो,
बधारो फैल किम सहज बाता॥

तवां परताप सगराम बापा तणौ,
समैं परवाण अवसाण साज।
तणा केहर अनम किलो चितौड रौ,
(जीन) ऊजळो दिखायो भलां आज॥

माण रख राण जेठाण हिंदु मुकुट,
कथन जग जाण सवास कहसी।
तिको किसनावता छात जोधा अपत,
रसा सिर बात अखियात रहसी॥

जालमसिंह झाला (झालावाड)

उगणीसमी सदी रो छेवाडो। राजस्थान री रियासत झालावाड मे अथल पाथल चाल। इण रोळदट्ट रै चालतां अेक अेडी घटना हुयी जिण सू कविया रो ध्यान उठीनै गयो। उण वखत झालावाड री गादी माथै जालमसिंह झाला। उणां सागै जुलम होवतो देख नै कविया रै मन मे राष्ट्रीय भावना रो रस धारा ववण लागी अर वे निडर होय नै आपरी बात क्ही।

सन् 1896 मे अग्रेजा जालमसिंह नै गादी सू उतार नै नजरबद कर लीधा । उण टेम ताई मेवाड रा महाराणा सज्जनसिंह देवलोक हुयग्या हा । वे इक्वरंल राष्ट्रवादी अर जावाज आदमी हा । वा रै वैठा अग्रेजा नै जालमसिंह रो दुरगत करण रो मोको नी मिळयो । इणीज बात नै ध्यान मे राख नै अेक अज्ञात कवि कह्यो—

नृप हुवा नेह पाण, कारण न मान कपनी ।
हो तो सज्जन राण, जात न जालम जेल मे ॥[1]

आतडी असल मे आ ही जालमसिंह भाला बारै वरस री अवस्था मे वढवाण (काठियावाड) सू झालावाड खोळै आया । आगलै वरस वा नै पढण वास्तै अजमेर रा मेयो कॉलेज मे भरती करा-ईज्या । झालावाड रो राजकाज पॉलिटिक्ल अेजट नै सू पीज्यो । उण रिसालदार हुसनअलीखा नाम रा आदमी नै झालावाड रियासत री फौजदारी हाकमी सूपी । इण आदमी नै पूर्व नरेश नौकरी सू काढ दियो हो । सन् 1886 ई मे जालमसिंह रै गादी वैठ्या पछ ई धन तो धरधणी री गुवाळिया रै हाथ मे तो गेडियो वाळी गत बणी रही । अगरेजा री खास खवास बण्योडा श्याम-सुदरलाल नाम रा जी-हजूरिया न पालिटिक्ल अेजट उणा री सेक्रेटरी मुकर र कीधो । जालमसिंह जिसा स्वाभिमानी आदमी रो जीव इसी बधोकडी मे फडफडावण लाग्यो । उणा अगरेजा रो चिलम भरणिया श्यामसुदरलाल नै नौकरी सू काढ दियो । आ हीज बात राड रो कारण बणी अर अगरेजा जालमसिंह नै गादी सू उतार न नजरबद कर लीधा । उणै निराई भारतीय राजावा नै छानै छरकै सदेश भेज नै मदद मागी पण किणै ई गिनर नी कीधी ।

झालावाड रियासत रो निर्माण जालमसिंह प्रथम कोटा अर इदौर रियासत रा की हिस्सा नै जीत'र कीधो हो । अग्रेजा आपरो चक्कर चलायो । वे इण दोनू रियासता नै लालच दीधो के झाला-वाड नै तोड भाग नै उणा नै आप आपरी पाती दिरीजला । वा नै खुद आ बात उठावणी चाहिजै ।

कोटो तो इण खातर राजी हुयग्यो पण इदौर नरेश शिवाजी होल्कर आ कंय न नटग्या के आपरी आडी जोडी रा राजा रो मान

---

1 राजस्थानी शोध सस्थान (चोपासनी) रा सग्रह सू प्राप्त ।

मदन करणो ठीक कोनी । अग्रेजा री कुटळाई धरी रैयगी अर वे मन मारने बैठग्या । झालावाड री अस्तित्व वा नै मन रै उपरात मानणो पड्यो पण तोपा री सलामी घटाय न आपरै मन री बाफ काढी । इण सगळा काड नै मद्देनजर राख नै कितरा ई कवि काव्य-रचना कीधी । उणा माय सू बानगी सरूप अक अज्ञात कवि रो रच्योडो अो डिंगल गीत इण भात है—

गीत

गु डां गुर गोरडो नू चवा देवतो चढ नाका चणा
येह हवो पाघतो जे झालो सहजोग
फाडता फिरग्या फील कुभ हुय के कठोरव
बुजढ झाट दे दया काटतो कुरोग

× ×

धाक धका धीठा धोक सड सड सिती सरी
छितरातो छत्रोपणा महमा मरोड
काल सो कराल मेघो खाल खेंचि बाकी खत
वस ब्रिस आल बाल ताणो तिड तोड ॥[1]

कवि रेवतसिंह भाटी आपरा भाव यू प्रगट कीधा—

सोरठा

नरपत हुया निकाम, दुटता दामन देह मे ।
चमार करसै च्याम, म्यान कर हुडज्यां अब ॥
सो सह मिल जाताह, जमतो जोर न जुल्मियां ।
मिलकर स खाताह, कुडलि नू जिम कोडियां ॥
भल्ल सरीसो जोध, जायो नह उण सम जणे ।
ब्रिटिसा नू बोध, कटक करातो कस कटक ॥

1 श्री सवाईसिंह धमोरा रै सग्रह सू प्राप्त ।

तीजों अध्याय

क्रातिकारी आदोलन अर जनजागृति सबधी काव्य

महाराणा फतेहसिंह अर दिल्ली दरबार

वीर प्रसूता मेवाड री धरती माथै इसी कई महान आत्मावा जनम लियौ जिणा रै त्याग, बळिदान अर वीरता री गाथावा विश्व मे विख्यात हुयगी। भारतीय इतिहास उण गाथावा माथै गुमेज करै। मेवाड री पुण्य धरा ठेट सू स्वतत्रता नै आपरो जनमसिद्ध अधिकार मान्यो। उणरै वास्तै अलेखू माथा चढाया। इण कारण ई आ धरती सदीव सू मा सुरसती रै वरदपुत्रा री कठ हार बणी रही। कविसरा इण धरती री मुक्त कठ सू प्रशसा करी।

दिल्ली रै तखत माथै जिको ई बादशाह बठो उणनै आपरी बादशाहत तठा लग आधी अधूरी लागी, जठा लग मेवाड उणरै कब्ज नी आई। इण कारण कई टणकैल बादशाह मेवाड विजय री मन मे लिया ई कब्र मे दफण होयग्या। जिण भात टाबर चावता थकाई चद्रमा नै नी पकड सकै उणी'ज भात दिल्ली रा कई नामचीन बादशाह मेवाड रै राजवश नै नी नमाय सक्या। मेवाड रा सपूता आपरी स्वतत्रता सदीव कायम राखण री कोशिश करी। मेवाड री कोई राणो कदेई दिल्ली रै दरबार मे हाजर नी हुयो। शाही दरबार मे आट आटाळी मेवाडी पाघ सदीव अनमी रही। आ बात जगचावी है के आपरै बडेरा री इण टेक न मेवाड रै स्वतत्रता प्रेमी शासक महाराणा फतेहसिंह ई कायम राखी। मुगला रो पतन हुया पछै दिल्ली अग्रेजा रै कब्ज हुई। उणा दिल्ली दरबार बुलायो। सगळा देशी रजवाडा खम्माघणी करण न दिल्ली पूगा। पण महाराणा री कुरसी खाली पडी रही।

महाराणा फतेहसिंह लारली पीढी मे अेक दबग अर प्रतिभाशाली पुरष हुया। अग्रेजी प्रभुसत्ता रै आधीन होवता थकाई वे आपरी स्वतत्र प्रकृति र वास्तै विख्यात रह्या। भारतीय राजावा मे वा री आपरी न्यारी मठोठ ही।

यार शासनकाल मे अेक इसो घटना घटित हुई के जिणर कारण अे राजनैतिक अर साहित्यक जगत मे समान रूप सू चर्चित होयग्या। इण घटना सू सवेदनशील कवि मन घणो प्रभावित हुयो

अर कविसरा भात भात री काव्य रचना कर न याने खूब बिडदाया।

वात ई सन् 1903 री है। अंग्रेजी सत्ता आपरो शक्ति प्रदरसण करण रो मतो कियो। जमतो अंग्रेजी राज हो। इण कारण सत्ता आपरी ठरको बतावणो उचित समझ्यो। तत्कालीन वायसराय लार्ड कर्जन दिल्ली मे दरबार भरण रो विचार कियो। भारत रा सगळा देशी रजवाडा न इण दरबार में आवण वास्ते न्यूतो भेजीज्यो। कवण नैं तो ओ न्यूतो हो पण दरअसल मे ओ अेक हुकमनामो हो जिणरै सहत सगळ राजावा न फरजियात दिल्ली दरबार मे जाय न हाजरी देवणी ही। इण फरमान रो उल्लघण करणो खुल रूप सू अंग्रेजी प्रभुसत्ता रो विरोध करणो हो।

जिण वगत ओ फरमान महाराणा फतेहसिंह कनै पूगो, वे गता गम मे पजग्या। उणा इण फरमान माथ खूब गौर कियो। दूजै राजा महाराजावा रै वास्ते तो दिल्ली जावणो गौरव री बात ही पण मेवाडी महाराणा रै वास्ते धरम सकट वाळी बात ही।

यू मुगल बादशाह वाळी बात खतम हुयगी ही। परिस्थितिया सफा बदळगी ही अर अबै वा पुराणी टेक वाळी बात ई नी रैयगी ही। पीढिया पै'ली महाराणा प्रताप रै पुत्र अमरसिंह अर मुगला रै बिचाळै सधि जिसी व्यवस्था ई हुयगी ही। महाराणा खुद मुगल दरबार मे कोनी जावता पण वा रो प्रतिनिधि उठै जावण लागग्यो हो। ठेट महाराणा फतेहसिंह ताई आ इज व्यवस्था चुई आवै ही। अबै मुगल शासन खतम हुया देश में विदेशी सत्ता आई। सगळा सदभ बदळग्या। इण कारण परिवर्तित परिस्थितिया न दीठ मे राख'र महाराणै दिल्ली दरबार मे जावणो स्वीकार कर लियो।

वे अेक स्पेशल ट्रेन सू दिल्ली रवान हुया। पण वा री आ दिल्ली यात्रा कई स्वतत्रचेता बुद्धिजीविया अर सरदार सामता नैं घणी अखरी। खासकर सुप्रसिद्ध स्वतत्रता सेनानी केसरीसिंह बारहठ न तो आ बात घणी आखी लागी। इण बात मे वा न मेवाड धरा री गरिमा नष्ट होवती निगै आई। उणा रो मन उद्वेलित हुयगो। वे रय नी सक्या। उणा महाराणा फतेहसिंह न 'चेतावणी रा चूंटिया' र नाम सू 13 सोरठा लिखन भेज्या जिको आगै चाल'र इतिहास प्रसिद्ध होयग्या।

इसी कहीजे के जिण वखत महाराणा री स्पेशल ट्रेन ठेट दिल्ली रै नैडी पूगगी तो सदेशवाहक कवि रो ओ सदेश लेय न महा-

राणा रै कनै पूगो। महाराणै अ सोरठा बाच्या अर माथो धूण। कह्यो—"जे ओ सदेश म्हन पैली मिळ जावतो तो म्हैं मेवाड सू प्रस्थान ई नी करतो।"

महाराणा रै मस्तिष्क नै झकझोरण आळै अर वारै सुपुप्त स्वाभिमान न जगावण आळै इण महान देश भगत कवि री विगतवार ओळखाण तो न्यारै अध्याय मे आगै दिरीजी है पण वा री अजर अमर लेखणी सू रचित इतिहास प्रसिद्ध सोरठा (चेतावणी रा चू टिया) इण भात है—

सोरठा

पग-पग भम्या पहाड, धरा छोड राख्यो धरम।
महाराणा'र मेवाड, हिरद बसिया हिंद र ॥

घण घाल्या घमसाण राण सदा रहिया निडर।
पेखता फुरमाण, हलचल किम फतमल हुव ॥

गिरद गजा घमसाण, नहचै धर साई नहीं।
माव किम महाराण, गज दोसै रा गिरद मे ॥

अवरा नै आसान, हाका हरवल हालणो।
किम हाल कुलराण, हरवल शाहां हाकिया ॥

नरियद सह नजराण, झुक करसी सरसी जिको।
पसरेलो किम पाण, पाण छता थारो फता ?

सिर झुकिया शहशाह, सिंहासण जिण सामन।
रलणो पगत राह, फाबै किम तो नै फता ?

सकल चढाव शोध, दान धरम जिणरो दियो।
सो खिताब बखशीश, लेवण किम ललचावसी ?

देख लियो हिंदवाण निज सूरज दिस नेह सू।
पण तारा परमाण, निरख निसासा नाखसी ॥

देखै अजस दीह, मुलकेलो मन ई मना।
दभी गढ दिल्लीह सीश नमता शीशवद ॥

अत बेर आखीह, पातल जे बाता पहल।
राणा सह राखीह, जिणरी साखी सिर जटा ॥

कठिन जमानो कौल, बाध नर हिम्मत विना।
वीरा हदो बोल, पातल सामहा पेखिया ॥

अब लग सारा आस, राण रीत कुल राखसो ।
रहो रहाय सुखरास, एकलिंग प्रभु आपर ।।
मान मोद सीसोद, राजनीत बल राखणो ।
गवरमेंट री गोद, फल मीठा दीठा फता ।।[1]

सोरठा काई हा जाणै तीखा अणियल तीर हा, जिको जाय न सीधा महाराणा र काळजे मे लाग्या । महाराणो तिलमिलायग्या । सभव है सोरठा री की ओळिया ज्यू कै—'पसरेलो किम पाण, पाण छता थारो फता ?' अर 'गवरमेंट री गोद, फळ मीठा दीठा फता' इत्याद तो वे घणी ताळ गुणगुणावता रह्या होसी ।

रेलगाडी दिल्ली ढूकडी पूगगी ही सो वा न दिल्ली सो जावणी ई पडयो पण उठै जाय न ई वे दरबार मे हाजर नी हुया । बिमारी रो मिस बणाय न वे पाछा मेवाड आयग्या । दिल्ली दरबार मे भारतीय नरेशा वास्तै लाग्योडी कुरसिया री पगत मे महाराणा री कुरसी खाली पडी रही, जिण न वायसराय लाड कर्जन खरी मोट सू देखतो ई रयग्यो ।

तत्कालीन परिस्थितिया मे कोई भारतीय नरेश खानी सू ब्रिटिश सत्ता रै प्रति यू बेपरवाही बरतणी घणी मोटी बात ही । इणरो अग्रेजी सत्ता र प्रभाव क्षेत्र माय घणो असर पडयो अर सगळै देश मे आ घटना चर्चा रो विषय बणगी । जन मानस मे इणरी जबरी प्रतिक्रिया हुई । मेवाड अर दिल्ली र सनातन सबधा न लेय'र जनता र मन मे मेवाड रै वास्त जिकी गौरव री भावना ही वा कायम रैयगी । मोकळा कविसरा इण घटना न केन्द्रबिंदु बणाय न सातरी काव्य रचना करी, जिको सही मायन मे जन भावना रो प्रतिरूप है ।

कवि श्री फतेहकरण उज्वळ सगळ भारतीय नरेशा न माळा रा साधारण मणिया बताय न महाराणा री तुलना सुमेरु (ऊपर वाळ मोट मणियै) सू करता थका दिल्ली दरबार री जबरो टीका करी है—

---

1 चारण साहित्य का इतिहास भाग दो पृ स 258 से डा मोहनलाल जिज्ञासु ।

दूहो

माला ज्यू मिलिया महिप, दिल्ली मे दोय दाण ।
फेर फेर अटकै फिरग, मेरु फतौ महाराण ।।

माळा फेरण रो ओ विधान है के साधारण मणिया फेरता फेरता जद माळा फेरणवाळै री आगळी सुमेरू मणियै माथ पूगै तो रुक'र आगळी सू इणरो परिक्रमा करणी पडै । मतळब सुमेरू आवता ई हाथ अटक जाव । इण भात कवि दूजा राजावा मे अर महाराणा मे फरक दरसावता अग्रेजी सत्ता वास्तै वा नै डाढ हेटलो काकरो दरसायो है ।

महाराणै विदेशी सत्ता री अवहेलना करी इणसू जन मानस मे व्याप्त विदेशी सत्ता रै प्रति रोप री भावना नै तुष्टि मिळी । जनता इण घटना न भूल नी सकी ।

जोवनेर ठाकर करणसिह महाराणा नै वा रै वडेरा री परपरा याद दिरावता वा रै इण हिम्मत भरियै काम री घणी सरावणा करी—

सोरठा

आगल समद अथाह, सह नरपत बूडया सहज ।
सागा सुतन सराह, सरवज सम सीसोदिया ।।

तापी तुरकाणीह हिदवाणी हकूमत हली ।
फतमल फतराणीह, फिरगाणी फरमान पर ।।

लोभी लूमाडाह, सिघासण सिसुमार रे ।
मानी मेवाडाह, भाण उणै ज्यू भाणवत ।।[1]

इणी'ज भात राव गोपाळसिह खरवा काव्य रचना करता कह्यो के जे महाराणा फतेहसिह ब्रिटिश सत्ता आगळ झुक जावता तो सगळा देशवासी हिम्मत हार होय जावता । उणा दूजा भारतीय नरेशा न खरगोस्या टोळो वतावता महाराणा नै सिह रै उनमान मान्या है—

---

1 चारण साहित्य का इतिहास भाग दो पृ स 258 ले डॉ मोहनलाल जिगासु ।

सोरठा

होता हिंदू हताश, नमतो जे राजा नृपति ।
सबळ फता शाबाश, आरज लख राखी अजा ।।
करजन कुटिल किरात, शशक नृपत गहिया सकळ ।
हुयो न तू इक हाथ, सिंघ रूप फतमल सबळ ।।[1]

डिंगल रै सुप्रसिद्ध कवि श्री नाथूदान महियारिया इण घटना साथ आपरा भाव इण भात प्रगट किया—

सोरठो

तोलै भुज तरवार, बोल मद भरिया वयण ।
दिल्ली रै दरबार, राण फतो अनमी रह्यो ।।[2]

गीत

अकबर पतसाह विचै बळ इधक,
हथनापुर दरबार हुयो ।
उणसठ साल लिखयो मिळ गोरा,
हाजर नृप सब आय हुया ।
आप तणा अनमी घर आहड़ा,
कीधो घणा नरिंदा कीत ।
जस करणो म्हारो क्रम जाता,
राजद्रोह कहसी कोण रीत ।
कुरम कमध जसी गत करवा,
फरबा जद लागो फिरगाण ।
डर भर भाण हिंदू नह उगियो,
उ रवि उग उगियो आथाण ।
राण सरूप सक लिख राख्यो,
वो वरताव कियो जिण वार ।
नह पतसाह अग सिर नमियो,
उण इकलिंग तणा औतार ।

---

1 श्री अगरचंदजी नाहटा बीकानेर रै संग्रह सू ।
2 श्री अगरचंदजी नाहटा बीकानेर रै संग्रह सू ।

- राग फतै गोरव सह राख्यो,
पातल जसो भुजा रै पाण ।
केलपुरा अनमी कहलायो,
आछ छक आयो उदियाण ॥[1]

इणी'ज भात कवि चिमनसिंह दधवाडियै (खोमपुर) ई इण काम वास्तै महाराणा री तारीफ करता अेक डिंगल गीत लिख्यो जिण मे राणावश रा वखाण करनै दूजा राजा महाराजावा न फारा बताया—

गीत

अधकै तपै उदियाण बड भाग रा अहाडा,
भुड मह दाग रा लगै झोका ।
आगरा बली तक खळा मन ऊपरा,
धका बजराग रा पडै धोका ।
भले अणयाह कुण गढा देसी भचक,
वसुधा मचक अहि लचक बोझा ।
नव सजनेश रा सिघली नोहता,
फता नृपा केणसर हुकै फौजा ।
सिधवी राग रा बोल व्हैता सबळ
सोल लग भुजाटाँ मूछ ताणा ।
वस पैंतीस सब पाय नमाव,
रीस री निजर किण शीश राणा ।
झीजिया धीर रस मूछ बहुवा भड,
खड होय आगता चसम खीझो ।
अडर भड लिया असुरा दळ आवडै,
यावद फत कर साम बीजो ।[2]

इण भात ई सन् 1903 मे घटी आ घटना राजनतिक स्तर माथै अग्रेजी प्रभुसत्ता रै वास्तै चर्चा रो विषय वणगी । मेवाड री गौरवशाली परपरा न याद करन कविमरा इण माथ मोकळो काव्य

---

1 राजस्थानी शोध सस्थान चौपासनी (जोधपुर) रै सग्रह सू प्राप्त ।
2 श्री अगरचद नाहटा रै सग्रहालय, बीकानेर सू प्राप्त ।

लिख्यो । परिस्थितिया रै बदळाव सू राजनैतिक स्तर माथै मेवाड अर दिल्ली रै आपसी सबधा मे भलाई फरक आयग्यो होव पण दिल्ली रै तखत माथै विराजमान गोरी सत्ता रै प्रति जनता रै मन मे तो रोष री भावना ही ।

इण वखत महात्मा गाधी रो अहिंसक आदोलन सगळै देश मे घणै जोर सू चालै हो । इण वास्तै महाराणा फतेहसिंह रै इण काम रौ सगळै देश माथ जबरो असर पड्यो । मेवाड री गौरवशाली परपरा मे अेक पानो और जुडग्यो । पण इण घटना नै इतिहास प्रसिद्ध बणावण री जस केसरीसिंह बारहठ जिसा कविया न ई है के जिणा 'चेतावणी रा चू टिया' जिसी जीवत अर ओजपूण काव्य रचना करन इण घटना न अेक नु वी मोड दियो ।

महान देश भगत बारहठ परिवार

ठाकर केसरीसिंह बारहठ

बीसवी सदी रै पूर्वार्द्ध मे राजस्थान मे अेक इसो देश भगत परिवार हुयो जिणै राष्ट्र रै खातर स्वतत्रता यज्ञ मे आहुति बण'र आपरो सै की होम नाख्यो । शाहपुरा (मेवाड) रा वासी ठाकर केसरीसिंह बारहठ इण परिवार रा मुखी हा ।

बारहठजी भारतीय स्वतत्रता सग्राम रा आगीवाण सनिक होवण रै सागै अेक नामचीन कवि पण हा । आपर व्यक्तित्व मे राष्ट्रभक्ति अर काव्य प्रतिभा रो मणिकाचन रो योग हो । ओ ई कारण है के आप राष्ट्र र उत्थान सारू ओजपूण काव्य रचना रै सागै भारतीय स्वतत्रता सग्राम मे ई सक्रिय रूप सू भाग लियो । उल्लेख जोग बात आ के आप आपरै पूरै परिवार न स्वतत्रता सग्राम मे होम दियौ । चावा क्रातिकारी शचीद्रनाथ सान्याल रै शब्दा मे—

'बारहठजी रो परिवार राजपूतानै रै ठावा जागीरदारा मे सू अेक हो पण राष्ट्रप्रेम रै कारण सगळी सपदा नष्ट हुयगी अर घणा फोडा भुगतणा पड्या । सै सू प'ली दिल्ली षडयत्र केस मे केसरी-सिंह रै जमाई ईश्वरदान आसिया पकडीज्या । पण वा र खिलाफ कोई ठोस सबूत नी मिळवा सू वानै छोड दिया । थोडाक दिन बीत्या पछै केसरीसिंह न काळै पाणी री सजा हुई अर वारै पुत्र प्रताप नै फासी होयगी । वारै भाई जोरावरसिंह रै नाम वारट

निकळग्यो परण वे जीवरण भर अंग्रेजा रै हाथ नी आया ।[1]

केसरीसिंह बारहठ रो जनम 21 नवबर 1872 रै दिन शाहपुरा ठिकाणै रै खेडा देवरी गाव मे हुयो । आपरै पिता श्री किशनसिंहजी अेक जारगीता कवि अर चावा इतिहासविद् हा । वारै रच्योडा दो ग्रथ वारी विद्वता नै उजागर करै । पै'लो ग्रथ है श्री सूयमल मीसरण रचित वश भास्कर री 'उदधि मथनी' नाम सू विशद टीका अर दूजो ग्रथ 'राजपूताने का अपूव इतिहास ।'

आप आपरै पुत्र केसरीसिंह रो शिक्षा दीक्षा कानी पूरो ध्यान दियो । वा नै विद्याध्ययन वास्तै काशी भेज्या । काशी उरण जमानै मे विद्या रो केन्द्र मानीजतो । काशी कई वरस रैय नै केसरीसिंह वेदात, ज्योतिष अर दूजा कई विषया री शिक्षा प्राप्त करी । इरण भात वे कई विषया रा जारणकार बरणग्या । वे कई भाषावा मे धारा-प्रवाह बोलरणो अर लिखरणो जारणता ।

उरण वखत देश मे स्वतत्रता आदोलन चालू हो । केसरीसिंह जिसा स्वतन्त्र चेता अर सवेदनशील व्यक्ति माथै उरणरो असर पडरणो सुभाविक हो । वे ई सन् 1903 सू ई स्वतत्रता आदोलन मे शरीक होयग्या । इरण कारण आ बात कैवरणी सही होसी के वे स्वतत्रता आदोलन रा आगीवारण अर पथ प्रदरसक हा । कविराज उदयराज उज्वळ रै शब्दा मे—

करग्यो केसरियाह, केसरियो तिरण कारणै,
कागरेस करियाह, भेस तम्हीरणा भारती ।

सरुपात मे आप उग्रवादी विचारा रा होवरण रै कारण अहिंसक आदोलना मे वारी आस्था नी ही । इरण कारण केसरीसिंह उरण वखत रै क्रातिकारिया रा प्रबळ समथक, मारगदरसक अर आगी-वारण नेता हा । वा री योजना आ ही के तत्कालीन रजवाडा नै स्वतत्रता वास्तै प्रेरित करनै वा री अेक ताक्तवर सगठरण बरणा-वरणो अर विद्रोह रो वातावरण त्यार करणो । बारहठ केसरीसिंह राजस्थान रा स्वतत्रता सेनानिया री उरण टोळी मे हा जिरणमे अर्जु नलाल सेठी, विजयसिंह पथिक, मौलाना मोइनुद्दीन, चादकरण

---

1 हाडौती का स्वतत्रता आदोलन, पृ स 35

शारदा, जमनालाल बजाज, माणक्लाल वर्मा अर खरवा रावसा'ब गोपालसिंह इत्याद हा। आगै चाल'र श्री जयनारायण व्यास अर हीरालाल शास्त्री इत्याद इण टोळी रै भेळा भिळया।

सरूपात मे हिंसक आदोलन मे विश्वास राखण रै कारण वा री सशस्त्र क्रांति मे आस्था ही। इण कारण वे 'अभिनव भारत' नाम रै अेक क्रांतिकारी सगठण सू जुड्या। राजस्थान मे इण सगठण री जडा जमावण ताई उणा आपर घनिष्ठ मित्रा समेत खूब मैणत करी।

केसरीसिंह री आ विशेषता रही कै वा रो पूरो परिवार स्वतन्त्रता सग्राम मे लागग्यो। आपरा छोटा भाई जोरावरसिंह अर पुत्र प्रतापसिंह ई पूरी तरै सू राष्ट्रीय रग मे रगीजग्या। जोरावरसिंह तो हार्डिंज बम काड मे भाग लेय न फरार हुया तो जीविया जितरै ई फरार इज रह्या। प्रताप धोखै सू पकडीजग्यो अर उण न फासी री सजा हुई। दम निकळचो जठा ताई उण नै हर भात तकलीफा दिरीजी पण उण माई रै लाल आपरै गुप्त सगठण रो अगा ई भेद नी खोल्यो। गोरी सत्ता उणर मू डै सू अेक आखर ई नीं कढवाय सकी।

बारहठजी आपर जीवण मे 'राजपूत हितकारिणी' अर 'चारण महासभा' नाम सू दो सस्थावा सगठित करन दोनू कौमा न राष्ट्र सेवा कानी मोडण री कोसिस करी। इण प्रयत्न मे वा न कितरी सफळता मिळी वा दूजी बात है पण उणा आपरी तरफ सू कोई कसर नी राखी।

गोरी सत्ता वा रै लार पड्योडी ही। छेवट अेक कावतरो (षडयत्र) घड न वा न गिरफ्तार कर लिया। ओ किस्सो ई सन् 1912 रो है। बार माथै प्यारेराम नाम रै साधु री हत्या रो सफा कूडो आळ लगाय नै वा न बीस बरस रै कठोर कारावास री सजा सुणाय दी। वा न की बरस तो कोटा राज री जेळ मे राख्या अर की बरस हजारी बाग जेळ मे। छेवट 1919 मे राजनतिक सुधारा री घोषणा रै फळसरूप याने जेळ सू छुट्टी मिळी।

वे अेक उच्चकोटि रा चरित्रवान देश भगत हा। वे जीवण लग राष्ट्र सेवा मे लाग्या रह्या। उणा आपर व्यक्तित्व अर कृतित्व दोनू सू राजा अर प्रजा दोनू रो ई सही मारग दरसण कियो।

श्री विष्णुदत्त शर्मा (भूतपूव सचिव, राजस्थान सरकार) जिणा री बारहठजी सू व्यक्तिगत सपक रह्यो, आपरै अेक ससमरण मे वे वार व्यक्तित्व बावत लिख –

'वारहठजी डील रा खटरा होवता थकाई वारो व्यक्तित्व घणो नामी हो। वा मितव्ययता मे जीवण बितायो पण वारै मिजाज मठोठ मे गरीबाई कठई आघो नेडी ई कोनी ही। वे सफेद साफो, सफेद कोट अर दोलगी सफेद ई धोती पेहरता। हाथ मे हर वखत षटियो राखता। मूडे माथै सफेद बुगल री पाख जिसी फरहरती मूछा अर बुद्धि चातुय सू दीप्त मोटी मोटी आख्या यार उणियारै री विशिपता ही। वे डिंगल अर व्रजभापा रा सिद्धहस्त कवि अर सस्कृत रा प्रकाड पडत हा। वारी बाता मे विवेक, शालीनता अर देश प्रेम री गरिमा री पुट रवती। भारत रै सगळै प्राता रा देश-भगता, मनीषिया अर क्रातिकारिया मे वारो घणो मान हो। वे घणा स्वाभिमानी पुरप हा। तत्कालीन कोटा नरेश वारा परम भगत हा। पण उणा कदई वार आगळ याचना नी करी। घर मे खालीपै री ओ आलम हो के कई बार दाणा रा ई जादा पड जावता। पण मजाल है इसी बात कदई इण मरद री जबान माथै आई होवै। सगी साथिया अर घनिष्ठ इष्ट मित्रा न जद इण बात री जाण पडती तो वे बारहठजी नै ओळमो देवता। पण वे इण बात न हस'र टाळ देवता।'

सरुपात मे जद वे क्रातिकारी आदोलन सू जुडया थका हा, तो उणा राजपूतान रा सगळा राजावा अर सरदार सामता न ई इण कानी मोडण री पूरी मैणत करी। जिको रजवाडा यारै विशेप सपर्क मे रह्या वा माथै यारै विचारा री असर ई पडयो। कोटा, उदयपुर अर सीतामऊ इत्याद रजवाडा या सू खासा प्रभावित रह्या। वे बारहठजी रै त्यागी जीवण रा पक्का प्रशपक हा अर मोको आया यथा सभव यारी सहायता ई करता। पण विदेशी सत्ता रो खुलो विरोध करणो वारै वश री बात नी ही।

बारहठजी सगळा रजवाडा अर सरदार सामना न या समझा-वण री पूरी कोशिश करी के विदेशी शासन री अवधि अबै खतम होवण वाळी है। भविष्य मे ओ राज कायम नी रैव। इण कारण देशी रजवाडा नै चेत जावणो चाइजै। वे जिण न आधार मान न

वठा है, वो बोदो आधार टूट'र वे अधर में ई भूलता रय जासी। इण बाबत वारै काव्य री बानगी इण भांत है—

देशी नरेशां नै चेतावणी

सोरठा

अयघि अब ओछीह, सोचीज सह भूपत्या।
पड़गी पख पोचीह, नीत सलोची नह रखी॥

साज्यां वणिको साज, रजवट बट खोय रियु।
रहसी नह ओ राज, आज लगां जिण विध रह्यौ॥

नभ सोला निरखाय, ऊंचा नैणां आपरा।
अब जहाज अपडाय, आगै भाळो अधपत्या॥

ऊपर र आधार, पग समेट भूल पड़या।
की जाण करतार, ससक पड़ खतिया कड़ा॥[1]

रियासतां में प्रजा रै साग होवत खराब बवार अर शोषण नै भूंडता उणा कह्यो—

सोरठो

ह्रो न पराया हेत, राजा यो घर आपरौ।
लाण लगया पपू हेत, थाड रप वण्या रह्या॥

कवि क्षत्रियत्व र प्रति घणा आस्थावान हा। इण कारण इण कौम री दुदशा देख'र वारो जीव घणो दुखी होवतो। कवि कर्म री कर्त्तव्यनिष्ठा रै प्रति सजग होवण सू उणा क्षत्रिया नै सबोधित करता कह्यो—

रण धारा साम्है खड़ो, उर न धड़ी आतक।
जिका बहादुर जातड़ो, पड़ी थरहर पक॥

सग्रवट मांहे खोट, देखे दुख पाय दुसह।
तद कारण चुभतो चोट, हिरद सबदां री हूण॥[2]

भारत र दूजोड़ै प्रांतां बगाल, महाराष्ट्र, गुजरात अर पजाब

---

1 राजस्थानी शोध संस्थान, चोपासनी रै सग्रह सू।

2 उपयुक्त।

इत्याद मे स्वतनता आदोलन घणी तेजी सू चालै हो पण राजस्थान मे इणरी गति घणी मद ही। इणरो मूळ कारण ओ हो के इण प्रदेश रा राजा महाराजा विदेशी सत्ता रा पक्का समर्थक हा। इण मे वारा आपरा स्वार्थ जुड्योडा हा। उठी नै प्रजा सफा ठोठ अर अज्ञान रै अधकार मे डूबोडी ही। बारहठजी न आपरै-प्रात री राजनैतिक निष्क्रियता माथै घणो रोष हो। काव्य रै माध्यम सू उणा उणनै इण भात प्रगट कियो—

सोरठा [1]

बाजी लो बगाळ, महाराष्ट्र वढिया मरद।
पण थकिया पचाळ, दुबक रह्या देसोतडा॥
धर गुर्जर री धाक, डगमग बड आसण डिगै।
हा रजपूत अवाक, ताक रह्या भवितव्य नै॥[1]

बारहठजी महाराणा फतेहसिंह न जिण भात दिल्ली दरबार मे जाय न लार्ड कर्जन री हाजरी देवण सू रोकण वास्तै 'चेतावणी रा चूं टिया' लिख नै आपर प्रखर राष्ट्रीय विचारा री ओळखाण दीवी ही, उणी'ज भात महाराणा भूपाळसिंह न सबोधित कर न ई आप की उद्बोधनात्मक काव्य री रचना करी। इणसू आ बात उजागर होवै के वे आपर कवि कर्म रै प्रति कितरा सजग हा।

महाराणा भूपाळसिंह नै सबोधित करन उणा जिको की उद्बोधनात्मक दूहा कह्या, वे इण भात है—

दूहा

मठठ सदा मेवाड री, रातो फतमल राण।
क्लीवपणा रा काळ मे, है बब्बर हिंदवाण॥
प्रेम न जोख बाप री, लाह हिसावा लाग।
धन धनवा पूता धरा, पग पग वर्ण प्रयाग॥
चूंडै हसतै छोडियो, सह सपत सुख साज।
पितु भगती री पारखी, जग सपूत सिरताज॥

---

1 श्री अगरचन्द नाहटा रै सग्रह बीकानेर सू प्राप्त।

लोक रखता त्याग री, भीख नरक पथ भाळ।
लोक लाज बडका लखरण, भलं सोख भोपाळ ।।

उणहिज कुळ मे आपरो, थिर भरणायो थाळ।
बिरद बडा रा बापसो भाळीजै भोपाळ ।।

यो घर रहियो आपरो, आज लगा अकलक।
है आसा तो हाल हू, पड न छाटा पक ।।[1]

बारहठ जी आपरं सुभाव मुजब जद कदेई अर जठं कठं ई अ याव के अत्याचार होवतो दीठो तो वे चुप नी रह्या। उणर खिलाफ उणा आपरी जबान जरूर खोली। उणा इण बात री कदई परवाह नी करी के आगलो इणसू नाराज होय जासी। खुद अेक जागीरदार होवता थका ई उणा जागीरदारी जुल्मा री जम नं विरोध कियो। वारं जीवण काल मे जिको सीकर काड घटित हुयो, उण माथ उणा आपरा विचार निडरपण सू प्रगट किया। इण बात री सुपने मे ई परवाह नी करी के इणरो काई नतीजो निक्ळसी। काव्य री बानगी इण भात है—

दूहा

प्रजा न पूरी मानणी, बख मान पर थोस।
मन्त्री ताप थोंस बण, काढ अपणो होंस ।।

सिकुड ढाल री ओट मे, अपणो करे बचाव।
भीत चतुरता क्यू कवो, काछब सहज सुभाव ।।

मान विरथ बदनाम भो, बीच मयग प्रसग।
जिस्या पाय तुरग सम, होय सुरग कुरग ।।

प्रकृत तीसरी जे नहीं, बीच बीच मे आय।
लोक मानवी रीत कू, सहज प्रीत मनवाय ।।[2]

राष्ट्र प्रेम रै कारण आपन आजीवण फोडा भुगतणा पडचा। सरकार यारी सगळी चल अचल सपदा जब्त करन या न मिखारी बणाय दिया, कूडा मुकद्मा मे फसाय'र वीस वरस री जेळ बोलदी, भाई जोरावर फरार होयनं जीवण लग अठी उठी भटकतो रह्यो,

---

1 राजस्थानी शोध सस्थान चोपासनी, जोधपुर र सग्रह सू।
2 उपयुक्त।

अेकाअक मोट्यार बेटो प्रताप फासी रै फदै मे झूलग्यौ अर पत्नी सती साध्वी माणक दे पुत्र वियोग मे बिलखतो आपरा प्राण देय दिया। पण इण नरपु गव वज्र री छाती लिया सगळा कष्ट सहन कर लिया। डिंगल रै चावै कवि रूपसिंह बारहठ वारी सहन शक्ति रा वखाण इण भात किया है—

गीत

घरा धाम अर धन गयो, गई सह सुख री घडिया।
सुत प्रताप सो छोड, पडण लगी दुख झडिया॥
माणिक सो मणि महल गई, दधि विपदा डारं।
कुळ री दीप किशोर गयौ, वृद्ध वधु विसारं॥
सह भात वेह प्रतिकूळ वहै, कोधो सदा रुग्राडतो।
तोई कृष्ण देह वाळो कवि, केहर रह्यो दहाडतो॥

दूहो

दिन दूणा निस चोगुणा, सह्या कष्ट अनेक।
सही न गई पण सिंह थी, पराधीनता अेक॥[1]

कवि रै त्यागपूण जीवण मायै चारण कवि अक्षयसिंह रतनू रचित अेक झमाल' मिळै जिकी 'केसरीसिंहजी री झमाल' रै नाम सू चावी। इण 'झमाल' सू यारै जीवण मायै मोकळो प्रकाश पडै—

झमाल

आज भारत मे भलो, सारै सूरा स्यान
धीर भोम बाज विहर, राजै राजस्थान
राजै राजस्थान, मुलक मन मोहण
रोचक रेगिस्तान, स्वर्ग रज सोहण
सतिया जूझारा [illegible], दिपै दिव्य देवळी
गाव गांव गोरवो, धपो थरमापळो॥ 1
मारवाड मिळता ई मुद, पयुल प्रलब पहाड
झरणा कळकळता झर, मजुल सहो मेवाड

1 राजस्थानी शोध सस्थान, चोपासनी जोधपुर रै सग्रह [illegible]।

मजुन महो मेवाड, सरोवर साजवै
स्यारू चमक चित्तौड, लक गढ राजवै
सागा कुभा सुभड, कीरत जागती कही
प्रगट्या प्रबळ प्रताप, सूरज हिंदवा सही ।। 2

× ×

सन अठार बहोतर सु, नौम्बर इक्कीस निबोह
गुरू दिन जनम्यो गुरू ग्रहो, सुभड केसरीसिह
सुभड केसरीसिह, बीर बारू बियो
शुक्ल पक्ष शशि शभु, दिनोदिन दीपियो
कोटडो सू कविराज, कन्या परिणय कियो
महाराण फतमाल, समागम सामियो ।। 3

फतेहसिह महाराण फिर, नृप कोटा नजदीक
रहता भी हित राष्ट्र रो, निरबाहियो निरभीक
निरबाहियो निरभीक, छनिता तन छजी
सामत साही हूल उर घृणा ऊपजी
प्रखर मातृ महि प्रेम रग दिल रगियो
अगरेजी आतक, भयकर भगियो ।। 4

सन गुनीस सै तीन सज, भारत मुक्त भुज भार
कियो लाड कजन कुटिल, दिल्ली मे दरबार
दिल्लो मे दरबार मदोन्मत मडियो
स्वाभिमान सह सुपह, छत्रपत छडियो
भारत मडळ भूप अखिल उमगाविया
महाराण फतमाल, दिलो दिस धाविया ।। 5

पतसाहा आग पतो, नम्यो नहीं नरनाह
सुत उण दिली सिधावता, केसर उठ्यो कराह
केसर उठ्यो कराह, उमग अनत मे
चेतावणी रा चूगट्या, पुगाया पथ मे
मत्र त्रयोदस मोहक, जोस जगावियो
आग वीरता उमग, पतग पलटावियो ।। 6

× ×

नरमदळो काग्रेस नह, जीत सकै अग्रेज
केसर गरमदळो कियो, तद आदोलन तेज
तज आदोलन तेज, रच्यो रजथान मे

क्रांति शास्त्री करण, धारण ध्यान मे
बाहिर बगळा दि, घणी घटना घटी
रास विहारी बोस, प्रभृति बम पारटी ॥ 7

ज्यू भारत जोरावरा, नाखी नाक नकेल
ग्रडणी उण अगरेज सू, हुतो न हासी खेल
हुतो न हासी खेल, रेल टकरावणा
प्रज्वलित ज्वाल पतग, ज्यू ही मर जावणा
मेल्ह दिया मरहठा, तिक दिन ताक मे
नरपत जाट निजाम, रळाया राख मे ॥ 8

गति विधि फली गजब री, ग्रजब उडेली ग्राग
पाछ्‌ केसर के पडयौ, पोलेटिकल प्रभाग
पोलेटिकल प्रभाग, सज्यो षडयत्र सो
व्है कर क्रुद्ध विरुद्ध, सासनो तत्र सो
धोल शापुरधीश, कद कर कालिमा
सिरली सब सपति, जबत कर जालिमा ॥ 9

ग्राई ग्रगणित ग्राफता दिन दूणी दरवेस
लाछ्‌ण झूठ लगावियां, कतळ तणा भी केस
कतळ तणा भी केस, लगाया लोगडा
ग्राई जो तदबीर, छावणी छोगडा
जुम न साबित होय, हताशा होय के
कोर्ट कियो चलाण बीज बद बोय के ॥ 10

× ×

चक्रव्यूह भेदी चतुर, अगरेजा ग्रणमाप
ग्रर्जुण रै ग्रभिम यु ज्यू, प्रगट्यो पुत्र प्रताप
प्रगट्यो पुत्र प्रताप, सत्र सकावियो
सेठी शिक्षित सूर, नूर चमकावियो
शुचि शचीन्द्र सन्याल, वखाणी वीरता
वदी जीवन वदी, ध्रुवैं रणधीरता ॥ 11

पकडयो केसर तिण पछ्‌, घर पकडा व्हो धाप
जकडयो गयो जजीर हू, पकडयो गयो प्रताप
पकडयो गयो प्रताप, काकोरी केस मे
बनारसी षडयत्र, ब्रिटिश विध्वस मे

जुलम बरेली जेल, सुकोमल सचरी
भगतसिंह समवाह, वाह नहीं उच्चरी ॥ 12

× ×

सज गुणीस स द्वादस, सज जोरावरसिंह
पटक्यो बम हार्डिज पर, दिली सवारी दीह
दिली सवारी दीह घाव घण घालियो
कर कत्त व्य कमाल, चतुर झट चालियो
सिर पटक्यो सरकार, पकड नीं पा सकी
सूर पूर सही, विपत वनवास की ॥ 13

आवा न तो आवियो, केसर लेकिन क्लेश
गृह सुनो गृहिणी विना, सुत विन सूनो देस
सुत विन सूनो देस, विहद वैराग भो
अंतर अंतरजामी, अधिक अनुराग भो
सनै सनै साहसी पुत्र, लघु पाळियो
सोक समू सविवेक, टेक जुत टाळियो ॥ 14 ॥[3]

इसो लागै के जीवण रै मध्यकाल मे पूगता पूगता बारहठजी री विचारधारा मे की बदळाव आवण लागग्यो हो । जीवण र प्रारभ मे सशस्त्र क्रांति अर हिंसक आदोलन मे आस्था राखण वाळै इण महान देश भगत र विचारा ई सन् 1920 ताई मोकळो बदळाव आयग्यो हो । आपरी अेक मात्र सतान री बळिदान देवणवाळो कवि अबै जनतत्रीय प्रणाली सू बदळाव री बात सोचण लाग्यो हो । कवि र इण विचारधारा री पुष्टि उण दस्तावेज सू होवै जिको उणा अप्रेल 1920 मे कोटा सू अजेंट टू द गवनर जनरल राजपूताना न लिख्यो है । उणमे वे राजा अर प्रजा मे सहयोग र माध्यम सू उत्तरदाई शासन र थरपणा री योजना पेश कर ।[4]

---

1 राजस्थानी शोध सस्थान, चोपासनी जोधपुर रै सग्रह सू ।

[illegible] श्रीमान् सम्मानीय अजेंट टू द गवनर जनरल- राजपूताना री सेवा में । मानीता !

म्हन प्रदेश रै मायनै अर बारै सावजनिक परिस्थितिया देखनै म्हो पक्को विश्वास होयग्यो है के हरेक देसी रजवाडै री प्रचळित शासन-शली मे वखत रै मुताबिक उचित सशोधन करण रो समय आयग्यो है ।

जीवण रै सध्याकाल मे पूगता पूगता तो इण महान देश भगत अहिंसा मे पूण आस्था प्रगट करणी सरू कर दी ही। इण तथ्य री

जे अबै इण बात कानी ध्यान नी दिरीज्यो तो पछै पछतावो रहसी—खासकर राजा महाराजावा नै। इण वास्तै शासन मे प्रजा री भागीदारी अबै अेक वखत री पुकार है।

प्रजा री भावनावा री अवहेलना करनै फगत मौखिक सहानुभूति अर दमन नीति सू अबै काम नी चालै। इणसू आतरिक कलह पैदा होसी।

खुद री गळती न स्वीकार करणी अेक उत्तम कोटि री नतिकता है। इण कारण आ साची बात मान लेवण मे कोई हरज कोनीं के आज कोई देशी रजवाडी इसो कोनी के जठै री शासन प्रणाली नियमवद्ध अर प्रजाहितकारी होवै। प्रजा फगत पैसो देवण वाळी कामधनु है अर राज उणनै दूवण वाळो ग्वाळो है। सरकारी खजान री आमद मे दिण दिन बढोतरी होवती रैवै, बस शासन री अेक मात्र ओ ई उद्देश्य है। न्याव नीति रा महकमा ई प्रजा रो शोषण करण मे लाग्योडा है। पछ प्रजा-हित री बात ई कठै रही ? रजवाडा री नाणा नीति विकृत हुयोडी है। इसी शासन प्रणाली रै भरोसै प्रजा सुख सू नीं रैय सकै।

राजशाही शासन प्रणाणी नु वी कोनीं। पण जठा ताई गवनमैंट रजवाडा री आंतरिक व्यवस्था मैं देखतो रही, मामलो थोडो ठीक रह्यो अर शासन री असली भयकरता प्रजा रै सामी नीं आय सकी। पण अब सू गवनमैंट रो हस्तक्षेप मोळो पडयो असलियत सामो आयगी।

शासन प्रणाली अधर-पधर री बणगी। नीं तो वा सफा जूनी रैय सकी अर नीं नु वी बण सकी। जागीरदार रजवाडा नै शोषक मानै पण असलियत आ के प्रजा र वास्त जागीरदार अर राजा दोनू शोषक है। इण भात प्रजा रो दोवडो शोषण होवै। दोनू प्रजा रो रगत चूसण में लाग्योडा है। इण कारण प्रजा में राज रै प्रति नी तो विश्वास है अर नीं राज भगती।

रियासती प्रजा अणपढ, दरिद्री अर दुखी है। उणम असतोष इतरो व्यास है के कोई वखत की पण होय सकै। कोई पण उणरै उद्धार रै नाम माथै उणरै सामी क्रांति रो पाटियो राख तो वा उण

पुष्टि इण बात सू होवै के उणा आपरै देहावसान रै आठ महीना प ली महात्मा गाधी न आपरै हाथ सू दो कागद लिख्या हा।

माथे चढ'र झूलण न त्यार बैठो है। पछ भलाई उण झूल र नीचै ग्रहाखाड हुवो, पण प्रजा नै उणरो अगाई भान नी है।

मूळ बात आ के जद शासन व्यवस्था इज गडबड मे है तो अबोध प्रजा म नियम सू रैवण री भावना कठ सू आय सकै ? इसी हालत मे सतायोडी अर दुखी हुयोडी प्रजा मे विद्रोह री भावना जाग जावै तो अचू भै री बात कोनी। इणरो कांई परिणाम निकळसी आ तो भविष्य ई बतासी। पण आ बात नक्की के अशाति, अविश्वास अर अ व्यवस्था री ज्वाळामुखी खोटो इज है। न मालुम किण वखत वो प्रळय कर देवै, की कैय नी सका। रजवाडा मे राजावा अर वारा की वेतन भोगी सलाहकारा रै भरोस गवर्नमेंट वासू मित्रता राखन नचीती नी रैय सकै।

म्हैं निष्पक्ष भाव सू देश री जिकी असली हालत है वा सक्षप म लिखी है। थु हालात आप सू ई कोई छाना है कोनी कारण के आप प्रदेश रा सै सू बडा अधिकारी हो। म्हैं परतख निजरा देख रह्यो हू के च्यारू मेर अव्यवस्था अर असतोष दिन दिन बढतो जा रह्यो है अर उणरो कोई सही इलाज नी होय रह्यो है। सही इलाज री म्हारो मतलब ओ के देशी राजावा री सत्ता कायम बणी रैवै जागीरदारा म ओ विश्वास जागै के वारो अस्तित्व कायम रहसी प्रजा न ओ भरोसो बध जावै के वीरै सागै पशुवत बैवार नी होसी न्याव रा दरवाजा खुला लाधसी अर उणर वाजब हक री रक्षा होसी। इणर अलावा गवनमट न ई ओ विश्वास आय जाव के राजा महाराजावा रै अलावा प्रजा ई वी रै सागै है अर साचै मन सू राज भगत है।

पण अ सगळी बातां तद ई सभव है जद कै गवनमेंट अर रज वाडा दोनू प्रजा रै साग सहयोग री भावना राख। म्हैं इण बात न घणी जरूरी समझू। इणरो मतलब ओ के शासन मे उचित बन्दळाव लाय न अक स्पष्ट नीति री घोषणा करीज। प्रजा न शासन मे भागीदार वणाय न उचित प्रतिनिधित्व दिरीज अर शासन री मनमानी न रोकीजै।

प्रजा में लाग्योडी असतोष री लाय न बुझावण, वास्त राज र

आ उण वखत री वात है जद ई सन् 1941 मे महात्मा गांधी व्यक्तिगत सत्याग्रह रै वास्तै देश भर मे सत्याग्रहिया री चुणाव करै

हित मे म्हैं म्हारी आ विनम्र राय आप ताई पुगावणी उचित समझी जिकी घणी जरूरी ही।

मान्यवर ! मैं आपनै पक्की भरोसो दिरावणी चावू के राजपूतानै री प्रजा अर राजा मे आपसी विश्वास प्रेम अर सुख-शांति देखण री म्हारी अन्तरी इच्छा है। हरेक देश भगत अर राज भगत आ इज बात चावै। म्हनै पक्की उम्मीद है के इण सवरा काम म सहयोग देवण सारू कई जोगा व्यक्ति जरूर आगै आसी। इणसूं प्रजा ई गुमराह होवण सूं बच जासी अर राज री बुनियाद मजबूत बणसी।

म्हारी कथणी री भावना नै समझ'र जे इण माथै अमल करणी आपनै उचित लागै तो इण काम नै आरम्भ किण भात करणी, वा योजना ई म्हैं आपर सामी पेश कर सकू। फिलहाल तो म्हैं इण निवेदन र मारफत मोटै मोटै मुद्दा माथै अेक राय मात्र भेज रह्यो हूं। वा आपनै बेवारिस लागै तो इण माथै देशी नरेशां न ई भेळा लेयन खुलासैवार विचार होय सकै।

ईश्वर न म्हारी आ ई प्रार्थना है के वो दयाळु प्रभु सगळा नै ई सद्बुद्धि देव। अे सगळी बातां लिखन म्हैं फगत म्हारो फरज निभायो है। इण वास्त आपनै जे म्हारा विचार दाय नी आवै तो ई म्हनै कोई खेद कोनीं। अबकाळै म्हनै ओ उचित लाग्यो के म्है म्हारा विचार म्हारी खुद री भाषा मे ई लिखन आप कन भेजूं। कारण के इणसूं प'ली कई वार (अंग्रेजी भाषा री इतरी जाणकारी नी होवण सूं) दूजा कन अंग्रेजी म लिखाय न आप कन भेज्या तो म्हनै यूं लखायो के म्हारै विचारा री अभिव्यक्ति आपर सामी ठीक ठीक समझ नी हुई। इसी स्थिति मे गळतफहमी पैदा होवण रो ई खतरो रवै। इण वास्त हिंदी मे लिख भेजण रो म्हारो ओ प्रयास उचित मान्यो जावै।

अंत म अेक बात स्पष्ट रूप म कवणी चावू—वा आ के म्हनै लीडरशिप री अणाई भूख नीं है। कारण के लीडर होवण वास्त जिण गुणा री जरूरत होवै वै म्हार मे कोनी। यूं ई लीडरी आजकाल जितरी सस्ती हुयगी है उणनै देख'र म्हारो तो काळजो कांपै। इण

हा । उण दिना राजस्थान रा रामनारायण चौधरी सेवाग्राम मे महात्मा गाधी रै कनै रवता । केसरीसिह अे दोनू कागद श्री चौधरी

वास्तै प्रजाहित अर देसहित म निस्वाथ भावना सू म्है जिको अ विचार लिखनै भेज्या है वारो अो मतळब नो लगायो जाव के म्है लीडर बणन आगै आवणो चावू अर सत्ता री भागीदारी भोगवणी चावू ।

म्हन तो म्हारी आत्मा सू जिको उचित लाग्यो वो निस्वाथ भावना सू आपन लिख दियो । आप इण काम नै खुद हाथ मे लवणी चावो के कोई दूजा जोगा आदमी न सू पणी चावो हर हालत म म्हन खुशी होसी । तिण उपरात ई जरूरत मुजब म्हारी सेवाआं बिना कोई लोभ लालच र त्यार रहसी । म्हारी तो फगत अ ई इच्छा है के म्है आपरै अर देशी नरेशा र सहयोग सू गरीब प्रजा र हित म की काम कर सकू । आज दिन ताई म्हैं कोई राजनतिक आदोलन मे भाग नी लियो है अर सदीव वासू अळगो रह्यो हू । पण गळतीफहमी र कारण देशी रजवाड़ा म्हार नाम सू ई झिझक । इण वास्त म्हारा विचार वार सामी नी राख'र म्है आपरै कन भेज्या है कारण के रजवाड़ा री शासन व्यवस्था रै देखरेख रो भार आपर जिम्मै इज है । किमधिकम्

कोटा अप्रेल 1920

आपरो
विनीत हितबधु
ठा केसरीसिह बारहठ

सूत्ररूप योजना

राजस्थान महासभा

1 भूस्वामी प्रतिनिधि मडल	2 सावजनिक प्रतिनिधि परिषद
1 नना मोटा उमराव	1 मजदूर
2 जागीरदार	2 किसान
3 माफीदार	3 वैपारी

उद्देश्य

1 राजा अर प्रजा मे आपसो सहयोग प्रेम अर शांति री थरपणा । प्रजा री रक्षण ।

सोरठा

अगरेजा ईं आय, भिडिया केहर मूल सू ।
खोपट ऊपर खाय, कुरब विगाड्यो काळिय ।।

केहर री कुळ काण, भिडणो किण विध भूलवै ।
नेम धरम महनाण, खूब निभाई काळिय ।।[1]

श्री डूगरसिंह भाटी (मोही) कवि न आपरी श्रद्धाजळि इण भात अर्पित करी—

दूहा

विपत गही पण ना तजी, कुल मरजाद'र आन ।
जियौ जित जग केसरी, रह्यो राखि निज शान ।।

मृत्यु केसरसिंह ते, हानी हुई महान ।
ढह गई चारण भाग अरु ढह गई साहित खान ।।[2]

श्री ईश्वरदान आसिया (मेगटिया) कवि री प्रशसा मे अेक दूहौ इण भात कह्यौ—

तो जाता होणी थई, खत्रवट चारण खान ।
केहर किण विध कह सका, मन री व्यथा महान ।।

इणी'ज भात ठा रामसिंह (केलवा) इण महान देश भगत नै श्रद्धाजळि अरपण करता कह्यौ—

दूहा

चारण छन्या री चतुर, उपदेसक अणमोल ।
बारठ केहर बिछडियो, तिण दुख री नह तोल ।।

काव्य सुधा सींच कवण, मृतका कवण जिवाय ।
किसनावत कोटा तणो, बारठ केहर साय ।।

राजस्थानी रतन रो, जीता जतन न सीन ।
अब केहर करसू गयो, रोया अरथ रती न ।।

चीता मिळ अहड चढै, मीढा बकरा मार ।
केहर विन अब कुण करै, सबला गजा शिकार ।।

---

1 राजस्थानी शोध सस्थान चोपासनी जोधपुर र सग्रह सू ।
2 उपयु क्त ।

जुलाई 1941 मे इण महान् देश भगत रो देहात होयग्यो । यार उत्कट देश प्रेम, त्यागी जीवण अर निमल चरित्र सू प्रभावित होय न अनेकू बुद्धिजीविया अर कविसरा यान श्रद्धाजळिया अपण करी, जिको वार आदश जीवण री निष्कपट प्रशसा है ।

डिंगल रा जाणीता कवि श्री उदयराज उज्वळ वारी अडिग देश भगती अर देव दुलभ गुणा री तारीफ करता कह्यो—

सोरठा

अडग देस अनुराग, खत्रवट पूजा रो खरो ।
ता कव लीनो त्याग, करग्यो सोवो केहरी ।।
थिर सपत रजथान, भ्रात पुत्र सचित विभो ।
देस हेत बळिदान, करगो सरबस केहरी ।।
रह्यो निरकुस राट, धुन सुतन्तता धारणो ।
पिड स्वारथ परवाह, करी न बारहठ केसरी ।।
साहा नै सुभ राज, दीधा केईक दूथिया ।
गोरा ऊपर गाज, करग्यो अेकज केहरी ।।[1]

सीतामऊ नरेश कवि री इण शब्दा मे प्रशसा करी—

हाल ई म्हारी मनस्थिति सागण वा इज है । आ बात म्हैं खुद री तारीफ वास्तै नी लिखू । पण फगत अो दरसावण वास्त लिखू के उण वखत र जेक कट्टर क्रातिवादी मे आप धरम री जोत बुझी कोनी ही । अब ता म्है उण क्रातिवादी विचारधारा न अव्यवारिक मानू अर अहिंसा रै निमल मारग न चोखो समझू । अो इतरो खुलासो इण वास्त करू के उण वखत रै अर इण वखत र केसरीसिंह न समझण मे बापू न कोई भ्रम नी रैव ।

अो स्पष्टीकरण जे आप उचित समझो तो बापू न निवदन कर-दीजो ।

भवदाय
ठा केसरीसिंह

1 राजस्थानी शोध सस्थान, चोपासनी जोधपुर र सग्रह सू ।

सोरठा

अगरेजां ई आय, भिड़िया केहर मूल सू ।
खोपट ऊपर खाय, कुरब विगाड्यो काळिय ।।

केहर री कुळ काण, भिडणो किण विध मूलयै ।
नेम धरम अहनाण, खूब निभाई काळियै ।।[1]

श्री डूगरसिह भाटी (मोही) कवि न आपरी श्रद्धाजळि इण भात अर्पित करी—

दूहा

विपत गही पण ना तजी, कुल मरजाद'र आन ।
जियो जित जग केसरी, रह्यो राखि निज शान ।।

मृत्यु केसरसिह ते, हानी हुई महान ।
वह गई चारण आन अरु ढह गई साहित खान ।।[2]

श्री ईश्वरदान आसिया (मेगटिया) कवि री प्रशसा मे अेक दूहो इण भात कह्यो—

तो जाता होणी थई, खत्रवट चारण खान ।
केहर किण विध कह सका, मन री व्यथा महान ।।

इणी'ज भात ठा रामसिह (केलवा) इण महान देश भगत न श्रद्धाजळि अरपण करता कह्यो—

दूहा

चारण छत्र्या री चतुर, उपदेसक अणमोल ।
बारठ केहर बिछुडियो, तिण दुख रो नह तोल ।।

काव्य सुधा सींच कवण, मृतका कवण जिवाय ।
किसनावत कोटा तणो, बारठ केहर साय ।।

राजस्थानी रतन रो, जीतां जतन न मोन ।
अब केहर करसू गयो, रोया अरथ रतो न ।।

चीता मिळ अहडै चढै, मोढा बकरा मार ।
केहर बिन अब कुण कर, सबला गजा शिकार ।।

---

1 राजस्थानी शोध सस्थान चोपासनी जोधपुर रै सग्रह सू ।

2 उपयुक्त ।

सोरठो

फवतो खारी फेट, वात लपेट चपेट के ।
अवगुण री आखेट, करसी अब कुण केहरी ।।[1]

अमर शहीद कु वर प्रतापसिंह बारहठ

महान पिता रै इण महान पुत्र रो जनम वि स 1950 मे जेठ सुदी नोमी रै दिन उदयपुर मे हुयो । प्रताप केसरीसिंह रो अेकाअेक बेटो हो । प्रताप री प्रारभिक शिक्षा कोटा मे अर अजमेर रा डी अे वी स्कूल मे हुई । उण जमानै मे स्वतन्त्रता आदोलन रै मुजब सरकारी विद्यालया रो वहिष्कार चालै हो । इण कारण कट्टर देश भगत केसरीसिंह आपरै पुत्र न प्रारभिक शिक्षण पछै महान देश भगत श्री अर्जु नलाल सेठी कानी सू सचालित श्री वद्ध मान जन विद्यालय मे भरती कराय दियो ।

परतु थोडाक दिना मे ओ विद्यालय इदौर स्थानातरित होयग्यो । इण कारण प्रताप न वा र वनोई श्री ईश्वरदान आसिया रै साग महान क्रातिकारी मास्टर अमीचद र कनै दिल्ली भेज दियो । मास्टरजी र राष्ट्रवादी विचारा रो प्रताप र किशोर मन माथै घणो असर पड्यो । इण भात घरेलू सस्कारा अर सगत रै कारण प्रताप रो मन देश प्रेम मे आछी तरिया रगीजग्यो ।

बीस बरस री उमर मे ई वे भारत रै नामचीन क्रातिकारिया रै सपर्क मे आयग्या । उण वखत रास बिहारी बोस उत्तरी भारत मे गुप्त क्रातिकारिया रा आगीवाण हा । साथी मोटयारा रै साग प्रताप जद बोस रै सामी हाजर हुया तो इण खटर कद रा राजस्थानी मोटयार माथ बोस रो विश्वास देखता पाण जमग्यो । उणा प्रताप न आपरै दळ मे शरीक कर लियो ।

अेकर सगळै भारत रो भ्रमण करन प्रताप राजस्थान न इज आपरो कायक्षेत्र बणायो अर अठै सशस्त्र क्राति मे विश्वास राखण वाळा मोटयारा रो सगठण करण मे लागग्या ।

इणी'ज बिचाळै ई सन् 1912 मे भारतीय इतिहास मे अेक प्रमुख घटना घटित हुई । तत्कालीन वायसराय लाड हार्डिज माथ

---

1 राजस्थानी शोध सस्थान चोपासनी जोधपुर रै सग्रह सू ।

दिल्ली र चादणी चौक म बम फेंकीज्यो । ब्रिटिश सरकार आपरी राजधानी कलकत्ते सू हटाय नै दिल्ली लावणी चावती । इण कारण जनता न प्रभावित करण वास्तै प'ली तो जाज पचम न भारत बुलाय न दिल्ली दरबार आयोजित करीज्यो । इणमे सगळा भारतीय नरेशा, अमीर उमरावा अर सरदार सामता न दिल्ली बुलाय'र ब्रिटिश शक्ति रो प्रदरसण करीज्यो । इणरै पछ राजधानी बदळण र उपलक्ष मे 23 दिसबर 1912 रै दिन तत्कालीन वायसराय लार्ड हार्डिज रै नेतृत्व मे फेरू अेक शानदार आयोजन करीज्यो ।

बार बार इसा आयोजन करनै ब्रिटिश सरकार भारतीय जनमानस माथ आपरो सिक्को जमावणी चावती । देश भगत क्रांतिकारिया रै आ बात किया गळै उतरती । उणा इण आयोजन र मौकै लार्ड हार्डिज माथ बम फेंकर अग्रेजी सत्ता रै शक्ति प्रदरसण नै थोथो साबत करण री योजना बणाई ।

'क्रांतिकारी दळ बम फकण रो काम पै'ली तो प्रताप न सू प्यो । वे कई महीना ताई भाठा फेंक न निसाणी लगावण रो अभ्यास करता रह्या । पण अेन वखत माथै आ बात ध्यान मे आई के प्रताप री कद खटरो हो, इण वास्तै कठई इसी नी होवै के भीड आडी आय जाव अर वे निसाणी चूक जाव । इण वास्तै सगळी बाता रो विचार करन छेवट ओ काम प्रताप रै काकोसा जोरावरसिंह न सू पीज्यो । सागण दिन अे दोनू काको भतीज बम लेय न नाव सू जमना पार करनै दिल्ली पूगा । वी गोटा किनारी वाळा कपडा लत्ता खरीद नै बम उणमे लपेट्यो । कपडा री पोटकी अधर उठाया जद अे नाव मैं बठ्या तो किणै ई सहयात्री वान सामान नीचो मेलण रो कह्यो । जोरावरसिंह पड्तर दियो—"भाई, म्हैं मोह्ररो (भात) भरण न जावा । इण वास्त कपडा नीचै राखा तो खराब होय जाव । इण कारण अधर लिया बठा हा ।"

इण भात वे जमना पार उतरया । कपडा री उण पोटकी मे जोरावरसिंह र माप सू सीवायोडो अेक बुर्को ई भेळो हो । दोनू काका भतीज चादणी चौक मे पूगग्या अर भीड मे घुस'र वायसराय री सवारी री उडीक करण लाग्या । प्रताप थोडा नीच ऊभा रह्या अर जोरावरसिंह बुर्को ओढ्या अर हाथ मे बम 'लियां लुगाइया

रैं विचाळैं ऊभग्या । जोरावरसिंह नैं निसाण माथैं कोई चीज फेंकण री आछी अभ्यास हो । ज्यूं ई वायसराय री हाथी सामी आयो, उणनै देखण वास्तै लुगाइया री भीड मे खलबली माचगी । जोरावर बराबर निसाणी ताक न वायसराय माथैं बम फैंक्यो । पण फेंकती वखत भीड मे बारी खूणी रैं कोई लुगाई री टल्लो लागग्यो । इणसूं निसाणी थोडो चूकग्यो । बम होदैं रैं बीच मे वायसराय रैं थोडो लार ठरकीज्यो । इणसूं हाथ मे सोन रो छत्र लिया वायसराय रैं लारैं ऊभो अेक देसी नरेश उठैं ई गुडकग्यो । लाड अर उणरी मेम ई घायल होयग्या । छिन भर मे सगळैं दिल्ली नगर मैं खलबली माचगी ।[1]

इण बम केस मे इज सरकार प्रताप अर बारैं बनोई ईस्वरदान आसिया न गिरफ्तार कर लिया । पण कोई पुख्ता सबूत नी मिळण सूं जाच पडताळ किया पछैं छोड दिया । उण दिना प्रताप र पिता श्री केसरीसिंह जेळ मे हा अर बारा काकोसा जोरावरसिंह फरार हा ।

राजस्थान मैं पुलिस बारैं लारैं पडयोडी ही । यार नाम फेरू गिरफ्तारी वारट निकळग्यो । प्रताप की दिना वास्तैं सिंध हैदराबाद चुग्या गया अर उठ छद्म वेष मे कपाउडर री नौकरी करता रह्या अर उत्तरी भारत री क्रातिकारी गतिविधिया मे भाग लेवता रह्या । अेकर वे इणी'ज सिलसिलै मे जोधपुर रैं कन आसानाडा रेल्वे टसण सूं निकळया तो अेक क्रातिकारी साथी अर उठ रा रेल्वे टेसण मास्टर न मिळवा सारू वठैं उतरग्या ।

इणी'ज टेसण माथ की दिना प'ली बम री अेक पेटी पकडीजी ही, जिणसूं ओ इज टेसण मास्टर सरकारी मुखबिर बणग्यो हो । प्रताप नैं इण सगळी बाता री जाण नी ही । वे तीन दिना रा भूखा अर थाकयोडा हा । इण कारण विस्वासघाती कुमित्र री मनवार माथ वे उणरैं क्वाटर मे ठरग्या अर धोख सूं पकडीजग्या ।

बानैं गिरफ्तार करने बरेली जेळ मे भेज दिया । उण वखत गुप्तचर विभाग रो निदेशक चार्लस् क्लीवलेंड नाम रो अंग्रेज हो । उण प्रताप सूं बम केस री जाणकारी लेवण वास्तैं बानै भात भात

---

1 हाडोती का स्वतन्त्रता आन्दोलन, पृ स 37-38

रा प्रलोभन दियां। वाने कहीज्यो के जे वे भेद बताय दे तो वार पिता न छोड दिया जासी, वारी जब्त जागीर ग्रर सपत्ति पाछी देय दी जासी ग्रर जोरावरसिंह (काका) री गिरफ्तारी वारट रद्द कर दियो जासी। पण इणरै विपरीत जे भेद नी बतायो ग्रर सजा होयगी तो उण री मा री काई हालत होसी, वा वात सोच लेणी चाइजै। फासी होयगी तो मा रोय रोय न प्राण देय देसी।

बरेली जेळ मे प्रताप र साग की दूजा क्रातिकारी साथी ई कैद हा। चावा क्रातिकारी शचीद्रनाथ सान्याल उण स्थिति रो वणन करता जेक ससमरण मे लिख्यो है—

'जेक दिन पुलिस साग प्रताप री करीब च्यार घटा ताई बात-चीत हुई। म्हे सगळा कनली कोठडी मे बैठा सास रोक'र ग्राकाश पाताळ री बाता सोच हा। म्हनै पूरो वेहम हो के ग्रबकाळै प्रताप फूट पडसी ग्रर सगळी पोल खोल देसी। पण जद मुकद्दमो सरु हुयो ग्रर म्हानै पाछो प्रताप रै साग रैवण री मोको मिळयो तो उण बतायो के ग्रेक दिन तो वे वास्तव मे विचळित होयगा ग्रर पुलिस न ई कैय दियो के म्हन की सोच-विचार करण री वखत दियो जाव। पण दूज दिन जद उण सू पाछी पूछताछ सर हुई तो उण साफ साफ कय दियो के म्हारो छेहली निणय ग्रो ई है के म्है कोई भेद नीं खोलू ला। सरकार नै कोई प्रकार री रहस्य नी बताबू ला। भलाई इणर बदळ म्हन कितरीई कष्ट भोगवणो पडै। ग्राज ताई तो फगत म्हारी मा इज विलख री है पण ग्राज जो म्हैं सगळौ रहस्य खोल दू तो न जाण कितरी मावा विलखण लाग जासी। ग्रेक मा री ठौड ग्रनेकू मावा नै हाहाकार करणी पडसी, इण वास्त ग्रेक मा न ई कष्ट भुगतण दो।'[1]

पुलिस जद प्रलोभन देवती थाकगी तो दमन री वारी ग्राई। प्रताप न भीषण यत्रणावा दिरीजी। पण उण नरपुगव रै मूडै सू ग्रेक शब्द नीं निकळयो। छेवट उण वीर री शरीर यत्रणावा सहन करता करता थाकग्यो तो बरेली जेळ मे ई उणरा प्राणपखेरू उडग्या। इण भात भारत माता री ग्रेक लाडेसर स्वतन्तता री वेदी माथ वळि चढग्यो।

---

1 हाडौती का स्वतन्त्रता ग्रादोलन, पृ स 37-38

अमर शहीद प्रताप रै बाबत राजस्थानी भाषा मे दो काव्यात्मक रचनावा मिळै । अेक राजलक्ष्मीदेवी 'साधना' रचित है अर दूजी श्री अक्षयसिंह रतनू रचित है। साधनाजी वाळी रचना मे प्रताप र छेहली वार घर छोडण री घटना री वणन है अर गिरफतार हुया पछ वानै वार पिता केसरीसिंह रै सामी हाजर करण री वणन है। साधनाजी इणी'ज महान परिवार री बेटी है, इण वास्त वारी कथणी मे वास्तविकता होवणी सुभाविक है।

श्री अक्षयसिंह रतनू वाळी रचना रूमाल रै रूप मे है। इणमे प्रताप र आख जीवण री ओळखाण दिरीजी है। इणमे आयौडा सगळा तथ्य इतिहाससम्मत है अर वारी सच्चाई मे कोई खामी नी है।

जठा ताई भारतीय स्वतनता सग्राम मे राजस्थानी कविया र योगदान री सवाल है, इण कवि परिवार री योगदान बेजोड है। इतिहास मे इणरी दूजी मिसाल नी मिळै। श्री शचीद्रनाथ सान्याल रै शब्दा मे आज भारत मे इसा कितराक पिता है जिको केसरीसिंह रै ज्यू आपर पूरै परिवार री देश रै खातर बळि देय सक ?[1]

इसा महान अर प्रात स्मरणीय देश भगता री स्मृति मे रचित काव्य री आपरो न्यारो महत्व है। प्रताप माथै सुश्री साधना रचित काव्य इण भात है—

अमर शहीद प्रताप

केहरी हो बदी जेळा मे, परिवार लिया मा पीहर ही
घर बार छुट्यो परिवार लुट्यो स बिखर गया कण कण र ज्यू
लाखा री पू जी रा मालिक रोटी बिन टुकडो पावै हा
भारत मा री करुणा क्रदन, सह सक्यो वीर नहीं उठ बोल्यो
मा धोती र खातर बस, दो रुपिया किण सू लाकर दो
जो कई वार करदान लुटा, देती ही माणक जेवरात
पण आज पईसा र खातर, फलाव किणर द्वार हाथ
ला दिया रुपया ले चाल्यो, वो पुत्र प्राण सू हो प्यारो
उण दिन सू फिर वो मिळ न सक्यो, मा र आखडल्या री तारो

1 हाडौती का स्वतत्रता आदोलन, पृ स 38 39

नेणा मे रग गुलाबी ले, मा रौ मतवाळो चाल्यो हो ।
धरणी री छाती धूजै ही, अबर रो थरहर हाल हो ।

× ×

लाला री पू जी तज चाल्यो, पग पग पर विपदा भेलण नै
मा बाप बहिन भाई छोडया, उण वीर खिलाडी खेलण न
सत सत सेवक सेवकिया रो, मालक साचो सेवक बणग्यो
वो बिना बराती बींद बण्यो, आजादी रो तोरण तणग्यो
अपण पुरखा रो लिया जोश, मा आवड री ले शुभाशीष
प्रतिम वदन मा चरणा मे, मन मे माता नै झुका शीष
दिन गया रात पर रात गई, ढळगी वे किरत्या झुक झुक नै
परभात गया दोपार गया, जल्दी जल्दी या रुक रुक न
मा जोवण लागी बाट अब, आवला जेज हुई खासी
कुण कव पण यो दो रुपिया मे, लेवण न गो है फासी
बरस गया बाटा जोता, विरहा री घडिया दिन दूणी
प्रताप दिल्ली र आगलिय जाय धुकाई ही धूणी

× ×

यू वीर खिलाडी उतर पड्यो, मदान जग मे खेलण नै
वो गयो बरेली जेळ माय, नाना दुखडा नै भेलण नै
समझायो डरपा धमकायो, लालच दे फुसलाणो चाह्यो
पण वीर प्रतिज्ञा रो पूरो, फिसल्यो नीं बिण सू फिसलायो
ले गया पिता सू मिळण नै, स हाल हकीकत कह देला
सुत नै यू बदी देख अरे, कुण पिता जो चुप रला ?
पण बात बिगडगी गोरा री, केहर रै नणा रग छायो
वो कडय उठ्यो सुण वीर पुत्र थू लालचवश बच नै आयो
साथी पकडा जे गोरा सू, मु ह माग्यो वर ले आयला
तो प'ली गोळी केहर री थार सीन चुभ जावैला
सुण वण वीर छाती फूली, फडकण लागी वे बाहडिया
धूजण लागी जे वदूका, धजी गोरा री छाहडिया

× ×

गिद्धा ज्यू घूरण लाग्या वे जालिम जुलमा री याद लिया
ले चल्या प्राण रा प्यारा नै डरता मरता फरियाद लिया
जद गोरा काठा हार गया, कीं पल्ल बात पडी कोनीं
पिस्तोळ लिया साम्ही आया, आखिर मे हुयगी अणहोणी

श्री अक्षयसिंह रतनू रचित प्रताप री झमाल ई इण प्रसग री अेक प्रमुख काव्य रचना है—

झमाल

रास बिहारी बोस र विप्लव दळ बळ व्याप
जागृति विरची जिकरण हू प्रेरित हुयो प्रताप
प्रेरित हुयो प्रताप प्रतापी देस मे
राजस्थानी रीव दिपायो देस मे
उठि आदोलन अठ घुपाघुप चल्लियो
बेटो पथ बाप हमे हद हल्लियो ।। 1

पकड्यो केसर तिण पछै, धर पकडा व्हो धाप
जकड्यो गयो जजीर मे, पकड्यो गयो प्रताप
पकड्यो गयो प्रताप, क्राति रा केस मे
शस्त्र अस्त्र षडयत्र, ब्रिटिश विद्वेष मे
जुलम बराबर जेळ, सरासर सबरी
भगतसिंह समथाह, श्राह नहीं उच्चरी ।। 2

× ×

हिन्दुस्तानी फौज हद प्रेरण गदर प्रचार
क्रातिकारिया क्रातिक्रम अपणाया इण बार
अपणाया इण बार बनारस बीच मे
चतुर चलावण चोट फिरग्या फीच मे
रास बिहारी बोस सजोया सातरा
प्रतापादि पौरषी प्रमुख इण प्रात रा ।। 3

रामनारायण चौधरी विस्मित व्हो सविवेक
निधडक देख्यो नवयुवक अेनक धारी अेक
अेनकधारी अेक खरी कद खाटरो
साफो धोती सुघड ठाकुरी ठाट रो
श्याम रग सग्राम समुद्यत सोहियो
परिचय पाय प्रताप आणद अवरोहियो ।। 4

× ×

सन गुनीस सौ पचदस पश्चिम फरवरी पाय
मेरठ आदिक छावण्या सजी विद्रोह सवाय
सजी विद्रोह सवाय तिकण तय्यारिया
आरभो अविलब वम्म विस्तारिया

जग जग पुरजोर मोरचा मंडिया
कायम विप्लव केन्द्र चलाया चडिया ।। 5

जारी वारटा जटिल कुटिल बनारस केस
पडयौ प्रबळ प्रताप नैं व्रिटिश प्रहार विशेष
व्रिटिश प्रहार विशेष अधिक लख ऊरमौ
सिंध हैदराबाद सिधायौ सूरमौ
पुलिस्या पाछ पडया हर जग हेरबा
पता तरा ले पता घात घड घेरबा ।। 6

× ×

आसानाडा रेल्वे इस्टेसरा आयौह
मिळरा स्टेसरा मास्टर अतर उमगायौह
अतस उमगायौह पारटी प्रेम सू
पडयौ उतर प्रताप निरकपट नेम सू
पापी प्रीत प्रवरसो चालाकी चालियौ
थान सुरक्षित थाप धरा निज घालियौ ।। 7

पकडी गईज पारसल बक्ष पेटी बंद
उरा स्टेसरा सू बण्यो मुखबिर ओ मतिमंद
मुखबिर ओ मतिमंद रह्यौ इरा राह मे
प्रगटयौ पेख प्रताप उचार उमाह मे
पलपल खोज पुलिस जोग नह जावणौ
अठ करौ आराम पतौ नह पावणौ ।। 8

कियौ बनारस केस मे गिरफतार गोराह
खुलवावरा षडयन्त्र से जुलम पुलिस जोराह
जुल्म पुलिस जोराह क्या तज दुष्टिया
पत्थर परा पिघळाय पीड पापिष्ठिया
सहन शक्ति समीत चकित जित जग,मे
अग अग उत्त ग रग्या रग रग मे ।। 9

परा महाराण प्रताप रो प्रण पाळयौ प्रताप
लोभ न लियौ प्रलोभना अडिगो रहियौ आप
अडिगो रहियौ आप शहीदा सेहरौ
निजु मातृमहि नेम निभायौ नेह रौ

श्री अक्षयसिंह रतनू रचित प्रताप री भमाल ई इण प्रसग री अेक प्रमुख काव्य रचना है—

भमाल

रास विहारी वोस र विप्लव दळ बळ व्याप
जागृति विरची जिकण रू प्रेरित हुयो प्रताप
प्रेरित हुयो प्रताप प्रतापी देस मे
राजस्थानी रोव दिपायो देस मे
उठि आदोलन अठ चुपाचुप चल्लियो
बेटो पर्थ वाप हुमे हद हल्लियो ॥ 1

पकड्यो केसर तिण पछै, घर पकडा व्हो थाप
जकड्यो गयो जजीर मे, पकड्यो गयो प्रताप
पकड्यो गयो प्रताप, क्राति रा केस मे
शस्त्र अस्त्र षड्यत्र, ब्रिटिश विद्वेष मे
जुलम बरावर जेळ, सरासर सवरी
भगतसिंह समवाह, आह नहीं उच्चरी ॥ 2

× ×

हिन्दुस्तानी फौज हद प्रेरण गदर प्रचार
क्रोतिकारिया क्रांतिक्रम अपणाया इण वार
अपणाया इण वार बनारस बीच मे
चतुर चलावण चोट फिरग्या कींच मे
रास बिहारी बोस सजोया सांतरा
प्रतापादि पोरपी प्रमुख इण प्रात रा ॥ 3

रामनारायण चोधरी विस्मित व्हो सविवेक
निधडक देख्यो नवयुवक अनेक धारी अेक
अनेकधारी अेक खरो कद खाटरो
साफो घोती सुघड ठाकुरी ठाट रो
श्याम रग सग्राम समुद्यत सोहियो
परिचय पाय प्रताप आणद अवरोहियो ॥ 4

× ×

सन गुनीस सौ पचदस पचिस फरवरी पाय
मेरठ आदिक छावण्या सजी विद्रोह सवाय
सजी विद्रोह सवाय तिकण तय्यारिया
आरभी अविलब वम्म विस्तारिया

जग जगे पुरजोर मोरचा मंडिया
कायम विप्लव केन्द्र चलाया चडिया ।। 5

जारी वारटा जटिल कुटिल बनारस केस
पड्यौ प्रबळ प्रताप नैं ब्रिटिश प्रहार विशेष
ब्रिटिश प्रहार विशेष अधिक लख ऊरमो
सिंध हैदराबाद सिधायौ सूरमो
पुलिस्या पाछ पड्या हर जगं हेरबा
पता लगा से पता घात घड घेरबा ।। 6

× ×

आसानाडा रेल्वे इस्टेसण आयोह
मिळण स्टेसण मास्टर अतर उमगायोह
अतस उमगायोह पारटी प्रेम सू
पड्यौ उतर प्रताप निरकपट नेम सू
पापी प्रीत प्रदरसी चालाकी चालियौ
थान सुरक्षित थाप घरा निज घालियौ ।। 7

पकडी गईज पारसल थवा पटो बद
उण स्टेसण सू थप्यौ मुखबिर ओ मतिमंद
मुखबिर ओ मतिमंद रह्यौ इण राह मे
प्रगट्यौ पेस प्रताप उचार उमाह मे
पलपल खोज पुलिस जोग नह जावणो
अठै करो आराम पतो नह पावणो ।। 8

कियौ बनारस केस मे गिरफ्तार गोराह
खुलवावण षडयन्त्र स जुलम पुलिस जोराह
जुल्म पुलिस जोराह दया तज दुष्टिया
पत्थर पण पिघळाय पीड पापिष्ठिया
सहन शक्ति सगीत चकित जित जग मे
अंग अंग उत्तम रग्या रण रंग मे ।। 9

पण महाराण प्रताप रो प्रण पाळ्यौ प्रताप
लोभ न लियौ प्रलोभना अडिगो रहियौ आप
अडिगो रहियौ आप शहीदां सेहरो
निजु मातृमहि नेम निभायौ नेह रो

अजस चारण अदय किया कत्त व्य प
वार वार बळिहार भलाई भव्य पै ।। 10 ।।[1]

महान क्रांतिकारी जोरावरसिंह बारहठ

इण महान राष्ट्र भगत बारहठ परिवार मे जे क्रांतिकारी जोरावर सिंह रौ जिक्र नी करसा तो बात अधरी रैय जासी । थार ज्येष्ठ भ्राता ठा केसरीसिंह देश सेवा री जिकी परपरा सरु करी उणन जोरावरसिंह पूरी तर सू निभाई । कविवर केसरसिंह रौ भारतीय स्वतत्रता सग्राम मे श्रो कितरो जबरदस्त योगदान हो के उणा जोरावर जिसो बाधव अर प्रताप जिसो पुत्र देश न सू प दिया । कवि कम न फगत वाचिक सरूप ताईं'ज सीमित नी राख'र उणनै कायिक सरूप ताई लावण री राजस्थान री परपरा रही है । इण धरती रा कविसरा फगत वीर रसात्मक काव्य री रचना इज नी करी, काम पड्या रणभोम मे जाय न खाडा ई खडकाया है । इणी'ज परपरा रा प्रतीक हा कविवर केसरीसिंह बारहठ अर वारौ परिवार । वारी कथणी अर करणी मे कोई दुभात नी ही । पूर परिवार रा बळिदान सू वेसी काई योगदान होय सकै ?

जोरावरसिंह रो काव्य रचना रै रूप मे विशेष योगदान नी रय'र स्वतत्रता सग्राम मे त्रियात्मक रूप सू जबरो योगदान रह्यौ । जोरावरसिंह अर प्रताप कविवर केसरीसिंह र ओजपूण काव्य रा ई प्रतिरूप ह । अणसू न्यारा करन वारो मूल्याकन नी कियो जाय सक । यू ई इण महान देश भगत परिवार रै सदस्या री गतिविधिया अर कायकलाप अेक दूजै सागै इतरा सबधित है के वानै न्यारै न्यारै रूप मे देखणा सभव कोनी । यू किया सू बात अधूरी रय जाव । इण भात परिवार रै सदभ मे जोरावरसिंह रो जिक्र करणो सुभाविक है ।

इणा जिण भात तत्कालीन वायसराय लाड हाडिज माथै बम फक न सगळ देश मे तहलको मचायो, उणरो वर्णन प्रताप वाळै प्रसग मे प'लीज आयग्यो है । बम फक्या पछै जिणन जठीनै मारग लाध्यो वो उठीन भाग छूटो । 'प्रताप जमुना मे कूदग्या अर पूरा 48 घटा भूखा-तिरसा पुळ र नीच लटकता रह्या । पछै हाथ सूज

---

1 राजस्थानी शोध सस्थान चोपासनी, जोधपुर र सग्रह सू ।

जावरण सू बेहोशी री हालत मे पाणी साग वैवा लाग्या । पण उणारी बाकी जीवण तो बरेली री जेळ मे पूरी होवणी हो । खासी ताळ अचेत अवस्था में नदी मे तणीज्या पछै पाणी री धार साग नदी काठै आय पडचा । पुलिस यारै लार लाग्योडी'ज ही । अेक पुलिस रो सिपाही जिको नदी काठ गश्त कर हो, उणै यान मुडदो समझ'र नदी बारै काढचा । पण जद सास चलतो लखाई तो खाधै करनै वहीर हुयो । उठी नै जोरावरसिंह प्रताप री नाअेट मे लाग्योडा हा । सजोग सू वे ई उठीन आयग्या । अळग सू उणा देख्यो के अेक पुलिस रो सिपाही प्रताप न खाध माथ ऊचाय न लिजाय रह्यो है तो उणा गोळी मारनै सिपाही री हत्या करदी अर प्रताप न बचाय लियो ।'[1]

बमकाड रै पछै जोरावरसिंह फरार होयग्या । इसी धारणा है के वे अज्ञात वास रै दिना मे की बखत ताई बाडमेर अर जसलमेर रा धोरा मे ई रह्या । थळी रा प्रमुख सरदारा वान घण मान सागै राख्या । ई सन् 1914 मे वार माथ आरा पडयत्र केस लागू हुयो । वारा कई साथिया नै पकड'र फासी माथै लटकाय दिया । ब्रिटिश सरकार कानी सू वान पकडण वास्तै वारै हजार पाच सौ रुपिया र इनाम री घोषणा ई हुई । पण सरकार री सगळी मेणत अकारथ गई । वे जीविया जितरै ई फरार रह्या । सरकार माथो पटक न मरगी पण जोरावरसिंह न नी पकड सकी ।

इण अज्ञातवास र दिना मे इज वारै दोनू पगा मे बाळा निकळ-ग्या । चालणो फिरणो के उठणो बैठणो ई हाय नी रह्यो । दो दिन भाई केसरीसिंह कनै कोटा र माणक भवन मे छिप न रह्या पछै (वारी पोती राजलक्ष्मी साधना र शब्दा मे) 'तीजै दिन बलगाडी मे चारो भर, वानै माथै सुवाण अर वारी ससुराल रै गाव मोरटहूक (मेवाड मे) रातो रात पुगाया । कोटा मे रवणो खतर सू खाली नी हो अर गिरफ्तारी रो सीधो अर साफ मतलब हो —फासी । गाव मे कोई न ठा नी पडै इण वास्त वान सीधा जगळ मे पुगाया । टणकी जाळा रै बिचाळ ओट मे वारो माचो राखीज्यो । जिण वखत गाव मे पूरो सोपो पड जावतो उण वखत म्हारा दादोसा अर

---

1 हाडौती का स्वतन्त्रता आंदोलन, पृ स 38

माजी आधी रात रा उठै पूगता, वारी पाटा पीड करता अर वानैं खवाय पिवाय न दिनू गै पै'ली प'ली पाछा गाव आय जावता।'[1]

इण भात वे पूरा छ महीना जगळ मे पड्या रह्या। उचित इलाज रै अभाव मे वारै अेक पग मे थोडी खोड रयगी जिणसू जीविया जितरै ई वे अेक पग सू थोडा खोडावता। उणा आपर जीवण रा घणा दिन माळवै री सीतामऊ स्टट मे काढ्या। वे उठ गावडा मे खोडिया महाराज रै नाम सू चावा हा। सफेद धोती, पूरी बाया री चोळी अर माथ पै सफेद साफो, आ वारी बारोमासी पोशाक ही।

अेकर जद हुया सीतामऊ महाराजा रामसिंह माथै ब्रिटिश सरकार री दबाव पड्यो तो उणा जोरावरसिंह नै समाचार कियो के वे सीतामऊ स्टेट छोडन चुआ जावै। नी तो वार जीव नै जोखम रहसी। पण उणा सीतामऊ स्टट रा गावडा मे आखी उमर काढी ही। इण कारण वे खुद न उठ सुरक्षित महसूस करता। इण वास्त उणा समाचार आया सीतामऊ महाराजा न अेक दूहो लिखन भेज्यो—

सर सूख पछी उड, औरहिं सर ठहराय।
अच्छ कच्छ बिन पच्छ के, कहु रहीम कित जाय?

महाराजा दूहो बाच'र पाछो समाचार भिजवायो के ठीक है वे स्टट मे आपरी मरजी है उठ रवै पण सावचेती पूरी बरत।

वे खोडिया महाराज रै रूप मे घरा ई आवता। पण घर रा टाबरा न ई असली भेद री जाणकारी कोनीं ही। वे आपरै मूड सू अेक गीत री लय मे विशेष प्रकार सू सीटी बजायता जिणसू घर रा बूढा बडेरा वान अळगै सू ई ओळख लेवता।

'धारी'ज कयणी मुजब अेकर जद वे चबळ नदी र बीहडा मे फिरै हा के मारग री अेक पुलिसचौकी रौ सिपाही वार लारै लागग्यो। दो च्यार मील चाल'र वे थमग्या अर उण सिपाही न माळवी मे समझावता उणा कह्यो के वो फिजूल वार लार क्यू लाग्यो है? म्है तो कनला गाव रो वासिदो हू। घोडै माथ आवै हो के मारग मे बाघ घोडै न मार नाख्यो, इण वास्त पैदल जावू

1 हाडोती का स्वतन्त्रता आन्दोलन, पृ स 28

हू । पण सिपाही पक्को जासूस हो । वो बोल्यो—थू जोरावरसिंह है, थू म्हन धोखो नी देय सकै । पुलिस थनै शोधती जगळ मे भटका मार री है । अब थू बचन नी जाय सकै । उण कह्यो—छिन भर तो म्ह सोचतो रह्यो पछ चीते री गळाई उछळ नै उणरै टूपी देय दियो । वो तडफडाय न मरग्यो अर म्हैं वन मे नाठग्यो ।'[1]

इण घटना र पछै पूरा छ महीना उण चबल रा बीहडा मे छिप नै काढ दिया । रात री वखत वे चबळ काठै रा खेता मे काकडी खरबूजा खावता अर दिन रा बीहडा मे छिप न बठ जावता ।

छेवट ई सन् 1937 मे वे मेवाड रै गाव माडा मे अेक चारण बधु रै विश्वासघात सू पकडीजग्या । तीन महीनै जेळ मे रह्या । बारै शिनाख्त री पूरी कोशिश करीजी पण सगळी अकारथ गई । बानै कोई नी ओळख सक्यो । माळवा रै पतलासी ठिकाणै रै कु वर आय नै शिनाख्त करी—अे म्हारा काकोसा अमरसिहजी है । घर मे की टटा झगडा हुया तो वेराजी होय नैं बारै निकळग्या । सरकार केसरीसिंह नैं बुलाया तो उण कह्यो—कठै है जोरावर ? उणरो देहात हुया न जुग जमानो बीतग्यो । महाराणा भूपालसिह टाबर-पण मे जोरावर रै साथै खेल्या हा । बान ई शिनाख्त ताई बुला-ईज्या । उण ई कैय दियो के ओ जोरावर कोनी । छेवट सरकार बानै छोड दिया ।

वे ई सन् 1939 ताई जीवता रह्या । उणी'ज बरस प्राता मे पै'लडी बार काग्रेसी सरकारा बणी । आरा केस रो वारट हटग्यो । पण सजोग इसो बण्यो के जिण दिन औ वारट रद्द हुयो सागण उण दिन इज भारत माता रै इण महान सपूत आपरो शरीर छोड दियो ।

कल्याणदान कविया, दीपपुरा (सीकर)

राजस्थान रै क्रातिकारी आदोलन रै सदभ मे कल्याणदान कविया अेक इसो नाम है जिण न याद किया बिना इण प्रदेश मे क्रातिकारी चळवळ री बात पूरी नी होवै । अे क्रातिकारी आदोलन

---

1 हाडोती का स्वतत्रता आंदोलन, पृ स 30

सू प्रतिबद्ध होवण रै सागै अेक ग्राछा कवि पण हा । अेक जिम्मेदार ग्रर विश्वासू देश भगत होवण सू वान गुप्त सदेश वाहन रो काम सू पीज्यो हो । ग्रो काम घणो ग्रवखो ग्रर जोखमी हो । इण कारण कई वार ग्रापरा प्राण जोखम मे नाख न ई इणा ग्रापरै कर्त्तव्य रो पालण कियो ।

वारै कन सवारी रो कोई साधन नी हो इण कारण वे पगा पाळा ई यात्रा करता । अेकर वे फिरता घिरता बूडसू (जोधपुर रियासत) ठिकाणे मे पूगा तो उठ रात वासो लियो । लाबी पदयात्रा र कारण कवि रै पगा मे सूजन ग्राय न पीडा हुयगी ही । बूडसू ठाकर रावतसिंह मेडतिय कवि री साधना ग्रर राष्ट्रप्रेम न ग्रोळख लियो । ठाकर रावतसिंह ग्रर वारा पिता ठाकर लिछमणसिंह भी राष्ट्रीय विचारा रा स्वदेश प्रेमी ग्रादमी हा । कवि री शारीरिक पीडा देख'र वारो मन द्रवित होयग्यो । दूजै दिन रवान होवती वखत ठाकर कवि न अेक सातरी कीमती घोडी सवारी वास्त निजर करी । कवि ठाकर री इण उदारता न इण भात बिडदाई—

सोरठा

ग्रधपतिया इण वार, वकरो ही देणो विकट ।
हैवर मोल हजार, ग्रगम रावत बूडसू ।।
करन मन काळोह, कवि देख्या भूपत किता ।
हय बगसण हाळोह, मतवाळो माधव हरो ।।
पाळो पथ वयाह, थक जातो जातो जठ ।
थिर कुल वूर थयोह, मिळिया रावत हू मुद ।।[1]

बूडसू ठाकर राष्ट्रीय विचारा रा होवण सूं वे ग्रापरी हैसियत मुजब क्रातिकारिया री हर प्रकार सू मदद करता । इण कारण कई वार फरार क्रातिकारी हारी बिमारी री हालत मे बूडसू ठिकाण मे ग्राय न ठरता । ठाकर वारै इलाज रो प्रवध कर न तन मन सू वारी सेवा चाकरी करता ।

अेकर वद्रीदान चारण, जिको क्रातिकारी दळ रो सक्रिय सदस्य हो, फरार ग्रवस्था मे विमार पडग्यो । बूडसू ठिकाणो क्रातिकारिया

---

1 राजस्थानी शोध सस्थान चापासनी जोधपुर रै सग्रह मू ।

रो आश्रय स्थल होवण सू वो उठै आयो तो ठाकर उणरी सेवा-चाकरी अर इलाज मे कोई कसर नी राखी । पण उणरी बिमारी भयकर ही सो छेवट उणनै मरणो पड्यो । ठाकर अर वारा परिवार न इण मौत रो घणो दुख हुयो ।

पूर सन्मान साग क्रातिकारी री शवयात्रा काढीजी । सगळा क्रियाक्रम पूरा करीज्या अर पछै मातरी ब्रह्म भोज देय नै फूल गगा मे प्रवाहित करण सारू हरिद्वार भेजीज्या । कवि कल्याणदान री प्रेरणा सू ठाकर क्रातिकारी बद्रीदान री यादगार मे अेक स्मारक रो निर्माण ई करायो जिको आज ई मौजूद है । कवि कल्याणदान इण सगळै प्रसग नै अेक कवित्त मे इण भात वर्णित कियो है—

कवित्त

सवत गुणीस स बयासी, चेत सुदी चौथ न
कवि बद्रीदान अठ, पच तत्व पायो है
बूडसू नरेस गुरु, भाव राखी वदगी सू
नाव रो प्रयाण, कोट द्वार सू करायो है
विप्रभोज पुष्प हरिद्वार भेज पाग सग
काया सत पच वे, अमात्य न पठायो है
दानवीर लच्छो करि, अच्छो काज सुख साज
छतरी चिता प, नृप रावत चुणायो है ।[1]

राव गोपाळसिंह, खरवा

राव गोपाळसिंह राठौड, खरवा (अजमेर) री जीवण राष्ट्रीयता रै रग म इण भात रगीज्योडो रह्यो के तत्कालीन कवियां रो ध्यान वार कानी जावणो सुभाविक हो । इण कारण कई जाणीता कवियां आपरी काव्य रचना करन वारी जस कीरत नै बिडदाई ।

कविवर केसरीसिंह बारहठ वारी तुलना वाल गगाधर तिलक अर लाला लाजपतराय रै समोवड करी है । आ वात उल्लेख जोग है के रावजी रो पूरो जीवण भारतीय क्रातिकारी आदोलन सू सबधित रह्यो । इणी'ज भात तिलक अर लाजपतराय ई काग्रेस मे गरम दळ

1 राजस्थानी शोध सस्थान, चोपासनी, जोधपुर रै सग्रह सू ।

रा सूत्रधार हा । इण कारण वारै त्यागी जीवण री कीमत आकता बारहठजी कह्यो—

महाराष्ट्र मे बाल जिमि, पाचाल मे लाल ।
राजत राजस्थान मे, गौरवमय गोपाळ ।।[1]

मेवाड रा चतरसिहजी बावसी अेक महान् सत अर निष्ठावान ईश्वर भगत हुया । इणा आपरै जीवण मे ईश्वर नाम र अलावा कोई धणी री व्यक्तिगत प्रशसा कदैई नी करी । पण वानै ई राव गोपाळसिह री तारीफ मे कंवणो पड्यो—

खला पर खारो सदा, पुसल धरम री पाळ ।
रतनाकर नू राठवड, गुण सागर गोपाळ ।।[2]

केसरीसिह बारहठ अर बावजी चतरसिहजी राजस्थान री इसी विभूतिया है के जिणा रै मू ड सू कोई री तारीफ मे अेक बोल निकळणो ई मोटी बात है ।

इण कारण वारी जस कीरत मे रचित काव्य री चर्चा किया प'ली भारतीय स्वतन्त्रता सग्राम मे वारै कार्य कलापा री लेखो जोखो कर लेवणो उचित रहसी । इणरै बिना नी तो उण काव्य री पृष्ठ-भूमि समझी जाय सकै अर नी वारै त्यागमय राष्ट्रीय जीवण री गरिमा ई कू ती जाय सक ।

उण वखत भारतीय क्रातिकारी आदोलन आपरी पूरी जवानी माथै हो । उण वखत ताई देश मे लाड कर्जन री दिल्ली दरबार अर बग भग जिसी घटनावा घटित हुयगी ही । राष्ट्रीय आदोलन क्राति-कारी अर आतकवादी रूप मे चालणो सरू होमग्यो हो । उण वखत बगाल क्रातिकारिया री गढ हो । 'होळै होळै बगाल री हवा राजस्थान ताई पूगणो सरू हुई । ब्रिटिश सरकार आपर अधिकारा मुजब राजस्थान रै सगळै रजवाडा नै हुकम दियो के वे आप आपर रजवाडा मे क्रातिकारी वातावरण अणाई नी पनपण देव । अठा ताई के इण भात री कोई साहित्य रियासता मे नी आवण देवै । भारत रै तत्कालीन गवर्नर जनरल लाड मिंटो (सन् 1909) खास-

---

1 राजस्थानी शोध सस्थान, चोपासनी जोधपुर रै सग्रह सू ।
2 उपर्युक्त ।

कर जयपुर, जोधपुर, उदयपुर, बीकानेर, अलवर अर धौलपुर इत्याद रियासता न विशेष रूप सू लिख्यो के वे जठै ई कोई इसी गतिविधि देखै उणन सख्ती सू दवाय नाखै ।'[1]

पण राजस्थान मे इसी सगळी गतिविधिया माथै नियन्त्रण होवण रै उपरात ई अठ होळै-होळै क्रातिकारी आदोलन पनपवा लाग्यो । इणरो नेतृत्व जयपुर, कोटा अर अजमेर सू होवण लाग्यो । जयपुर मे अर्जुनलाल सेठी, कोटा मे केसरीसिंह बारहठ, अजमेर मे राव गोपाळसिंह अर दामोदर राठी इणरा आगीवाण हा । यारै निर्देशन मे इज निमेज हत्याकाड अर हार्डिज बम काड आयोजित हुया ।

सेठ दामोदरदास राठी कृष्णा मिल्स लि व्यावर रा मालिक हा । अे क्रातिकारिया नै पसे टक सू मदद करता । राव गोपाळसिंह क्रातिकारिया वास्त अस्त्र-शस्त्रा री व्यवस्था करता अर योजनावा नै कायरूप देवता । रावजी गुप्त रूप सू रास विहारी बोस अर केसरीसिंह बारहठ सू सागै सपक बणायो राखता । सरूपात मे ब्रिटिश सरकार नै इण बात री जाणकारी नी ही । कारण कै रावजी अजमेर रै कनै ई खरवा जिसै प्रमुख ठिकाण रा ठाकर हा, इण वास्तै वार माथै वेहम करण री कोई कारण ई नी हो । पण ज्यू ज्यू सरकार नै वार राष्ट्रीय विचारधारा री पतो लागण लाग्यो वा सावचेत होयगी । क्रातिकारी सगठण सू वार सपक री पतो निमेज हत्याकाड र सिलसिल मे लाग्यो । 'इण बात रै आधार माथै ई अजेंट टू द गवनर जनरल राजस्थान रावजी न चेतावणी दीघी के वे खुद नै अर ठिकाण न ब्रिटिश विरोधी आतकवादी गति-विधिया सू दूर राखै ।'[2] पण इण चेतावणी री ई रावजी माथै की असर नी पडयो । उणा आपरा साथिया सागै मिळ नै प'लड विश्व-युद्ध री वगत ब्रिटिश शासन रै खिलाफ अेक सशस्त्र क्राति री योजना बणाई ।

जून 1914 मे विश्व युद्ध सरु हुयो । महात्मा गाधी अर दूजा नरमदळीय काग्रेसी नेतावा री विचारधारा आ ही कै इण मुसीवत रै वगत मे भारत न ब्रिटिश सरकार री तन मन धन सू मदद

---

1 राजस्थान मे राजनतिक जागरण (लि के अेस सक्सेना), पृ स 54

2 उपयुक्त, पृ स 59

करणी चाइजै । इणसू युद्ध खतम हुया ब्रिटेन भारत न औपनिवेशिक स्वराज देय देसी । पण गरमदळीय नेतावा अर खास कर क्रातिकारिया न इण बाता मे अेक रत्ती भर ई विश्वास नीं हो । व गोरी सत्ता री इण चाला नें आछी तरिया ओळखता ।

क्रातिकारिया रो तो ओ विचार हो के इण वखत ब्रिटिश सरकार युद्ध मे आछी तरिया फस्योडी है, इण कारण सशस्त्र क्राति रो सातरो अवसर है । इण अवसर रो लाभ जरूर लेवणो चाइज । उत्तरी भारत मे रास बिहारी बोस अर शचीद्रनाथ सा याल रै गुप्त नेतृत्व मे सशस्त्र क्राति री योजना बणी । 'राव गोपाळसिंह खरवा ई इण योजना मे सक्रिय सहयोगी हा । राजस्थान री क्षेत्र वारै जिम्मै हो । रास बिहारी बोस री अेक कासीद ई सन् 1915 री फरवरी रै सरूपात मे रावजी कन आयो अर वानें सदेश दियो के 21 फरवरी 1915 रो दिन सशस्त्र क्राति रै वास्तै त कियो है । इण दिन रासबिहारी बोस दिल्ली माथ आक्रमण करसी अर इण भात क्राति रो श्रीगणेश होमी ।'[1]

इण सदेश मे रावजी न ओ कहीज्यो हो के वे इणमे सक्रिय सहयोग देवै । रावजी इण मामल मे इण कारण नचीता हा के जोधपुर अर बीकानेर दोनू राजघराणा री क्रातिकारिया साग सहानुभूति ही । इण वास्तै वान पक्को विश्वास हो के जे सशस्त्र क्राति हुई तो अे दोनू रजवाडा क्रातिकारिया रो साथ देसी । इण रजवाडा री आ मशा ही के जे क्राति सफळ हुय जाव तो उदयपुर महाराणा फतेहसिंह नै दिल्ली रा सम्राट घोषित कर दिया जावै ।

'सशस्त्र क्राति री योजना इण भात बणी के मुलतान, लाहोर अर मेरठ री सेनावा रासबिहारी बोस री साथ देसी अर राव गोपाळसिंह रै नेतत्व मे जोधपुर अर बीकानेर री सेनावा अजमेर माथ हमलो करसी । इण योजना मुजब राव गोपाळसिंह अर विजयसिंह पथिक अजमेर नसीराबाद रेल्वे लण रै कनै अेक ठावी ठोड जगळ मे ऊभा कई घटा ताई सकेत री बाट जोवता रह्या पण वान क्राति सरू करण री कोई सदेश नी मिळ्यो ।'[2]

---

1 राजस्थान म राजनतिक जागरण, पृ स 59

2 राजस्थान मे राजनतिक जागरण, पृ स 60

बात यू हुई के मणिलाल नाम रो जिको आदमी रावजी कन रासबिहारी बोस रो संदेश लेय न आयो हो, वो पकड़ीजग्यो अर सरकारी मुखबिर बणग्यो। उण क्रांतिकारियां साग विश्वासघात कियो अर सगळी योजना सरकार र सामी चवड़े कर दी। इण भांत इण सशस्त्र क्रांति री आ घड़ी घड़ाई योजना विफळ होयगी।

योजना री ठा पड़ता ई अंग्रेजी शासन तंत्र में हड़कंप मांचगो। धड़ाधड़ गिरफ्तारियां सरु हुई। रासबिहारी बोस इत्याद कई नेता तो फरार हा पण बारा कई दूजा साथी पकड़ीजग्या। 26 जून 1915 र दिन राव गोपाळसिंह कन ई अंग्रेज सरकार रो परवाणो खरव पूगग्यो। बान 24 घंटा रै मांय न खरवो छोड़'र टाटगढ तहसीलदार रै सामी हाजर होवण रो हुकम हो। इणर सागै औ हुकम ई हो कै वे टाटगढ छोड़न कठई पावडो नी देय सकै। दिन मैं अेक बार वानैं नियमित रूप सू तहसीलदार र सामी जाय नैं हाजरी देवणी ही। तहसीलदार रै हुकम बिना कोई सू मिळवा रो ई वान हुकम नी हो। वारी सगळी डाक ई तहसीलदार रै माफत आवण जावण रो हुकम हो। हुकम री ऊदूली किया तीन बरस री जेळ अर जुर्मानै री प्रावधान हो।

असहाय हालत मे दूजो कोई मारग नी देख'र रावजी न खरवो छोड़'र टाटगढ जावणो पड्यो। रावजी री नाबालिग उत्तराधिकारी गणपतसिंह ब्यावर ताई वार साग आयो। बिछड़ती वखत उणा गणपतसिंह नें खास तौर सू आ भळावण दीवी के वो देश रै प्रति वफादार अर सामधरमी रवै।

टाटगढ रै अपमानजनक वातावरण मे वे घणा दिन नी रय सक्या। अेक दिन मौको देख'र वे फरार होयग्या। जोर शोर सू तलाशी सरू हुई। वे पकड़ीजता ई नी पण अक आदमी र विश्वासघात रै कारण वे किशनगढ में फरू पकड़ीजग्या। औ किस्सो 28 अगस्त 1915 रो है। जिण वखत वे किशनगढ रै अेक शिव मंदिर मे पूजा पाठ में लाग्योड़ा हा के वानैं घेर लिया।

'वारी जागीर जप्त करली। भारतीय सुरक्षा कानून री आड लेय न वान दो बरस री कठोर कारावास देय दियो। की दिना ताई

तो वाने अजमेर जेळ मे राख्या अर पछे शाहजहापुर री बिहार जेळ मे भेज दिया।'

जेळ सू छूट्या पछ ई वे आखी उमर ब्रिटिश सरकार री निजरा में अेक विद्रोही रै रूप मे रह्या। वारै माथै सरकार री हरवखत करडी निजर रैवती। वारी गतिविधिया री पक्को ध्यान राखी-जतो। इण भात राव गोपाळसिंह री पूरो जीवण ई देश सेवा र कारण अबखाइया मे बीत्यो। वारी राष्ट्रीय विचारधारा अर त्यागी जीवण सू प्रभावित होय नें कई कविया काव्य रचना करी। उणरी की बानगी नीचै दिरीजी है। श्री गुलाबसिंह महड़ू रचित वारी प्रशसा रौ अेक डिंगल गीत इण भात है—

गीत सुपखरो

'राज अनम्मी रोस रो, अगा वडाला भडाळा रीझ।
फरक्क छडाळो आछा, उतोळै क्रोधाळ॥
पाका सुस टोपी वाळा, वडाला हिया मे बूज।
कडाळा सस्त्रा भारी, केहरी कोपाळ॥ 1
घाळो बीर बाळो सारो, भुजाटा तुहारो छाज।
कमधेस वाळो हाको, अरिदा सकाळ॥
महाजोस वाळो बीर, फिरगी देताळ माथ।
लेख माधोसिंह वाळो, डीकरो लकाळ॥ 2
अगेजी साम्हळै, जुधा वरोला ऊठव अगा।
अडगा थापनै रोला, भोम र आपाण॥
बरद्दा उजालो सूरो, आमी वध अेण बारा।
पेखो मूरिया फील, दोलो वाघ र प्रमाण॥ 3
रिमा सेसं लागी धीस, इद्र ज्यू जभ प रूठो।
आहसी भाराथा ऊठो, हण ज्यू ओपाल॥
छूटा डाण लाठा मदां, पाण हू भूरेस छूटो।
गोरा गजां माथ तूटो, सिंघ ज्यू गोपाल॥ 4॥'[1]

इणीं'ज भात जाणीता कवि श्री यशकरण चारण वारै सुरग-

---

1 राजस्थानी शोध सस्थान, चोपासनी, जोधपुर रै सग्रह सू।

ारसिया रै रूप मे जिको दूहा-सोरठा कह्या, वे वारी धवळ अनुरूप है।

दूहौ

वा वाली खेह रौ, बीत गयौ वो बाघ।
ापण साहस तणौ, अब कुण करसी आघ॥

सोरठा

र गयौ गोपाल, विधवा रजपूती बणी।
ौ कवण हवाल, अब इण राजस्थान रौ।
ाला हिव घाव, थारा बिन कोजो थयौ।
ारस्या फिर आव, भारत रौ करवा भलौं॥

भील आदोलन सबधी लोक काव्य

जस्थान रौ दक्खणी पूरबी भाग डू गराळ अर मगरेटी (पहाडी ारी) है। इण भाग मे कई आदिवासी जनजातिया रौ रैवास ा मे भील, गरासिया अर मीणा प्रमुख है। इण भाग मे र, बासवाडो, दक्खणी मेवाड, सिरोही, ईडर, गुजरात अर ा रौ की प्रदेश आय जावै। दूर दूर ताई पसरयोडी परवत ावा, सपाट मगरेटी भाग, ढाळ मे कवळास करती हरियल ति अर अनेकू नदी-नाळा इण भू भाग री विशेषतावा है। मण रा साधन दुगम होवण सू अर सभ्य मानव समाज सू मे अळगा रैवण सू अठै रौ आदिवासी मानव आपरी ठेट भ्यता अर सस्कृति कायम राख सक्यो है।

भील भारत री प्राचीनतम कौमा मे सू अेक है। सन् 1941 री णना मुजब भारत मे यारी जनसख्या दो करोड र लगैटग ही। री उत्पत्ति बाबत कई दत कथावा प्रचलित है। वाण भट्ट री री मुजब भील शब्द रौ प्रयोग प्राचीन सस्कृत अर अपभ्र श मिळै। कथा सरितसागर मे भील शब्द रौ प्रयोग सै सू पै'ली ज। कर्नल टाड यान वन पुत्र अर जगळी शिशु कैय नै इणांरो ख करै। महाराणा प्रताप री फौज मे घणकरा भील ई हा ा मुगल सेना रौ बार बार सामनो कियौ।'[1]

---

[1] राजस्थान मे जन जागरण, पृ स 72

दूजी आदिवासी कौमा रै ज्यू भील ई घणा गरीब, अंधविश्वासी अर अज्ञानी रह्या। रियासती जमान मे आ कौम जरायमपेशा गिणीजती। इण कारण इणा र सागै ववार इण भात रो ई हुयो अर यारो शोषण ई मोकळो हुयो। यू भील अेक स्वतन्त्र प्रकृति री कौम है। आ कौम कोई प्रकार री हुकूमत पसद नी करै। इणन आपरी सस्कृति अर परपरागत रीत रिवाज सू घणो लगाव है। इणमे कोई प्रकार री दखलदाजी के वांरो उल्लघण यानै अगाई दाय नीं आवै। आ ई कारण है के जदै कदै ई कानूना इत्याद सू वारै परपरागत रीत रिवाजा मे दखलदाजी हुई, इणा उणरो डट न विरोध कियो। इस कायद कानूना री इणा कदेई गिनरत नी करी। दाखला सरुप अठारवीं सदी मे उणा इणी कारण मराठा री खिलाफत करी अर उगणीसवीं सदी मे ब्रिटिश सरकार रै खिलाफ विद्रोह कियो।

भीला रै इण सघर्ष कानी भलाई सभ्य समाज रो ध्यान नी गयो, कविया भलाई इणनै आपरै काव्य रो विषय नी बणायो पण जनमानस माथै इणरो ऊडो असर जरूर पड़यो। इण बात री पुष्टि उण लोक काव्य सू होव जिको इण विषय नै लेयन रचीज्यो। इण लोक काव्य मे उण वखत री परिस्थितिया अर सघर्ष मे घटित घटनावा रो सागोपाग वर्णन मिळ।

भील अेक आदिवासी कौम होवता थका अर तथाकथित सभ्यता सू दूर रैवता थका ई कोई बात नै गेहराई सू समझण री उणरी सूझ बूझ तारीफ जोग है। इण बाबत रचित सगळै लोक काव्य मे आ बात साफ-साफ अर बार-बार कहीजी है के इण सगळै झगड री जड आ विदेशी गोरी सत्ता है, जिको सात समदर पार 'बलात' (विलायत) सू आय न अठ प्रपच फैलाय री है। सगळै लोककाव्य मे भीला भूरिय (अग्रेज) न बुरी तरिया भाडियो है।

इण लोकगीता मे अग्रेजा नै कपटी, प्रपची, दुष्ट अर धोखबाज बताया है अर देशी राजावा, सामत सरदारा नै वारी तुलना मे भोळा अर सीधा सादा माया है। वारै मतानुसार आ विदेशी सत्ता यान भूल थाप देय'र इण धरती माय आपरो कब्जो जमाय री है।

आपरा नेतावा रै प्रति वारै मन मे अपार श्रद्धा री भावना है। पूरी कौम वार हुकम माथ मरण मारण नै त्यार है।

इण लोकगीता री भापा भीला री आपरी नीजू है, जिणनें स्थानीय बोली कही जाय सकै। इणमे गुजराती मिश्रित राजस्थानी रौ अेक विशेप सरूप है। ओ सगळो भू भाग गुजरात री सीमात प्रदेश होवण सू इण माथ गुजराती रो प्रभाव होवणो सुभाविक है।

भापा शली अर काव्यगत विशेपतावा री दीठ सू इण लोक-काव्य नें साहित्यक काव्य रै सजोड नी राख सका। पण जठै ताई भाव पक्ष री बात है ओ लोककाव्य कम नी है। कई लोकगीत तो घणा सातरा अर भाव प्रधान है।

राजस्थान री राजनैतिक जन जागृति मे भील आदोलन री आपरी ठावी ठोड है। इण आदोलन री आपरो न्यारो निरवाळो इतिहास है। इण आदोलन न जे अैतिहासिक अध्ययन री दीठ सू देखा परखा तो इणरी श्रीगणेश मेवाड क्षेत्र सू होवै।

ओ आदोलन दौलजी कावा, गुरु गोविंद अर मोतीलाल तेजावत जिसै त्यागी नेतावा रै पाण निरतर अर सुवारु रूप सू चालतो रह्यो। इण आदोलन न तीन चरणा मे बाट'र उणसू सबधित लोककाव्य रौ अध्ययन करणो उचित रहसी।

1 भील नेता दौलजी खीचो

मेवाड रै तत्कालीन महाराणा भीमसिंह री अग्रेजा सागै सधि हुयगी ही। उणा विदेशी सत्ता रै इशारै मार्थ भोमट क्षेत्र रै भीला रै अधिकारा रौ हनन करणो सरु कियो। इणसू भील नाराज होयग्या अर उणा रियासती सरकार री हुक्म उदूली करणी सरु करी। भीला अर रियासत रै बिचाळै विवाद इण कारण पैदा हुयौ के परपरा सू भीला नै कनल गावा सू दो तरै रा कर मिळना। अेक 'रुखाळी कर' अर दूजो 'भोळाई कर।' रखाळो कर वानै गावा री चोकीदारी करवा रै वदळ मिळनो अर भोळाई कर यात्रिया री सुरक्षा र नाम माथै मिळनो। रियासत अे दोनू कर भीला न नीं देय'र पुद उगावणा सरु कर दिया। ओ काम अग्रेजा री सलाह मुजब सरू हुयो। भीला नै दौलतसिंह खीचो जिसो त्यागी अर हिम्मतवर नेता मिळग्यो। इणसू ओ आदोलन मज सू चालतो रह्यो।

दौलतसिंह खीचों जवास गाव रा ठाकर हा। वे चपानेर (गुजरात) र पताई रावळ जयसिंह देव खीचों रा पुत्र अर ठाकर गुमानसिंह रा पोता हा। भीला मे वे दौलजी काका र नाम सू चावा हा। भील वानें देवता रैं ज्यू पूजता। भीला मे वारी आण दुहाई फिरती।

मेवाड रियासत भोमट क्षेत्र री व्यवस्था रो भार अग्रेजा न सू प्योडो हो, इण कारण उठै विद्रोह हुया अग्रेजी सेना रो दमन सरु हुयौ। भीला दौलजी काका रै नेतृत्व मे विदेशी सत्ता रौ डट नै विरोध कियौ। भीला नैं सदीव दबाय नैं राखण वास्तै अग्रेजा भोमट क्षेत्र मे चवद पुलिस थाणा री थरपणा करी। भीला न आ बात घणी खारी लागी। वे इणरैं खिलाफ सगठित रूप सू त्यारी करण लाग्या।

छेवट दौला काका री योजना मुजब भीला अेकण साग रात री वखत चवदै ई थाणा माथ हमलो बोल दियौ। जोर की राटक बाजी अर छेवट जीत भीला री रही। रियासती अर अग्रेजी सेना रा सनिक भीला रा विषैला बाणा आगै भाग छूटा। कई सैनिक इण मुठभेड मे काम आया। इण जीत सू उत्साहित होयन भीला खैरवाडै री फौजी छावणी माथै ई हमलो कर दियौ। भील विद्रोह रौ ओ प'लडो विस्फोट हो।

अग्रेज इण बात नैं समझग्या के इण वनवासिया सू लडन जीत हासिल करणी दोरी है, इण कारण उणा दौला काका साग सधि कर ली। इणरैं अलावा भीला री बहादुरी सू प्रभावित होयन खरवाडा री छावणी मे अेक 'भील कोर' री थरपणा ई कर दी। ठाकर दौलतसिंह खीची न इण भील कोर रो मुखियो मुकर कर दियौ अर मासिक वेतन अेक सौ रुपिया बाध दियौ। फौजी कानून बणण ताई ओ ठाकर पद बराबर चालतो रह्यो।

भील आदोलन री सफळता सू आम जनता ई प्रभावित हुई। दौलजी काका र वीरतापूण नेतृत्व, निस्वार्थ जन सेवा अर त्यागपूण जीवण सू लोगा रो ध्यान वणा कानी आकृष्ट हुयौ। इण बात री पुष्टि उण सोरठा सू होवै जिको कोई अज्ञात कवि दौलजी री प्रशसा मे लिख्या है। कवि दौलजी री वीरता न इण भात बिडदाई है—

सोरठा

गड गड त्रबक गाज, फौजा बिच राडा फिर ।
लड लड दौला लाज, यू थारी राखी थळी ।।

त्रहकं त्रबक तूर, गहकं गोळा ग्रिद्ध घणा ।
नरपण वाळो नूर, दीसे तुझ रव दौलता ।।

काळा मगरा केक, रुधिरं ताजा रंगिया ।
श्रधपत लिया श्रनेक दूणो रंग है दौलता ।।

थट दीखी थाणाह, काका सू लडता कही ।
है जस रा हाकाह, दुनिया माही दौलता ।।[1]

ग्रादोलन मे हुई जीत री खुशी मे भोल कठा सू कई लोकगीत ई निसरया । वे मन री उडाण सू प्रस्फुटित हुयोडा है, इण कारण वा मे भावा री श्रपूव उद्वेग है। दौलजी काका री प्रशसा मे बण्योडो श्रेक गीत इण भात है—

लोकगीत

रई न कैवा बोले—दौला काकाजी
कुण भग री बाज—ठाकर दौलाजी
दोलो भगरो बाज—ठाकर दौलाजी
कुण है रावजी बाज—ठाकर दौलाजी
दोलो रावजी बाजे—ठाकर दौलाजी
जवास वाळी गादी—ठाकर दौलाजी
भगां री राज करै—ठाकर दौलाजी
दोलो भीलां नु राजा—ठाकर दौलाजी ।
मरी श्रो वलात[2] नु वलाती[3]—ठाकर दौलाजी
वलात हु श्रावर ज्यू[4] है—ठाकर दौलाजी
ई तो फौजा लई नं श्राव—ठाकर दौलाजी

1 राजस्थानी शोध सस्थान चोपासनी, जोधपुर र सग्रह सू ।
2 विलायत ।
3 विलायती ।
4 श्राव है ।

ई तो दरिया पेलै ढाळै—ठाकर दौलाजी
ई तो जहाजा बई न श्राव—ठाकर दौलाजी
ई तो पडावा पडावा श्राव—ठाकर दौलाजी
ई तो मु बई श्रावी नें लागु—ठाकर दौलाजी
भूरियू[1] राजा नै लडतो श्रावै—ठाकर दौलाजी
भूरियू मगरा मगरा फरै—ठाकर दौलाजी
भूरियू मेवाड श्रावी लागू—ठाकर दौलाजी
भूरियू जवास श्रावी लागू—ठाकर दौलाजी
भूरियू फौजा लई नै श्रावै—ठाकर दौलाजी
सिंधिया वाळो फौजा—ठाकर दौलाजी
ई तो श्रवरो सवरो[2] बोल—ठाकर दौलाजी
दौलो छाती गोळो वावै—ठाकर दौलाजी
धड छूटी धड लागो—ठाकर दौलाजी
चलातो श्रे गोली लागो—ठाकर दौलाजी
चलातो नीचो पडियो—ठाकर दौलाजी
फौज वेराई गई—ठाकर दौलाजी
गीत जातु मेलो—ठाकर दौलाजी।[3]

अग्रेज विलायत सू रवान होय नै बवई होवतो मेवाड मे श्रायो। श्रठै श्राय न दौलजी काका सागै झगडो कियो जिणमे अग्रेज हारयो श्रर दौलजी री जीत हुई।

इणीज भात जद खैरवाडा मे अग्रजा फौजी छावणी री थरपणा करी तो भीला मे इणरी घणी तीव्र प्रतिक्रिया हुई। छावणी री थरपणा सू भीला मे घणो रोप फल्यो। वान इण बात रो घणो दुख हो के महाराणै अग्रेजा न छावणी खोलवा री हुकम किया देय दियो। इण घटना न लेय न कई लोकगीता री रचना हुई, उणमे सू अेक इण भात है—

लोकगीत

रई नै केवा बोलै रे श्रापणा मगरा मा

---

1 अग्रेज।
2 उल्टो सीधो।
3 राजस्थानी शोध सस्थान चोपासनी, जोधपुर र सग्रह मे।

मूरियू नवो सावणी माड आपणा मगरा मा
मूरियू सडक कढावे आपणा मगरा मा
मूरियू बगला माडे आपणा मगरा मा
मगर भोळु राजा आपणा मगरा मा
राजा भोलावो लोधु आपणा मगरा मा
मूरियू दगा नु भरियू आपणा मगरा मा
दगो करवा आव्यू आपणा मगरा मा
चोजू नाण चलाव आपणा मगरा मा
दनका टुकडा आले आपणा मगरा मा
गती पावडा आल आपणा मगरा मा
राजा ठगवा आव्यु आपणा मगरा मां
राजा ठगाई जिऊ आपणा मगरा मा
गीत जातो मेलो आपणा मगरा मा ।।[1]

विदेशी सत्ता मेवाड मे आय नें किण भात नु वी छावणी री थरपणा करी, भोळा राजा नें किण भात ठगियो, किया ठौड ठौड सडका बणाय दी अर अंग्रेज आपरो ठागो जमाय लियो । अंग्रेज दगाबाजो सू भरयोडो है । इणे राजा न ठग लियो । भील कौम रै मन मे अंग्रेजा रै प्रति घणो रोप है ।

सन् 1858 मे भारत मे कपनी री हुकूमत खतम हुई । इणरै पछ महाराणी विक्टोरिया री राज कायम हुयो अर इण राज मे कई सुधार आयोजित करीज्या । राजस्थान रै भील क्षेत्र मे जनगणना, मद्यपान निषेध अर पुलिस चौकिया री थरपणा इत्याद रा कई काम हाथ मे लिरीज्या । भीला इण सुधारा न आपरै अधिकारा माथ कुठाराघात समझ्यो अर राज सरकार रै हुकम री उदूली करणी आपरो फरज मान लियो ।

इण सगळै सुधारा नै भील समाज शका री निजर सू देख्या । उण दिना अफगान युद्ध चाले हो । इण कारण जनगणना री मतलब ओ लगाईज्यो के सगळा मोटयार भीला न पकड'र युद्ध मे मोर्चा माथ भेज दिया जासी अर बाकी रा रै माथै कर लगायो जासी । इणरै साग आ अफवाह पण फैली के 'जनगणना कर नै माती मत-

1 राजस्थानी शोध सस्थान, चोपासनो जोधपुर र सग्रह सू ।

वाळी लुगाइया ताजा तकडा मोटयारा नैं सूपी जासी अर थाकोडी मडकल लुगाइया कमजोर अर थाकोडा मोटयारा र गळै घालीजसी ।'[1]

इण भात भील समाज मे मायनै री मायन असतोप फैलतौ रह्यौ अर कई तरै री शकावा पनपती रही । 'छेवट भील आदोलन री दूजोडौ विस्फोट माच 1881 मे उण वखत हुयौ जद तीर कबाण सू लैस होय न तीन हजार भीला बडेपाल रा थाणा नैं घेर लियौ अर थाणैदार समेत सोळै आदमिया न मार नाख्या । भीला उदयपुर खैरवाडा मारग न ई काट नाख्यौ अर थाणा कनली सगळी बाणिया री दुकाना मे आग लगाय दी ।'[2]

मेवाड रै महाराणै विद्रोह नैं दबावण र वास्त सैनिक टुकडी भेजी पण उणी'ज वखत अलसीगढ क्षेत्र मे भीला विद्रोह कर दियौ । हालात इतरा बिगडग्या अर स्थिति इतरी खराब हुयगी के छेवट ब्रिटिश सरकार राजस्थान रा अेजेंट टू द गवनर जनरल न लिख्यौ के वो तुरत जायनै मामलै नै सुळझावै ।

अग्रेजा रिखबनाथ नाम री ठौड माथै अेक सौ भील प्रतिनिधिया अर रियासत रा अधिकारिया नै बातचीत करण वास्त बुलाया । अग्रेजा री तरफ सू कनल ब्लेयर उठै मौजूद हो । बातचीत सतोपजनक वातावरण मे सरु हुई । इण बिचाळै सामळदास नाम रै अेक रियासती अधिकारी नाराज होयनै दबाव देवता कडक'र भीला न पूछ्यौ के वे आपसरी मे समझौतौ क्यू नी करै ? उणी'ज वखत राज रा की सिपाही बदूका भरण लाग्या । निहत्था भील औ वातावरण देख'र घबरीजग्या अर नाठण लाग्या । नाठती भीड माथ अेक सिपाही गोळी चलाय दी ।

'इणरी नतीजौ औ निकळ्यौ के मेवाड क्षेत्र री सगळी भील कौम रियासती शासन अर अग्रेजा रै खिलाफ होयगी । छेवट 19 अप्रेल 1881 रै दिन खुद महाराणा रै बीच मे पडवा सू भीला सागै अेक समझौतौ हुयौ जिण मे भीला री सगळी बाता मजूर हुई ।

---

1 राजस्थान म राजनतिक जन जागरण, पृ स 72

2 उपयु क्त ।

(जनगणना रो काम वद हुयो, थाणेदार अर दूजा सिपाहिया न मारण वाळे भीला नें क्षमादान दिरीज्यो इत्याद ।)'[1]

इतरी वात हुया रै उपरात ई भील क्षेत्र मे स्थाई शाति अर व्यवस्था कायम नी हुय सकी । सरकार अर भीला रै विचाळै वरावर भगडा होवता रह्या अर भील अग्रेजी राज न वारी आजादी रै मारग मे रोडो समभता रह्या । ओई कारण है कै आगै चाल'र गुरु गोविद रो नेतृत्व मिळिया भील आदोलन रो तीजो विस्फोट अेक जोरदार धम्मीडा सागै हुयो, जिणमू मेवाड रै अलावा कनली रियासता अर ब्रिटिश सरकार ई प्रभावित हुई ।

भीला अग्रेजा री प्रकृति अर वारी चाला नें कितरी वारीकी सू ओळखी समभी ही इणरी पुष्टि की लोकगीता मू होवै । आवू क्षेत्र ठेट सू भीला री प्रमुख निवास स्थळी रही है । इण कारण आवू माथै अग्रेजा रो कब्जो हुयग्यो तो वात वान घणी खारी लागी । देशी रजवाडा आपरै सागण हाथा आवू न विदेशी सत्ता न सूप दियो, भीला नें इण वात रो घणो दुख हो । नीचै दियोडा लोकगीत मे वार इण मनोभावा री अभिव्यक्ति घणै सातरै ढग सू हुई है—

लोकगीत

रई न कवु बोले रे—भूरियू आव रे ।
मगरो जोव आवै रे—भूरियू आवै रे ।
पूसतू पूसतू आवै रे—भूरियू आवै रे
मगर मगर आवै रे—भूरियू आव रे
दक्खण देस ऊ आव रे—भूरियू आव रे
फुण मोटू मगरो रे—भूरियू आव रे
आबू मोटो मगरो रे—भूरियू आवै रे
पूसतू पूसतू आव रे—भूरियू आव रे
आबू लगतू लीधो रे—भूरियू आवं रे
हरी फरो न जुग्रे रे—भूरियू आव रे
सिरोही वाळु राजा—भूरियू आव रे
भोळु राजा भोळु—भूरियू आव रे

---

1 राजस्थान मे राजनैतिक जागरण, पृ स 74

आबू मगरो आलो—भूरियू आवं रे
राजा नटो गो ऊ—भूरिय आव रे
राजा मे भूरियू भोलवे—भूरियू आवं रे
म्हारा खोलडो माडू[1]—भूरियू आवं रे
राजा भोलवाई लियो—भूरियू आवं रे
भूरियू कोठी माड—भूरियू आवं रे
बावन राजा माथे—भूरियू आवं रे
नवो कानून काढ़ं—भूरियू आवं रे
भूरियू राज कर—भूरियू आवं रे
आबू लई लीधु—भूरियू आवं रे
गीत जातु मेलो—भूरियू आव रे ।[2]

दखिरण देस सू पूछतो पूछतो अग्रेज आबू ताई आय पूगो। सिरोही रै राजा ने भूल थाप देय न आबू माथै रैवास करण री हुकम ईं लेय लियो। सिरोही रो राजा भोळो है। वो अग्रेज री चाल न नी समझ। (पण भील उण चालाकी न साछी तरिया समझग्या है) आज देख लो उणा आबू माथ कोठिया ऊभी करली है। नित नु वा कानून काढ न वो बावन रजवाड़ा माथै राज कर। दुख इण बात री है के आबू परदेसिया रै कब्जे मे जावतो रह्यो। चालो अबै गीत नं खतम करो।

ऊपर कियोड़ै उल्लेख मुजब भील क्षेत्र मे स्थाई शांति अर व्यवस्था कायम नी हुई ही। नु वी व्यवस्था भीला र जीवण मे सुधार करणी चावती अर भील इण न आपरी स्वतत्रता मे दखल-दाजी समझता अर आपरे परपरागत अधिकारा री हनन मानता। इण कारण गुरु गोविंद री नेतृत्व मिळता ई भील आदोलन पाछो सरु होयग्यो।

2 गुरु गोविंद

गोविंद गुरु री जनम 20 दिसबर 1858 रै दिन डूगरपुर रियासत रै बासिया गाव मे अेक साधारण विणजारा परिवार मे

---

1 घर बसावू ।

2 राजस्थानी शोध सस्थान, चोपासनी, जोधपुर र सग्रह सू ।

हुयो । वे टाबरपणा सूं ई बडा सस्कारी हा । मोटा हुया उणा गळै मे रुद्राक्ष धारण कर लियो अर सन्यासिया जिसो जीवण बितावण लाग्या । होळै-होळै वारै भगता अर भाविका री सख्या बढण लागी ।

उण वखत स्वामी दयानद सरस्वती मोजूद हा । च्यारू मेर स्वामीजी अर वारै आर्य समाज री धूम मच्योडी ही । गोविंद गुरू माथै ई इण वातावरण रो असर पडचो । सन् 1880 मे जद स्वामीजी राजस्थान रै दोडै माथै आया तो गोविंद गुरू वारै सपर्क मे आया । इणसू वारै जीवण माथै स्वामीजी रै विचारा रो घणो असर पडचो ।

आदिवासिया नै सगठित करन वानै सस्कारी अर सभ्य बणा-वण रो व्रत उणा स्वामीजी री प्रेरणा अर उपदेशा सू ई लियो । ओ व्रत उणा जीवणलग निभायो । इण वास्त उणा सप सभा नाम री अेक सगठण बणायो । श्री सुमनेश जोशी रै शब्दा मे—'सप सभा कोई राजनैतिक सस्था कोनी ही अर नी उणरो उद्देश्य राज-नतिक हो । कारण के गोविंद गुरु री विचारधारा विशुद्ध सुधार-वादी ही । सप सभा रो अभियान अेक सास्कृतिक अभियान हो । पण आगै जाय'र राजावा अर अग्रेजा इणन राजनैतिक मान लियो अर सप सभा रा समारोह विद्रोहात्मक गिणीजण लाग्या ।'[1]

सप सभा रा मूळ उद्देश्य सुधारवादी अर सास्कृतिक हा । दाखला सरुप—दारूबदी, चोरी-डकैती रो त्याग, शिक्षा रो प्रचार, मैणत मजूरी अर खेती माथै जोर, भगवान मे आस्था, नित रोज हवन करणो, अदालता रो बहिष्कार, पचायता रो निर्माण, बेठ बेगार अर अत्याचार रो विरोध अर विदेशी चीजा रो बहिष्कार इत्याद ।

उणा सप सभा रै सगठण री सरुआत सिरोही रियासत रै भील क्षेत्र सू करी ही पण होळै होळै ओ सगठण राजस्थान रै पूरै दक्खणी-पूरवी इलाकै मे फैलग्यो । भीला गाव गाव सप सभा कायम करी अर गुरु गोविंद रै हाथ सू रुद्राक्ष री मणियो गळै मे बधवायर भगत बणग्या । उणा दारू पीवणो अर चोरी डकती करणो बद

---

1 राजस्थान में स्वतन्त्रता सग्राम के सेनानी, ले सुमनेश जोशी पृ स 3

करदी। वेठ बेगार काढणी ई बद करदी। गुरू री आज्ञा मुजब हरेक भगत आपरै घर मे घूणी राखण लाग्यो अर उणमे नितरोज घी खोपरो नाखन हवन करण लाग्यो।

भील क्षेत्र मे गुरू गोविंद रो इतरो प्रभाव हो के वारै मू ड सू निकळयोडो हरेक बोल भीला रै वास्तै अलिखित कानून हो। गुरू रै फगत इशारै माथ हजारू भील माथा वढावण न त्यार हा। लाखू भीला रा वे अेक मात्र नेता हा।

'सन् 1903 मे गुरू गोविंद मानगढ री भाखरी माथ जाय आसण जमायो। उठै उणा मोटो घूणी लगायो। आई साल मिगसर महीन री पूनम रो उठ मोटो मेळो भरीजण लाग्यो। मेवाड, डूगरपुर, बासवाडा अर गुजरात रा हजारू भील इण मेळै मे हर साल आवण लाग्या। होम वास्तै लायोडा नाळेरा रा ढिग लागण लाग्या।'[1]

ओ विशाळ भील मेळो अेक तरै सू सप सभा रो सालीणो अधिवेशन हो, जिणमे हरेक गाव री भील पचायत री मुखियो इण मोके आपरै गाव पचायत री प्रगति रो लेखो जोखो गुरू रै सामी पेश करतो। मेळै मे लाख डोढ लाख भील भेळा होवण लागग्या।

सप सभा रै प्रचार सू भीला मे खूब जागति आयगी। मेवाड, डूगरपुर, बासवाडा, गुजरात अर माळवा रा सगळा भील सगठित होयग्या। उणा सामती शोषण रो विरोध करणो माड्यो। जे कठैई अन्याव अत्याचार होवतो देखता तो वे सगठित रूप सू इणरो विरोध करता। इणसू सगळा देशी रजवाडा शकित होयग्या अर मिळ न इण सगठण न तोडण खातर सामूहिक प्रयत्न करण लाग्या।

'सन् 1908 मे सप सभा रै सालीण अधिवेशन (मानगढ र मेळ) रै मौकै डूगरपुर, बासवाडा अर कुशलगढ रियासत रा राजावा अे जी जी न अरज करी के इण क्षेत्र रा भील भेळा होय न डूगरपुर बासवाडै मे भील राज री थरपणा करणी चाव। इण कारण इण बात माथै गौर कियो जावै। इणी'ज भात गुजरात मे सुथरामपुर र राजा गोधरा अर अहमदाबाद रा कमिश्नरा न तार देय नै शिका-

1 राजस्थान मे स्वतन्त्रता सग्राम के सेनानी, पृ स 5

यन करी के डोढ लाख भील भेळा होय नें म्हारो खजानो लूटणो चाव। इणी'ज भात री सूचना बडोदरा अर देवगढ बारिया रा राजावा न दिरीजी। सूचना मे आ बात ई लिखीजी के भील गोविंद गुरू रै नेतत्व मे आक्रमण करनै भील राज री थरपणा करणी चाव। इणरै वास्त सुरक्षात्मक उपाव करनै गोविंद गुरू नें गिरफ्तार करणो अर भीला री ओ हिंसक सगठण तोडणो जरूरी है।'[1]

भीला मे फैलती जनजागृति न नष्ट करण ताई अर वारै सगठण न तोडण ताई अग्रेजा अर देशी रजवाडा मिळन ओ कावतरो (षडयत्र) घडियो हो। इणमे दोनू रा स्वारथ भेळा हा। भीला नै दबाय'र राखणा दोनू रै वास्तै हितकारी हो।

इण वास्तै राजावा री अरज माथै अे जी जी खरवाडा री छावणी न मानगढ रै मेळै माथै हमलो करण रो हुकम देयन गुरू गोविंद न गिरफ्तार करण री आज्ञा देय दी। मदद सारू अहमदाबाद अर वडोदरा सू ई सेना अर मशीनगना मगवाय ली।

'7 दिसबर 1908 (वि स 1852 री मिगसर सुदी पूनम) रै दिन दूर दूर इलाका सू लाखू भील रगरगीली पोशाका मे मानगढ री भाखरी माथै भेळा होवण लाग्या। वे धूण माथै पूग'र नाळेर होमण लाग्या के फौज वानै अचाणचक घेर न अधाधु ध गोळिया चलावण लागी। धूणै रै च्यारू मेर लाशा री ढिग लागग्यो। भाखरी रै च्यारू मेर फौज री घेरो लाग्योडो हो, इण कारण भीड मे भगदड माचता ई नाठता भीला री च्यारू मेर गोळिया सू स्वागत हुयो। उण दिन खैरवाडा री छावणी रा सिपाहिया अर गुजरात री फौज रा सैनिका मिळ'र मानगढ री भाखरी माथै कोई पनर सौ भीला री लाशा बिछाय दी।'[2]

गोविंद गुरू न गिरफ्तार करन वार माथै मुकद्दमो चलाईज्यो अर वानै फासी री सजा सुणाय दी। बाद मे अपील माथै फासी रद्द हुई अर दस बरस री सख्त कद होयगी। जेळ सू छूट्या पछै गोविंद गुरू लीबडी (काठियावाड) मे थू पडी बणाय नें रवण लाग्या। वे उठै खेती करन आपरो गुजारो करता। उठ इज वारो देहात हुयो।

---

1 राजस्थान म स्वतन्त्रता सग्राम के सेनानी, पृ स 5
2 उपयुक्त पृ स 6

इण भात भीला रै अेक विशुद्ध सुधारवादी अर सांस्कृतिक आंदोलन न राजनैतिक रूप देय'र रजवाड़ा अर अंग्रेजा उणन तेहस नेहस करण री पूरी कोशिश करी, पण इणमे वान पूरी सफळता नी मिळी। मानगढ री भाखरी माथ सैंकड़ लाशा बिछाय'र उठ री धरती न गरीब भीला रै खून सु रग्या पछ अर गुरू गोविंद न जेळ भेज्या पछे ई भीला मे अेकर जिकी जन चेतना व्याप्त हुयगी ही वा नी मिटाई जाय सकी। ताकत र बळ माथै जनचेतना न दबावण रा दाखला दुनिया र इतिहास मे बार बार दोहराईज पण नतीजो सदीव ओ इज निकळयो है के दमन सू जन जागृति उल्टी कई गुणी वेसी बढ जावै।

गोविंद गुरु री महानता अर मानगढ रै मेळै मे खून खराबी सू सबंधित अेक भीली लोकगीत इण भात मिळै—

लोकगीत

रई नै कथु बोल रे—मानगढ माथ धुमाल कर
हां सु मानगढ ढोल बाज रे—मानगढ माथै धुमाल कर
हा सु अेक गरू नै बे चेला—मानगढ माथ धुमाल कर
हा सु जूनी धूणी जूनी—मानगढ़ माथै धुमाल कर
हा सु धूणियै पूजा करो—मानगढ माथ धुमाल कर
हा सु दनका जातरो आव—मानगढ माथ धुमाल करै
हा सु मानविया नो मेळो—मानगढ माथै धुमाल कर
राजा न भोग बद करायो—मानगढ़ माथ धुमाल कर
आपा भोग नीं आला—मानगढ माथ धुमाल करै

× ×

हा सु राजाअे खबर लागी—मानगढ माथ धुमाल कर
हा सु खरवाडा नीं कपनी मोकळी—मानगढ माथ धुमाल कर
हा सु बोडियु कागद[1] दीधु —मानगढ माथ धुमाल कर
हां सु बगळ मूरियू बठु—मानगढ माथ धुमाल करै
हा सु मूरियू कागद खोल—मानगढ़ माथ धुमाल करै
हा सु टपर टपर था स—मानगढ माथ धुमाल कर
हा सु मानवी पलटी गया—मानगढ माथ धुमाल करै

---

1 बद लिफाफो।

हा सु कपणो वेगो मोकळो—मानगढ माथ घुमाल कर
हा सु वावाँ न समझावो—मानगढ माथे घुमाल कर
हा सु बावो नयो माने—मानगढ माथ घुमाल करे
हा सु भूरियू मसीन चलावे—मानगढ माथे घुमाल कर
हां सु रूखडा भागवा लागो—मानगढ माथे घुमाल करे
हां सु मानवी मराई गया—मानगढ माथे घुमाल कर
हां सु सोकडा मानवी मुवा—मानगढ माथे घुमाल करे
हा सु बावो नयो गिया—मानगढ माथे घुमाल करे
हा सु गीत जातो मेलो—मानगढ माथ घुमाल कर ।।[1]

मानगढ री भाखरी माथै ढोल बाजै । मेळो भरीजै । उठै गोविंद गुरु रा दो चेला है । गुरू री था धूणी जूनी है । इण धूणी री पूजा खातर नित अनेक भगत आव । राजा नै लाग वाग अर कर देवणो वद कर दो । राजा बद लिफाफै मे इणरी खबर अग्रेज न भेज दी है । अग्रेज वगळै मे वैठो टपर टपर उणन बाच रह्यो है । खैरवाडै री छावणी सू फौज आई है । बाबा गुरु गोविंद न समझाया पण वे माया कोनीं । अग्रेज मशीनगन सरु करदी । गोळिया री बिरखा सू झाडका भाग रह्या है । सैकडू मिनख मरग्या । बावो हाल जीवता है । अबै गीत नै खतम करो ।

3 मोतीलाल तेजावत

गुरु गोविंद पच्चीस वरसा ताई भीला रै बिचाल रयन जिको जन जागृति पैदा करी ही वा दमन बळ माथै खतम होवणी असभव ही । सप सभा नाम रै जिण सगठण नै बिखेरण ताई इतरी खून खराबी हुई वा सगळी अकारथ गई । कारण अवसर आया मोतीलाल तेजावत रै नेतृत्व मे सप सभा री ठोड 'अेको' सगठण पाछो दुगणै वेग सू पगा होयग्यो ।

'मोतीलाल तेजावत रो जनम सन् 1886 मे उदयपुर जिलै मे कोलियारी तेहसील रै पलासियै गाव मे अेक जैन परिवार मे हुयो हो । सरुपात मे तेजावत झाडोल ठिकाणै मे कामदार री हैसियत सू काम करता । इण नौकरी में काम करता वा नै सामतीं शोषण अर

1 राजस्थानी शोध सस्थान चोपासनी जोधपुर रै सग्रह सू ।

आदिवासी गरीब प्रजा री गईबीती हालत नें देखण रौ आछौ अवसर मिळयो। इणसूं यारो सवेदनशील मन घणो प्रभावित हुयो अर उणा ठिकाण री नौकरी छोड दी।'[1]

इणा गुरु गोविंद रै ज्यूं भीला न सगठित करण सारू 'अेको' आदोलन चलायो। पण इण दोनू सगठणा मे मूळभूत फरक हो। सप सभा तो अेक विशुद्ध सुधारवादी अर सास्कृतिक सगठण हो पण अेको सगठण अेक राजनैतिक आदोलन हो। सप सभा रै माध्यम सू जिकी जन जागृति पैदा हुई ही उणसू इण आदोलन न घणी मदद मिळी।

'सन् 1921 22 मे मेवाड मे भू राजस्व वसूली अर जमीन रा पट्टा सबधी काम सरु हुयो। भीला री प्रमुख माग आ ही के भू राजस्व वसूल करण री विभिन्न पद्धतिया री ठौड सगळै भील क्षेत्र मे फगत अेक ई पद्धति राखी जावै।'[2]

रियासती शासन भीला री इण वाजिब बात माथै कोई गिनरत नी करी तो मोतीलाल तेजावत र नेतत्व मे आदोलन सरू होयग्यो। इण बाबत विजयनगर कन नीमडा गाव मे अेक सभा रौ आयोजन हुयो। सभा मे हजारू भील भेळा हुया। अे भील दाता पालनपुर अर ईडर इत्याद दूर दूर क्षेत्रा सू आया हा। रियासत इणरै प्रतिरोध मे अेक सैनिक टुकडी उठै भेज दी। सभा रौ आयोजन चालू हो के सनिका भीड नै च्यारू मेर सू घेरली अर मशीनगन सू गोळिया बरसावणी सरु करदी। भीषण नरसहार हुयो। करीब हजार बारै सौ भीला न भू ज नाख्या। श्री तेजावत र पग मे ई अेक गोळी अर की छर्रा लाग्या। भील वानै अघर रा अघर उठाय नै लेयग्या। इणर पछ वे आठ बरस ताई फरार रह्या अर सन् 1929 ताई गुप्त रुप सू आदोलन रौ सचालन करता रह्या।'

नीमडा रै इण नर सहार न युगा ताई याद राखण ताई कई भीली लोकगीता री रचना हुई होमी। वा मे सू अेक गीत मे बार सौ लाशा होवण रौ जिक्र मिळै। मोतीलाल तेजावत इण आदोलन

1 राजस्थान मे राजनतिक जन जागरण, पृ स 75
2 उपयुक्त।

न किण भात सगठित कियो अर ओ आंदोलन किण भात दूर दूर फैलग्यो, इणरो वणन ई इण लोकगीत मे मिळै —

लोकगीत

मोतीलाल वाणियु कजियु करे !
कोल्यारो नु वाणियु कजियु करे !
हा सु दुखी दुनिया दुखी
हा सु राजा दुखी करे
हा सु दनको वेट कढावे
हा सु दूणो वराड लेवे
हा सु भोल अेके करे

× ×

हा सु वाणियु कजियो करे
हा सु फरतो फरतो जाओ
हा सु ईडर आई नें लागु
हा सु चितरीयानी नाळ मेळो भरे
हा सु राजा खबर पडी
हा सु खरवाडा नी छावणी
हा सु बगळ भूरियू बैठो
हा सु टपर टपर बोले
हा सु मोतीलाल तेजावत
हा सु वीं नें हाई लावी
हा सु कपनी धामा वोरे
हा सु मेळा मे कजियो थायो
हा सु मसीनगजा चलावे
हा सु मानवी मरिया गईया
हा सु बार सो मानवी मुआ
हा सु मोतीलाल नीं गई ओ
हा सु मानवी लुटावी गईया
हां सु गीत आतो मेलो ।।[1]

---

1 राजस्थानी शोध सस्थान, चोपासनी, जोधपुर रै सग्रह सू ।

तेजावत रै फरार हुया पछै सरकार भीला मे भ्रम फैलावरण वास्तै कोई दूजै आदमी रो माथो वाढ न भील क्षेत्र मे फेरियो पण इरण झूठै प्रचार री भीला माथै की असर नी पड्यो। उणारो सरकार रै खिलाफ विद्रोह चालू रह्यो।

सरकार न खबर मिळी के तेजावत सिरोही रियासत रा गावडा मे छिप्योडो है। इण कारण छ महीना ताई सिरोही रै गावडा मे तलाशी चालती रही पण सगळी मैंणत अकारथ गई। इणी बिचाळै भूला अर वहोलिया नाम रा गावा मे भीला रियासती शोषण री खिलाफत करी तो सरकार दोनू गावडा बाळ नाख्या। राजस्थान सेवा सघ री तरफ सू सत्य भक्त अर रामनारायण चौधरी नै इण अग्नीकाड री जाच करण वास्तै भेज्या तो उणा उठ 115 व्यक्तिया रा बयान कलमबद किया अर बळघोडा गावडा नै जायन निजरा दीठा। 'जे सेवा सघ री रपट न सही माना तो दोनू गावडा मे 325 परिवार तेहस नेहस हुया। 640 झूपडा बळिया अर 1800 नर-नारिया अर टाबरा न मार नाख्या। इणरै अलावा 600 वैलगाडिया, 108 ढोर डागर अर 7085 मण अनाज ई भेळो बळियो।'[1]

महात्मा गाधी नै मोतीलाल तेजावत रै नेतृत्व मे चालतै आदोलन री खबर मणिलाल कोठारी (अहमदाबाद) रै माफत बरोबर मिळती रैवती। इण कारण बापू री सलाह मुजब ई उणा खेड ब्रह्मा मे खुद री गिरफ्तारी देयदी। तेजावत न मेवाड लाय न सात बरस जेळ मे राखीज्या। इणर पछै सन् 1938 अर 1942 मे वान फेरू जेळ हुई। ओ सिलसिलो ठेट् स्वतन्त्रता प्राप्ति ताई चालतो रह्यो। वे की बरस जेळ मे रैवता अर की बरस बारै रैवता।

सन् 1951-52 रै विधान सभा चुणाव मे तेजावत साहडा विधान सभा क्षेत्र सू जनता रै अणू तै आग्रह माथ काग्रेसी प्रत्याशी रै खिलाफ ऊभा हुया। 'पण प्रधानमत्री पडत जवाहरलाल नेहरू वानै समझाया के आप पुराणा अर कमठ कांग्रेसी कार्यकर्ता हो, इण वास्तै नाम पाछो लेयलो। तेजावत वारी वात मानली।'

---

1 राजस्थान मे राजनैतिक जन जागरण, पृ स 76

5 दिसबर 1963 रैं दिन आदिवासिया रैं इण महान नेता री देहात होयग्यो ।

इण भात दौलजी काका रैं हाथ सू सरु कियोडो भील आदोलन ठेट स्वतत्रता प्राप्ति ताई बरोबर चालतो रह्यो । डू गरपुर रैं पूनवाडा गाव मे 19 जून 1947 नैं नाना भाई भील अर बार बरस री टाबर काळीबाई रो बळिदान इण बात री साख भरैं कै ठेट स्वतत्रता प्राप्ति ताई भीला नैं आपरैं हका री रक्षा खातर आपरा प्राण देवणा पड्या ।'[1]

भीला रैं इण आदोलन रैं दरम्यान जिण लोककाव्य रो निर्माण हुयो, उणमे कई ठोड महात्मा गाधी री ई जिक्र आवैं । इणसू ठा पडै कै भीला न विदेशी सत्ता र खिलाफ राष्ट्रीय स्तर माथै चालतै सघप री ई जाणकारी ही ।

नीचै दियोडा लोकगीत मे महात्मा गाधी रो जिक्र तो आवैं पण इणरी भापा सू इसो लखावै कै ओ गीत घणो जूनो कोनी । इण माथ आधुनिकता री छाप सुभट लखाव । लोकगीत इण भात है—

लोकगीत

रई नैं कैवा बोल रै—गाधी हई आवैं
धोळी नैं टोपी रो—गाधी हई आवैं
लांबा नैं कुरता रो—गाधी हई आवैं
ग्रेक धोतियु पेरियु—गाधी हई आवैं
अगरेजा नु राज—गाधी हई आवैं
गुलामी नीं करवी—गाधी हई आवैं
राम केहतो आव—गाधी हई आवैं
राज लेतो आवैं—गाधी हुई आवैं
मिटिंग करतो आवैं—गाधी हई आवैं
भायण देतो आवैं—गाधी हई आवैं
अगरेज नवरावतो आवैं—गाधी हई आवैं
भारत आजाद करतो आवैं—गाधी हई आवैं ।।[2]

1 राजस्थान मे स्वतत्रता सग्राम के सनानी पृ स 66 सू 69
2 राजस्थानी शोध संस्थान, चोपासनी जोधपुर रैं सग्रह सू ।

बिजौलिया बरड किसान आंदोलन सबंधी राष्ट्रीय काव्य अर श्री विजयसिंह पथिक

बीसवी सदी रै पै'लड़ै दशक ताई अग्रेजी सत्ता राजस्थान मे आपरी जडा भली भात जमायली । सगळै देशी रजवाडा माथै उणरो अधिकार होयग्यो । देशी नरेश अग्रेजा री सलाह मुजब आपरो शासनतत्र चलावण लाग्या । हरेक रियासत मे अेक अग्रेज रेजिडेंट मुकर होयग्यो । सगळो काम काज रेजिडेंटा री राय मुजब होवतो । राजा तो विदेशी सत्ता रो सरक्षण मिळया अगाई नचिता होयग्या । प्रजा सू मरजी मुजब कर वसूल करणो अर अश आराम मे पडयो रैवणो, अे वारा प्रमुख धधा हा ।

देशी रजवाडा मे ई सगळो क्षेत्र राजा महाराजावा र सीधो अधिकार मे नी हो । रियासता रो घणकरो भाग सरदार-सामता अर ठाकर-जमीदारा रै कब्जे मे हो । अे जागीरदार ई दो तीन श्रेणिया मे बटयोडा हा । आप आपरी जागीर रै ठरक मुजब अे रियासत र खजान मे रेख चाकरी (कर) भरता । इणरै पछ आप आपरी जागीर मे वांनै स्वायत्तता मिळयोडी ही । इण भात जागीर इलाकै री प्रजा पूरी तरै सू सामती व्यवस्था रै कब्जै ही । वे आपरी सुविधा मुजब इच्छानुसार प्रजा रै सागै बवार करता । इण भात जागीर इलाकै री प्रजा अग्रेज, राजा अर जागीरदारा री तेवडो गुलामी मे आपरो जीवण बितावती ।

कोई पण व्यवस्था पूण रूप सू खराब नी होव । अच्छाई-बुराई हरेक व्यवस्था मे मोजूद रव । इण भात सामती व्यवस्था मे ई कई चोखी बाता ही । पण वे उठ इज ही वै जठै रा ठाकर जागीरदार विवेकशील अर समझदार हा । पण इसा जागीरदार कम ई हा । घणकरा जागीरदार प्रजा माथै जुलम अर अत्याचार करता । प्रजा सू भात भात रा लाग बाग अर वेठ वेगार लिरीजती । विरोध किया अत्याचार री कठई सुणवाई नी ही । कोई दाद फरियाद नी ही । अेक अज्ञात कवि रै शब्दा मे—

जागीरी मे जीवा सू तो भलो कुवा मे पडबो ।
जागीरी का गावा सू तो भलो नरक मे सडबो ॥[1]

---

1 हाडोती का स्वतत्रता आदोलन पृ स 122-123

कारण के सामती व्यवस्था मे जागीरदार अर वारा कारिंदा—

गाळ्या काढे, जूता मारे, मार उडादे बाल
इज्जत लूट, चमडी फोडे, हाय उधेडे खाल
आख दिखावे, डाट डप्टे, ललकारे फटकारे
रोवा तो रोवा भी नीं देवे, ठाकर ठोकर मारे ॥[1]

इण उपरात—

धरम, धन, धरती लूट जागीरदार
बेन बेटी रूपकी नै ताके ये सरदार ॥[2]

इसी हालत मे प्रजा किणरै सामी जाय न बके। किणरै आगै जायने फरियाद करै? जद बाड ई खेत न खावण लाग तो खेत री रुखाळी कुण करै? वा आपरी दुख दरद किणरै सामी जाय न सुणावै? इसी हालत मे प्रजा रो ध्यान राजा कानी जावणो सुभाविक है। पण जद राजा महाराजा ई प्रजा रै दुख दरद कानी ध्यान नी देवै तो कवि रै शब्दा मे प्रजा कवण लाग—

थाका नोकर मनमानी कर म्हान घणा सतावे रे!
थ मोटर मे खेल शिकारा मौज उडावो र
राजा जागो रे!
जाग जाग प्रजा रा पाळक प्रजा दुखारी रे!
राजा जागो रे![3]

पण जद प्रजा देखै के उणरी सुणवाई कठई नी हाय री है। राजा महाराजा तो खुद विदेशी सत्ता री छत्रछाया मे मौज कर रह्या है तो उणरी सगळो रोस विदेशी सत्ता माथै उतर—

अगरेजा का राज प रे पड बीजळी आज
मेट गुलामी फदो प्यारा ल्यादे अपणा राज![4]

कठैई कमती तो कठैई बेसी पण सागण आ ई हालत राजस्थान मे सगळी रियासता मे ही। सगळी ठौड अेक समान हालात होवण

---

1 हाडोती का स्वतत्रता आदोलन, पृ स 122-123
2 उपर्युक्त।
3 उपयुक्त।
4 उपयुक्त।

सू प्रजा मे ई असतोष अेक सरीखो हो। थठेई थठई अन्याय अर अत्याचार रे खिलाफ प्रतिकार री आवाज ई सुणीजती पण प्रजा सगठित नी होवण सू अर सबळो नेतृत्व नी होवण सू सफळता नी मिळती।

पण इण जमानै मे ई मेवाड रियासत री बिजोलिया जागीर मे किसान आदोलन सरु हुयो जिको खूब सगठित रूप सू चाल्यो। बिजोलिया किसान आदोलन र नाम सू चावो ओ विशुद्ध अहिंसात्मक आदोलन हो। इण आदोलन में ससार मे सै सू प'ली 'सत्याग्रह' री क्रियात्मक प्रयोग हुयो। 'सत्याग्रह' शब्द नै स सू पै'ली प्रचारित-प्रसारित करण रो थ'य इण आदोलन नैं ई है।

'दुनिया मे कोई ठोड आज दिन ताई बिजोलियै रै मुकाबलै सगठित आदोलन नी हुयो। जनता अेक दिन री हडताल सू ई धाप जावै। पण बिजोलिया रा किसाना छ दिना मे छ महीना री नी पण छ बरसा री लाबी हडताल करनै दुनिया नै बताय दियो कै सगठण किण नै कवै। लगातार छ बरसा ताई किसाना खेती नी करी, जागीरदार नै लाल पाई लगान पेटै नी चुकाई, छ बरसा ताई छोरा छोरिया रा ब्याव नीं किया अर छ बरसा ताई कोई तिवार नी मनायो। ससार रै इतिहास में सगठण री इसो अनुपम उदाहरण दुलभ है।'

ओ स की इण कारण सभव हुय सक्यो के ओ आदोलन विजयसिंह पथिक जिस त्यागी अर कमठ नेता रै नेतत्व मे चालै हो। पथिकजी री ज'मस्थळी उत्तरप्रदेश ही पण कमस्थळी राजस्थान रही। वे राजस्थान रै जनजीवण मे इतरा घुळमिळग्या हा के थानै कोई गैर राजस्थानी नी मानतो। राजस्थानी भाषा माथै वारो पूण अधिकार हो। वणा राजस्थानी मे काव्य रचना करन जन चेतना पदा करी।'[1]

पथिक अेक आछा कवि होवण रै साथ कई भाषाया रा जाणीकार हा। वार काव्य सू किसाना मे खूब जागृति आई। कई गीत तो इतरा प्रचलित हुया के आम जनता र हिवडै रा हार बणग्या।

छ बरसा ताई निरतर चालतै आंदोलन मे जनता रो मनोबळ

---

1 स्व विजयसिंह पथिक, जीवन परिचय, ले शोभालाल गुप्त, पृ स 3

कायम राखणो घणो अबखो काम हो। विजयसिंह पथिक अर वारा साथिया र काव्य इण काम मे घणी मदद करी। आदोलन अर सामती अत्याचारा सू सबधित कई रचनावा लिखीजी। इणसू जनता रो मनोबळ कायम रैयग्यो।

पथिकजी रो जनता मे कितरो मान हो, लोग वानै किण दीठ सू देखता अर वारै मना मे पथिकजी रै वास्तै कितरी ऊची अर ठावो ठौड ही, इणरी पुष्टि नीचै दियोडा गीत सू होय जासी। इण गीत नै किसान ओरता घणै चाव सू गावतो—

गीत

म्हानै विजयसिंह आयै जगाया म्हाको माय
थाका गुण म्हे नीं भूला।
म्हानै जूतिया सू पीटता बचाया म्हाको माय।
थाका गुण म्हे नीं भूला।
म्हाका टाबरा नै वीर बणाया म्हाको माय
थाका गुण म्हे नीं भूला।
म्हाकी डूबती नाव नै बचाई म्हाको माय
थाका गुण म्हे नीं भूला।
म्हानै साचो ज्ञान करायो म्हाकी माय
थाका गुण म्हे नीं भूला।
म्हानै सत्याग्रह को पाठ पढायो म्हाकी माय
थाका गुण म्हे नीं भूला।
राजा वाळा नै नीचो दिखायो म्हाकी माय
थाका गुण म्हे नीं भूला।[1]

अठै आ वात जाण लेवणी उचित रहसी कै विजोलिया क्षेत्र मे इतरो सगठित आंदोलन वरसां लग चाल्यो उणरो कारण काई हो? इण क्षेत्र मे इसी काई परिस्थितिया ही कै जिणरै कारण इण आदोलन न इतरो बळ मिळयो?

बिजोलियो मेवाड रो अेक सामती ठिकाणो हो। ओ क्षत्र मेवाड

1 हाडोती का स्वतत्रता आंदोलन, पृ स 59

रौ पूरबी भाग है अर 'ऊपरमाळ' रै नाम सू चावौ है। मेवाड रियासत रा सीमात प्रदेस होवण सू उण वखत इणरौ विशेष महत्त्व हो।

आंदोलन रौ श्रीगणेश किसानां माथै लाग्योडा अणू ता अर बेजा लाग-बागा री वजह सू हुयौ। इण लाग-बाग सू किसाना रौ घणौ शोषण होवतौ। खेती रा लगान रै अलावा उणां माथै दूजा कई तरै रा कर लगायोडा हा। दाखला सरूप किसान रै घर मे ब्याव मड्या उणनै 'चवरीलाग' देवणौ पडतौ। सैं सू पै'ली किसाना इण लाग रौ विरोध कियौ।

सरुपात मे इण आदोलन रौ नेतृत्व सीताराम नाम र अेक साधु र हाथ मे हो। उणरै साग घनश्याम शर्मा अर भवरलाल प्रज्ञाचक्षु इत्याद कई कमठ कायकर्ता हा पण सामती दमन चक्र तेजी सू घूमण लाग्यौ तो आदोलन नै चालू राखणौ अबखौ काम होयग्यौ। 'मोही निवासी भाटी डू गरसिह साधु सीताराम न आ सलाह दीवी के जे वे श्री विजयसिह पथिक नै ओछडी (चित्तौडगढ) सू बिजोलिया आवण वास्तै राजी कर लेवौ तो आदोलन सातरौ चाल सकै अर सगठण ई मजबूत बण जावै। इण भात पथिक ओछडी सू बिजोलिया आया।'[1]

पथिक रै बिजोलिया पूगता ई आदोलन मे तेजी आयगी। जनता वान घणौ मान दियौ। वार त्यागी जीवण अर अनोखी सगठण शक्ति नै देख'र किसाना माथै जाणै जादू रौ असर हुयौ।

'पथिक मे गाव वाळा सागै हिळमिळ नै रैवण री अनोखी खिमता ही। वे गावठी जनता सागै आवता ई घुळमिळ अर अेकाकार होयग्या। उणा देख लियौ के जठाताई किसान सगठित होय न अन्याव अर जुल्मा रै खिलाफ आदोलन नी करला वान इण दुख सू मुक्ति हरगिज नी मिळला। इण कारण उणा सै सू प'ली 'ऊपरमाळ किसान पचायत' नाम री सस्था सगठित करी। होळै होळै *किसाना रौ औ सगठण मजबूत होयग्यौ अर पथिक रा आदेश उण* क्षेत्र मे कानून रै ज्यू मानीजण लाग्या।'

---

1 राजस्थान में स्वतन्त्रता सग्राम के सेनानी, प स 28

पथिक इण किसान सगठण री थरपणा 9 अगस्त 1917 नै करी ही । उण मौकै उणा अेक दूहै री रचना करी ही जिको आगै चाल'र इण सगठण रो 'मोटो' बणग्यो । ओ दूहो किसान पचायत रै लेटर पेड माथ छपीज्यो हो । दूहो इण भात हो—

'जों नै म्हाकी पचायत की, इज्जत को कीं ध्यान नहीं ।
ऊ राजस्थानी म्हाको ना, अर यो ऊ को राजस्थान नहीं ।।'[1]

सरुपात मे ओ आदोलन वैधानिक रूप सू सरु हुयो । किसाना महाराणा री सेवा मे कई आवेदन पत्र भेज नै सामती अत्याचारा सू बचावण री अरज करी । पण महाराणै जद वारी कोई सुणवाई नी करी तो पछै आगै चाल'र सत्याग्रह सरु करीज्यो । किसाना जमीन री लगान देवणो बद कर दियो अर वेठ बेगार काढणी ई बद करदी । सरकारी कचेड़िया रो बहिष्कार कर दियो अर गाव री पचायता मे झगडा टटा निपटावणा सरु किया । इणरै सागै ब्याज खाऊ बाणिया रो विरोध करणो ई चालू राख्यो ।

महात्मा भगवानदीन इण बाबत अेक ठौड लिख्यो है कै— 'भारत मे सै सू प'ली श्री विजयसिंह पथिक बिजोलिया मे सत्याग्रह रो सूत्रपात कियो । सत्याग्रह रा प्रवतक मानीजण वाळा महात्मा गाधी तो इणरै पछै चपारण मे सत्याग्रह रो प्रयोग कियो । अेकर किणै ई गाधीजी न सत्याग्रह शब्द री व्याख्या करण रो कह्यो तो गाधीजी पडूत्तर दियो कै इण शब्द री सही व्याख्या तो पथिक इज कर सकै ।'[2]

किसान आदोलन सरु हुया अग्रजी सत्ता रै इशारै माथै रियासती शासन दमनचक्र घणै जोर सू चलायो । सैकडू किसाना न जेळ मे नाख दिया अर वारै साग अमानुषिक अत्याचार किया । अठा ताई के लुगाई टाबरा नै ई नी छोडया । पण ज्यू दमनचक्र वढतो गयो, आदोलन ई तेज होवतो गयो ।

पथिक अर वारा साथीडा जोशीली कवितावा सू किसाना न प्रेरणा दीवी अर हिम्मत वधाई । इण काव्य री प्रमुख विशेषता आ

---

1 राजस्थानी शोध सस्थान, चोपासनी जोधपुर रै सग्रह सू ।
2 हाडौती का स्वतत्रता आदोलन, पृ स 54

है के जिण सामंती जुल्मा नैं सहन कियो, उण इज इण काव्य री रचना करी । इण कारण वारी कथणी मे सच्चाई अर स्वानुभूति रो बळ है ।

अठै आ बात ई जाण लेवणो उचित होसी के पथिक अर वारा साथिया भूमिगत रैय'र आंदोलन रो सचालन कियो । उण विकट परिस्थितिया मे वानै वन-वन अर भाखर-भाखर भटक न ओ काम करणो पडतो । छता पण वारै मन मे कितरो जोश हो इण बात रो पतो वारै रचित काव्य सू लागै ।

श्री घनश्याम शर्मा नाम रै अेक प्रमुख कार्यकर्ता, जिको इण आदोलन रा अेक मूळ थभ हा, उणा आपरी अेक कविता 'किसान उद्बोधन' मे सामतवाद न भू डता किसाना रो जोरदार आह्वान कियो है । वे लिखै—'इतरा दिन थ जिनावरा री जूण जीवै हा, पण अबै मिनखा रै ज्यू जीवण रो वखत आयग्यो है । अग्रेजी ताक्त री घोडिया माथै ऊभी पागळी रियासती शासन अबै थडबडाय न हेटी पडण वाळो ई है । इण कारण थोडी ओरू गाढ राखजो ।' कविता मे भावा री अभिव्यजना घणी सातरी हुई है—

किसान उद्बोधन

उठिया रहीजो पग पग पर थ, म्हारा वीर किसान
अतरा दिन तक जीवण थारो, बीत्यो पशु समान
अब यो अवसर आयो है, बणवा को इंसान
अतरा दन था प छायो हो काळा बादळ रो तूफान
अब स्वराज री हूंन भर, सो तितर बितर जाण
अब यो लजन हुयो खोखलो, खरवा लाग्यो पान
थाप देय मू डी राखो कर, राख अपणो शान
अब अत्याचारी शासन को, छेहडो नडो जाण
घनश्याम याको हकूमत, अब दो दिन को मेहमान
पछ आपणा हो घोडा है, अर अपणा मदान ॥[1]

इण आदोलन न दुनिया री निजरा मे लावण रै वास्त पथिक प्रेस रो ई खूब सहयोग लियो । उणा गणेशशकर विद्यार्थी न बिजोलिया

---

1 राजस्थानी शोध सस्थान चोपासनी, जोधपुर र सग्रह सू ।

रा किसाना री तरफ सू राखी भेजन वारै साप्ताहिक पत्र 'प्रताप' नै इण आदोलन रौ मुखपत्र बणाय लियौ। इणी'ज भात लोकमान्य तिलक सू सपर्क करनै वारै पत्र 'मराठा' अर 'केसरी' मे ई बिजौलिया आदोलन री खबरा छपाई। इण पत्रा सामतो जुल्मा री खूब जम नै पोल खोली। इणसू आखै देश रौ ध्यान इण आदोलन कानी आकर्षित होयग्यौ। इण कारण छेवट महात्मा गाधी न आ बात कैवणी पडी के जे रियासती शासन बिजौलिया किसाना री वाजिब मागा नी मानी तो म्हनै आदोलन मे उतरणौ पडसी। इतरौ इज नी, पथिक तो ठेट ब्रिटिश पार्लमेंट रा की लेबर दळ रा सदस्या न ई इण आदोलन री पूरी जाणकारी देय दी ही। इण कारण ब्रिटिश पार्लामेंट मे ई बिजौलिया आदोलन री चर्चा होवती रैवती। इणसू रियासती शासन हैरान हुयोडौ हो।

आदोलन रै बारलै प्रचारात्मक पक्ष रै सागै पथिक नै उणरै मायलै पक्ष री मजबूती री ई पूरी ध्यान हो। इण बात री पुष्टि वारी काव्य रचना सू होवै। वारै रच्योडै 'झडागीत' मे सगठण अर हिम्मत री बात भली भात उजागर हुई है। आदोलन री वखत औ गीत किसाना मे घणौ लोकप्रिय रह्यौ—

झडागीत

लहरावेगो लहरावेगो झडो यो करसाण को
घर महला पर मीनारा पर कोट किला भडारा पर
गाव गळी मे बाजारा पर पुर द्वारा दीवारा पर
यो हळ मडित ध्वज निसाण है करसा का अरमान को
लहरावेगो लहरावेगो।

घणा सो चुक्या जाग उठ्या हां आळस निद्रा त्याग चुक्या हा
घणी सह चुक्या अब न सहांगा लेकर गाव स्वराज रहागा
अब न कणी की साख भरांगा म्हाको म्हे परबध करागा
अब न चलगो म्हाप जादू या शहरी शताना को
लहरावेगो लहरावेगो।[1]

आदोलन सरु करती वखत पथिक विघन विनायक गणपति री

---

1 राजस्थानी शोध सस्थ न चापासनी, जोधपुर रै सग्रह सू।

वदना करता अेक गीत लिख्यो हो। इण गीत मे गणपति रो आह्वान करता किसान आदोलन रै सफळता री कामना करीजी ही। इणर पछ जिस स्वराज री वारी कामना ही, उणरो ई को वणन हो। इण गीत सू कवि रै मन री आस्तिकता प्रकट होवै—

गणपति वदना

पधारो फिर म्हाक गणराज
फिर गणराज सिखावो म्हानै पचराज को रस्तो
म्हाका राज काज म्हे करला शासन होवै सस्तो
पाच पच मे हारचा जोल्या कुण नै आव लाज ?
पधारो फिर म्हाकै गणराज !

जगळ न्वानां आप सभाळा करां लडा उद्योग
गाव गाव नै चमन वणावा वांको लेकर भोग
बाधा विघन हर सव म्हाका पड शत्रु प गाज
पधारो फिर म्हाका गणराज ![1]

पथिक रै ज्यू बारा साथी कायकर्तावा ई इणीज भात रै कई उद्बोधनात्मक गीता री रचना करी। इण काव्य मे तत्कालीन परिस्थितिया रो वास्तविक चित्रण हुयो है। इण वगत ताई सामत-वाद अर पू जीवाद ई आपरा तथाकथित सगठण वणावणा सरु कर दिया हा। अे सगठण किसान सगठण र देखादेखी अर प्रतिक्रिया सरूप ई ऊभा होवण लाग्या हा। भवरलाल प्रज्ञाचक्षु आपरी कविता मे किसाना न विदेशी सत्ता री पीठ बळ माथ ऊभा सामत-वादी अर पू जीवादी सगठणा सू सावचेत रवण री बात कही है—

चेतावणी

–मरदा अस्यो खेलणो खोट !

उत्तरदायी शासन लेणो है डके री चोट
अेक तरफ तो क्षत्रिय परिषद ऊभी मू छ मरोड
दूजी कानी लडधा बाणिया प्रजामडळ जोड
दाव खेलणो है दोनू सू कस कस नै लगोट
मरदां अस्यो खेलणो खोट !

---

1 राजस्थानी शोध सस्थान, चोपासनी, जोधपुर र सग्रह सू।

करसा नै तो दोनू चूसै दोनू कर हलाल
लूट लूट के म्हान ये सब हो रह्या लाल गुलाल
भूल चूक थ इण लोगा नै दीजो मत ना वोट
मरदा अस्यो खेलणो दोट !

अेक दिखाव आख कजरी ले जाव सब लूट
दूजो मीठो बण बण खोसै जोड ब्याज अटूट
अेक विच्छू डो है या मे तो दूजो साप सपोट
मरदा अस्यो खेलणो दोट !

कह दो साफ किसाना का तो करसा मेम्बर होगा
करसा मन्त्री काम करेगा करसा का घर जोगा
शहरात्या सू सावधान अे गळो देयगा घोट
मरदा अस्यो खेलणो होट !

मोटी मोटी तू दा याकी है अबक पिचकाणी
अेको आपा करलो मरदा (तो) मर जावै या की नानी
ठोकर असी लगावो दो यू होय गडिदा गोट
मरदा अस्यो खेलणो दोट ![1]

इणी'ज कवि री अेक औरू रचना 'गाधीजी री डको' शीपक सू मिळै । आ कविता उणा बिजोलिया महिला मडळ रै वास्तै लिखी ही । कवि इणमे बापू र प्रभाव रौ वणन करता पथिक री महानता दरसाई है ।

गाधीजी री डको

गाधीजी री डको सारा भारत मे वाजै छ रे !
रजवाडा मे विजयसिह इदर ज्यू गाज छै रे !
घणा दिना पाछो यो सुख धरती ऊपर छायो छै रे !
दुनिया को यो रग देखनै जुल्मी लजायो छै रे ![2]

श्री माणिकलाल वर्मा ई पै'ली मेवाड मे अेक ठिकाण री नौकरी मे हा । सामती जुल्मा न देख देख'र बाद मे उणा ई वा नौकरी

---

1 राजस्थानी शोध सस्थान, चोपासनी, जोधपुर रै सग्रह सू ।
2 उपयु क्त'।

छोड दी अर किसान आदोलन मे शरीक होयग्या । सभवत पथिक रचित काव्य सू प्रेरणा लेयन उणा ई 'पीडिता रो पछीडो' अेक कविता लिखी । 'पछीडो' राजस्थान रो अेक चावो लोकगीत है। उण तज माथै वर्माजी अेक गीत लिख्यो जिणमे तत्कालीन परि-स्थितिया रो वणन है—

पीडिता को पछीडो
मरदां ओ रे !

काळी तो भादूडा की रातां रोव छा
तनका कपडा खोवै छा
झूंपडचा पडचा थ रोवै छा
आसू सू डील धोवै छा
मरदा ओ रे !

वेगारा जूता लागै छा
थ देख सिपाही भाग छा
वेगारी मे आग छा
पडचा नींद नीं जाग छा
मरदां ओ रे !

× ×

सुण अेक देवता आयो छो
मुगती को मारग लायो छो
जीं को पंतो नीं पायो छो
बूटी सत्याग्रह लायो छो
मरदां ओ रे !

देखो सूरजडो ऊग्यो छ
प्रभात मजा को होग्यो छ
दूजो काकोजी पूग्यो छ
ओ बीज धरम को बोग्यो छ
मरदां ओ रे ![1]

बिजौलिया किसान आदोलन जिसै सुमगठित आयोजन रै सामी

1 राजस्थानी शोध सस्थान, चोपासनी, जोधपुर र सग्रह सू ।

छेवट रियासती शासन नें निमणो पड्यो। कारण के—'बिजोलिया किसान आंदोलन रो प्रभाव मेवाड रियासत रा दूजा ठिकाणा माथै ई पड़ण लाग्यो हो। राजस्थान सेवा संघ र नेतृत्व मे ठोड ठोड किसान जागृत होवण लाग्या तो विदेशी सरकार थोडी चमकी। ब्रिटिश सरकार मेवाड रियासत रै माफत बिजोलिया ठिकाणै माथै दबाव नाखवा लागी के वो किसान पंचायत सागै समभौतो करले। अंग्रेज थे जी जी खुद इण मामलै नें त करण वास्तै बिजोलिया पूग्यो। पथिक र मेवाड प्रवेश माथै प्रतिबंध लाग्योडो हो। जद अे जी जी किसाना नें बातचीत करण वास्तै बुलाया तो किसान पंचायत पडूत्तर दियो के राजस्थान सेवा संघ रा प्रतिनिधि न बुलायो जावै। पथिक इण काम वास्तै रामनारायण चौधरी न भेज्या अर संधि हुयगी। बिजोलिया रै किसाना री आ शानदार जीत ही। इण सू राजस्थान मे राजस्थान सेवा संघ रो प्रभाव बढग्यो अर सगळा देशी रजवाडा सावचेत होयग्या।'[1]

बिजोलिया किसान आंदोलन रो कनला दूजा क्षेत्रा माथै ई असर पड्यो। कोटा, बूंदी, सिरोही अर सगळै आबू क्षेत्र री जनता मे चेतना आयगी। पथिक रै नेतृत्व मे ई पंडत नयनूराम शर्मा कोटा मे वेगार प्रथा रै खिलाफ आंदोलन चलायो। उण राजस्थान सेवा संघ र दूजै कामवर्तावा री मदद सू हाडोती रै सामंती क्षेत्र री दुखी प्रजा नें फूकारो दिरायो अर उण म स्वावलंबन री भावना भरी।

इणी'ज भांत बूंदी क्षेत्र मे ई किसान आंदोलन सरू हुयो। बूंदी क्षेत्र मे आंदोलन री भूमिका बरसा पै'ला ई बणगी ही। रियासत मे सरकारी नोकरा री-रिश्वतखोरी, बेईमानी अर वेठ वेगार सू प्रजा घणी दुखी ही। इण कारण पथिक जन जागति लावण सारू बूंदी मे 1920 मे प्रजामंडल री थरपणा करी। श्री गोपाळलाल कोटिया न अध्यक्ष बणाया।'

बूंदी रो ओ किसान आंदोलन बरड तेहसील सू सरू हुयो। इणरै थोडा दिना पै'लीज सिरोही रै भील क्षेत्र मे आंदोलन हुयो हो। इणमे कई भील मरया हा। इण भांत सिरोही रो घाव हाल

1 राजस्थानी शोध संस्थान, चोपासनी, जोधपुर रै संग्रह सू।

भरीज्यो ई नी हो के बरड मे बू दी री रियासती सेना किसाना माथै आक्रमण कर दियौ । इणमें नानक भील मारीज्यो अर सकडू घायल हुया । भीड मे घोडा दौडाईज्या अर भाला सू वार करीज्या, इणसू कइया रा माथा फाटग्या अर कइया रा हाथ पग भागग्या ।

बू दी र इण अमानुषिक अत्याचारा रो पथिक इतरो सातरो प्रचार कियौ के रियासती सरकार हाक वाक रैयगी । अं जी जी बीच मे पडनै पथिक सागै समझौतो कियो अर किसाना री भलाई खातर कई सुधार रा काम करण री बात तै करी ।

बरड रा आदोलन सू सबधित ई कई फुटकर कवितावा मिळै । या मे सू घणकरी कवितावा री सुर ई उद्बोधनात्मक है । अे कवितावा ई आदोलन मे भाग लेवणिया कामकर्तावा रै लिख्योडी है ।

इण वखत रै सागै अवै काव्य रो सरूप ई बदळण लाग्यो हो । कारण के राजनीति रो प्रभाव अवै राजम्हैला सू निकळ न आम जनता ताई फैलण लाग्यो हो । इण कारण कविता अव राजदरबारा री शोभा नी होय'र जनसाधारण री चीज बणवा लागगी ही । नियमबद्ध डिंगल गीता री ठौड अवै कवि बोलचाल री भाषा मे मुक्त रूप सू आपरा विचार प्रकट करण लाग्या हा । भला ई आदोलना मे भाग लेवणिया उत्तम कोटि रा कवि नी हा, इण कारण वारी कविता ई साधारण है, पण इण काव्य मे स्वानुभूति रो बळ है, जिको काव्य नै ओज प्रदान कर ।

बिजोलिया किसान आदोलन रो असर दूजा क्षेत्रा माथै किण भात पडयो इणरो वणन प्रज्ञाचक्षु अेक कविता मे घण आछ तरीकै सू कियो है । कवि बिजोलिया सत्याग्रह री तुलना रेलगाडी सू करी है । आ रेल बिजोलिया सू रवान होयन कठै कठै पूगी, कठ कठ ठैरी अर काई सदेश देवती गई, कवि इणरी कविता मे आछो रूपक बाध्यौ है—

सत्याग्रह री रेल

सत्याग्रह की रेल ऊपरमाळ सू चली
तीन बरस डूगर पै घूमी हेरी गळी गळी
रावडदा टक्कर खाकर बेगू सू मिळी

आग वढ़ने जावो घाही पूगी मावलो
जाटा ने तो पटडो तोडो यावा मे हलो
वसी हेर पालको हेरघो वरड की नळो
पाछो ई को अजण लोटघो सादडो चलो
देलवाडे सिगल लाग्यो आग जा निकळी
जातां जातां नारे मगरे रखत ई भलो
अ'यावां की हुई पारटी मेळी वा सगळो
लूट पाट कर वांको वांकी दाळ ना गळो
भीलवाडा सू हुई त्यारी टेसण की भळो
धक धू धक धू करतो वा उदियापुर चलो
गारड म्हाका विजयसिहजी जोधा महाबळी
अजमेर सू सीटो देदी फूली अर फळी ॥[1]

बिजोलिया रा किसान आदोलन मे सफळता मिळया पछे ई वे सघप सू विरत नी हुया। वान जमीन वदोवस्त र मसल माथै 'मेवाड परिपद' रै तत्वावधान मे सन् 1923 मे फेरू आदोलन सरू करणो पडयो। ओ आदोलन ठेट 1939 ताई चालतो रह्यो। इतरी लबी लडाई र पछ छेवट जमीन रा असली हकदारा नै आपरी जमीन रो हक मिळयो।

बिजोलिया अर बरड रै किसान आदोलन री सफळता री सगळी *श्रेय श्री विजयसिह पथिक न है। पथिक जिसो त्यागी अर* कमठ नेता मिळण सू ई ओ आदोलन इतरो अनुशासित अर सगठित रूप सू चाल सक्यो। पथिक रै सहयोगी रामनारायण चौधरी अेक ठौड लिख्यो है—'पथिक जी रै नाम रो इतरो जोरदार असर हो के म्हान मिटिंग इत्याद करण वास्तै कोई प्रचार करण री जरूरत नी पडती। फगत सूचना मात्र मिळया मिनख इण भात भेळा होय जावता ज्यू गुड माथ कीडिया भेळी होय जावे।'[2]

इणरो प्रमुख कारण पथिक री त्यागपूण जीवण हो। उणा राजस्थान सेवा सघ नाम री जिण सस्था री थरपणा करी ही, उणरो सदस्य वोई धणी बण सकै हो जिको आपरो सै की देश र

1 राजस्थानी शोध सस्थान, चोपासनी, जोधपुर सग्रह सू।
2 हाडोती का स्वतत्रता आदोलन, पृ स 51।

वास्त अर्पण कर देवतो अर अेक निश्चित अर अल्प राशि मे आपरो गुजारो चलावण रो अखंड व्रत लेवतो। 'इसो नियम हो के राजस्थान सेवा सघ रो हरेक सदस्य आपरै जीवण यापन ताईं महीन रा पनरै रुपिया सू वेसी खरच नी करै। पथिकजी कदेई आठ रुपिया मासिक सू वत्ता खरच नी किया। वे प्याज अर चटणी सागै रोटी खायनै आपरो गुजारो करता।'[1]

इसै त्यागी आदमी नै जे जनता देवता मान'र पूजती तो इणमे कोई अचूंभै री बात नी हीं। वानै अेक अवतारी पुरुष मान'र वारा गुणगान करती तो कोई मोटो बात नी ही। कवि प्रज्ञाचक्षु अेक कविता मे पथिक री महिमा इण भात वखाणी है—

भावना

पथिक री महिमा भारी जी

गुण गाव मेवाड देस सारा नर नारो जी
अणी देस मे दुक्ख घणो हो, म्हांको कोई नहीं सुणं हो
सू क दियां सू काम यण हो, लूट लूट खाव छा सारा
ओहदा धारी जी
पथिक की महिमा भारी जी
गुण गावै "

कमा कमा यू ही रह जाता, भूखां मरता चणा चबाता
घास वेच कर लाग चुकाता, ई पर भी पडता म्हाक
जूता भारी जी
पथिक की महिमा "यारी जी
गुण गाव

राणी दुख दियो अति भारी, स्वतत्रता की बाड उजाडी
ईश्वर बेग सुणी है म्हांरी, कृपा करी भगवान
पथिक भेज्यो अवतारो जी
पथिक की महिमा "यारी जी
गुण गाव [2]

---

1 हाडौती का स्वतत्रता आंदोलन पृ स 51-52

2 राजस्थानी शोध सस्थान, चोपासनी, जोधपुर रै सग्रह सू।

पथिक जिसै महान् देश भगत, जिणा जीवण रै प्रारम्भ मे क्रातिकारी दळ मे काम कियो अर घणा फोडा भुगत्या, पछै जीवण-लग देशहित मे काम करता रह्या । इसै कट्टर राष्ट्रवादी री छेहलो जीवण किण हालात मे बीतो अर राष्ट्र वारी किसीक कदर करी, इण वाता री खोज करा तो मन मे घणो दुख होवै ।

'आपणै देश मे व्यक्तिपूजा रो रिवाज घणो सातरो है । इण कारण भारत नै आपरै कई सपूता री प्रतिभा रो पूरो लाभ नी मिळचो । पथिक नै ई इणरो कुफळ भोगणो पड्यो । महात्मा गाधी रै प्रखर प्रताप नै ढाल बणाय'र वारा चेला चाटिया स्वतत्रता सग्राम रा महान् सेनानी सुभाषचद्र बोस जिसा राष्ट्र नेता नै ई अेक किनारै फेंक दिया तो पथिक तो वारै वास्तै अेक मामूली व्यक्ति हा ।'[1]

आ बात क्यू अर किण भात हुई, इणरो म्यानो जाणवा सारू बापू अर पथिक रै सद्धातिक मतभेदा नै जाणणा होसी । या दोनू महान् पुरुषा रै मन मे अेक दूजे रै प्रति आदर री भावना तो ही पण वे सैद्धातिक धरातळ माथै अेकमत नी हा ।

'सन् 1922 मे अहमदाबाद काग्रेस अधिवेशन रै मौकै राजस्थान रा 29 किसान प्रतिनिधि महात्मा गाधी सू मार्गदरसण लेवण वास्तै वारी हाजरी में पूगा । इणमे पथिक ई भेळा हा । बापू उणा न सलाह दीवी के देशी रजवाडा री जनता नै रचनात्मक काम करणा चाइजै । पण जे प्रजा मे सहनशक्ति नी होव तो उणन 'उद्याळो' कर देवणो चाइजै । पथिक न बापू सू उद्याळो करण री सलाह सुण'र रीस आयगी । उणा कह्यो—"बापू ओ तो हीजडा रो काम है ।" पडूत्तर मे बापू हमनै बोल्या—"म्हैं आ बात उणा रै वास्तै ई कैवू । थे उणा मे शरीक नी हो । थे जिको काम मेवाड मे करनै बतायो वो तो मरदानगी रो है ।" अेकर बापू सी अेफ अेंड्रूज नै कह्यो हो—"पथिक काम करणियो आदमी है, बाकी तो सगळा वाता करणिया है । पथिक जोशीलो है, वीर है ।"[2]

इण विचार भेद रै कारण ई वे बापू रा विश्वासपात्र नी बण

---

1 हाडौती का स्वतत्रता आदोलन, पृ स 55

2 उपयुक्त पृ स 55-56

सक्या। इणी'ज कारण राजस्थान रै प्रमुख गाधीवादी सेठ जमनालाल बजाज अर वारै आपसरी मे पटी कोनी। वर्धा सू उणा दोनू जणा मिळ'र 'राजस्थान केसरी' नाम रै अेक साप्ताहिक पत्र रो प्रकाशन सरु कियो हो। इण पत्र री अग्रेजी राज अर देशी रियासता मे घणी चर्चा ही। पण दोनू रै आपसी मतभेदा सू उणनै छेवट वद करणो पडयो।

'इण मतभेदा र कारण पथिक न घणो नुकसाण भोगवणो पडयो। बापू रै चेला चाटिया पथिक न हरेक मौकै माथै नीचो दिखावण री कोशिश राखी। आ अेक लाबी दुखद गाथा है।'[1] पण जठा ताई गाधीजी री सवाल है, वे पथिक री घणी मान करता।

पथिक अेक समथ पत्रकार पण हा। उणा 'राजस्थान केसरी' रै अलावा 'नव राजस्थान', 'तरुण राजस्थान' अर 'राजस्थान सदेश' इत्याद अनेक् पत्रा रो सफळ सपादन ई कियो। इणर अलावा उणा नानी मोटी कुळ मिळायन पच्चीस पुस्तका ई लिखी। बिजौलिया, बरड अर बेगू जिस किसान आदोलना री घणकरी सफळता रो श्रेय वारी राजस्थानी भाषा मे रचित इण काव्य कृतिया नै है।

पण इणन विधि री अेक विडवना इज मानणी पडसी के पथिक जिसौ व्यक्ति, जिण महान क्रातिकारी रासबिहारी बोस रै नेतृत्व मे राजस्थान मे सशस्त्र क्राति करण सारू तीस हजार बदूका खरीद न भेळी करी, पतीस सौ सशस्त्र सैनिक ट्रेनिंग देय न त्यार किया, भूपसिह सू विजयसिह पथिक री छद्म नाम धारण करन साधु बण'र बरसा लग वन मे भटक्यो, मेवाड रियासत जिणरी गिरफ्तारी वास्त पनरै हजार रु री इनाम घोषित कियो, जिको बरसा लग फरार रह्यो अर पछ रियासती जेळा मे पडयो सडतो रह्यो, बो धणी आजादी मिळ्या पछ प्रतिक्रियावादी घोषित होयग्यो अर उण न दुखी अर मजबूर होय न राजस्थान छोडणो पडयो।

जीवण री सिझ्या वेळा मे इण महान देश भगत न राजस्थान सू बार जाय'र खेती करनै पट गुजारो करणो पडयो।

स्वामी कुमारानद पथिक रै विषय मे लिख्यो है—'जीवण लग प्याज अर चटणी साग लूखो रोटी खाय'र राष्ट्र री सेवा करण

---

1 हाडौती का स्वतत्रता आदोलन, पृ स 55-61

वाळै पथिक र जीवण रा छेहला दिन जिण अवखाई मे बीत्या वा शासन अर समाज दोनू र वास्तै घण शरम री बात है।'[1]

लेखक हरिमोहन प्रधान र शब्दा मे—'आज ई भुआजी (श्रीमती पथिक) मथुरा री अेक प्राथमिक शाला मे अध्यापिका बण'र आपरी गुजारो चलावै।'[2]

पथिक रा साथी अर अन्य सहयोगी शोभालाल गुप्त वारै छेहलै दिना बाबत लिखै—

'देश आजाद हुयो पण आजादी मिळ्या पछै देश मे जिण परिस्थितिया रो निर्माण हुयो, पथिक खुद न उणार अनुकूल नीं बणाय सक्या। वारै त्याग अर वारी सेवावा री जिकी कदर होवणी चाइजती वा नी हुई, इणी'ज कारण वारो मन सफा खाटो पडग्यो। 1954 मे अजमेर मे 72 बरस री उमर मे अेक साधारण सी बिमारी (लू लागण) सू वारो देहात होयग्यो। देहात सू पै'ली उणा अजमेर र कनै कायकर्तावा रै वास्तै अेक साधारण आश्रम अर साहित्य प्रकाशन केंद्र री थरपणा री योजना बणाई ही। वे बिना काम निष्क्रिय बैठण वाळा जीव नी हा। वे समाज न की न की देवणी चावता, पण मौत वारी आ इच्छा अधूरी राख दी।'[3]

---

1 हाडौती का स्वतन्त्रता आंदोलन, पृ स 58

2 उपयु क्त।

3 स्व विजयसिंह पथिक, ले शोभालाल गुप्त, पृ स 8

मक्या । इणी'ज कारण राजस्थान रै प्रमुख गांधीवादी सेठ जमनालाल बजाज अर वार आपसरी मे पटी कोनी । वर्धा सू उण दोनू जणा मिळ'र 'राजस्थान केसरी' नाम रै अेक साप्ताहिक पत्र रौ प्रकाशन सरु कियौ हो । इण पत्र री अंग्रेजी राज अर देशी रियासता मे घणी चर्चा ही । पण दोनू र आपसी मतभेदा सू उणनै छेवट बद करणौ पड्यौ ।

'इण मतभेदा र कारण पथिक न घणौ नुकसाण भोगवणौ पड्यौ । बापू रै चेला चांटिया पथिक न हरेक मौकै माथै नीचौ दिखावण री कोशिश राखी । आ अेक लाबी दुखद गाथा है ।'[1] पण जठा ताई गाधीजी रौ सवाल है, वे पथिक रौ घणौ मान करता ।

पथिक अेक समर्थ पत्रकार पण हा । उणा राजस्थान केसरी' रै अलावा 'नव राजस्थान', 'तरुण राजस्थान' अर 'राजस्थान सदेश' इत्याद अनेक पत्रा रौ सफळ सपादन ई कियौ । इणरै अलावा उणा ननी मोटी कुळ मिळायनै पच्चीस पुस्तका ई लिखी । बिजौलिया, बरड अर वेगू जिसै किसान आदोलना री घणकरी सफळता रौ श्रेय वारी राजस्थानी भाषा मे रचित इण काव्य कृतिया न है ।

पण इणन विधि री अेक विडवना इज मानणी पडसी के पथिक जिसौ व्यक्ति, जिणै महान क्रातिकारी रासबिहारी बोस र नेतृत्व मे राजस्थान मे सशस्त्र क्राति करण सारू तीस हजार बदूका खरीद न भेळी करी, पतीस सौ सशस्त्र सनिक ट्रेनिंग देय न त्यार किया, भूपसिंह सू विजयसिंह पथिक रौ छद्म नाम धारण करन साधु बण'र बरसा लग वन मे भटक्यौ, मेवाड रियासत जिणरी गिर-फ्तारी वास्त पनर हजार रु री इनाम घोषित कियौ, जिको बरसा लग फरार रह्यौ अर पछ रियासती जेळा मे पडयौ सडतो रह्यौ, वो घणी आजादी मिळ्या पछै प्रतिक्रियावादी घोषित होयग्यो अर उण न दुखी अर मजबूर होय न राजस्थान छोडणौ पड्यौ ।

जीवण री सिझ्या वेळा मे इण महान देश भगत न राजस्थान सू बारै जाय र खेती करनै पेट गुजारौ करणौ पड्यौ ।

स्वामी कुमारानद पथिक रै विषय मे लिख्यौ है—'जीवण लग प्याज अर चटणी सागै रूखी रोटी खाय'र राष्ट्र री सेवा करण

---

1 हाडौती का स्वतत्रता आदोलन, पृ स 55-61

वाळं पथिक र जीवण रा छेहला दिन जिण अवखाई मे बीत्या वा शासन अर समाज दोनू र वास्तै घण शरम री बात है ।'[1]

लेखक हरिमोहन प्रधान रै शब्दा मे—'आज ई भुआजी (श्रीमती पथिक) मथुरा री अेक प्राथमिक शाला मे अध्यापिका बण'र आपरो गुजारो चलावै ।'[2]

पथिक रा साथी अर अन्य सहयोगी शोभालाल गुप्त वारै छेहलै दिना बाबत लिखै—

'देश आजाद हुयो पण आजादी मिळ्या पछै देश मे जिण परिस्थितिया री निमाण हुयो, पथिक खुद न उणार अनुकूल नी बणाय सक्या । वारै त्याग अर वारी सेवावा री जिकी कदर होवणी चाइजती वा नी हुई, इणी'ज कारण वारो मन सफा खाटो पडग्यो । 1954 मे अजमेर मे 72 बरस री उमर मे अेक साधारण सी बिमारी (लू लागण) सू वारो देहात होयग्यो । देहात सू पै'ली उणा अजमेर रै कन कायकर्तावा रै वास्तै अेक साधारण आश्रम अर साहित्य प्रकाशन केंद्र री थरपणा री योजना बणाई ही । वे बिना काम निष्क्रिय बठण वाळा जीव नी हा । वे समाज न की न की देवणी चावता, पण मौत वारी आ इच्छा अधूरी राख दी ।'[3]

---

1 हाडोती का स्वतंत्रता आदोलन, पृ स 58

2 उपयु क्त ।

3 स्व विजयसिंह पथिक, ले शोभालाल गुप्त, पृ स 8

सवपा । इणी'ज कारण राजस्थान रै प्रमुख गाधीवादी सेठ जमनालाल बजाज ग्रर वारै ग्रापसरी मे पटी कोनी । वर्धा सू उण दोनू जणा मिळ'र 'राजस्थान केसरी' नाम रै अेक साप्ताहिक पत्र रो प्रकाशन सरु कियो हो । इण पत्र री अग्रेजी राज ग्रर देशी रियासता मे घणी चर्चा ही । पण दोनू र ग्रापसी मतभेदा सू उणनै छेवट वद करणो पडयो ।

'इण मतभेदा र कारण पथिक न घणो नुकमाण भोगवणो पडयो । बापू रै चेला चाटिया पथिक न हरेक मोकै माथै नीचौ दिखावण री कोशिश राखी । ग्रा अेक लाबी दुखद गाथा है ।'[1] पण जठा ताई गाधीजी रो सवाल है, वे पथिक रो घणो मान करता ।

पथिक अेक समथ पत्रकार पण हा । उणा राजस्थान केसरी' रै ग्रलावा 'नव राजस्थान', 'तरुण राजस्थान' ग्रर 'राजस्थान सदेश' इत्याद ग्रनेनू पत्रा रो सफळ सपादन ई कियो । इणरै ग्रलावा उणा नैनी मोटी कुळ मिळायनै पच्चीस पुस्तका ई लिखी । बिजौलिया, बरड ग्रर बेगू जिसै किसान ग्रादोलना री घणकरी सफळता रो श्रेय वारी राजस्थानी भाषा मे रचित इण काव्य कृतिया न है ।

पण इणन विधि री अेक विडवना इज मानणी पडसी के पथिक जिसो व्यक्ति, जिणै महान क्रातिकारी रासबिहारी बोस रै नेतृत्व मे राजस्थान मे सशस्त्र क्राति करण सारू तीस हजार बदूका खरीद न भेळी करी, पतीस सौ सशस्त्र सैनिक ट्रेनिंग देय न त्यार किया, भूपसिंह सू विजयसिंह पथिक रो छद्म नाम धारण करन साधु बण'र बरसा लग वन मे भटक्यो, मेवाड रियासत जिणरी गिरफ्तारी वास्तै पनरै हजार रु री इनाम घोषित कियो, जिको बरसा लग फरार रह्यो ग्रर पछै रियासती जेळा मे पडयो सडतो रह्यो, बो घणी ग्राजादी मिळया पछ प्रतिक्रियावादी घोषित होयग्यो ग्रर उण न दुखी ग्रर मजबूर होय न राजस्थान छोडणो पडयो ।

जीवण री सिझ्या वेळा मे इण महान देश भगत न राजस्थान मू वार जाय र खेती करन पेट गुजारो करणो पडयो ।

स्वामी कुमारानद पथिक रै विषय मे लिख्यो है—'जीवण लग प्याज ग्रर चटणी सागै लूखी रोटी खाय'र राष्ट्र री सेवा करण

---

1 *हाडौती का स्वतत्रता ग्रादोलन पृ स 55-61*

ाळै पथिक रै जीवण रा छेहला दिन जिण अवखाई मे बीत्या वा
तासन अर समाज दोनू रै वास्तै घणै शरम री बात है।'[1]

लेखक हरिमोहन प्रधान रै शब्दा मे—'आज ई भुआजी (श्रीमती
पथिक) मथुरा री अेक प्राथमिक शाला मे अध्यापिका बण'र आपरो
गुजारो चलावै।'[2]

पथिक रा साथी अर अन्य सहयोगी शोभालाल गुप्त वारै छेहलै
दिना बाबत लिखै—

'देश आजाद हुयो पण आजादी मिळया पछै देश मे जिण परि-
स्थितिया रो निमाण हुयो, पथिक खुद नै उणारै अनुकूल नी बणाय
सक्या। वार त्याग अर वारी सेवावा री जिकी कदर होवणी चाइ-
जती वा नी हुई, इणी'ज कारण वारो मन सफा खाटो पडग्यो।
1954 मे अजमेर मे 72 बरस री उमर मे अेक साधारण सी बिमारी
(लू लागण) सू वारो देहात होयग्यो। देहात सू पै'ली उणा अज-
मेर रै मनै कायकर्तावा रै वास्तै अेक साधारण आश्रम अर साहित्य
प्रकाशन केंद्र री थरपणा री योजना बणाई ही। वे बिना काम
निष्क्रिय बैठण वाळा जीव नी हा। वे समाज नै की न की देवणी
चावता, पण मौत वारी आ इच्छा अधूरी राख दी।'[3]

---

1 हाडोती का स्वतन्त्रता आंदोलन, पृ स 58

2 उपयुक्त।

3 स्व विजयसिंह पथिक, ले शोभालाल गुप्त पृ स 8

चौथा अध्याय

गांधी युगीन काव्यधारा

गाधी - गाथा

दक्खिण अफ्रिका सू पाछा आय'र महात्मा गाधी री कांग्रेस री बागडोर सामणो भारत रैं राष्ट्रीय आदोलन री अेक महताऊ घटना ही। इणरै पछै जे आपां आ कैय दा के भारत रो राष्ट्रीय आदोलन गाधीमय होयग्यो तो कोई खोटी बात नी होसी। सत्य अर अहिंसा रै पाय माथै, आधारित जिण आदोलन विदेशी सत्ता री हिम्मत सागै मुकाबलो कियो, आ सगळी गाधी री करामात ही। जिको काम हिंसा अर ताकत रैं पाण होवणो असभव हो वो गाधी अहिंसा अर सत्य र बळ माथै होळै-होळ पूरो करनै बताय दियो।

आखै राष्ट्र माथै गाधी री-विचारधारा रो जबरो प्रभाव पडयो। देश मे गाधी री आधी इतर प्रचड वेग सू चाली के सगळै राष्ट्रीय जीवण माथ वीरो असर पडयो। कविया अर लेखका अर बुद्धिजीविया माथै तो इण विचारधारा रो असर पडणो सुभाविक ई हो। औ ई कारण है के सगळी भारतीय भाषावा मे गाधी सबधी साहित्य री मोकळो सिरजण हुयो। राजस्थानी कविया ई गाधी गुणगान मे आपरो जबरो योगदान दियो। इसा कविया मे प्रमुख सव श्री नाथूदान महियारिया, उदयराज उज्वळ, सावळदान आसिया, कन्हैयालाल सेठिया, गिरधारीसिंह पडिहार अर डा मनोहर शर्मा इत्याद है। इणरै अलावा ई दूजे अनेक कविया इण विषय माथ मोकळी फुटकर काव्य रचना करी है जिको तत्कालीन पत्र पत्रिकावा मे प्रकाशित होवती रही है।

चारण कविया परपरागत शली अर छद मे गाधी गाथा रो सिरजण कियो अर दूजा कविया नु वी शली मे काव्य रचना करी। पण सगळै काव्य रो मूळ सुर गाधी विचारधारा सू प्रभावित है। उणमे गाधी विचारधारा रा वखाण अर गाधी रै कार्यकलापा रा गुणगान है। राजस्थानी भाषा मे गाधी रै सबध मे भलाई

कोई महा काव्य री रचना नी हुई पण जितरो अर जिको वी लिखीज्यो वो इतरो सटीक अर महताऊ है के वो इण कमी न पूरी करण री खिमता राखै। कविया सगळ गाधी प्रसग न थोड मे समेट'र गागर मे सागर भरण री कोशिश करी है। श्री उदयराज उज्वळ गाधी मायै मोकळी काव्य रचना करी, वा वार प्रसग मे इणीज अध्याय मे आगै वानगी रूप मे दिरीजी है। नीचै श्री नाथूदान महियारिया रचित 'गाधी शतक' रा की दूहा नमूने रै रूप मे दिरीज रह्या है। कवि नु वी विषयवस्तु री प्राचीन शैली मे जिण खूबी सू प्रतिपादन कियो है वो सरावण जोग है—

गांधी शतक

नरा निरभागी हुवा, दरसण बिन तरसत।
मम रसना वडभागणी, गाधी शतक रचत।।

फौजा रोकी फिरग री, तोकी नह तरवार।
गाधी थे लीधो गजब, भारत रो भुज भार।।

आतम बळ सो बळ नहीं, आतम बळ अद्भुत।
जे जरमन सू जीतिया, हारया गाधी हूत।।

जादू भरियो रेंटियो, धन गाधी धन धन्न।
तूटो काचा तार सू, लदन री गरदन्न।।

हिव चिडकली हेम री, पकडी गोर बाज।
चरखे मे फस जावतो दौड न जातो भाज।।

जिण घडियो गाडीव धनुष नित पूछ चित चाव।
गाधी चरखो राज रो,-घडियो कवण बताव।।

द्रोण चक्रव्यूह रचता, तो अे कढ जाता सैहज।
चरख रा चक्रव्यूह सू, कढ न सक्यो अग्रेज।।

खग नह लेतो हाथ मे, सल न लेतो पास।
गाधी अनशन लेवतो, लेतो फिरग निसास।।

गोरा हदी गोरिया, कह म्हारो बड भाग।
पीव जिवत घर आविया, गाधी दियो सुहाग।।

कृष्ण कस नू मारियो, रावण मारचो राम।
बिन मारचा फिरगी मुवा, गाधी इधको काम।।

इद्रासण ले नह सक्या, सुर तेतीस करोड ।
गांधी लीधो हेकलं, आजादी सिरमोड ।।

मर खूटो देख न सक्यो, हिटलर रह्यो अदीठ ।
गांधी वडभागो लखो फिरग हदी पीठ ।।

गाधी इण जग मे घणा, करण इतर फुलेल ।
धिन गाधो थे कूडियो, लदन रै जड तेल ।।

भारत तो चाकर हुतो, ठाकर हो फिरगांण ।
अस्त कियो जा नैं अठ, गाधी करू वखाण ।।

अग्रेजा रै राज मे अस्त न होतो भाण ।
चाकर नैं ठाकर कियो, गांधी करू वखाण ।।

केता धन प्रिय धाम प्रिय, घर प्रिय किना विशेष ।
पण गांधी प्रिय देश रो, गांधी नैं प्रिय देश ।।

सरब मना स्वारथ बस, मानव जात सुभाव ।
परमारथ बसतो मना, रे गाधी फिर आव ।।

तिमिर दासता मिट गई, सब जग करै वखाण ।
उडगण गोरा उड गया, गाधी ऊगा भांण ।।[1]

इणी'ज भात अेक दूजे कवि श्री सावळदान आसिया कवित्त अर सोरठा मे गाधी रा गुणगान किया है। राजस्थान मे परवरा सू स्वतत्रता सारू जूझणिया राणा सागा अर प्रताप जिम सूरवीरा रो जिन करता कवि गाधी रा वखाण किया है—

सोरठा

वणिया सह सम्राट, प्रजा रो दुख नह सुण्यो ।
घरघो रूप वेराट, गाधी देस आजाद हित ।।

बहु पळ रगता वीर, साहस करणा सक्रिया ।
बिन हिंसा तू वीर धन गाधो तो तन हडी ।।

कवित्त

यण भारत र काज, राण साग किय राडा
यण भारत रै काज, पातल रहिय पहाडा

---

1 राजस्थानी शोध सस्थान चोपासनी जोधपुर रै सग्रह मू ।

यण भारत रै काज, क्षत्री घर रगत बहायौ-
यण भारत रै काज, आजाद हिंदव थाट रौ
गाधी देस आजाद हिंद, धरियौ रूप विराट रौ ।[1]

परपरागत छदबद्ध चारणी काव्य रै सागै राजस्थानी मे गाधी सवधी नु वी काव्यधारा री की कविताबा ई मिळै । इणा मे कवि गिरधारीसिंह पडिहार रचित 'बापूजी' शीर्षक अेक लाबी कविता प्रमुख है । इण कविता मे अेक टाबर आपरै घर मे देवी देवतावा रा चित्रामा विचाळै महात्मा गाधी री चित्राम देख'र आपर दादाजी सामी जिज्ञासा प्रकट करै के इण देवतावा रै विचाळै औ चित्राम किणरौ है ? औ डोकरो कुण है ? टाबर री इण बाळ सुलभ जिज्ञासा माथै दादोजी आपर पोतै न बापू री पूरी ओळखाण देवै । कविता सरल राजस्थानी मे है अर घणी बोधगम्य है—

बापूजी

औ च्यार भुजा रौ विष्ण है, औ कृष्ण बासरी वाळो है
शिवजी त्रिशूळ लियां ऊभा, औ नाग गळै मे काळो है
गज मस्तक वाळो गजानद, दुरगा सिंघा चढ चाल है
वीणा वाळी सुरसत माता, आ लिछमी फून विचाळ है
अे देव जिता तस्वीरा रा, म्हैं या सगळा न जाण हू
भींतां माथ चित्राम जिता, चोखी तरियां पहचाण हू
पण आ तस्वीर बूढिय री, मा कहती ही अे नेता है
गाधी बाबौ है नाम जिका, बाबा अे किस्या देवता है ?
भोळोडो टाबर बूझ हो, जाणण न खडयौ उमावै हो
ननौ सो हाथ उठा ऊचो, मोटी तस्वीर दिखाव हो
बाबौ बोल्या नेता कोनीं औ नेतावा रौ बाबौ हो
बापू हो देस समूच रौ, औ थारौ म्हारौ बाबौ हो
बावौ यो मरद लुगाई रौ, छोटै मोट रौ अेक जिया
औ जबरो देव जगातौ हो, धरती री खोली हथकडिया

× ×

औ सत लगोटी वाळो हो, चाल्यो बळत अगारा मे

---

1 राजस्थानी शोध सस्थान चोपासनो, जोधपुर – सग्रह सू ।

जिण करमजोग रो महा मत्र, फूकयो खादी रै तारा मे
ओ नेम रूप नारायण हो, निबळा रो घणो सहारो हो
धरती री श्रात्मा रो तारो, भारत माता रो प्यारो हो
ओ परम अहिंसक वैष्णव हो, दुखियां रो करुणा सागर हो
ओ राम राज रो रसियो हो रिसिया मे नाम उजागर हो
भूल्या भटक्या अर भोला रो, ओ नवजीवण निर्माता हो
डड गरता मे डूब्योड, भारत रो भाग विधाता हो
सदियां कत क गुलामी रो, बदनामी रा दरडा भरग्यो
मुखडा री कालख मेटणियो, झुक्योडा सिर ऊचा करग्यो
इण तोडयो तोख गर्ल रो जद, जणणी रा आसू थमग्या
भरिय भारत र मिनखा रा, आचरणा प माथा नमग्या
ऊजलपो मिनख जमार रो, ओ धरम करम रो थाभो हो
सत सेवा रो साकार रूप धरती रो अेक अचभो हो
आ भोम भारती धिन धिन है वा जणणी निहाल जिण जायो
सिमरथ सूरो तपसी त्यागी, वरागी धरती पै आयो
ओ राम दूसरो दुनिया रो, मरजादा नींव जमावण न
पारथ रो सारथ आयो हो भारत मे शख बजावण नै
गौतम रो करुणा भरयो हियो, शकर रो तेज लिया आयो
अणडिग विश्वास मोहम्मद रो, ईसा रो प्रेम पिया आयो
आयो इसडो गाधी बाबो भोला रा भरम भगा दीना
जुग जुग रा सोया भारत रा, भोमा न भले जगा दीना
आजादी री बाती बाली, बच्चो बच्चो परवाणो हो
इण जबरोड जादूगर रै बोला पर देस दिवाणो हो
लाखीणा मिनख अडघा अेहडा, खाली हाथा गोलया खाई
किरचा री तीखी नोका पर, मतवाळी छात्या टकराई
ओ बिना ताज रो महाराज, सम्राट मुलक मनभावणियो
ओ मरतगाळ मानवता रो, इमरत मरुधर रो सावणियो
ओ प्राण प्यारो अणगिण रो जिण दिन धरती न छोड चल्यो
उण दिन अधारी रात रळी, माटो मे भारत भाग मिळयो

× × ×

हे राम'' कह्यो जद गगन डिग्यो आ धरा डिगी काया डिगगी
ओ बाप डिग्यो हो लक तणो, दुबळा दुखिया रो मा डिगगी
उण दिन रुळती गमती दीखी, मोठोडो आसा किंतरा री

यण भारत र काज, राजत लडत रहायो
यण भारत रै काज, क्षत्री घर रगत बहायो
यण भारत रै काज, आजाद हिंदव थाट रो
गांधी देस आजाद हिंद, धरियो रूप विराट रो ।[1]

परम्परागत छदबद्ध चारणी काव्य रै सागै राजस्थानी मे गाधी सबधी नु वी काव्यधारा री की कवितावा ई मिळै । इणा मे कवि गिरधारीसिंह पडिहार रचित 'बापूजी' शीर्षक अेक लाबी कविता प्रमुख है । इण कविता मे अेक टाबर आपरै घर मे देवी देवतावा रा चित्रामा विचाळै महात्मा गाधी रो चित्राम देख'र आपरै दादाजी सामी जिज्ञासा प्रकट कर के इण देवतावा रै विचाळै ओ चित्राम किणरो है ? ओ डोकरो कुण है ? टाबर री इण बाळ सुलभ जिग्यासा माथ दादोजी आपरै पोतै न बापू री पूरी ओळखाण देव । कविता सरल राजस्थानी मे है अर घणी बोधगम्य है—

बापूजी

ओ च्यार भुजा रो विष्णु है, ओ कृष्ण बासरी वाळो है
शिवजी त्रिशूळ लियां ऊभा, ओ नाग गळे मे काळो है
गज मस्तक वाळो गजानद, दुरगा सिंघा चढ चाल है
वीणा वाळी सुरसत माता, आ लिछमी कूप विचाळ है
अे देव जिता तस्वीरां रा, म्हैं या सगळा न जाण् हू
भींतां माथै चित्राम जिता, चोखी तरियां पहचाण् हू
पण आ तस्वीर बूढिय री, मा कहती ही अ नेता है
गाधी बाबो है नाम जिका, बाबा अे किस्या देवता है ?
भोळोडो टाबर बूझ हो, जाणण न खडयो उमावै हो
नैनो सो हाथ उठा ऊचो, मोटी तस्वीर दिखाव हो
बाबो बोल्या नेता कोनीं, ओ नेतावा रो बाबो हो
बापू हो देस समूच रो, ओ थारो म्हारो बाबो हो
बाबो यो मरद लुगाई रो, छोट मोट रो अेक जिया
ओ जबरो देव जगातो हो, धरती री खोली हयकडिया
× ×
ओ सत लगोटी वाळो हो, चाल्यो बळत अगारा मे

1 राजस्थानी शोध सस्थान, चोपासनी, जोधपुर – सग्रह सू ।

जिण करमजोग री महा मन्त्र, फूक्यो खादी रै तारां मे
ओ नेम रूप नारायण हो, निबळां रो घणो सहारो हो
धरती रो आस्या रो तारो, भारत माता रो प्यारो हो
ओ परम अहिंसक वष्णव हो, दुखिया रो करुणा सागर हो
ओ राम राज रो रसियो हो रिसियां मे नाम उजागर हो
मूल्या भटक्या अर भोलां रो, ओ नवजीवण निर्माता हो
डूड गरता मे डूब्योड, भारत रो भाग विधाता हो
सदियां कन क गुलामी रो, बदनामी रा बरडा भरग्यो
मुलकां रो कालख मेटणियो, झुक्योडा सिर ऊचा करग्यो
इण तोड्यो तोख गलै रो जद, जणणो रा आसू थमग्या
भरिय भारत र मिनखां रा, आचरणां पै माथा नमग्या
ऊजलपो मिनख जमारै रो, ओ धरम करम रो थाभो हो
सत सेवा रो साकार रूप धरती रो अेक अचभो हो
आ भोम भारती धिन धिन है, वा जणणी निहाल जिण जायो
सिमरथ सूरो तपसी त्यागो, वरागी धरती पै आयो
ओ राम दूसरो दुनिया रो, मरजादा नींव जमावण नै
पारथ रो सारथ आयो हो भारत मे शख बजावण नै
गौतम रो करुणा भरयो हियो, शकर रो तेज लिया आयो
अणडिग विश्वास मोहम्मद रो, ईसा रो प्रेम पिया आयो
आयो इसडो गाधी बाबो भोला रा भरम भगा दीना
जुग जुग रा सोया भारत रा, भोमा न भलै जगा दीना
आजादी री बाती बाली, बच्चो बच्चो परवानो हो
इण जबरोडै जादूगर र बोला पर देस दिवाणो हो
लालीणा मिनख अडग्या अेहडा, खाली हाथां गोलघा खाई
किरचा रो तीखी नोका पर, मतवाळी छात्यां टकराई
ओ बिना ताज रो महाराज, सम्राट मुलक मनभावणियो
ओ मरतगाळ मानवता रो, इमरत मरुधर रो सावणियो
ओ प्राण प्यारो अणगिण रो, जिण दिन धरती न छोड चल्यो
उण दिन अधारी रात रळी, माटी मे भारत भाग मिळ्यो

× ×

हे राम !" कह्यो जद गगन डिग्यो, आ धरा डिगी काया डिगगी
ओ बाप डिग्यो हो लक तणो, दुबळां दुखियां रो मा डिगगी
उण दिन रूठती गमती दीखी, मोठोडी आसा कितरा री

उण दिन दिवला री जोत गई, भारतमाता र मदिर री
मानवता सिसकी धरम डिग्यो हिवडा मे धधक उठी होली
गोळी नीं लागी गाधी रै, हिंदवाण र लागी गोळी
उण दिन रोय हो जड चेतन, इण धरती रो कण कण रोयो
भारत रो गगन जितो गोरव, जद राजघाट मे जा सोयो
सोयो ओ मीत मानखे रो, ककाळा री करुणा सोई
ओ सत रो सूरज डूब्यो हो, आ जोत बुझी जगती रोई
ओ प्राण गयो परमेसर रो, सुणता गुणता री सास रुकी
इण मिनख लगोटी वाळे न, आखी धरती री धजा झुकी
आ गोळी प्रेम पुजारी र, ईसा नै लागी गोळी
आ गोळी सत्य अहिंसा र, गोतम नै लागी गोळी
ओ गोली हिंदू मो'मिन रै, हिंदाल' री धरती दागी
ओ गोली करम जोग पर ही, का'ह कु वर ने जा लागी
पण आ गोली काया लागी, लागी माटी री माया न
गाधी तो अजरो अमरो है, कुण मेट सक उण छाया ने
गाधी तो घट घट वासी है, रमग्यो जन जन र जीवण मे
ओ बापू तो बृजराज जिया, बिखरयो धरती र कण कण मे
गाधी तो तेज तपस्वी रो, ओ मिट नहीं हथियारा सू
है रोम रोम मे राम रूप, ओ मिट नहीं हथियारां सू
ओ बीज नाख रमग्यो बाबो, घन बरसला ऊचा आसी
दुनिया गाधी नै समझली आ धरा सुरग ज्यू बण जासी
यू भोलो टाबरियो छोटोसो, जद मोटो होसी भाव भरयो
समझलो गाधी बाब नै, ओ किया जियो ओ किया मरयो
दुनिया री जीवण रालण मे, इणरो जीवण बलिदान हुयो
सिरधा सू सीस झुक जिण दिन, उण दिन जाणो यू ज्ञान हुयो ।[1]

इणी प्रसग मे डॉ मनोहर शर्मा रचित 'बापू' शीर्षक सू अेक लबी राजस्थानी कविता ओरू उल्लेख जोग है । इण कविता मे मानवतावाद रो सुर सर्वोपरि है । कविता सुप्रसिद्ध राजस्थानी जन काव्य 'मोहेरा' री ढाळ (तज) माथे आधारित है । इणमे गाधोजी रै सपूण जीवण रो सार सक्षेप मे दिरीज्यो है । काव्य रो

---

1 धूडकोट (राजस्थानी काव्य), गिरधारीसिंह पडिहार रचित, पृ स 70

भाषा सरल अर बोलचाल री है। गाधीजी रै जनम सू लेय'र महा-प्रयाण ताई रो वणन कविता मे दिरीज्यो है। कविता रा की प्रमुख अश इण भात है—

बापू

पुण्य घडी

चालो चालो भाया वो लो तीरथ अनूप
उतरया है पिरथी पर देव सरूप
जाग उठ्या पुण्य आज मगल भयो
च्यारू कानी छिटक्यो है चानणो नयो
गगा की लहरा मे उमग भरी
आज हिमाल ऊची धजा फररी
सोली सोली चाल आज सुखभर पून
कण कण चाव कर खोल दीनी सून
लागी चमकण आस।
प्रगट्या मोहनदास ॥

स्वदेश

रग फिरग जठ धारयो नयो भेस
आयो सतधारी सत भारत सुदेस
पथ पुराणा दीना च्यारू कानी मेट
चेलो आप गुरुजी से लण लाग्यो भेंट
भाया विस्तार निज मेट दिया भाव
रीता सा बिगाड कर फेर दिया चाव
जाण लाग्यो अन धन समदर पार
धिरणी वण वठो छाछ मागण हार
बोलो भारत मा की जय
बोलो गाधीजी की जय!

जननायक

भागीरथ के लार जाण गग प्रवाह
गाधीजी के लार चाल्यो देस को उछाह
नैणा मे उजास नयो हिय मे हुलास

जाग उठी च्यारू कानी नई नई श्रास
धरम करम सारा देस ही मे धार
देस उधर तो उधर सारो ससार
झाडा झांडा कठा माहे श्रेक ही जतान
सखनाद गु ज उठी पिरयो श्रासमान ।

बोलो सारा हो श्रभय
बोलो भारत मा की जय !

स्वदेशी व्रत

परदेसी को राज जाणै काळ भुजग
कु डळी लपेट बठ्यो विष अग अग
गांधीजी का बोल जाण श्रमी की झडी ।
गाधीजी को दल जाण मोत्या की लडी
देस की सेवा को लीनो पूरो व्रत धार
कूण कूण सेवका की लहर श्रपार
नया कण कण माय जाग उठ्या प्राण
गु जी जन जन माय देसी देसी तान

बोलो भारत मात की जय !
बोलो देसी की विजय !

काळो कानून

गोरा गोरा लोग थांका काळा है कानून
भोळा मान लीना भला देख लीनो सून
राज का पुजारी बण देस मे बिसार
बाता ही बाता मे कील लेस्यां सारो डार
भाई होना भोळा कोई करै ना विचार
भूख तिरस काढ भाखू करै ना पुकार
खेती खटै कोई श्रर लाट कोई नाज
गोरा के प्रताप को यो छायो काळो राज

बोलो भारत मा की जय !
बोलो गाधीजी की जय !

नमक सत्याग्रह –

जागो जागो भाया आई पुत्र की घडी
गोरा के कानून को अब तोडसा लडी
उठो उठो भाया आज सोया नहीं साव
छिडकरण लाग्यो लूण पाणी काळज कर घाव
चालो चालो भाया उठ्यो समद पुकार
प्रेम से बुलाव थाने देव उदार
लूण ही बणास्या आपा तोड के कानून
पोल देख लीनी सारी मान लीनी सून

बोलो सारा हो अभय !
जय जय भारत मा की जय !

दमनचक्र

पापी सतापी ओर उठ्यो फुफकार
लोप कर देसू अबक सारी ही या डार
विपदा के बादळा नै ल्यायो वो उठाय
आग बरसाई मारी पिरथी सी हिलाय
अेक कानी काळ अर अेक कानी जीव
जीवतो न छोड पण साच की वो सींव
काळी कोटडी मे गेर नाख्यो आप काल
धरम रुखाळ वाको धरम रुखाल ।।

बोलो नारायण गोपाल !
पुन की राखसी वो पाल !

पापघट

जिसो खावं अन नर विसा हो विचार
जिसा हो विचार उठ विसा सस्कार
दाब बैठ्या सारी भोम टागडी पसार
लोभ की ओतार है या गोरा की ना डार
अेक देख्या दूसरे नै बलं खड्यो रीस
तन की मिट जाव मिट मन की कया तिस
पाप को घडो कद तो होवै भरपूर
होया भरपूर पछ होवै चकनाचूर

बोल्या नारायण हरी !
जग की विपदा टरी !

पुकार

चडी नाच उठी जद सोच कर्या सत
रामजी की खेती को जद आण लाग्यो अत
करुण पुकार करी नाणे अगरेज
परलै पछ्र सोवै कुण स्याणो सुखसेज
परम पिता के सुत का बोल करो याद
आप भला होवो करो कोई न बरबाद
बरी स न वैर धारो वैर से ल्यो बर
अमी पावो औरा न थे पीवो भला जर

बोलो सारा जग हो अभय !
आखिर पुन्न की विजय !

भारत छोडो

दल बादल ज्यू उमडया देस सेवक पुनीत
गाव गाव गली गली गाता गाता गीत
धरती आसमान छोडो छोडो म्हारो राज
फौज हथियार छोडो छोडो म्हारो साज
लोग, लुगाई, बूढा, बालक जवान
कोड कोड कठा माहि अेक हीज तान
धरती आसमान छोडो छोडो म्हारो राज
फौज हथियार छोडो छोडो म्हारो साज

छोडो म्हारो भारत देस !
थारो लाव नहीं लेस !

बापू

बापू के हिरद मे उठी जोर की पुकार
ओरू तप धारो लियो सत्य व्रत धार
दूर दूर छाया तारा गिणती नहीं पार
तारा सं बध्यो सारो तारा को ससार
अेक आतमा मे जोत जाग जे पुनीत

च्यारूकानी चानणो हो जावै रस गीत
नीर के जे ग्रेक बू द ग्रामी रूप होय
मेट दे समद को खारास सारो सोय

बोलो भारत मा की जय।
बोलो बापू की विजय!

महाप्रयाण

धरती ग्रासमान बीच गू जी धुन राम
पून ग्रर पाणी माय राम राम नाम
रामधुन छाई गली गली गाम गाम
राम नाम ही की ग्राज हिरदै हिरद हाम
राम ही की ग्रातमा या राम ही की धाम
सास सास माहि राम ललित ललाम
सत सुभाव बापू होय पूरण काम
राम रूप धार गया राम ही के धाम

सारा बोलो राम राम!
जय राम! जय राम![1]

बापू र महाप्रयाण माथ कई राजस्थानी कवियां ग्रापरी भाव-भरी श्रद्धांजळियां काव्य रै माध्यम सू ग्रर्पित करी है। जिणमे सू की उद्धरण तो पूव प्रसगा मे ग्रायग्या है। बाकी मे सू श्री कन्हैयालाल सेठिया रचित ग्रेक प्रसिद्ध कविता उदाहरण सरूप इण भात है—

बापू

ग्राभ मे उडता खग थमग्या
गल मे बेहता पग थमग्या
हाको सो फूट्यो धरती पर
बै कुण गमग्या, व कुण थमग्या?
ग्रो मिनख मरयो के मरग्यो पांखी
स साथ नाड किया नाखी?

---

1 वरदा, त्र मासिक शोध पत्रिका मई 1962, पृ स 17

या सिर कूट है हिंदवाणी
या भुर भुर रोवै तुरकाणी
इसड़ो कुण सजन सनेही हो
सगलां रा हिवड़ा डगमगग्या
वै कुण गमग्या वै कुण गमग्या ?

मिनखां रो रुलग्यो मिनखपणो
देवां रो मिटगो सफलाई
बापूजी सुरग सिधार गया
होणी र आडी के आई ?
जीवूला सौ र पच्चीस बरस
विस्वास दिला'र किया छलग्या ?
गिगनार पड़तो अब नीच
सतवादी बचना सू डिगग्या
वै कुण गमग्या वै कुण गमग्या ?

बापू सा मिनखा देही मे
धरती प मिनख नहीं आया
आग री पीढ्या पूछली
के इसा नखतरी जग जाया ?
ई अेक जोत रै पलकै सू
इतिहास सदा न जगमगाया
ई अेक मौत र मोक पर
सगला रा आसू रिलमिलग्या
वै कुण गमग्या वै कुण गमाया !

प्रजामण्डळयुगीन काव्यधारा

महात्मा गांधी अफ्रीका सू भारत आय'र कांग्रेस री बागडोर सभाळी । इणर पछै देश मे ब्रिटिश विरोधी आदोलन होळै होळै तेज होवण लाग्यो । भारतीय अधिनियम 1919 इण आदोलन मे आहुति रो काम कियो । गांधीजी इणर खिलाफ असहयोग आदोलन सरु कियो अर इणसू विदेशी सत्ता री राष्ट्रव्यापी विरोध होवण लाग्यो । असहयोग आदोलन रो देशी रजवाड़ा री जनता माथ ई असर पड़यो ।

पण उण वखत ताई देशी रियासता मे प्रजा रा राजनैतिक सगठण कठई पगा नी हुया हा। रियासती प्रजा र प्रति काग्रेस रो रुख ई उपेक्षापूण हो। काग्रेस आ बात तो जरूर चावती के देशी रियासता मे ई विदेशी सत्ता रै खिलाफ आदोलन सरु होवै पण इण काम सारु वा कोई तरै री मदद देवण न त्यार नी ही। मास्टर भोलानाथ तत्कालीन परिस्थिति रो वणन करता लिख्यो है—'हरिपुरा मे काग्रेस रो सालीणो अधिवेशन हुयो। उण वखत ओ प्रस्ताव पास करीज्यो के देशी रियासता री प्रजा आप आप रै रजवाडा मे स्वतत्र राजनतिक सगठण बणाय नै उत्तरदाई शासन रै वास्त आदोलन करै। जे रजवाडा इण कानी ध्यान नी देव तो प्रजा सघष, त्याग अर बळिदान वास्तै त्यार रवै। भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस इसा सगठणा नै नैतिक समथन देसी पण वारै सागै आदोलना मे भाग नी लेसी।' काग्रेस रै इण प्रस्ताव री देशी रियासता मे अर बारै घणी आलोचना हुई। इणनै काग्रेस री कमजोरी मानीजी। इण प्रस्ताव री प्रतिक्रिया सरूप इज रियासता मे ठोड ठोड प्रजा सगठण बण्या, नु वा कायकर्ता सामी आया अर जन जागृति पदा हुई। कोई रियासत इसी नी बची के जठै कोई राजनैतिक सगठण पगा नी हुयो हुवै। अे सगठण न्यार-न्यारै नामा सू ओळखीजण लाग्या—प्रजापरिषद, प्रजामडळ, लोकपरिषद, किसान सभा, सावजनिक सभा अर हितकारिणी सभा इत्याद। काश्मीर मे गठित इसै जन सगठण रो नाम नेशनल कान्फ्रेंस राखीज्यो जिको आज ताई इण नाम सू ई ओळखीज।'[1]

सगळी रियासता मे प्रजा सगठण पगा होवण री कारण ओ के, रियासती प्रजा तेवडी गुलामी मे पडी जिनावरा री जूण जीव ही। जागीरदार, राजा अर विदेशी सत्ता रै तेवडै पिरामिड रै नीचै दबी प्रजा बुरी तिरियां त्रस्त अर पीडित ही। ब्रिटिश भारत री जनता पात अठै री जनता वेसी दुखी हो, कारण के 'राजस्थान मे जागीरदारी प्रथा अर सामतवाद रो जिको सरूप हो उणरै कारण अठ रो जनजीवण सदीव दब्योडो रह्यो। सामाजिक व्यवस्था मे तथाकथित नैतिक आधार रै कारण रियासता मे राजा महाराजावा री मनमानी ठाट बाट सू चालती रही। खम्मा घणी रै ठरकै माथै ठेट

---

1 धुन के धनी स सत्यदेव विद्यालकार पृ स 397-398

स्वतन्त्रता प्राप्ति ताईं राजा अर जागीरदार मौज करता रह्या पण प्रजा घाणी रैं बळद ज्यूं पीसीजती रही। उण वखत मानव अधिकार जिसी समाज में कोई चीज ईं नी ही।'[1]

देशी रियासतां में ठोड ठोड इसा प्रजा सगठण गठित हुया। इणरैं लार स्व जयनारायण व्यास जिसै त्यागी अर कर्मठ कार्यकर्तावां री मैंणत अर लगन काम करै ही। व्यासजी देशी रियासतां में राजनैतिक जन जागरण पैदा करण सारू राष्ट्रीय स्तर माथै 'देशी राज्य प्रजा परिषद' जिसी संस्था री थरपणा करी। पं जवाहरलाल नेहरू इण संगठण रा अध्यक्ष हा अर व्यासजी महामंत्री। इण संस्था बरसां लग अथाग मैंणत करनै देशी रजवाड़ा में राजनैतिक सगठण ऊभा किया अर दुखी जनता नैं बोलण री मौकौ दियौ। व्यासजी नै जोधपुर रियासत सू देश निकाळौ मिळ्यौ। उण हालत में ई उणा 'अखंड भारत', 'आगीवाण' अर 'तरुण राजस्थान' जिसै स्वतन्त्र पत्रां रौ संपादन कियौ। इण भांत रियासती जनता रैं दुख दरद नै उणा ससार रैं निजरां सामी लायौ अर जनता में राजनैतिक जन जागरण पैदा कियौ।

उण परिस्थितियां में औ काम कितरौ दोरौ अर अबखौ हो, इणनै कोई भुगत भोगी ईं जाण सकै। रजवाड़ा में राजा महाराजावां री निरकुश राज हो अर वे अंग्रेजी सत्ता री छत्रछिया में निशक होय'र सुरा सुंदरी री उपासना में लाग्योड़ा हा। अपवाद सरूप की जागरूक राजावां नै छोड'र लारला बाकी सगळा री अटल्णी मशा आ ईं ही के भारत में अंग्रेजी राज जुगां जुगां ताईं चालतौ रैंवै अर वे उणरी छत्रछिया में मौज करता रवै

रियासतां में ई 75% भाग सरदार-सामतां अर जागीरदारां रैं कब्जे में हो। इण जागीरदारी इलाकै में रैंवती प्रजा री हालत औरू ई गईबीती अर खराब ही। जागीरां में प्रजा सू भांत भांत रा लाग बाग अर वेठ बेगार लेयनैं उणरौ शोषण करीजतौ। जागीरदार देशी नरेशां री छत्रछिया में आड मारता बिना नाथ रा आकल सांड हा। राज रै खजानै में तशुदा 'रेख चाकरी' भरिया पछै वानैं कोई बतळावणियौ नी हो। वानैं आ बात कोई पूछणियौ ई नी हो

---

1 अमर शहीद सागरमल गोपा ले रामचंद्र बोडा, पृ स 27

के प्रजा रैं सागै वारो किसोक वैवार है ? मामूली अपवादा न छोड़'र घणकरा जागीरदारा रो जीवण दारूडा पीवण मे अर मारूडा गवावण मे ई बीततो । प्रजा वागे निजरा मे पशुतुल्य ही ।

इण कारण राजनैतिक सगठणा रैं माध्यम सू प्रजा जद आपरै वाजब हका वास्त जबान खोलणी सरु करी तो जागीरदारा नै आ बात खारी जेहर लागी । पण जद इणसू ई दो पावडा आग वढ नै भेडा रैं उनमान रैवण वाळी प्रजा जद उत्तरदाई शासन री माग करण लागी तो जागीरदारा सू लगाय न विदेशी सत्ता ताई री सगळी तत्र हाक वाक हुयग्यो अर आपरी ताकत रा जोम मे आय'र दमन माथै उतारू होयग्यो । आ अेक लाबी गाथा है जिकी आगै री ओळिया मे माडी जासी ।

पण इण सदभ मे प्रदेश र तत्कालीन राजनैतिक परिवेश न जाण लेवणी इण कारण उचित रहसी के उणन जाण्या विना उण वखत री जन भावना सू प्रेरित अर रचित उण काव्य न आछी तरिया नी समझ सका, जिको जन साधारण री अत करण सू स्वय स्फूत है अर इण लेखन री मूळ विपय है ।

देशी रियासता मे औ प्रजामडळीय युग मोट रूप सू ई सन् 1924 सू लगाय नै स्वतत्रता प्राप्तिवप 1947 ताई रह्यौ । बीस पच्चीस बरस री इण अवधि मे इण सदभ मे जिण काव्य री रचना हुई, उण सगळै साहित्य न 'प्रजामडळ युगीन काव्य' मा यो जाय सकै ।

पण पूव उल्लेख मुजब इण काव्य री सागोपाग चर्चा किया पैली तत्कालीन राजनैतिक परिस्थितिया बाबत की बात कवणी घणी जरूरी है । इण परिस्थितिया रै कारण ई इण काव्य री रचना हुई । देशी रजवाडा अर जागीरदार आपरी प्रजा सागै किण भात री वैवार करता उणरो चित्रण जेतपुरा (मेवाड) निवासी श्री यशकरण चारण रचित इण ओळिया सू होवै—

दूहो

प्रजा नै पाळ नहीं, समझै नहीं सुत रूप ।
रक्षक अब रहिया नहीं, भक्षक बणिया भूप ।।

सोरठा

सह प्रजा सरदार, राजा सू राजी नहीं ।
पडसी किण विध पार, राजा री राजा पणी ।।
फिरग्या रै बळ फूल, रहै नचिता रात दिन ।
भूपतियां री भूल, जाणी छेवट जावसी ।।
प्रजा दुख पावह, अन्न बिन आव आटिया ।
राजा रिझावह, माल उडाव मसखरा ।।

कवि जिण हालात री वणन ऊपर री ओळिया मे कियौ है, सागण अे ई हालात उण वखत कमोवेश रूप मे राजस्थान री सगळी रियासता मे मौजूद हा । जिण राज मे गरीब प्रजा अन्न रै वास्तै तरसै अर चापलूस मालमलीदा उडावै उठ मोडी वेगी जन आक्रोश पैदा होवणौ सुभाविक ई है । औ ई कारण है कै अेक अेक करन सगळी रियासता मे जन आदोलन चेतग्यौ । की प्रमुख रियासता मे जन आदोलन री सरूआत अर वारी परणिति इण भात हुई—

बीकानेर

बीकानेर मे उण वगत महाराजा गगासिह री निरकुश राज हो । प्रजा सन् 1931 मे जद उत्तरदायी शासन री माग करी तो राजा प्रजा री दमन करणौ सरु कियौ । रियासत मे अखबारा अर राजनतिक साहित्य माथै ई रोक लागगी । अठा ताई कै राजनतिक नारा माथै ई रोक लागगी । जे कोई महात्मा गाधी री जय के भारतमाता री जय बोल देवतौ तो उणन पकडन जेळ मे नाख देवता ।

सन् 1932 मे इग्लड मे दूजी गोलमेज परिषद री आयोजन हुयौ । इणमे भारत री तरफ सू महाराजा गगासिह ई भाग लियौ । इण माथ बीकानेर र राजनैतिक कायकर्तावा बीकानेर प्रशासन बाबत अेक पुस्तिका री प्रकाशन कियौ । इणमे महाराजा गगासिह रै निरकुश शासन री सगळी खाकौ खाच्योडौ हो । आ पुस्तिका गोलमेज परिषद रा सदस्या अर ब्रिटिश ससद रा प्रतिनिधिया बिचाळै बाटीजी ।'[1] इण काम सू रियासती शासन घणौ नाराज

---

1 राजस्थान मे राजनतिक जन जागरण पृ स 89

हुयग्यो अर कई कायकर्तावां नै गिरफ्तार करनै वां साथ मुक्दमा चलाया अर लाबी सजावां सुणाय दी। इण कायकर्तावां में सत्यनारायण वकील, स्वामी गोपाळदास अर लक्ष्मीचद सुराणा इत्याद प्रमुख हा।

पण रियासती दमन र बावजूद जन आदोलन लगातार चालतौ रह्यौ अर प्रजा परिपद रै नाम सू अेक सस्था री थरपणा हुई। इण सस्था कानी सू रघुवरदयाल गोयल रै नेतृत्व मे सन् 1942 में उत्तरदाई शासन वास्त आदोलन और ई जोर सू चाल्यौ। रियासत ई आपरो दमन चक्र खूब जोर सू चलायौ। गोयल समेत वारा कई सगी साथिया नै रियासत शासन देश निकाळौ देय दियौ। '30 जनवरी 1946 नै प जवाहरलाल नेहरू अखिल भारतीय देशी राज्य परिपद रै अेक अधिवेशन मे कह्यौ के बीकानेर राज आपरै निरकुश शासन रै वास्तै बदनाम होयग्यो है अर उठै रा राजनतिक बदिया री हालत घणी खराब है।'[1]

प जवाहरलाल नेहरू रै इण बात री पुष्टि मे कई दाखला दिया जाय सक। पण वारै वास्त अठै इतरौ स्थान कोनी अर ओ इण लेखन री मूळ विपय ई कोनी पण इणरी प्रतिक्रिया मे रचित काव्य री गरिमा समभण वास्तै इणरी पृष्ठभूमि जाण लेवणी जरूरी होय जावै। अठै बीकानेर रियासत र फगत अेक गाव दूधवाखारा रै किसान आदोलन रौ जिक्र करन इण प्रसग न खतम कियौ जासी।

दूधवाखारो बीकानेर रियासत रो अेक गाव है। उण वखत इण गाव रौ जागीरदार सूरजपालसिह हो जिको महाराजा गगासिह रौ जनरल मेक्रेटरी हो। उणरै आपरै गाव मे जद प्रजा परिपद री शाखा खुली तो उणै नाराज होय'र गाव रै की किसान परिवारा री सगळी जमीन जायदाद खोस न लेयली अर वानें मारकूट नै गाव बारै काढ दिया। ओ सगळो नाटक बकाया वसूली रै नाम साथ खेलीज्यौ।

इण गाव रै किसान नेता हनुमानसिह चौधरी इण बात साथ केसरिया कपडा धारण करनै प्रतिज्ञा करी के जठा ताई वो जागीरी जुलमा नै खतम नी कर देसी उठा ताई वो पाछो गृहस्थाश्रम मे नी

1 राजस्थान में राजनैतिक जन जागरण, पृ स 111

भ्रासी । वो भ्रापरै गाव सू बारै काढचोडा किसान परिवारा रो काफलो लेयन गगासिह रै दरबार मे बीकानेर पूग्यो पण वे उठ मिळया कोनी । समाचार मिळचा के वे भ्रावू है । तो वो भ्रावू पूग्यो । उठै या सगळा रो बेता सू स्वागत हुयो भ्रर हनुमानसिह नै पकड'र जेळ मे नाख दियो ।

हनुमानसिह इणरै विरोध मे भ्रामरण भ्रनशन सरु कियो जिको पचास दिना ताई चाल्यो । जद वो सफा मरै जिसो होयग्यो तो उणन स्ट्रेचर मे घाल'र गगासिह र सामी लेजाईज्यो । महाराजा उणनै समभायो के 'वो दूधवाखारो गाव छोड दे भ्रर किसान भ्रादोलन मे भाग लेवणो ई छोड दे । रियासत उणन गगानगर इलाकै मे भेक सौ मुरब्बा नहरी जमीन देवण नै त्यार है । पण हनुमानसिह महाराजा गगासिह री बात नी मानी । उणी'ज दिना उदयपुर मे देशी राज्य प्रजा परिषद रो भ्रधिवेशन चालै हो । उठै गया प नेहरू हनुमानसिह नै कह्यो के बीकानेर महाराजा री दियोडी सौ मुरब्बा नहरी जमीन मत लीजै, नी तो थन भ्रागली पीढिया धिक्कारसी ।'[1]

हनुमानसिह भ्रापरै विचारा माथै कायम रह्यो भ्रर रियासत सागै सघप चालू राख्यो । जून 46 मे उणन पूरै परिवार साग फेरू बद कर लियो भ्रर भ्रनूपगढ रै किल मे भेकले न बद कर दियो । उठै उणन खूब सतायो । उण तग भ्रायन पाछो भ्रामरण भ्रनशन सरु कर दियो जिको लगातार पसठ दिना ताई चाल्यो । दस घटा बेहोश रह्या पछ उणन बीकानेर लायन छोड दियो ।

'1947 मे दूधवाखारा रो किसान भ्रादोलन पूरै जोर माथ हो । इणमे भ्राठ हजार किसाना भाग लियो । रियासती शासन इण किसाना न ट्रका मे भर भर नै पजाब मे जगळा मे छोड दिया । हनुमानसिह न पाछो गिरफ्तार करनै रामगढ री जेळ मे नाख दियो । छेवट 15 भ्रगस्त 1947 न भ्राधी रात रा जद भारत विदशी सत्ता री गुलामी सू भ्राजाद हुयो, उण वखत उणनै ई जेळ सू मुक्ति मिळी ।'[2]

---

1 राजस्थान म स्वतत्रता सग्राम के सेनानी प स 777

2 उपयु क्त ।

रियासती जमानै मे जोधपुर राजस्थान री अेक प्रमुख रियासत ही। अठै सन् 1925 मे जयनारायण व्यास मारवाड हितकारिणी सभा रै नाम सू अेक राजनैतिक सगठण री थरपणा करी। इण सस्था री प्रमुख उद्देश्य नागरिक अधिकारा री रक्षा करणी हो। रियासत मे ब्रिटिश शासन के रजवाडं रै खिलाफ बोलण लिखण माथ प्रतिबध लाग्योडो हो। रियासत रा प्रधान मत्री प सुखदेव प्रसाद हा। सगळी मारवाड मे वारो डडा राज चालतो। जागीर इलाकै री स्थिति इणसू ई गई बीती ही। उठै प्रजा माथ भात भात रा जुल्म होवता पण दाद फरियाद के सुणवाई कठैई नी ही। व्यासजी अर वारा साथिया इणर खिलाफ आदोलन सरु कियो तो 10 मई 1931 र दिन वान गिरफ्तार कर लिया अर वारी सस्था मारवाड हितकारिणी सभा न अेक गैर कानूनी सगठण घोषित कर दियो। राज रा सगळा कमचारिया नै आ चेतावणी दिरीजी के जे उणा कोई पण आदोलन मे भाग लेय लियो तो वानै नौकरी सू बारै काढ दिया जासी।

'7 माच 1932 न रियासत कानी सू अेक विज्ञप्ति जारी करीजी, जिणमे लिख्यो के कोई पण नागरिक आदोलन मे भाग नी लेवै। डड सरुप छ महीना री जेळ अर जुरमानै री प्रावधान हो। सन् 1934 मे राज कानी सू मारवाड पब्लिक सोसायटी आर्डिनेंस जारी हुयो अर प्रजा माथै औरू ई वेसी प्रतिबध लागग्या।'[1]

इण दमन रै उपरात ई 1934 मे रियासत मे मारवाड प्रजामडळ रै नाम सू अेक नु व राजनैतिक सगठण री थरपणा हुई जिणरो प्रमुख उद्देश्य उत्तरदाई शासन थापन करणो हो। 10 माच 1936 न प जवाहरलाल नेहरू जोधपुर आया। उण वगत उणा रियासती जनता री विदेशी सत्ता रै खिलाफ सघष करण सारू आह्वान कियो।

सरकार 1937 मे मारवाड प्रजा मडळ नै गैर कानूनी घोषित कर दी। सगळै कायकर्तावा नै गिरफ्तार करन न्यारै न्यारै किला मे बद कर दिया। पण इणसू जन आदोलन दब्यो कोनी। उल्टो

---

1 राजस्थान मे राजनतिक जन जागरण, प स 115

होळै-होळै तेज होवण लाग्यो। 1938 मे मारवाड लोक परिषद रै नाम सू अेक नु वो राजनतिक सगठण फेरू थापित हुयो।

इण सस्था रै माध्यम सू जयनारायण व्यास रै नेतत्व मे उत्तरदाई शासन री थरपणा नै लेय'र आदोलन सरु हुयो जिको होळै-होळै मारवाड रै कस्बा मे होवतो ठेट गावडा ताई पूगग्यो। रियासती शासन अर जागीरदारा आदोलन न दबावण सारू दमन रौ मारग पकड्यो। मारवाड आर्डिनेंस अेक्ट 1932 र मुजब 29 माच 1940 नै व्यासजी अर वारा साथिया नै पकड'र पाछा जेळ मे नाख दिया। पूरी रियासत मे धारा 144 लगाय नै लोक परिषद अर उणरी शाखावा न गर कानूनी घोषित कर दी।

'इणी'ज वरस देशी राज्य परिषद र अध्यक्ष प जवाहरलाल नेहरू जोधपुर री राजनतिक स्थिति रो अध्ययन करण वास्तै द्वारकानाथ कचरू नै जोधपुर भेज्या। पण जोधपुर सरकार वार सागै कोई सहयोग नी कियो। श्री कचरू आपर प्रतिवेदन म इण तथ्य न स्वीकार कियो है के रियासत री राजनतिक वातावरण दमघोटू हो अर अेक टाईप राईटर राखण वास्त ई रजिस्ट्रेशन करावणो जरूरी हो।'[1]

लोक परिषद री आदोलन चालतो रह्यो अर इणी'ज सिलसिल मे 11 जून 1942 रै दिन बाळमुकद बिस्सा अर कई दूजा कार्यकर्तावा नै गिरफ्तार किया। जेळ मे वार साग मारपीट हुई। इणसू श्री बिस्सा अर रणछोडदास गट्टाणी खासा घायल होयग्या। बिस्सा री जेळ मे इज देहात होमग्यो। इणसू नगर मे घणी उत्तेजना फैलगी अर वातावरण बडो विस्फोटक बणग्यो। करडा प्रतिबध रै उपरात ई स्मशाण यात्रा मे हजारू री भीड भेळी हुयगी। बिस्सा र बळिदान सू सरकार री बदनामी हुई अर जन आदोलन न बळ मिळ्यो।

उणी'ज दिना श्री जयनारायण व्यास दो पुस्तका री प्रकाशन कियो—'मारवाड मे उत्तरदाई शासन' अर 'जोधपुर की स्थिति पर प्रकाश'। इण प्रकाशना सू रियासती शासन बेराजी होयनै व्यासजी नै चेतावणी दीनी के वान इणरा गभीर परिणाम भुगतणा पडसी।

---

1 राजस्थान म राजनतिक जन जागरण प स 115।

उण वखत सगळे देश मे 1942 रो आंदोलन चाले हो । रियासत सगळा राजनैतिक कार्यकर्तावां नें जेळ मे नाख दिया हा । पण जद आंदोलन चालतो रह्यो अर छेवट वान 1944 मे छोडणा पड्या । इणर पछ सरकार की लोग दिखाऊ सवैधानिक सुधार लागू करण री घोषणा करी । रियासत रै सामंती इलाक मे प्रजा माथ जुल्म यू रा यू चालू हा । लोक परिषद गावडा मे आंदोलन सरु कर नें जन जागृति पैदा करण री योजना बणाई । ठौड ठौड सभा सम्मेलन आयोजित हुया । इणी'ज सिलसिल मे 13 माच 1947 न नागौर जिले रै डाबडा गाव मे अेक किसान सम्मेलन आयोजित करीज्यो । ओ अेक विराट आयोजन हो ।

इण भात जोधपुर रियासत मे जन आंदोलन ठेट स्वतंत्रता प्राप्ति ताई चालतो रह्यो । हरेक रियासत मे उण वखत ब्रिटिश सरकार रो अेक प्रतिनिधि रेजिडेंट रै रूप मे रैवतो । शासन रै हरेक काम मे उणरी पूरी दखलदाजी रैवती । सगळा काम रेजिडेंट री अनुमति सू होवता ।

रियासता मे चालतो जन आंदोलन राष्ट्रीय आंदोलन रो अेक भाग हो, इण कारण इणन दबावण मे ब्रिटिश शासन री पूरी दिलचस्पी ही । जोधपुर रियासत रै तत्कालीन रेजिडेंट सर डोनाल्ड फील्ड ई इण आंदोलन न दबावण मे अर विघटित करण मे कोई कसर नी राखी । पण आंदोलन र लारै जन बळ हो इण वास्तै ओ दब्यो कोनी ।

अलवर

जोधपुर अर बीकानेर जिसी मोटी रियासता मे जन आंदोलन रो जिक्र किया पछ अलवर जिसी नैनी रियासत रो हालचाल ई जाण लेवणो उचित रहसी । इणसू आ बात चवडै आय जासी के सगळी देशी रियासता मे अेक जिसी स्थिति ही । ओ ई कारण हा के सगळी रियासता मे ब्रिटिश शासन, रियायती शासन अर जागीरदारी प्रशासन तीनू रो खूब डट न विरोध हुयो ।

ई सन् 1924 र अडै-गडै दूजी रियासता रै ज्यू अलवर रियासत रो वातावरण ई घणो अशात हो । दूजी रियासता मे व्याप्त जन आंदोलन री लेहर होळै होळै उठ ई पूगण लागी ही । रियासत सार्वजनिक सभावा इत्याद माथै पाबदी लगाय राखी ही अर

बोलण लिखण री ई कोई स्वतन्त्रता नी ही। अठा ताई के रियासत मे अेक ई अखबार नी निकळे हो। इण कारण जन रोष माय रो मायनें घुमटीज हो। रियासती सरकार उण असतोष नें दबावण ताई पूरी त्यारी करन बैठी ही। छेवट इणरो नतीजो 14 मई 1925 न ससार रै सामी आयो।

रियासती शासन की नु वा कर लगाया तो प्रजा रो कैवणो ओ हो के करा री बोझो पै'ली सू मोकळो है, इण वास्त अब नु वा कर नी लगावणा चाइजे। पण सरकार प्रजा री इण आवाज माथ कोई ध्यान नी दियो। इण बात माथ बाजपुर अर गाजी थाणा तेहसीला मे आदोलन सरू होयग्यो। सरकार उणनें दबावण री कोशिश करण लागी। 'ऊपर लिखी तिथि न राज री सशस्त्र सेनावा दोनू गावा न घेर लिया अर गोळी चलाय दी। लुगाई टावरा सागै बुरो ववार करीज्यो। इण गोळीबारी मे 95 किसान उण ठौड ई शहीद होयग्या अर 250 रै करीब घायल हुया। 353 मकाना मे लापो लगाय दियो जिणसू 71 ढोर डागर ई जीवता बळग्या। करीब अक लाख रुपिया री माल मता लूट ली।'[1]

इण घटना सू सगळी रियासत मे आतक फलग्यो पण इणसू जन आदोलन न जबरो बळ मिळचो। आग चाल'र सन् 1932 मे रियासत मे जद मेव आदोलन सरु हुयो तद रियासत री हालत इतरी बिगडगी के महाराजा नै ब्रिटिश सरकार सू सैनिक सहायता लेवणी पडी। 9 जनवरी 1933 न ब्रिटिश सेना नीठ रियासत मे शाति कायम करी। ब्रिटिश सरकार महाराजा नै हुकम दियो के वे राजकाज आपरै प्रधान मत्री अेफ वी वाइला नै सू प'र दो बरस रै वास्तै राज सू बारै वुआ जावै। नीं तो वारै खिलाफ कारवाई करी जासी। इण माथ महाराजा न मजबूर होय न अलवर छोडन जावणी पडचो अर दो बरस इग्लड मे रैवणी पडचो।

इण घटना सू आ बात साबित होवै के देशी रजवाडा अग्रेजा रै हाथ री कठपुतळी वण्योडा हा। सत्ता री सगळो कार वैवार अग्रेजा री मरजी मुजब चालै हो।

अक्टूबर 1937 मे महाराजा पाछा अलवर आया। 1938 मे रियासत मे प्रजा मडळ री थरपणा हुई। ब्रिटिश सरकार रै इशारै

---

1 राजस्थान मे राजनैतिक जन जागरण, पृ स 80

माथै रियासत दमन रो मारग पकड्यो। प्रजा मंडळ रा सगळा कार्यकर्तावां नै पकड़ न दो बरस रै वास्तै जेळ मे नाख दिया। रियासत री हालत खराब हुयगी। कांग्रेस कानी सू हरिभाऊ उपाध्याय न सही स्थिति जाणण सारू उठै भेजीज्या। उणा रियासत री अदरूणी हालत दुनिया नै बताई।

छेवट हालात सू मजबूर होय न रियासत नै 1940 मे प्रजा-मडळ न मानता देवणी पडी। पण राज ग्रर प्रजामडळ रै बिचाळै सघष री स्थिति खतम नी हुई। 2 जून 1941 नै प्रजामडळ जागीर माफी परिषद री आयोजन कियो। इणरो प्रमुख उद्देश्य किसाना नै आपरी जमीन रो हक दिरावणो हो। ग्रो विशुद्ध रूप सू अेक किसान आदोलन हो जिको लगातार चालतो रह्यो। 1946 मे दूजी रियासता रै ज्यू अठ रा प्रजामडळ ई उत्तरदाई शासन री माग करी तो रियासत सगळा कायकर्तावा नै पकड'र जेळ मे बद कर दिया। छेवट 15 अगस्त 1947 न जद देश आजाद हुयो तद इणा नै ई जेळ सू मुक्ति मिळी।

इण भात उण जमान मे राजस्थान री सगळी रियासता मे देशी रियासता री राजकाज अेक ढरै माथै ई चाल हो। तेवडी गुलामी मे जीवती सगळी रियासता री प्रजा घणी दुखी ही। राष्ट्रीय स्तर माथै चालत जन आदोलन रो असर रियासता माथै ज्यू-ज्यू पडतो गयो त्यू-त्यू उणमे राजनैतिक चेतना आवती गई।

इण चेतना सू प्रभावित होयन उण वखत जिण काव्य रो निर्माण हुयो वो उण युग री चेतना रो प्रतीक है। इण काव्य न प्रजामडळ युगीन काव्य कैय सका। इण सगळै काव्य मे जागीरदारी व्यवस्था रो विरोध, राजशाही री खिलाफत ग्रर परोक्ष रूप सू विदेशी सत्ता री मुखालफत रो सुर मुखर है। कारण के इण व्यवस्था रो मूळ आधार ई विदेशी सत्ता ही। प्रशासन, व्यवस्था ग्रर नीति रै मामलै मे सगळा रजवाडा ग्रर ठिकाणा ब्रिन्टिश सत्ता री कठपुतळी बण्योडा हा। इण कारण इण सगळै काव्य मे कठैई विदेशी सत्ता माथ सीधी चोट करीजी है, कठैई परोक्ष रूप सू। पण इण काव्यधारा री उद्गम ग्रर मूळ सुर अेक ई है।

इण काव्यधारा मे दो प्रकार रो काव्य दीठ मे आवै। अेक तो वो काव्य जिको परपरागत काव्य शली मे चारण कविया री रच्योडो है ग्रर दूजो वो काव्य जिको जन आदोलना मे भाग लेवण वाळा

कायकर्तावा री रच्योडी है। चारण परपरा मे रचित काव्य री सुर उद्‌बोधनात्मक है। विदेशी सत्ता री कठपुतळी वणी ग्रर प्रजा विरोधी राजशाही रै घोर पतन माथ इण वग रा कविया न ग्रपार दुख है। कारण के परपरागत रूप सू वे खुद ई इण व्यवस्था रा अेक अग रह्या है। इण कारण इण व्यवस्था रै पतन सू वे घणा ग्राकळ व्याकुळ है। अेश ग्राराम ग्रर गुलामी मे गक इण राजावा न ग्रापरै काव्यवाणा री तीखी मार सू जागृत करणा वे ग्रापरौ पवित्र फरज समझै। वार वडेरा री वीरता, ग्रात्मसम्मान ग्रर प्रजावात्सल्य इत्याद देव दुलभ गुणा न याद दिराय'र वे वान पाछा सही मारग माथ लावणी चाव। इण वात री चेतावणी ई खुला शब्दा मे दव के जे वारी वात माथ ध्यान नी दिरीज्यो तो इण व्यवस्था रो विनाश ग्रवै घणो ग्रळगो कोनी। ग्रो काव्य परपरागत शली मे छदबद्ध होवण सू कला पक्ष ग्रर भाव पक्ष दोनू नजरिया सू श्रेष्ठ है।

पण जन ग्रादोलन मे भाग लेवण वाळै कायकर्तावा रै हाथ सू रचित काव्य दूजी तरै रो है। इण काव्य रचना रै लार जिकी मूळ प्रेरक भावना है वा इण भात है के काव्य ग्रर सगीत जन जागरण रा प्रबळ माध्यम है। इण कारण कायकर्तावा न इण माध्यम री सहारो मतै ई लेवणो पडचो। अे कायकर्ता मूळ मे कवि नी हा पण जरूरत र कारण उणा ग्रापरै भावा री ग्रभिव्यक्ति काव्य र माध्यम सू करी। इणम चोटी रा नेतावा सू लगाय न साधारण स्तर रा कायकर्ता तकात भेळा है। सो मूळत कवि नी होवण सू ग्रर काव्य ग्रर काव्य शास्त्र रो अगाई ज्ञान नी होवता थकाई इणा जिको काव्य-रचना करी है उणमे सू घणकरी तुकबदी मात्र बणन रयगी है। इतरो सै की होवता छताई इण काव्य री अेक प्रमुख विशेषता ग्रा है के ग्रो जनता र हिवडै सू स्वय स्फूर्त काव्य है। इणरो ग्राधार स्वानुभूति री मजबूत जमीन है। राजनैतिक कायकर्तावा ग्रादोलना मे भाग लेवता थका जिको की निजरा सू दीठो, शरीर सू भोगवियो ग्रर मन सू महसूस कियो, उणनै इज काव्य रो मूळ विषय बणायो। ग्रो ई कारण है वे इण काव्य में कला पक्ष कम ग्रर भाव पक्ष वेसी है। जन मन सू स्वय स्फूत ग्रर ग्रनुभूति जन्य होवण सू ग्रो सीधो मन मस्तिष्क माथै ग्रसर कर।

इण काव्य री गेहराई सू ग्रध्ययन किया जाण पडै के तत्का-

लीन राजनैतिक आदोलन रै लक्ष्यनिर्धारण में बराबर प्रगति होवती रही। आदोलन रौ प्राथमिक लक्ष्य वेठ बेगार सू मुक्ति अर सामती जुल्मा रौ विरोध करणौ रह्यौ। पण आगै चाल'र उत्तरदाई शासन री माग करीजी। इण भात होळै होळै मागा रौ दायरौ वढतौ गयौ। इणी'ज भात काव्य रौ कथ्य अर वर्णित विषय ई बराबर बदळतौ रह्यौ। प्रारभिक काव्य मे जठै सामती जुल्मा अर राजा महाराजावा री निरकुशता रौ वणन है, उठ लारलै काव्य मे विदेशी शासन सू मुक्ति री कामना अर सामतशाही नै राजशाही री समाप्ति री उत्कठा है।

औ सगळौ काव्य अव्यवस्थित अर बिखरयोडौ है। घणकरौ तो आखरा मे ई उतरयोडौ कोनी, फगत जूना लोगा री जवान माथै ई है। इणरौ की अश तत्कालीन पत्र पत्रिकावा मे प्रकाशित हुयो है अर कीं छोटी मोटी पुस्तका रै रूप मे छप्यौ है। बाकी ज्यू ज्यू राजनतिक आदोलन मे भाग लेवणिया जूनी पीढी रा लोगा रौ सुरगवास हुवतौ जाय रह्यौ है, वारै सागै इण काव्य रौ ई लोप होवतौ जाय रह्यौ है।

इणर अलावा न्यारी-न्यारी रियासता मे आदोलन रौ सरूप ई न्यारौ-न्यारौ रह्यौ। इण कारण सगळै क्षेत्रा मे इसै काव्य री सिरजण ई न्यारै न्यारै तरीक सू हुयो। मोटै रूप मे इण काव्य न तीन भागा मे बाटयौ जाय सक—

उद्बोधन प्रधान काव्य
सुधारवादी काव्य
विरोध प्रधान काव्य

ऊपर कियोडै उल्लेख मुजब परपरागत शैली मे रचित चारण कवियां र काव्य रौ सुर उद्बोधनात्मक है। उदाहरण सरूप अेक कवि राजपूत कौम मे वीरता रौ सचार करनै स्वाधीनता खातर मर मिटण री प्रेरणा देवण खातर वीरागना पत्नी रै मू डै सू कठोर वचन कैवावण री कल्पना कर। पत्नी आपरै पति नै सबोधित करती कव—

देश पराधीन होयग्यौ अर देश वासी देखता रैयग्या। प्रजा रा रखाळा मानीजण आळा सरदार सामत, अमीर उमराव अर राजा

महाराजा दारू र नश मे गर्क हुयोड़ा पड्या है । धिक्कार है थार जीवरण न ग्रर धिक्कार है थारी मानवता नैं ।

विदेशी चवड़ घाड़ ग्रर धवळै दिन देश री ग्रनमोल सपदा लूट लूट न विदेशा मे लिजाय रह्या है पण ग्रचू मा री बात ग्रा के कोई विरोध करण वाळो ई कोनी । हाथ मे तलवार लियां उरणन क्यू लजाय रह्या हो ? फैंक दो उणन ग्रागी ग्रर हाथा मे चूड़ा धारण करलो । शरीर माथ जनानी पोशाक पेहरलो ।

विदेशी सत्ता रो जोर जुल्म बढतो जाय रह्यो है ग्रर सगळा भारतवासी नपु सक बण'र उरणन सहन करता जाय रह्या है । तळाव मे डूब ने मर जावो के विष खाय ने प्राण देय दो । गळै म घाघरा बाध न मरद होवण रो ग्रधिकार छोड दो । कठै गई थारी वा वीरता ग्रर वो ग्रात्म सम्मान ?

इण फिरगिया न देश सू बारै काढण वास्ते युद्ध करणी पड़सी । जे थोडी घणी ई मरदानगी बाकी रही होवै ता केसरिया धारण करलो ग्रर कमर कस न त्यार हुय जावो । कायर बण्या पार नी पड़ै ।

दूहा

पराधीन भारत हुयो, प्यालो री मनवार ।
मात्र भोम परतत्र है, बार बार धिक्कार ।।

दुसमण देसां लूटकर, ले जाव परदेस ।
साजन चुडलो पेहरलो, धरो जनाना वेस ।।

दूध लजायो माय रो कीनो देस गुलाम ।
के सलाम खुद झेलता, झुक झुक करो सलाम ।।

कठ गई या वीरता, कह रजपूती शान ।
टुकड़ा रा मोहताज हो, खो बठ्या ग्रभिमान ।।

रजपूती सत खो दियो, सतहीणा सरदार ।
पतहीणा रजपूत हो, मतहीणा भरतार ।।

मतवाळा हो पोढगा, सुध बुध दीनो भूल ।
पर हाथा रा होयगा, इण हिवडा मे शूळ ।।

तन पर साडी ग्रोढ कर, म्हेलां बठो जाय ।
ग्र यामी दिन दिन ग्रठ, जोर जमाता जाय ।।

विष खावो के शरण लो, सरवरिया री थाह ।
के कठा बिच घाल लो, घाघरिय री गाह ।।

यो सुहाग खारो लगै, जद कायर भरतार ।
रडापो लाग भलो, होय सूर सरदार ।।

वस्त्र कसूमल पेहरलो, कसो कमर तलवार ।
बरछी अर कटार लो, हुवो तुरंग असवार ।।

पाछा फिर मत झाक जो, पग मत दीजो टार ।
कट भल जाईजो खेत मे, पण मत आईजो हार ।।

सीख राज री होय तो, म्हैं भी चालू साथ ।
दुस्मण भी फिर देख ले, म्हांका दो-दो हाथ ।।[1]

इणी'ज भात कविवर मुकनदान बारहठ राजपूत राजावा अर मामत सरदारा न याद दिरावता कैवे के थारै वडेरा तो रगत री नदिया खळकाय न आ धरती धणी दोरी कब्जै करी । पण आज था इज धरती विदेशिया थारे कन सू खोस न लीवी तो रगत रौ अेक छाटो ई नी उछळयो । धिक्कार है थानै ! इसो लखाव जाणै रजपूती रो बीज ई बदळग्यो है ।

सोरठा

आ धरती आताह, सरिता खळकी खोण री ।
जिकी जमीं जाताह, छिड़यो न छाटो खून री ।।

अगरेजा री अदल सू , बदळ गयो रज बीज ।
रजपूता मे ना रह्यो, रीझ खीज री रीत ।।

धन्या नह छाजह, पोढ'र मरणो पलग पर ।
वीर जिको वाजह, सोव भड रण सेज पर ।।

दूहा

ढोल जूझारू री धमक, सुण स्रवण सूताह ।
पड हाथ तरवार प, रग वा रजपूताह ।।

उगळै झठ तोपा अगन, हर रा हठ तूटाह ।
पड पड जळै पतग ज्यू , रग वा रजपूताह ।।

---

1 राजस्थानी शोध सस्थान, चोपासनी जोधपुर रै सग्रह सू ।

घणा घोडा कस चढ, नितको रण नूतांह ।
लटक पड सिर धड लड, रंग वां रजपूतांह ॥

डर न मानै डाकण्यां, भय न गिणै भूतांह ।
थोगै नाहर नाहरां, रंग वां रजपूतांह ॥[1]

कवि रैवतसिंह भाट ई इणीं'ज भांत राजपूत कौम नै देश हित खातर संगठित होवण सारू संबोधित करता विदेशी सत्ता न पाछी सात समदर पार भगावण सांई आह्वान कियो—

डिंगल गीत

धरा धीस मूसो धकाळ धोठा थूकळां धाराळां धार
सेला राष्ट्रकूट सूरा अजस हो आप
पाळो परिपाटि पूरां पूर्वजां री प्राण प्रापि
गाळै गोरा गाढ काट प्रजा जण पाप ॥
× ×
बजा दो आजादी बंब, नभ जगदंब नामी
पठा दो पापिया पार, समंदरा सात
जता दो जालिमा जोर, भडां भुजदंड भूर
सिंघलो सदीव साचा, घडो गुडां घात ॥

दूहा

छोडो अब तो छत्रियां, छिन छिन पीवो छाक ।
देश दसा निज देस री, अब तो पोवो उडाक ॥

छोडो अब तो छत्रिया, रात दिवस रति रंग ।
खग्ग झिकोळो खून मे, रिपु दल मलि रन रंग ॥

कसि कसि अंगां केसरिया, अब सब निज निज अंग ।
दीज रिपु रा रुधिर सू, रण रसिका नै रंग ॥

मृत सी अपणी जात मे, जीवण जोत जगाय ।
करो देस सेवा कछु, जातो जस रहि जाय ॥

सोरठा

भेडा सम भूपाळ, हुवा हाय अब हिंद रा ।
घेर गोरां ग्वाळ, ह्व हिय मे हींछा जठै ॥

---

1 राजस्थानी शोध संस्थान, चौपासनी, जोधपुर र संग्रह सू ।

उर धारौ इतिहास, चट हाथै चदहास लो ।
विलगा राख विलास, अंगरेजा न अकल दो ॥

दुनि लाता रा देव, बातां हू न माने बिकर ।
फग हुत काम कुटेव, साबित हुवौ जग सूरमा ॥[1]

हाडोती क्षेत्र र अेक अज्ञात कवि ई आपर अेक उद्‌बोधन गीत मे क्षत्रिय वीरा नें ललकारया है । गीत मे वानें आपरी गौरवपूण परपरा याद दिराय'र वतमान अवस्था कानी वारो ध्यान आकृष्ट कियो है ।

राजा महाराजावा अर क्षत्रिय समाज न सबोधित करनें लिख्यो-ड इण काव्य सू आ बात प्रकट होवै के परपरागत शैली मे काव्य रचना करणिया कविया री विचारधारा ई पुराणी है । वे विदेशी सत्ता री मुकाबलो करण वास्तै जनशक्ति री आह्वान नीं करन फगत राजपूता नें ई सबोधित कर । वारै मत मुजब सघप करणो अर मरणो मारणो फगत क्षत्रिय समाज री ई काम है । दूजी कोई कौम रै बस री श्रो रोग कोनी । इण कारण इण गीत मे ई कवि क्षत्रिय समाज री उद्‌बोधन करता लिख्यो है—

उद्‌बोधन गीत

अब तो सभळो क्षत्रिय वीरो, देस घणो दुख पावै छ
अजु न भीम सरीखा सूरा, अपण करम धरम का पूरा
ज्यो बाण चलाता दूरा सू तो, कायर देख थर्रावै छा
थे ज्यो उणी बस मे होकर, अपणा धरम करम सै खोकर
बठ्या हाथ मळो छो रोकर, हालत देखी न जावै छ
अब तो सभळो
दारू पीकर के दुबारो, धन रडो भडवा पै वारो
दीन दुखी के ठोकर मारो, थांन शरम न आवै छै
बहादुरां सत बात विचारो, सताना पर दृष्टि डारो
अब तो देस जागगो सारो, गुण की कदर करावै छ
अब तो सभळो

1 राजस्थानी शोध सस्थान चोपासनी, जोधपुर र सग्रह सू ।
2 उपयु क्त ।

इण भांत जठै अेक कानी की कविया राजा महाराजावां अर सरदार सामंता न वांरो प्राचीन गौरव याद दिराय'र वानैं विदेशी सत्ता साग जूझण वास्तैं प्रेरित किया, उठैं दूजी कानी की कविया आपर काव्य मे तीखैं व्यंग बाणा सू उणा नैं सावचेत करण री ई कोशिश करी । कवि विजयसिंह दधवाडिया रचित काव्य इण प्रसग मे उल्लेख जोग है—

दूहा

रव्वड रा पण धाविया, पळिया मेमा पास ।
इम विध उछरिया जिकै, वाहे किम बाणास ।।

पुरखा बख्तर पेहरता, सजता शस्त्र छत्तीस ।
राज अेक हटर जिको, सो पण गहै सईस ।।

जिण मुख पर रण जोश मे, मू छा भांह चढत ।
होणहार है तिण जगह, रेजर रोज फिरत ।।

विन माथैं रण बाहता, दुहु माथैं तरवार ।
मग जाता निरखैं जिकैं, सिर री माग सवार ।।

मझ सनाह आवध सरब, देता अरियां दाव ।
पहर गिरारा पातळा, व अब करै बणाव ।।[1]

इणी'ज सुर मे अेक दूजै कवि महात्मा रिश्वदास (भींडर) कह्यो—इण राजावां तो नृपति शब्द री मान मरजाद ई खतम कर दी । अे किस्याक नृपति है ? जिणा गरीब अर भूखी जनता न अन्न वस्त्र देवण री सौगंध लियोडी है । इसी हालत मे कोई अभागियो इज इणानैं अन्नदाता कैय नैं बतळासी ।

दूहा

जग मे नरपत राखवा, नरपत पायो नाम ।
नरपत को निरख्यां विना, नरपत नाम नकाम ।।

अन्न देवा री आखडी तन ढकवा री त्याग ।
मान अन्नदाता कहै, वारा फूटा भाग ।।

---

1 राजस्थानी शोध संस्थान, चोपासनी, जोधपुर रै संग्रह मूं ।

राजरीत रा रोव री, राखी नहीं परवख ।
गादी पर चढ कर हुया, गोल्या माहि गरक्क ।।

यान राजा क्यू करया राम गयो काई भूल ।
जनम बिगाड्यो जगत मे, मुख पं पडगी धूल ।।[1]

इणीज भात कवि जगदीश (भीडर) 'भोगा भूप' शीर्षक कविता मे निकमा राजावा री विशेषतावा रा वखाण करता लिख्यो है—

भोगा भूप

सूरा न तो सेर भर बेकरडी न दीधी कदी
मणां बद मक्को नाखी जातो नित हूरां न
पडित प्रवीण पाळा पागडे घसीट पग
फेरया फर मोटरा मे मोल्या कोल्या कूरा नै
गोला ढोला पाव पाग खावै पकवान साग
आव याव दीधा थका खाई भाई गुरा नै
जोगा कान भागा का न लोगा का विचार कीधा
दीधा गडका नै गाम गोरमा गडूरा नै ।।[2]

रियासता मे ब्रिटिश सत्ता री पूरी कब्जो होवण सू ननी मोटी सगळी रियासता मोट अर जिम्मेवार सगळं ओहदा माथै अग्रेज अफसर बैठा हा । वे विदेशी अफसर किण भात आपरी मनमानी करता अर राजा महाराजा वार सामी किण भात विवश हुयोडा हा इणरो सागोपाग चित्रण कवि यशकरण चारण (जेतपुरा मेवाड) नीचै लिख्या दूहा मे कियो है । कवि राजा महाराजावा री स्थिति अग्रेज अधिकारिया र सामी, 'सांप छछु दर', 'बुढिया रै घर बाघ', अर 'विणजारै रा बल' जिसी बताई है जिकी बिल्कुल सही है । कवि राजावा री हालत बतावता लिख्यो है—

दूहा

परदेसी पद सचिव पर, आण नृप कर आघ ।
कढ न फिर ये काढिया, बुढिया रै घर बाघ ।।

1 राजस्थानी शोध सस्थान चोपासनी, जोधपुर र सग्रह सू ।
2 उपयु क्त ।

विणजारा अंगरेज वणं, घेरे उज्जड गैल ।
अवगुण गुणतो ऊपरे, बाळद रा नृप बैल ।।

सोरठा

तठ रहे नृप तग, जठ सचिव गोरा जमे ।
पकड्या पछ्र भुजग छोड न सक छछू दरो ।।
परदेसी सरपच, वण राजा घर मे बढै ।
पूरण रच पडपच, सब री सुख सपत हरे ।।[1]

दूजी रियासता रे ज्यू मेवाड मे ई राज रा सगळा ऊचा ओहदा माथ अग्रज अफसर विराजमान हा। मेवाड मे ट्रैच नाम रौ अक अंग्रेज घणा बरसा ताई महकमा माल रौ सैसू मोटो अफसर बणन रह्यौ। उणरे वखत मे इज मेवाड राज मे जमीन बदोबस्त रौ काम हुयो। बिजौलिया अर बेगू रा डोकरा किसान आज ई उण अत्या-चारी अफसर रा काळा कारनामा भूल्या कोनी।

रियासता मे इण विदेशी अफसरा न लू ठी पगार अर मोकळी सुविधावा दिरीजती। पण उणा सू बेसी योग्य अर हुस्यार देशी अफसर मामूली ओहदा माथे पड्या आखी उमर सडबो करता।

उण वखत मेवाड रियासत मे फैली अव्यवस्था अर रापटरोळ री वणन मेदपाटीय नाम रै कवि आपरी अेक कविता मे इण भात कियो है—

राणा थारा राज मे

राणा थारा राज मे, ओछा पायो पद्द ।
नळियारो माथ नहीं, भारी छायो मद्द ।।
राणा थारा राज मे, होवा लागी हद्द ।
कामेत्यां रा जुलम सू, तुरकाणो भी रद्द ।।
मोटा रह मरजाद मे, छोटा छोडे हद्द ।
सीमा छोडै खाळिया, ढावा तज न नद्द ।।

---

1 राजस्थानी शोध सस्थान, चोपासनी, जोधपुर रै सगह सू ।

कहता होसी सुरग मे, पुरखा देख गरद्द ।
अजहू है मेवाड री, साग फोज मरद्द ।।[1]

अेक दूजै कवि राजा महाराजावा न अेश आराम मे पड्या देख न जिकी चेतावणी दीवी है, वा उणारै जीवण री वास्तविकतावा न उजागर करै—

चेतावणी

आ किती रीत भाली उमरावा, लोक तरफ री छोडै लज्ज
भगतणिया सू करो मेळका, भिडो नहीं रण मे भिडज्ज
रात अेराक न पियो अलाडा, पालरवाडै छाक पियो
नागी खागा घाव लियो नह, लाग नागिया घाव लियो
विलखीज रणतूर वाजिया, मृदग वाजियां हरख मच
धारा तीरथ चढ धूजणो, पारा तीरथ किया पच ।।[2]

रियासता मे चालतै जन आदोलना न विदेशी अफसर हर तरै सू दबावणी चावता । पण प्रजा प्राण देय न ई इण आदोलना न चालू राखती । अेक अज्ञात कवि री आ कविता—'जाईये साहब !' इण प्रसग री जवरो खाको खाचै—

जाईये साहब !

दबावो लाल चाव थे, दबागा म्है नहीं साहब
बतावो बेडिया जूता म, करलो खूब लाठी चार्ज
करो भडका बदूका का, डरागा म्है नहीं साहब
मचाई लूट यै म्हाकी, करी हो खूब मनमानो
जुलम अन्याय आग सिर, धरागा म्है नहीं साहब
बणाकर काठ की पुतळी, करघो कमजोर राजा नै
कदी भी भूल 'हा मे हा , भरागा म्है नहीं साहब
जगी इण धरा को रैयत के चलदो रास्ता नापो
या नीं तो अेक दिन आकर, कहागा जाईये साहब ![3]

उण वखत राष्ट्रीय स्तर माथ चालता आदोलन सू प्रेरित होय

---

1 राजस्थानी शोध सस्थान, चोपासनी, जोधपुर र सग्रह सू ।
2 उपयु क्त ।
3 उपयु क्त ।

न राजस्थान री सगळी रियासता मे जन ग्रादोलन सरु हुया हा। इण ग्रादोलना मे भाग लेवणियें कायकर्तावा काव्य रै माध्यम सू जन जागृति पैदा करण री भरपूर कोशिश करी। अे कायकर्ता गाव-गाव फिरता, जनसभावा सबोधित करता ग्रर काव्य रै माध्यम सू जन चेतना जगावण ताई प्रयत्न करता। शायद वार भाषण री इतरो ग्रसर नी पडतो जितरो वारी कवितावा रो पडतो। ग्रामीण जनता इणसू घणी प्रभावित होवती। मणकरो काव्य गेय होवण सू ग्रर जन सभावा मे बार बार गायो जावण सू लोगा री जबान माथै चढ जावतो ग्रर लोकप्रिय बण जावतो।

प्रजामडळीय ग्रादोलन रा की प्रारभिक गीत इसा पण है के वा मे प्रजा राजा नै सबोधित करनै ग्ररज करी है ग्रर ग्रापरो दुख दरद दरसायो है। प्रजा नै हाल ई ग्रा उम्मीद है के राजा प्रजा रो मालिक है, धणी है, वो वारी ग्ररज माथै कान जरूर माडसी। मेवाड रै कोई ग्रज्ञात कवि रचित कविता 'स्याणा राणा जी' मे इणीज भात री भावना प्रकट हुई है—

स्याणा राणा जी

स्याणा राणा जी हाजी, म्हाका स्याणा राणा जी
सुण लीजो म्हाका दुख रा गाणा जी स्याणा राणा जी!
मोटा मोटा ग्रोहदा ऊपर, विदेसिया का थाणा जी
गोरा नीं पण सूरा है ये, ग्राधा नीं पण काणा जी
ग्राडा पडग्या ग्राडा पडग्या, म्हे तो या सू हार
म्हासू उठै न इतरो भार, स्याणा राणा जी!
गडकडा न लोर लापसी, मिनखा नीं दाणा जी
वठ बीजळी घग घग करती ग्रठ न घूणो छाणा जी
ठड्यां मरता-ठड्या मरता, मेला बार
पडतो माह पोसा की मार, स्याणा राणा जी!
नींद उडावो जागो झटपट, हो जावो हुस्यार जी
सलाह करो रयत न सू पो, राज काज को भार जी
झुकग्यो देखो झुकग्यो देखो, ग्रो ग्रगरेजी नार
होग्यो जाण होग्यो जाण गोलो गार, स्याणा राणा जी![1]

---

1 राजस्थानी शोध सस्थान चोपासनी जोधपुर र सग्रह सू।

मेवाड री प्रजा आपरै महाराणा नै जगाय नै वानै प्रजाहित मे काम करण री अरज करै तो हाडौती क्षेत्र री प्रजा ई आपरै राजा न जगाय न सावचेत हुवण री वात कवै । सगळी रियासता मे प्रजा री भावना अेक सरीखी है, आ बात काव्य रै माध्यम सू पुष्ट होवै । श्री गौरीलाल गुप्त रचित इण गीत मे सागण वाई भावना अभिव्यजित हुई है—

हाडा जाग रे !

जाग जाग बू दीपत थारी प्रजा दुखारी रे
हाडा जाग रे !

हाकम मिळ परजा न लूट, यन न जाणी जातो रे
बेगारा मे काम कराव, यू मनमानी रे
हाडा जाग रे !

जाग जाग कोटापत, थारी प्रजा दुखारी रे
हाडा जाग रे !

थाका नौकर मनमानी कर, म्हानै घणा सतावै रे
या मोटर चढ खेल शिकारा, मौज उडावै रे
हाडा जाग रे !

जाग जाग बू दीपत थारी प्रजा दुखारी रे
हाडा जाग रे !

आठ सेर का गेहू बिकै छ, दस सेर की जवारी रे
किस्या करै गुजरान समझ थ, प्रजा बिचारी रे
हाडा जाग रे !

जाग जाग कोटापत थारी प्रजा दुखारी रे
हाडा जाग रे !

म्हाकी बहू बेटिया तकता, पापी नहीं लजाव रे
पटवारी, कानूगो, नाजिम, लूट मचाव रे
हाडा जाग रे !

जाग जाग बू दीपत थारी प्रजा दुखारी रे
हाडा जाग रे ![1]

---

1 कवि श्री भैरव लाल 'काळा बादळ' कोटा रै सग्रह सू ।

इणी'ज भात मेवाड रियासत री प्रजा मडळ मेवाड राणा री नींद उडावण री कोशिश करै। श्रो गीत ई कोई अज्ञात कवि रौ लिख्योडो है—

अब तो चेत रे !

चेत चेत मेवाडा राणा, यू काई सूतौ रे
अब तो चेत रे !

बेखबरी मे सोकर भोळा, विरथा जनम गवायो रे
थारी ऊंघ उडावण खातर, परजामडळ आयो रे
रिश्वतखोर कुटिल अधिकारी, खल उत्पात मचावै रे
जेबा गरम किया बिन पापी, चैन न पावै रे
अब तो चेत रे !

रम्या सियाळ रिटायर हुय न, मेवाडा मे आवै रे
थारी आंख मे धूड नाख न धन ले जावै रे
तलवारा नैं तोपां रा बळ, ताजमी मे रम्या रे
सत्याग्रह री बाढ मे, अग्रेज बहग्या रे
अब तो चेत रे !

चेत चेत मेवाडा राणा, यू काई सूतौ रे
अब तो चेत रे ![1]

पण इतरी अरज विनती र उपरात ई जद राज दरबार मे प्रजा री कोई सुणवाई नी होवै, गेहरी ऊंघ मे सूतौ राजा पसवाडो ई नी फर के आख ई नीं उघाडै तो प्रजा री धीरप छूट जावै। उणर गाढ री माठ आय जावै। छेवट प्रजा रौ प्रतिनिधि कवि आकास नैं बादळा रै माध्यम सू धरती माथ आग बरसावण री अरज कर, जिणसू धरती माथलो सगळो अन्याव, अत्याचार अर जुल्म बळ न भस्म हुय जावै अर प्रजा न ई इण नरकवाड सू छूटको मिळ।

कवि श्री भरवलाल "काळा बादळ" (कोटा) रचित आ कविता उण जमाने मे इतरी चावी हुई के कवि रौ उपनाम ई 'काळा बादळ' पडग्यो। सभी सम्मेलना मे आ कविता बार बार सुणाईजी इण कारण उण वखत इणरो घणो प्रचार हुयो—

---

1 राजस्थानी शोध सस्थान, चोपासनी, जोधपुर र सग्रह सू।

काळा बादळ

काळा बादळ रे अब तो बरसा दे बळती आग !
बादळ ! राजा कान बिना रो, सुण न म्हाकी बात
थाका मन की थू कर जद, चाल बाका हाथ
काळा बादळ रे !

छोरा-छोरी दूध बिना रे, चून बिना घर नार
नाज नहीं छ, लूण नहीं छ नहीं तेल की धार
काळा बादळ रे !

धासी चाल डगमग हाल, बेगी आयगी हार
भरी जवानी बीच मे ही रे, सूख गयौ भरतार
काळा बादळ रे !

उल्टी गगा चाल री रे, बाड खावै खेत
उल्टा डाट चोरडा ने रक्षक खाव रैयत
काळा बादळ रे, अब तो बरसा दे बळती आग ।[1]

जद बाड खेत नै खावरण लाग जाव अर रक्षक इज भक्षक बरण जाव तो इसा राज नै किरण नाम सू सबोधित करणो रहयो ? राजस्थान मे राजनैतिक जन जागरण रा अग्रदूत श्री अर्जुनलाल सेठी रचित निम्न कविता मे इण सवाल रो पडूत्तर मिळ जाव । श्री सेठी इण राज न डाकुवा अर खूनिया रो राज बतायो है —

खूनियां री राज

यो तो खूनिया को राज
यो तो डाकुवा को राज
पापी गोरा पाल छ यो
खूनिया को राज !

गोरा गोरा मूडा ऊपर, राता राता दाग
मिनखा न तो मार नाख्या, जलिया वाल बाग
म्हाको धणी लेबा गयो, बजारा मे खाड
गोरा मारी गोली ऊ के मूल कोनीं राड
भूरी भूरी भोपणी है, नीली नीली आख

---

1 श्री भरव लाल 'काळा बादळ', कोटा र सग्रह सू ।

इणी'ज भात मेवाड रियासत री प्रजा मडळ मेवाड राणा री नींद उडावण री कोशिश करै। स्रो गीत ई कोई अज्ञात कवि रो लिख्योडो है—

अब तो चेत रे !

चेत चेत मेवाडा राणा, यू काई सूतो रे
अब तो चेत रे !

बेखबरी मे सोकर भोळा, बिरथा जनम गवायो रे
थारी ऊघ उडावण खातर, परजामडळ आयो रे
रिश्वतखोर कुटिल अधिकारी, खल उत्पात मचाव रे
जेबा गरम किया बिन पापी, चन न पाव रे
अब तो चेत रे !

रग्या सिंयाळ रिटायर हुय न, मेवाडा मे आव रे
थारी आख मे धूड नाख न, धन ले जाव रे
तलवारा नै तोपा रा बळ, ताजमी में रग्या रे
सत्याग्रह री बाढ मे, अग्रेज बहग्या रे
अब तो चेत रे !

चेत चेत मेवाडा राणा, यू काई सूतो रे
अब तो चेत रे ![1]

पण इतरी अरज-विनती रे उपरात ई जद राज दरबार मे प्रजा री कोई सुणवाई नी होवै, गेहरी ऊघ मे सूतो राजा पसवाडो ई नी फरै के आख ई नी उघाडै तो प्रजा रो धीरप छूट जाव। उणर गाढ री माठ आय जाव। छेवट प्रजा रो प्रतिनिधि कवि आकास न बादळा र माध्यम सू धरती माथे आग बरसावण री अरज करै, जिणसू धरती माथली सगळी अन्याव, अत्याचार अर जुल्म बळ न भस्म हुय जाव अर प्रजा न ई इण नरकवाड सू छूटको मिळै।

कवि श्री भरवलाल "काळा बादळ" (कोटा) रचित आ कविता उण जमानै मे इतरी चावी हुई के कवि रो उपनाम ई 'काळा बादळ' पडग्यो। सभी सम्मेलना मे आ कविता बार बार सुणाईजी इण कारण उण वखत इणरो घणो प्रचार हुयो—

---

1 राजस्थानी शोध सस्थान, चोपासनी, जोधपुर रै सग्रह सू।

काळा बादळ

काळा बादळ रे अब तो बरसा दे बळती आग ।
बादळ ! राजा कान बिना रो, सुणे न म्हाकी बात
थाका मन की थू करै जद, चाल वाका हाथ
काळा बादळ रे !

छोरा-छोरी दूध बिना रे, चून बिना घर नार
नाज नहीं छ, लूण नहीं छ नहीं तेल की धार
काळा बादळ रे !

घासी चाल डगमग हाल, बेगी आयगी हार
भरी जवानी बीच मे हो रे, सूख गयो भरतार
काळा बादळ रे !

उल्टो गगा चाल री रे, बाड खाव खेत
उल्टा डाट चोरडा नै रक्षक खाव रयत
काळा बादळ रे, अब तो बरसा दे बळती आग ।[1]

जद बाड खेत न खावण लाग जावै अर रक्षक इज भक्षक बण जावै तो इसा राज नैं किण नाम सू सबोधित करणो रह्यो ? राजस्थान मे राजनैतिक जन जागरण रा अग्रदूत श्री अर्जुनलाल सेठी रचित निम्न कविता मे इण सवाल रो पड़ूत्तर मिळ जावै । श्री सेठी इण राज न डाकुवा अर खूनिया रो राज बतायो है —

खूनियां रो राज

यो तो खूनिया को राज
यो तो डाकुवा को राज
पापी गोरा पालै छ यो
खूनियां को राज !

गोरा गोरा मूडा ऊपर, राता राता दाग
मिनखा नै तो मार नाख्या, जलिया वाल बाग
म्हाको धणी लेवा गयो, बजारा मे खाड
गोरा मारी गोली ऊंके मूल फोर्नी राड
भूरी भूरी भोपणी है, नीली नीली आख

---

1 श्री भरव लाल 'काळा बादळ', कोटा र सग्रह सू ।

सारा घर नें खूद नाख्यो, छोडी कोनी राख
छोटी छोटी कूकडो रे, काचो काचो सूत
गोरा पापी मार गेरयो, म्हांको स्याणो पूत
खाड भाव आटो बिकं, घी के भाव तेल
गोरा डाकू लेय गया रे, भर भर के वे रेल
म्हाकी सुणले रामजी रे, थाकी पूरी आस
गोरा डाकू पापियां को, करज सत्यानास ।।[1]

इणी'ज प्रसग में तत्कालीन जयपुर राज्य प्रजामडळ रा अेक प्रमुख कार्यकर्ता अर राजस्थान रा पूर्व मुख्यमत्री श्री हीरालाल शास्त्री न अेक सुपनो आवै । सुपनै मे वे देखै के देश अहिंसक क्राति र तीर माथै ऊभो है अर इतराक मे काळी पीळी आधी आय जावै । झपाटा मारती आ आधी घडी गजब री है । इणर वेग सू धोरा री ठौड खाडा अर खाडा री ठौड धोरा बण जावै । टणकोडा परवत खागा होय जावै अर नु वी टेकरिया निजर आवण लागै ।

शास्त्रीजी इण कविता (सुपनो आयो) मे क्राति रो घणो ओपतो रूपक बाध्यो है । शास्त्रीजी री राजस्थानी भाषा मे लिखयोडी इसी कई कवितावा वारै अेक काव्य सग्रह 'गीत पच्चीसी' मे सग्रहित है । उणमे सू की कवितावा इण भात है—

सुपनो आयो

सुपनो आयो अेक घणो जबरो रे, सुपनो आयो
काळी पीळी आधी उठी, चल्यो सू ट घणो जबरो रे
थळ को होयग्यो जळ, जळ को थळ सपपाट जबरो रे
डूगर टूट जमीं मे मिळग्या, देख्यो हाल घणो जबरो रे
चोरस भोम मे डूगर बणग्या, माया जाळ घणो जबरो रे
सुपनो आयो अेक घणो जबरो रे, सुपनो आयो !
टीबा उठ नदी ब लागी, फैल्यो पाट घणो जबरो रे
नदिया सूख'र टीबा बणगा, बेढब मूड घणो जबरो रे
ऊचा छा सो नीचा उतरया, नीचलो ठाठ घणो जबरो रे
टणका छा सो निबळा हुयगा, निबळा ठाठ घणो जबरो रे

1 राजस्थानी शोध सस्थान, चोपासनी, जोधपुर रै सग्रह सू ।

सुपनौ आयौ अेक घणौ जबरौ, सुपनौ आयौ रे !
महला की तो टपरी वणगी, टपरी महल घणौ जबरौ रे
तोशाखाना खाली हुयग्या, खाली पेट घणौ जबरौ रे
कोट कगूरा नीचा पडग्या, टपरां ठाट घणौ जबरौ रे
सुपनो आयौ अेक घणौ जबरौ, सुपनौ आयौ रे ! [1]

शास्त्रीजी रचित अेक दूजी कविता में अेक किसान पत्नी आपरै सीधै-सादै अर सरल सुभाव रै पति नै निडर होवण री प्रेरणा देवै। सामंती क्षेत्र में शोषित अर दमित किसान वर्ग नै उण जमानै में हिम्मत बधावण ताईं इसै काव्य री घणी जरूरत ही। कविता में पत्नी आपरै पति नै ओळमो देवती कैवै—'आ थारी डरण री काईं आदत पडगी है? थानै डर किण बात रो है?'

पिया थारै पडी या काईं ?

अेजी बिना बात क्यू डरपो जी
पिया थारै पडी या काईं !
पिया जिंद भूत कुण देख्या
अेजी छाया सू क्यू डरपो जी
पिया जिंदा दिल थे जबरा !
अेजी मुडदा सू क्यू डरपो जी
पिया सिंघ जिस्या थे सबळा
अेजी स्याळा सू क्यू डरपो जी
पिया आपा बोहळा सारा
अेजी थोडा सू क्यू डरपो जी
पिया सबळा था अन्नदाता
अेजी भूखा सू क्यू डरपो जी
पिया थारै पडी या काईं
अेजी बिना बात क्यू डरपो जी !
पिया आपा बिल्कुल साचा
अेजी झूठा सू क्यू डरपो जी
पिया खरा तप्या थे सोना
अेजी नकल्या सू क्यू डरपो जी

---

1 मोत पच्चीसी हीरालाल शास्त्री, पृ सं 23

पिया खरी कमाई खावा
श्रेजी ठाला सू बपू डरपो जी
पिया साहूकार सदा का
श्रेजी चोरां सू बपू डरपो जी
पिया गेल गेल चाला
श्रेजी पापियां सू बपू डरपो जी
पिया मारा पडी या कांई
श्रेजी बिना बात बपू डरपो जी ! [1]

राष्ट्रीय स्तर माथै चालरावाळै जन आदोलन मे रचनात्मक कायक्रम री आपरो न्यारो महत्व हो। जिण वखत देश मे कोई मोटो आदोलन नी चालतो, राजनतिक कायकर्ता रचनात्मक कायक्रम मे लाग जावता। स्वदेशी चीजा री प्रचार, विदेशी वस्तुवा री बहिष्कार, कताई-बुणाई री प्रचार अर समाज मे व्याप्त बुराइया री विरोध इत्याद रचनात्मक कायक्रम रा प्रमुख अग हा। रियासता मे प्रजामडळ ई इण कायक्रम र मुताबिक ई काम करता। कायकर्ता नगरा सू लगाय नै गावा तकात मे जावता अर रचनात्मक कायक्रम नै क्रियात्मक रूप देवता। इण वास्त उण जमानै मे रचनात्मक कायक्रम ई काव्य री विषय बणग्यो। कायकर्तावा गीता, भजना अर लोकगीता री तज माथै कवितावा बणाय'र आम जनता ताई पुगावण री कोशिश करी। इसी कवितावा रा की नमूना नीच दिया जाव। साधु नदरामदास रचित अेक गीत इण भात है—

गीत स्वदेशी

गोरी नै पीऊजी कय देशी को थ करो प्रचार
देशी चीज सभी थ बरतो, परदेशी सू करो न प्यार
देशी चूनड देशी चूडलो, देशी स सजलो सिणगार
देशी अगिया देशी कुरती, देशी अस्तर लेवो मोला'र
देशी लहगो, देशी घघरो, देशी मगजी लेवो निकाळ
देशी मटकी, देशी हाडी, देशी ढकणी घड कुमार
नदराम कहै सुणो रे बना, तब भारत को होय सुधार ।।

---

1 गीत पच्चीसी, हीरालाल शास्त्री, पृ स 25

इणी'ज भांत अेक अज्ञात कवि रचित दूजी कविता मे पत्नी आपरा पति ने वैंव—

अरज

भारत री सेवा मे कदम बढावो जी आलीजा
अरज करै छ कामणिया ।

परमारथ मे थीं तो नाम लिखावो जी आलीजा
अरज कर छै कामणिया ।

देश लूट निर्धन कियो आप बण्या धनवान
पी दीना रा खून ने भली बणाई शान
भारत नै धन दे दातार कहावो जी आलीजा
अरज करै छ कामणिया ।

वस्त्र विदेशी त्याग न खादी पेहरो कंत
चरखो कातो हाथ सूं, ले गाधी री पंथ
खादी री साडी म्हानै, पेहरावो जी आलीजा
अरज करै छ कामणिया ।[1]

अेक पत्नी आपरै पति सू खादी रै साडी री मागणी करै तो दूजी आपरै पति न चरखो लाय देवण री कवै, जिणसू वा खुद कात'र साडी त्यार कर सकै । श्री विजयशंकर शास्त्री रचित वो गीत इण भांत है—

भंवर म्हानै चरखो ल्यादो जी

पत्नी भंवर म्हान चरखो ल्यादो जी
अेजी म्हैं चरखो रोज चलास्या
भंवर म्हान चरखो ल्यादो जी !

पति कुंवराणी चरखो नीं ल्यावां अे
चरखो तो निरधन घार
चरखो कत्या भूंडो लाग
मोटा घर की नार
भंवर म्हानै चरखो ल्यादो जी !

1 राजस्थानी शोध सस्थान, चोपासनी, जोधपुर रै सग्रह सू ।

पत्नी चूल्हो, चाकी अोर चरखलो
अे छै तीन चकार
अे चाल्यां घर रहे सुखी जी
सुखी रहै नर नार
भवर म्हान चरखो ल्यादो जी
चरखो नित चलास्या
भवर म्हांन चरखो ल्यादो जी ![1]

इणी प्रसग मे सुश्री रामपाळी भाटी (जयपुर) 'चरखो' शीर्षक अेक श्रोह गीत लिख्यो। कवयित्रि आपरी बात 1857 रा स्वतत्रता सग्राम सू जोडनें कैवे—

चरखो

सायब जी गढ़ मथुरा मे बज्यो नगारो
कामरूप गरणायो हो राज !
सायब जी दो दो रोट्या श्रेक कमळदळ
कमधजिया उठ धाया हो राज
म्हनें चरखो पूणी लाय दो म्हारा सायबा !

उण जमानै मे बेसी प्रचार री दीठ सू लोकगीता री धुन माथ ई कई गीता री रचना हुई। या री धुना प्रचलित अर जणप्रिय होवण सू इसा गीत जनता मे बेसी लोकप्रिय हुया। इण भात रा गीत मोकळा है। पण घणकरा लिपिबद्ध नी होवण सू होळ-होळ लुप्त होवता जाय रह्या है। दाखला सरूप अठ दो गीत दिया जाव। पै'लो 'फाग गीत' श्री बुद्धिप्रकाश पारीक (जयपुर) रो लिख्योडो है अर दूजो 'डरपो मत' स्व हीरालाल शास्त्री रो। प'लो गीत फाग री राग मे है अर दूजो बराती लुगाइया कानी सू जीमण री वखत गाईजणआळ लोकगीत री तज माथ है।

फाग गीत

भारत छोड दो अगरेजा थाक घरां पधारो रे
भारत छोड दो !

---

1 राजस्थानी शोध सस्थान, चोपासनी, जोधपुर र सग्रह सू।

जाणे कुणसा मोहरत मे थ बाजीगर वण आया रे
ऊपरली माया सा म्हाका मन पर छाया रे
भारत छोड दो !

भारत छोड दो अगरेजा थाक घरा पधारो रे
भारत छोड दो !

पकड ग्रागळो पुणचो पकडयो अब तो चोटी पकडो रे
घणी कराव ऊठ बैठ जादू की लकडी रे
भारत छोड दो !

भारत छोड दो अगरेजा थाके घरा पधारो रे
भारत छोड दो !

डरपो मत

डरपो मत !
म्है तो म्हाके ग्राया छा, डरपो मत !

बिन न्यूता ई ग्रा ही जाता
न्यूतोडा झट ग्राया छा
झूठी साचो सुणता रह्या छौ
सही सुणावा ग्राया छा
देखो कतरी पोल बढी छै
पोल मिटावा ग्राया छा
घोर अधारो फल रह्यो छ
दीवो जोवा ग्राया छां
घणी मुरदनी छाय रही छै
जडी सुघावा ग्राया छा
दिन दोपारा सोय रह्या छ
नींद उडावा ग्राया छा
डरपो मत !
म्है तो म्हाके ग्राया छा, डरपो मत !

ग्रनाघात से डरप बोहळा
निडर बणावा ग्राया छा
भूल्या भटक्या चक्कर खाय
बाट बतावा ग्राया छा

जरा धौंस सू डर जावो छो
लडत सिखावा आया छा
थ्यारमेर उदासी छाई
रगत करवा आया छा
थे म्हांका छो ईं के कारण
समझावा नें आया छा
म्हान अपणा सेवक समझो
सेवा ताई आया छां
डरपो मत !
म्है तो म्हांके आया छां, डरपो मत ![1]

स्वतंत्रता प्राप्ति र दो दशका पं'ली उण प्रजामडळीय युग मे देश मे राष्ट्रीय विचारधारा कितर प्रबळ रूप सू मोजूद ही, इणरी पुष्टि इण बात सू ई होवे के उण जमानें मे कोई पण विचारशील व्यक्ति इणसू प्रभावित हुया विना नी रेय सक्यो। उदाहरणसरुप मेवाड रा बावजी चतरसिंहजी जिसा आध्यात्मिक विचारा रा पुरुप जिणा आपर जीवण मे ईश्वर वदना र अलावा जबान माथ कदई दूजो बोल नी लाया, उणा ई मायड भोम री वदना मे अेक पद री रचना करी, जिणमे भारत रा गुणगान है—

भारत

सभी नर भारत साचो रे, सही सुख ओहिज काचो रे
घरोघर भारत वाचो रे!

भारत मे अवतार लियो नै भारत सू अणजाण
वे भारत रा पूत नहीं पण भारत रा पाषाण
भारत सू भ्रमना मिट रे भारत सू भय जाय
भारत नें भगवान बणायो सुख साचो उपगार
सभी नर

भारत यो रतनागर सागर, ईं री छेह न पार
सारा ई नर नार निबाही, वेदा रा अवतार
भारत भार उचायो सबरो, भारत भार उतार

1 गीत पच्चीसी, हीरालाल शास्त्री पृ स 48

भारत है ताई भारत रो, यो काई हाल अवार
सभी नर[1]

उण वखत जन आदोलना मे भाग लेवणिया सत्याग्रही कितरा त्यागी नै राष्ट्रीय विचारा रा हा अर वे भारत नै विदेशी सत्ता सू मुक्त करण ताई कितरा उतावळा हुयोडा हा इणरी पुष्टि कवि चद्र-भावन (जयपुर) री अेक लघु कविता सू होवै—

सत्याग्रही

नसा मे वहै छै वाहि रक्तधारा
भरी छै भुजा मे वाहि शक्ति भारी
हिया मे हिलोरा उठी वीरता की
शिवा नै बणायो जिण दुष्ट घाती
× ×
दिखादयो माया फिरगी फिदा न
भरी देशभक्ति हिया मे अमावड
महा शक्ति खेल भुजा मे सदा ही
सुवीरो अनोखा सत्याग्रही छो।[2]

इण भात प्रजामडळ युगीन काव्यधारा मे रचित काव्य घणो ओजपूण अर राष्ट्रीय भावनावा सू ओतप्रोत है। इणमे स्वदेश गौरव री पवित्र भावना है तो मायड भोम खातर मर मिटवा री तमन्ना है। इणमे त्याग अर समर्पण री उत्कट अभिलाषा है तो दुखी देशवासिया रै प्रति पूरी सहानुभूति है। राष्ट्रीय गौरव ताई स्वाभिमान री विचारधारा है तो विदेशी शासका रै प्रति आक्रोश री भावना है। इण तरै सू कुल मिळाय न ओ काव्य तत्कालीन राष्ट्रीय भावना री सही चित्रण पेश कर।

श्री उदयराज उज्वळ

गाधी युग रा राजस्थानी कविया मे श्री उदयराज उज्वळ रो नाम सिर मानीजै। यार काव्य मे प्राचीनता री परपरागत गरिमा

---

1 राजस्थानी शोध संस्थान, चोपासनी जोधपुर रै सग्रह सू।
2 कवि चद्रदत्त भावन (जयपुर) रै संग्रह सू।

है तो उणरी सागै नवीनता रो बोध ई है। वे मारवाड़ रै चारण समाज रा प्रथम उच्च शिक्षा प्राप्त व्यक्ति है तो डिंगल कवियां री छेहली कड़ी है। इणां सगळै राष्ट्र मे चालती गांधी री आंधी रा भपाटा खुद री सनिजरा दीठा है, इण कारण उण वातावरण सूं प्रभावित ई हुया है। ओ ई कारण है के इणां 'मानियै रा सोरठा', 'सुराज रा सोरठा' अर 'अहिंसा रो गीत' इत्याद राष्ट्रीयता सूं ओत-प्रोत काव्य री रचना करी है। इणरै अलावा महात्मा गांधी, प. जवाहरलाल नेहरू अर केसरीसिंह बारहठ इत्याद प्रमुख राष्ट्रीय नेतावां माथै ई ओपती कवितावां लिखी है। राष्ट्रीय विचारधारा अर तत्संबंधी काव्य रचना रै कारण इणां नै आपरै जीवण मे नुकसाण ई मोकळो भुगतणो पड़यो। थांरै हाथ सूं थापित चारण छात्रावास री बार-बार तलाशी ई लिरीजी अर सरकारी नौकरी मे रैवता थकां तरक्की सूं ई वंचित रवणो पड़यो। छतापण इणां राष्ट्रीय विचारधारा अर मायड़ भाषा राजस्थानी रै प्रति प्रेम नै जीवण लग निभायो। थांरै हाथ सूं रचित अेक सोरठै री ओळ— 'दीपै वांरा देस ज्यांरा साहित जगमगै' राजस्थानी साहित्य मे अेक आदर्श वाक्य (मोटो) बणग्यो है।

उदयराजजी रो जनम ई सन् 1885 मे मारवाड़ राज रै ऊजळा गांव मे हुयो। आप सिंढायच खांप रा चारण हा पण आपरो जनम स्थान अर जागीर रो गांव ऊजळा होवण रै कारण आपरो परिवार 'उज्वळ' उपनाम सूं चावो हुयो। इण कुटुंब री उन्नति रो सगळो श्रेय उदयराजजी र दादोसा श्री नाथूरामजी नै है। वे पोकरण ठिकाणै रा दीवाण हा। आप उच्चकोटि रा राजनीतिज्ञ अर साहित्य प्रेमी सज्जन हा। थांरा बेटा लिछमीदानजी डिंगळ रा आछा कवि हुया। उदयराजजी लिछमीदानजी री पांचवी संतान हा। सुसंस्कृत अर विद्याव्यसनी घराणै मे जनम लेवण रै कारण टाबरपणै सूं ई थांरै माथै इण वातावरण री घणो असर पड़यो अर काव्य रचना कानी थांरी रुचि निरंतर बढ़ती रही।

बी अे तांई पढाई कियां पछै आप तत्कालीन मारवाड़ राज री नौकरी मे भरती होयग्या अर ई सन् 1912 मे सरिस्तेदार रै ओहदै माथ लागग्या।

उण वखत तांई राष्ट्रीय स्तर माथै गांधी युग री सरुआत होयगी ही अर देश मे राष्ट्रीयता री भावना जोरां सूं पनपण लागगी ही।

राजस्थान मे ई सर्वश्री केसरीसिंह बारहठ, राव गोपाळसिंह खरवा अर विजयसिंह पथिक जिसा कई नामी देश भगत आप आपर ढग सू देश सेवा रै काम मे लाग्योडा हा। इण सगळै वातावरण रौ असर इण युवा कवि उदयराज र मानस माथै पडणौ सुभाविक हो। उणा राज री नौकरी मे रैवता थकाई जोधपुर मे कई सामाजिक काम काज हाथ मे लिया। तत्कालीन चारण समाज रा कई ठावा व्यक्तिया, यथा चडीदान दधवाडिया, जोरावरसिंह सौदा, मोतीलाल कीनिया अर भोपालसिंह आढा रै सहयोग सू आप जोधपुर मे चारण छात्रावास री थरपणा करी। चारण समाज न शिक्षित बणावण मे इण सस्था रौ लूठो योगदान रह्यो।

उण वखत कोटा रै सुप्रसिद्ध बारहठ परिवार रै खिलाफ ब्रिटिश सरकार राजद्रोह रा कई मुकद्मा चलाय राख्या हा। जिणा मे दिल्ली षड्यन्त्र केस, आरा हत्याकाड, बनारस हत्याकाड अर लाहौर काड प्रमुख हा। महान् देश भगत केसरीसिंह बारहठ अर वारौ पूरी परिवार ब्रिटिश सरकार री आख्या मे काटे री दाई खटक हो। इण कारण वासू सपक राखण वाळा माथै ई अग्रजी सरकार री पूरी निजर रैवती।

कवि उदयराज, केसरीसिंहजी रै त्यागी जीवण अर प्रखर व्यक्तित्व सू घणा प्रभावित हा। राष्ट्रीय विचारधारा रा पोपक होवण रै कारण वे उणा न घणी आदर री निजर सू देखता। इण कारण केसरीसिंहजी जद कदई जोधपुर कानी आवता तो चारण छात्रावास मे ई ठैरता। इण कारण इण सस्था रै सचालक उदयराजजी उज्वळ न कई मुसीवता वेठणी पडी। ई सन् 1913 मे जद केसरीसिंहजी री गिरफ्तारी हुई, जोधपुर चारण छात्रावास री ई तलाशी लिरीजी अर इणनें वद करण रा प्रयत्न हुया। उदयराजजी जद इण बात री खिलाफत करी तो वान सरकार रो कोप भाजन बणणौ पड्यो।

इण मुसीबत मे वारा की घनिष्ठ मित्र काम आया जिणसू वारी नौकरी अर सस्था दोनू कायम रैयग्या। छतापण सरकार री निजरा मे आय जावण सू वानें नौकरी मे ठेट ताई तरक्की सू वचित रैवणौ पड्यो।

उण वखत जोधपुर रियासत मे मि अे डी वर नाम रो अेक

अग्रेज अधिकारी प्रमुख न्यायाधीश र ओहद माथ काम करतो । वो उदयराजजी री क्त व्यनिष्ठा अर कार्यकुशळता सू घणो प्रभावित हो । उणे यान पदोन्नति देय'र सरिस्तेदार सू प्रोवेशनरी हाकिम बणाय दियो । पण थोडा दिना पछै जद उणने ठा पडी के वे राष्ट्रीय विचारधारा पोषक अेक चारण कवि है अर केसरीसिंहजी बारहठ रा सहयोगी है तो यान पदावनत करन पाछा सरिस्तेदार बणाय दिया । 1920 ताई अे सागण ओहदै माथ काम करता रह्या ।

ई सन् 1945 मे सरकारी नौकरी सू रिटायर हुया पछ ई वे बाईस बरसा ताई जीवता रह्या अर 7 फरवरी 1967 ने सुरगवासी हुया ।

उदयराजजी सही अर्थां मे अेक चारण कवि हा । राष्ट्र रै प्रति प्रेम, कथणी करणी मे अेकता अर निडर व्यक्तित्व यांरी प्रमुख विशेषतावा ही । त्याग, वीरता अर देश प्रेम री अठ इणा मुक्त कठ सू प्रशसा करी है, उठै देशद्रोह, कायरता अर अकमण्यता न भांडण मे ई कोई कसर नी राखी है । कवि र नातै जिकी बात यान साची अर चोखी लागी उणरी प्रशसा करण मे उणा अगाई कोताई नी करी । उदाहरण सरूप अेक कानी इणा राजपूत समाज रै वीरोचित गुणा रा वखाण किया तो दूजी कानी वारी अकमण्यता अर स्वाथ-परता खातर फटकारण मे ई कोई कसर नी राखी ।

अहिंसात्मक आदोलन रै बळ माथै मिळती सफळता न देख'र जद यारो मन इणसू प्रभावित हुयो तो इणा अहिंसा नै ई आपरै काव्य रो विषय बणायो । चारणी काव्य री परपरा सू हट'र अहिंसा री प्रशसा मे ई काव्य रचना करी । आ बात वार नवीन मानस बोध री परिचायक है । वारी 'अहिंसा' माथै लिख्योडो अेक गीत इण भात है—

अहिंसा रो गीत

अहिंसा पथ सुराज लियो, जद सत्ता हाथ समाज पडी ।
समता री चक्कर चाल है, आ भोम अनोख रग चढी ।।
अटकाणा रोडा मारग मे, घरमा अर जाता पांता सू ।
वे ई सब चूरण होव है, भारत मे भाता भाता सू ।।

घो हिंसावाद गयो अळगो, अर अहिंसावाद सु आयो है ।
दव्योड़ा मानव ऊठे है, आजमड़ी पलटो खायो है ।।

अण खड समय री चक्कर ओ, धरती पे चलतो रेव है ।
ओ मेट रोग समाजां रा, सै जणा निरोगा होवै है ।।

भारत मे चक्कर तेजो सू, ओ आज समय री चाल है ।
अटक्योड़ो आयो देरी सू, इक सार्य फोडा घाले है ।।

भगवान कृपा समझाय दियो, इण कारण उन्नति होवै है ।
समता रै मारग चालण सू, स सुख री नींदा सोव है ।।

जग माय मानवी प्रेम वधै, जुध रोकण धरती री धुन है ।
आ माया सगळी 'मोवन री, अहिंसावाद 'उदय' धिन है ।।[1]

कवि री विचारधारा अर मानस माय गाधी दर्शन री मोकळो प्रभाव रह्यो । इण बात री पुष्टि वार काव्य 'गाधीजी रा सोरठा' अर 'भानियै रा सोरठा' इत्याद सू होवै । इण रचनावा मे कवि गाधीवाद री मुक्त कठ सू प्रशसा करी है । सत्य अर अहिंसा मे आपरी आस्था प्रकट करता कवि गाधीवाद रा मोकळा वखाण किया है । इण विषय रा की सोरठा इण भात है—

गाधी जी रा सोरठा

सत पथ गाधी साज, हेर लियो हिरदो हरी ।
करणो अद्भुत काज, उणर बळ मोहन उदय ।।

आतम रो आभास, जो विरला पाव जगत ।
करणो प्रेम प्रकास, आपाणो गाधी उदय ।।

त्यागी नर तारह सतपथ देस समाज नै ।
सो प्रमाण सारह ओ गाधी देखो उदय ।।

करं न परवा कोय सेवा कर समाज री ।
साचो त्यागी सोय, ओ गाधी दीठो उदय ।।

देतो तोपा दाव, झाड बदूका झेलता ।
पाछा दिया न पाव, उण गाधी त्यागी उदय ।।

---

1 मरुवाणी (मासिक) उन्यराज उज्वळ अक, पृ स 20

आतमबळ आगेह, हिंसा बळ निरबळ हुवै ।
सो नाटक सागह, ओ गांधी करणो उदय ।।

इक त्यागी आधार, हेत किरोड़ा रो हुव ।
सत देगो ससार, ओ प्रमाण गाधी उदय ।।

बब'र तोप बदूक, उड अहिंसा आगळै ।
ओ प्रमाण अणचूक, जो गाधी देगो उदय ।।

त्याग भाव त्यागीह, सतपथ भरे समाज मे ।
गाधी बडभागीह, ओ प्रमाण देगो उदय ।।

आतम बळ री आग, सत मारग मगती सबळ ।
स्वाद जय बिन खाग, ओ गांधी करणो उदय ।।

दुनिया में देगोह, सत्याग्रह गाधी सबळ ।
ओ प्रमोद वेगोह, अनरथ मेटण हित उदय ।।[1]

गाधी जी री प्रशंसा रै ज्यू प जवाहरलाल नेहरू री तारीफ मे ई कवि 'रग जवाहर रग' शीर्षक सू कीं दूहा सोरठा री रचना करी है । अे दूहा सोरठा पडत जी रै सुरगवास पछ मरसिया रै रूप मे कह्योडा है । काव्य मे कवि री बिचारधारा उल्लेखजोग है ।

रग जवाहर रग

नेहरू सम नरदेह, विरला विप वसु धरा ।
जग सह लोग झुरेह, रे धोरी जातो रह्यो ।।

सकट हेत स्वराज रै, सहिया गाधी सग ।
भारत हित त्यागी भयो, रग जवाहर रग ।।

साहस रो अणथग समद, आग त्याग अभग ।
माता हित करगो समर, रग जवाहर रग ।।

साझो मात सुततरी, जुड सुराज र जग ।
द्रिढ करगो अड देस रो, रग जवाहर रग ।।

कागरेस सबळो करी, गुण ऊजळ जळ गग ।
सींची जडा स्वराज री, रग जवाहर रग ।।

1 मरवाण (मासिक), उदयराज उज्वळ अक प स 32

भारत री शोभा भूषण, आणी ऊच अलग ।
सजगो सबळ स्वराज न, रग जवाहर रग ।।

गिण सिरोमणी जगत मे, राजनीति रै रग ।
प्रबळ पच हुयगो प्रियो, रग जवाहर रग ।।

रे धोरी नर जगत रा, भया सकळ मन भग ।
ओ प्रभाव करगो इळा, रग जवाहर रग ।।

जडियाँ जमो स्वराज री, पडस नीति प्रसग ।
ऊचो भारत आणियो, रग जवाहर रग ।।

सेवा की ससार री, जग मे रोकण जग ।
प्रीतो मानव पाळगो, रग जवाहर रग ।।[1]

अणुबव रोकण इळा अणयग करणा अग ।
मानव हित करगो मही, रग जवाहर रग ।।

भुरकी नवी भमूत री, देण विभूति अग ।
भसम होय करगो भलो, रग जवाहर रग ।।

जनम भड विरला जगत, जेहा वीर जवार ।
नर भूपण जातो रह्यो, सोक सकळ ससार ।।

राष्ट्रीय विचारधारा रा प्रबळ पोपक होवण सू सगळै राष्ट्रीय नेतावा र प्रति कवि रो लगाव हो । वारी त्यागी जीवण अर देश सेवा मू वे घणा प्रभावित हा । इण कारण उणा सगळै राष्ट्रीय नेतावा री प्रशसा मे श्रद्धा सुमन चढाया है । महान देश भगत केसरीसिंह बारहठ रै प्रति तो वारी अथाग श्रद्धा ही, जिणरो वर्णन पूव प्रसग मे आयग्यो है ।

'भानियै रा सोरठा' राष्ट्रीय भावनावा सू ओतप्रोत कवि री अेक दीघ रचना है । इणमे कवि स्वतत्रता सग्राम रै सगळै परिवेश नै समेटता थका राष्ट्रीय विचारधारा न ओपतै ढग सू उजागर करी है । मूळ रूप सू ओ सगळो काव्य उद्बोधनात्मक है । इणमे तत्कालीन राष्ट्रीय नेतावा रै जीवण रा ऊजळा दाखला देवता थका भारतवासिया नै राष्ट्रहित में मरमिटण री प्रेरणा दिरीजी है—

---

1 मरुवाणी (मासिक), उदयराज उज्वळ अक पृ स 13

जोव्या सो जीव्याह, मरणहार मर जायसी ।
केसरिया करियाह, भारत सगळ भानिया ।।

श्रायो समद उफाण, को हिंसा दावण कर ।
राम अने रहमान, भारत भेळा भानिया ।।

भारतीय जन समुद्र मे उफाण आवणो सुभाविक है, कारण के भारतमाता परतन्त्रता री वेडिया मे बधी पडी है । कवि भारत री इण दशा रो प्राकृतिक उपमाना रै माध्यम सू ओपतो शब्द चित्र खाच्यो है—

धवळो पडगो धाप, पिंड हिमाळ पीघळ ।
आंसू झार आप, भारत दुखियो भानिया ।।

रूखडला रोवत, झड पान आंसू झडा ।
कळी कळी फूटत, भारत दुखियो भानिया ।।

स्वतन्त्रता प्राप्ति सू दो बरसा पैंली 1945 मे लिख्योडे इण सोरठा रै रचना बाबत अेक न्यारी राम कथा है, जिणन कवि रचना रै अत मे खुद र शब्दा मे इण भात लिखी है के जिण भात जनकवि कृपाराम चारण आपर स्वामी भक्त सेवक राजिया री सेवा सू राजी होय'र 'राजिया रा सोरठा' री रचना करी ही उणी'ज भात उदयराजजी ई आपरै सामधरमी सेवक भानिय रै नाम सू सोरठा री रचना करी है । तीन पीढी ताई लगोलग सेवा करण सू प्रसन्न होय न कवि भानिया नै ससार मे अमर करण री मशा सू इण काव्य री रचना करी है । कवि भानिया न सबोधित करत खुलै शब्दा मे कह्यो है के साच चारण कवि री कदेई अेहळी नी जावै । कारण के अेक कवि री तुलना मे ससार रो कोई दूजो दातार नी होय सक । कवि चाव तो कोई रो नाम काव्य रै माध्यम सू अमर कर सक । इण भात उदयराजजी न पक्को भरोसो है के वार काव्य र माध्यम [illegible] भानियै रो नाम लोक मानस मे निश्चित रूप सू कायम रैय जासी । रचना रा छेहला सोरठा इण भात है—

थारी पीढो तीन, म्हारी पीढो तीन री ।
केती सेवा कीन, भलपण सेतो भानिया ।।

जाय न अेहली जाय, रे चारण री चाकरी ।
कवि समो नह कोय, भव मे दाता भानिया ।।

कव इलोळ रै काम, उदयराज ऊजळ भखै ।
नेहच थारो नाम, भारत रहसी भानिया ।।

भ्रो सोरठामय सपूण काव्य 'उज्वल ग्रथावली' रै माध्यम सू प्रकाशित है । भारतीय स्वतत्रता सग्राम मे कवि रै योगदान न समझण वास्तै सगळै सोरठा रो भ्रध्ययन जरूरी है । कवि खुद गाधीयुग रै स्वतत्रता भ्रादोलन रा ठेठ प्रारम्भ सू ई चश्मदीद गवाह रह्या है । इण कारण वारी कथणी मे स्वानुभव भ्रर सत्यता रो बळ है । ऊपर किये उल्लेख मुजब इण रचना रो निर्माण ई सन् 1945 मे हुयो । इणरो मतलब भ्रो के इण सोरठा री विषयवस्तु व्यापक है, जिणमे सगळै स्वतत्रता सग्राम रो इतिहास समाविष्ट होय जावै । इण कारण लोकमान्य तिलक भ्रर महात्मा गाधी सू लगाय न ठेट सुभाष बोस ताई राष्ट्रीय कायकलापा रो वर्णन इण सोरठा मे भ्रायग्यो है ।

भानिय रा सोरठा

रटगो मत्र स्वराज, बाळकिसन तपसी तिलक ।
उणनै सधियो भ्राज, भारत सगळ भानिया ।

पाढण मानव प्रेम, साझण देश सुतत री ।
भ्रायो गांधी भ्रेम, भारत तारण भानिया ।।

धर मानव हित धेय, भ्रस्त्र भ्रहिसा भ्रासरै ।
इळ पर बीर भ्रजेय, भारत गाधी भानिया ।।

सोरा सात समद, मीठा करण मानवी ।
फिरगा वाळो फद, भयो भ्रचभो भानिया ।।

माता हित मरणोह, मोटो तीरथ मानणो ।
भाव इसो भरणोह, भारत गाधी भानिया ।।

हिंसा जासी हार, भेण भ्रहिसा भ्रागळै ।
सत मितर ससार, भेजै गांधी भानिया ।।

गाधी री गुजार, नेहरू री ताडो त्रिभै ।
भारत न कीं भार, भांजण बधण भानिया ।।

करसां री किलकार, हूकर मजदूरा हली ।
गांधी री ललकार, भारत उलटै भानिया ।।

गांधी गिरनारीह, माडी भारत मायनैं ।
धुलिया फरण धारीह, मूला मानव भानिया ।।

पडतो धाक प्रचड, हिंसा वाळो हिंद मे ।
गिटगो जिको घमड, भारत गांधी भानिया ।।

परतत पाप पसग, भारत री दुरगत भई ।
गांधी लावै गग, भली सुततर भानिया ।।

अयग अहिंसा अग, भवसागर खळको भलो ।
गांधी लाव गग, भागीरथ जिम भानिया ।।

ओ निकळक अवतार, मानव कळक मिटावणो ।
सत्य अहिंसा सार, भारत गांधी भानिया ।।

ब्रह्म रूप रै भाव, गांधी री वाणी गुणो ।
पास कियो प्रस्ताव, भारत छोडो भानिया ।।

डोकर रै भुजदड, श्रेण तपोबळ आसरै ।
पलट तेग प्रचड, भारत काया भानिया ।।

गांधी ज्ञान गभीर, आतम भास ईसवर ।
वसुधा तारण वीर, भारत आयो भानिया ।।

पडी मात परतत, गांधी जुध कीधा गहन ।
परम अहिंसा पथ, भारत जीत भानिया ।।

पग पग जेळा पाय, गांधी री ऊमर गई ।
डोकर देय छुडाय भारत माता भानिया ।।

फरता घम कदक, वपू इसो फातो कियो ।
दिल गांधी री देख, भयो भरोसो भानिया ।।

जादू लकडी जोर, परततर भारत पडी ।
तप गांधी र तोर, भचकै ऊठी भानिया ।

पूगी समदर पार, सीता समै स्वतत्रता ।
तप बळ गांधी तार, भारत लाव भानिया ।।

असुरा लई उडाय सीता रूप स्वतत्रता ।
रे मोहन रघुराय, भारत लावै भानिया ।

हाली गग हिलोल, पाप गळण परतत री ।
छिलै सुततर छोळ, भुज गांधी र भानिया ।।

वीणा री झणकार, सुर मानव मोह्या सकल ।
गाधी री गु जार, भाज ग्रासुर भानिया ।।

गावै सतगुण गीत, मीठी वाणी मात भो ।
परतत पाप पलीत, भारत रहै न भानिया ।।

नायण काळो नाग, दुख मेटण निज देस रो ।
ग्रायो घण ग्रनुराग, भारत मोहन भानिया ।।

इण गाधी री वार, जगदीसर दीधो जनम ।
करी क्रिया किरतार, भारत सेवो भानिया ।।

× ×

ग्रो ग्रालिम ग्राजाद ग्रो मडण इसलाम रो ।
ग्रायो ग्रादम ग्राद, भारत तारण भानिया ।।

ग्रब्दुल गान गफार, थामो हिंदुस्तान रो ।
इण तपसी ग्राधार, भारत निभयो भानिया ।।

पट्ट सरदार पटेल, प्रबल लड रण पाधर ।
ठाडो ग्ररिया ठेल, भारत गू जै भानिया ।।

जय जीवण राजेन्द्र, चमत्कार थर चानणो ।
निरमल त्याग नरेन्द्र, भारत सेवै भानिया ।।

ग्रासफग्रली ग्रमोल, इला रतन इसलाम रो ।
हाल सवा हरोल, भारत तारण भानिया ।।

सेव देस समाज, ग्रो राजा गोपालचर ।
ग्रायो चाणक ग्राज, भारत जाणक भानिया ।।

ग्रो बिडलो घनश्याम, है गौरव हिंदवाण रो ।
करण देसहित काज, भगवत रचियो भानिया ।।

जमनादास बजाज, धनकुबेर मडण धरा ।
करगो उत्तम काज, भारत सेवा भानिया ।।

× ×

पडत घणो प्रवीण, साहस भरण समाज मे ।
लोक सेव लवलीण, भारत नेहरु भानिया ।।

लगो जवाहरलाल, त्यागी भारत तारवा ।
जगी सुततर झाल, भारत घर घर भानिया ।।

ग्रा ज्वाळा ग्राकास, पाताळां लग पासरी ।
प्रजळ परतत पास, भारत वाळो भानिया ।।

भारत देश भुजग, नेहरू री पूगो नचै ।
सेसनाग सरवग, भारी जाग्यो भानिया ।।

भरै निरकुश भाव, नेहरू री वाणी नरां ।
पर उपकारी पाव, भारी सगतो भानिया ।।

ज्ञानी तत्व गभीर, समझ गत ससार री ।
रट जवाहर वीर, भारत जीत भानिया ।।

करी जवाहर कूत, हिंद सेना री हाकडं ।
तारो वीर सपूत, भारत नेहरू भानिया ।।

ग्रा परलं री ग्राग, जावै जठै जवाहरी ।
भारत परतत भाग, भसम करै रे भानिया ।।

नेहरू गरुड निसग, उडस भारत ऊपरा ।
परसत पाप पतग, भागै दिस दिस भानिया ।।

कमला वालो कत, उथपै माया ग्रासुरी ।
कारण ग्रेण करत, भारत रो हित भानिया ।।

ग्रे विष फैल ग्रपार, भूमि न करदे भसम ।
है इक जारणहार भारत गाधी भानिया ।।

है नेहरू हडवत, समपण लोकसजीवणी ।
वीर जती बलवत, भारत तारण भानिया ।।

× ×

ग्रमरीका मे ग्राज, विजय करी लख्मी विजय ।
कर देस हित काज, भारत गौरव भानिया ।।

स्त्री शिक्षा रो सार, ग्रो दीस घर ग्रावगो ।
भारत रो दुख भार, भाज देवी भानिया ।।

ग्राजय लिछमी ग्राज, भूमडल परगट भई ।
सगला देस समाज, भया सजीवण भानिया ।।

लिछमी जाय पताल, शोधी वैन स्वतत्रता ।
ग्राव घरणी उताल, भारत दोनू भानिया ।।

पूगी घर पाताल, उथपण माया ग्रासुरी ।
विजय लख्मी सहजाल, भसम कियो रे भानिया ।।

हिंद सेना संग हल्ल, लिछमी जुध दूजो लडी ।
है जिणरो हल चल्ल, भारत सगळ भानिया ।।

खडगधार रिण खेत, लिछमी जुध चवडे लडी ।
देवो रख न देत, मया नचींता भानिया ।।

है पूंजी हिंदवाण, सगतो रूप सरोजणी ।
कियो सुवस्व कुरवाण, भारत कारण भानिया ।।

साहस पूर समद, सत्यवती देवी सिर ।
हुयगी कारण हिंद, मूयण माता भानिया ।।

अरुणाजोत अखड, भारत भूमी भळहळै ।
परतंतर पाखंड, भव न रहसी भानिया ।।

अरुणा कियो उजास, ऊगतै आदीत री ।
ओ चमक आकास, भारत रातो भानिया ।।

जीवण सगळो जाय, कमळा री हिंद कारण ।
घिनो चटोपाध्याय, भारत अजस भानिया ।।

× ×

सूरो बोस सुभाष, मत प्रेम भीनो मुद ।
करगो घणो प्रकास, भूमंडळ मे भानिया ।।

सूर करी सुभाष, हाथा सेना हिंद री ।
जागी अगनी जास, भारत बुझ न भानिया ।।

जकडी परतंत जोस, यकडी माता लडथडी ।
बेट पकडी बोस, भारत लकडी भानिया ।।

साच वीर सुभाष, माता हित रण मडियो ।
जस घर घर घण जास, भारत गाव भानिया ।।

वीर बोस सुभाष, जग रचियो जनमेजयो ।
उड उड पडै आकास, भारत डसण भानिया ।।

× ×

लीगी हठ मे लाग, हाण करै हिंदवाण री ।
त्रिण भर कियो न त्याग, भावो रहै न भानिया ।।

ले केता आलाप, तीसा पाकिस्तान रा ।
पडै कुसपा पाप, भारत विलखो भानिया ।।

देस हित बळिदान, भारत छत्री भूलगा ।
सह घटणो सनमान, भाव घटायो भानिया ।।

इण गांधी आधार, खाग अहिंसा खेलवा ।
परगटिया अणपार, भारत छत्री भानिया ।।

जूना छत्री जाय, मय स्वारथ छाना भया ।
अब छत्री अम आय, भरणी पिरजा भानिया ।।

तप तप सकट ताप, कागरेस सुवरण कळी ।
निकळक भई निपाप, भारत दीप भानिया ।।

कांगरेस कामात, भारत काया पालट ।
घर सगळी घडकात, भूकप आसी भानिया ।।

इण भूकप आगह, हिंसा उडसी हिव सू ।
जग मे धुन जागह, भाव अहिंसा भानिया ।।

धींगोधरण दाबीह, गहरी जड ऊडी गई ।
लहरावण लागीह, भारत ज्वाळा भानिया ।।

आई समद इलोळ, बायण हारा बूहडी ।
छिलै सुततर छोळ, भारत पिरजा भानिया ।।

रटता दुसमण राग, कागरेस मिटणी कळा ।
आ दबियोडी आग, भारत भभक भानिया ।।

× ×

हली लंण हिंदवाण, सीता जेम स्वतत्रता ।
दे डका गजदाण, भिळसी लका भानिया ।।

आयो समद उफांण, की हिंसा दावण करै ।
राम अने रहमान, भारत भेळा भानिया ।।

कोडी दळ र कोप, कजर नह जीव कद ।
रुपी प्रजा पगरोप, भारत जीत भानिया ।।

सहिया कं बनवास, सीता देस स्वतत्रता ।
पूरण कळा प्रकास, भारत आव भानिया ।।

भळहळ ऊग भाण, कळा कोण रोकण कर ।
व्हे स्वतत्र हिंदवाण, भरै बाथ कुण भानिया ।।

भाखर दुख भारीह, झरणा रा आसू झरै ।
धुन अवचळ धारीह, भारत दुखियो भानिया ।।

मनो डिगं गिरमेर, आज महोदध ऊलटै ।
लगी सुतंतर लेहर, भारत उन्मत भानिया ।।

साहस वधं समद, दय प्राण हित देस रे ।
फिरगा चाळो फद, भगवत मेटं भानिया ।।

त्याग तपोबळ तेज, साचै हेत समाज रे ।
सदा विज रा सेज, भगवत देव भानिया ।।

जेळा बेटा जाय, मात रो सकट मिट ।
अेहा छत्री श्राय, भारत चमक भानिया ।।

× × ×

नायक हो नवरोज, दादा भाई देस मे ।
हैं जिण पाण हनोज, भारत सगतो भानिया

नर गाधी कोनाह, मन स्वतत्र भारत मही ।
वीरासन भीनाह, भार मिटाव भानिया ।।

गाधी गिरनारीह, छेडो काढण छावडो ।
धुजता फणधारीह भभकं काळा भानिया ।।

पूरण पडं प्रभाव, सतगुण रो ससार मे ।
देह धार दरसाव, भारत गाधी भानिया ।।

गाधी धाथा घात, ऊचा किया अछूत नं ।
सत ऊजळ सरसात, भारत रो मुख भानिया

मन हलं न मूळ, उडगी माया आसुरी ।
इण गाधी अनुकूळ, भारत बीसं भानिया ।।

साभ बोझ न सेस, अधरम री घर ऊपरां ।
इण गाधी आदेस, भार मिटाव भानिया ।।

आ वाणी आकास, गाधी री वाणी गिणो ।
जाय सुतंतर जास, भारत नहच भानिया ।।

उडती दीस आग, स्रोता री आतम सुणै ।
रटै विरगी राग, भारत नेहरु भानिया ।।

सिंधु राग सुणाय, रग पौरस छायो रसा ।
इण नेहरु यस आय, भारत घूम भानिया ।।

गांधी दियो जगाय, सत मारग भारत सकळ ।
ऊचो आज उठाय, भुजबळ नेहरु भानिया ।।

करी जवाहर कूत, हिंद सेना री हाकड ।
तारी वीर सपूत, भारत नेहरू भानिया ।।

लगो जवाहरलाल, त्यागी भारत तारवा ।
जगी सुतंतर झाल, भारत घर घर भानिया ।।

आ ज्वाला आकास, पाताळां लग पासरी ।
प्रजळै परतत पास, भारतवालो भानिया ।।

जाए सकल जहान, नर अएमोलक नीपनों ।
नेहरू रो सनमान, भू मंडल मे भानिया ।।

× ×

विजय लक्ष्मी अएपार, दुख पाया हित देस रै ।
सो गूं जै संसार, भारत तारएा भानिया ।।

भ्रात बैन इएा भांत, विजय लक्ष्मी जवाहर जिसा ।
मिनखा दे भ्रामात, भव मे विरला भानिया ।।

कीनो देस प्रकास, पित मोती ज्योति प्रबल ।
वस सपूत विकास, भूमंडल में भानिया ।।

करता दे भ्रामात, रधिया रीझ'र राघव ।
भगवत बल'र भ्रात, भारत तारएा भानिया ।।

मारएा वड'र मुंड, पूगी धर पताल मे ।
विजय लक्ष्मी ब्रह्मंड, भुजबल तोलै भानिया ।।

तपसएा वधत तोर, भारज कुल री आभरण ।
करदे इमरत कोर, भारत सेवा भानिया ।।

मिल हिन्दू, इस्लाम, सिक्ख, जैन, बुध पारसी ।
कांगरेस रा काम, भारत तारएा भानिया ।।[1]

इएा सोरठा मे आ बात सुभट लखावै के कवि र काव्य मे वीर पूजा री भावना प्रमुख रूप सू है । आ बात धार माथ प्राचीन डिंगल साहित्य र प्रभाव न प्रगट कर । पएा कवि सुसंस्कृत नवीन बोध रा ज्ञाता अर राष्ट्रीय विचारधारा रा पोषक होवएा र कारएा वीर-रसात्मक काव्य मे ई धारा पात्र गांधी, जवाहर अर सुभाष है । इएा पात्रां अंग्रेजा र खिलाफ लडाई मे परंपरागत अस्त्र शस्त्र काम मे

---

1 उज्जळ प्र थावली, भानियै रा सोरठा उदयराज उज्जळ ।

नी लिया तो कवि री वर्णन शैली अर विषय प्रतिपादन ई परंपरागत कोनी। इण सग्राम मे नी शेषनाग मायो धूणे अर नी रगत रा पड-नाळा वैवे। नी घोडा री टापा सू धरती कपायमान होवै अर नी हाथिया रे पगा सू उडती खेह सू सूरज ढकीजे। नी जोगणिया रगत रा खप्पर भरे अर नी भूतनाथ मु डमाळ धारण करे। विषयवस्तु नु वी होवण सू प्राचीन काव्य परिपाटी रो त्याग करने नु वी अर मौलिक शैली मे नवीन उपमाना रे सागै सरल भाषा मे स्वतत्रता सग्राम रो वर्णन कियो है। इण भात वीरता रो प्राचीन मापदड कवि री रचनावा मे नु व रूप मे प्रगट हुयो है।

इण युग मे जनम लेवण रै कारण कवि नै देश री तत्कालीन परिस्थितिया अर समस्यावा री ऊडी जाणकारी ही। ओ ई कारण हो के इणा गाधीजी रे सत्य अहिंसा इत्याद सिद्धाता अर कुटीर उद्योग, अछूतोद्धार इत्याद नीतिया रो पूरो समथन कियो है। इण वाता र प्रचार प्रसार खातर मोकळी काव्य रचना करी है।

उदयराजजी स्वतत्रता प्राप्ति पछै बीस बरसा ताई जीवता रह्या। इण अवधि मे जिको वातावरण वानै निजर आयो, अेक साच कवि रै नातै उणरो वणन ई उणा निडरपणै सू कियो है। 'सुराज रा सोरठा' इण प्रसग माथ लिख्योडी वा री प्रमुख काव्य रचना है। देश मे व्याप्त भ्रष्टाचार, पक्षपात अर स्वाथ री भावना सू दुखी होय'र उणा साफ शब्दा मे देश वासिया न चेतावणी दीधी है के देश जे इणी'ज मारग चालतो रह्यो तो आ मू घ मोल सू आयोडी स्वतत्रता खतरै में पड जासी। कवि आपरी रचना र सरुपात मे तो उण अबखी परिस्थितिया रो वणन कियो है जिणा रो मुकाबळो करन स्वतत्रता कितरी दोरी मिळी। इणरे पछै उण कमिया खामिया अर बुराइया रो वर्णन करै जिणा र कायम रवण सू भविष्य मे स्वतत्रता खतरै मे ई पड सकै।

सुराज रा सोरठा

बीज तिलक बोयोह सत जळ गाधी सींचियो।
अब गहरो होयोह, ओ सुराज सुरतरु उदय।।

सुरतरु रूप सुराज त्याग पाण पनप तिको।
सपत सकळ समाज, ओ करसी भारत उदय।।

कांगरेस कामात, अेक भाव भारत हुयो ।
सत्याग्रह रै साथ, ओ सुराज आयो उदय ।।

दिल्ली र दरबार, सत्ता मे त्यागी सिरै ।
सुधरै सगत सार, ओ सुराज बाळक उदय ।।

राजेंदर तप त्याग, पोख मिळ सत रो प्रबळ ।
रमै सतोगुण राग, ओ सुराज बाळक उदय ।।

राधाकृष्णन रग, रे चाढ मेदात रो ।
पावै ज्ञान प्रसग, ओ सुराज बाळक उदय ।।

देख देख फिर फिर देस, प्रांता मे रमतो फिर ।
लेय न अवगुण लेस, ओ सुराज बाळक उदय ।।[1]

× ×

प्रांता मे पावैह, अवगुण सत्ता मे हुतो ।
उर चिंता आवह ओ सुराज निबळो उदय ।।

बधगो भ्रष्टाचार, दिन दिन भारत देस मे ।
है सत जीवणहार, इम सुराज निबळो उदय ।।

त्याग भाव थाकह तरवर सत्ता मे तिसू ।
है हाक वाकह, ओ सुराज बाळक उदय ।।

बिना त्याग री सार, घुसगा सत्ता मे घणा ।
करणो हाणीकार, ओ सुराज बिलखै उदय ।।

स्वारथ रोग सजाय, घिरग्या सत्ता मे घुळे ।
उणरी दुरगध आय, ओ सुराज बिलख उदय ।।

बिना त्याग वालाह, सत्ता मे बठग्या शलस ।
कर काम कालाह, ओ सुराज बिलख उदय ।।

इण भात कविवर उदयराजजी उज्वळ री सगळी काव्य उद्बोधनात्मक अर राष्ट्रीय भावनावा सू ओतप्रोत है । भाषा अति सरल अर बोधगम्य है । उणा प्राचीन काव्य परपरा मुजब कठण अर अबखी शब्दावळी रो प्रयोग नी करने इसी सरल अर प्रचळित शब्दावळी काम मे लीवी है जिणन सगळा आसानी सू समझ सकै । अठा ताई के प्रचारात्मक दीठ सू लोकगीता री धुना माथै ई की गीत

1 मरुवाणी (मासिक) उदयराज उज्वळ अक, पृ स 20

लिख्या है। दाखला सरूप राजस्थानी भाषा रै प्रचार प्रसार वास्तै लिख्योडो वारो 'फाग रो गीत' घणो चावो है।

दूहा अर सोरठा रै अलावा शास्त्रीय छंदा मे उणा छप्पय अर गीत रो प्रयोग ई कियो है। डिंगल गीता मे 'साणोर' अर 'सावझडो' की सरल गिणीजै। इण कारण इणा घणकरा अे ई गीत लिख्या है। परपरागत चारण काव्य री आछी जाणकारी होवण सू यारो शब्दचयन घणो ओपतो अर फबतो है।

श्री गणेशीलाल व्यास 'उस्ताद'

गाधी युग मे जिण राजस्थानी कविया स्वतत्रता सग्राम मे सक्रिय रूप सू भाग लियो वा मे श्री गणेशीलाल व्यास उस्ताद प्रमुख है। यारो पूरो जीवण सघष री अेक लम्बी गाथा है। ससार मे इसा लोग कम ई मिळै ज्यारी कथणी अर करणी मे कोई फरक नी होवै। उस्ताद वा लोगा मे सू अेक हा। इणा जे की आपरी जबान सू कह्यो वो खुद रै जीवण मे करन बतायो। ओ ई कारण है के वान जीवण भर राज अर समाज सू सघष करणो पड्यो।

उस्ताद रै जीवण रा दो ऊजळा पख है। अेक स्वतत्रता सेनानी रै रूप मे अर दूजो अेक जागरूक जनकवि र रूप मे। दोनू पख इतरा ऊजळा है के कठई काळख री छाट ई निंग नी आवै। वारो चरित्र इतरो उदात्त अर निमळ है के कोई वारै कानी आगी आगळी करण री हिम्मत नी कर सक।

उणा लोकनायक जयनारायण व्यास रै सग्रोडै रैयन स्वतत्रता सग्राम मे भाग लियो। वे व्यासजी र जूना अर जाणीता सहयोगिया मे सू अेक हा। जोधपुर रियासत मे जद लोक परिषद री थरपणा हुई तो उस्ताद उणरै सस्थापक सदस्या मे प्रमुख व्यक्ति हा। इण कारण वान रियासती जुल्मा री डट नै मुकाबलो करणो पड्यो। सरुपात मे शासन री नाराजगी र कारण जरायमपेशा लोगा र सागै पुलिस थाणा मे जाय'र रात री वखत बरसा लग हाजरी देवणी पडी। बरसा लग जेळ मे ई रवणो पड्यो अर कई जुल्म सहन करणा पडया। पण इण वीर स्वतत्रता सेनानी सगळा कष्ट घणी हिम्मत साग सहन करया।

रियासती आदोलन मे भाग लेवण रै अलावा महात्मा गाधी री पुकार माथै इणा सत्याग्रह आदोलन मे ई घण जोश साग भाग लियो

अर कई बार जेळ भुगती । इण भात यारो जीवण अेक साच स्वतन्त्रता सेनानी री जीवत गाथा है ।

पण यांरै व्यक्तित्व रो दूजोडो पख अेक जागरूक जनकवि रै रूप मे इणसू ई प्रखर है । इण हिंदी, उर्दू अर राजस्थानी तीनू भापावा मे काव्य रचना करी है । पण यांरी राजस्थानी अभिव्यक्ति इतरी सबळी अर सचोट है के उणरो कोई मुकाबलो कोनीं । राजस्थानी भाषा तो वार कठ मे घुळी अर जीवण में रळीमिळी ही । इण कारण मायड भाषा मे रचित वारो काव्य घणो प्रेरणादाई अर सबळो है । इण काव्य र पाण ई उस्ताद 'जनकवि' रै रूप मे चावा हुया ।

जिसो त्यागपूर्ण वारो जीवण हो, विसो ई ओजपूर्ण वारो काव्य है । उस्ताद रै वास्तै काव्य रचना वाग्‌विलास री वस्तु नीं होय'र जीवण री अेक अनिवार्यता ही । यारै काव्य में उळझाव, भटकाव के कुठा जिसो कोई फालतू तत्व नी है । इण काव्य में सीधौ मन माथै असर करण री क्षमता है । ओ काव्य उण प्रचड वायु प्रवाह रै उनमान है जिको झपाटा देवतो जन जन न झकझोर नाखै । आदर्शां अर सिद्धाता खातर जूझ'र मर मिटण री प्रेरणा देव ।

कवि न आपरी अभिव्यक्ति मायै घणी आस्या है, अथाग आत्म-विश्वास है । उणन पक्को भरोसो है के उणरी आ वाणी अमर हुय जासी अर जन जन रै कठ मे वस जासी—

आ जनकवि री जुगवाणी, आ कदैन चुप रह जाणी
आ चोट लग्या चमक है, तिरसा पेटा दमकै है
गायक इक दिन मिट जासी, पण इसडा गीत बणासी
जन जन र कठां रमसी पीढी दर पीढी गासी ।

कवि रै जीवण मूल्या री लेखोजोखो कविता री इण ओळिया मे आय जाव । पण इणरा मम न समझण सारू कवि री जीवण यात्रा कानी ई निजर नाखणी जरूरी । वारी राष्ट्रीय कवितावा न वारी जीवण यात्रा रै सदभ मे देख्या सू ई वारो महत्व आछो तरिया आकीज सकै । कारण के वारी काव्य यात्रा ई वारी जीवण यात्रा साग आग वढती निगै आव ।

उस्ताद री जनम इस वखत मे हुयो जद आख देश मे गाधी री आधी पूरै वेग सागै चालै ही । देश रो कोई भाग उणसू बच्योडो



श्री गणेशीलाल व्यास 'उस्ताद'

नी हो। देशी रियासता मे जन जागृति थोडी मोडी आई पण गाधीजी रै देशव्यापी आदोलना रो असर छेवट वारै माथै ई पड्यो। रियासती जनता दोवडी-तेवाडी गुलामी मे दिन वितावती अनेकू जुल्मा सू ग्रस्त ही। विजयसिंह पथिक जिसै कमठ कार्यकर्ता जद राजस्थान न आपरो कमक्षेत्र वणायो तो गाधीजी रो ध्यान ई रियासती प्रजा री दुदशा कानी गयो। इणरै पछै काग्रेस देशी रियासता कानी ध्यान दियो अर उणा वास्तै की कायक्रम तै किया।

इणर मुजब ई जोधपुर रियासत मे ई सन् 1938 मे लोक परिपद री थरपणा हुई। उस्ताद जयनारायण व्यास सागै लोक परिपद री थरपणा मे प्रमुख रूप सू भाग लियो।

पण जिण परिस्थितिया र कारण वे जनकवि रै रूप मे जनता रै मू डाग आया, वानै जाणण वास्तै वारै 1938 रै पैली रै जीवण माथै अेक निजर नाखणी पडसी। इण वात नै तकदीर री अेक विडवना ई कैवणी पडसी के जिण सामती व्यवस्था री उणा जीवण लग विरोध कियो, जीवण री प्रारभ वानै उण सामती व्यवस्था मे ई अेक ठिकाणै मे कामदार री नोकरी सू करणो पड्यो। स्वतनता सेनानी माणकलाल वर्मा अर मोतीलाल तेजावत साग पण सागण आ ई वात हुई ही। पण इण सगळा न ठिकाणा री नोकरिया सू असलियत देखण री मोको मिळग्यो। उस्ताद रै वास्तै ई नोकरी रो ओ प्रारभिक अनुभव घणो उपयोगी रह्यो। इण अनुभव सू ई वानै कवि बणवा री प्रेरणा मिळी। ठिकाणै री नौकरी मे रवता थका जद वान दुखी गावठी जनता र साग रवण री मौको मिळ्यो तो वान वारी असली हालत री पतो लाग्यो। सामती जुल्मा न देख'र उस्ताद रो सवेदनशीळ मन द्रवित होयग्यो। उणा इण प्रसग मे कई कविताबा री रचना करी। इणा मे ग्रामीण जनता री दुदशा अर सामती जुल्मा रो सागोपाग वणन मिळै। इणी'ज भात री अेक कविता मरधर माय' मे अेक किसान, मायड भोम नै कष्टा सू उवारण ताई अरज कर—

मरुधर माय

घोणती सुणजो मरधर माय, थोडी दया चित लाय
दुखिया री करजो थ सहाय, म्हारो हेलो सुणोजो मोठी माय

धानडो निपजावां म्हे तो, डील न सुलाय
मरतोड़ा टाबरिया ताई, करां हाय हाय

सियाळ उन्हाळे राखा, मन मे हुलास
घणो वावा वाजरिया, मोकळो कपास

तोई फाटा चींथरा सू, गुजारो करा
ठड माहे ठरता मरता, बिना मोत ई मरा

ठीकरा ग्रडाणा, बाजां घर रा धणी
भूखां मरता ग्राल्या धसगो, टाबरियां तणी

सोनै हदी चिड़िया सू, सूनौ होयग्यो देस
बणिया र भोग लाग, करसा हदा केस

घर री धणियाणी नैं, मिळ नहीं चोर
फाटग्या धावळिया, राल्या हुयगी लीर

सेठजी लगायी नहीं, हळवाणी र हाथ
सेठाणीजी वार निकळ, सेज गाडघा साथ

खाय पीय लारै लागी, रावळ री वेठ
रोट्या रा देवाळ हुयग्या, हिंडोळां सू हेठ

खेतड़ा जोत न कोई, भरण न गुण
ग्रे वारूडा पीव न, माटा मारूडा सुण

निकामा, निठल्ला बठ्या, ठकराया कर
रोटिया देवाळ करसा, भूख सू मर

म्हारी मीठी माय म्हान मारग बताय
सरणागत ग्राया री, दुख दाळद मिटाय ।।[1]

सामती व्यवस्था मे नौकरी करता उस्ताद नै अेक लाभ ग्रो ई मिळ्यो के वान गावडा मे रैवता थका ग्रामीणा सागै सीधो सपक राखण रो ग्रवसर मिळ्यो ग्रर इणसू वारो शब्द ज्ञान घणो विस्तृत होयग्यो । वारी राजस्थानी भाषा र मूळ शब्दा री पकड गेहरी होयगी । ग्रो ई कारण है के वारी कवितावा मे शब्द चयन घणी

1 मरुवाणी मासिक जनकवि उस्ताद अक पृ ग्र 29

उच्च कोटि रो है। इणसू वानै आपरा मनोभाव प्रगट करण मे आसानी रही।

'वारै काव्य मे जठै अेक कानी लाजती, रिडमल, उदगल, रयड अर विलाला इत्याद प्राचीन परिपाटी रा शब्द वारै अैतिहासिक अध्ययन नै उजागर करै, उठै कमतरिया, अणुगत, जनभावी, भेळप अर मानखो इत्याद आधुनिक नवीन बोध रा शब्द वारै नवयुगीन सपक नै प्रगट करै। कोमलकात पदावली रो सिरजण ई कवि खूब कियो है। वारै रचित काव्य मे रेत हुई रत माती, मुगना रा सोरी, साईणा साथी, नखराळी री नाजुक छलो अर म्हारो आलीजो सिणगार इत्याद शब्द चित्र अेक कानी राजस्थानी भाषा रै शब्द सामरथ नै प्रगट करै तो दूजी कानी उस्ताद रै शब्द चयन री क्षमता न उजागर कर। भावा रै अनुरूप भाषा रै रूप न सिणगारण री कला री हथौटी जिसी उस्ताद री कलम मे है, विसी दूजा राजस्थानी कविया री रचनावा मे निग नी आवै। ठेट राजस्थानी भाषा री ठाट अर उणरी अथाग क्षमता उस्ताद र काव्य मे घणी खूबी सू प्रगट हुई है।'[1]

सामतवादी ठिकाणै री कामदारी छोड्या पछै उस्ताद आपरी पेट भराई सारू बबई गया। उठ उणा रेसकोस मे 'जाकी बॉय' बणण सू लगाय नै पुस्तक विक्रेता रै रूप मे भात भात रा धधा किया। बबई में रैवता थका वे 'बाबे क्रानिकल' नाम र अग्रेजी अखबार र सपादक बी सी हार्निमेन रै सपर्क मे आया। हार्निमेन वारी काम करण री लगन अर तेज बुद्धि सू घणा प्रभावित हुया। उस्ताद वासू पत्रकारिता री शिक्षा ग्रहण करी जिकी आग जाय'र वारै जीवण मे घणी काम आई। इणा आग चाल'र दिल्ली र 'अर्जुन', आगरा रै सैनिक', बबई र अखड भारत', ब्यावर रै 'तरुण राजस्थान' अर जोधपुर रै 'रियासती' इत्याद कई अखबारा मे काम कियो। इणरै अलावा उणा खुद जयपुर सू 'मुसीबत' अर 'जयपुर टाईम्स' नाम रा दो अखबार ई काढ्या।

इण अखबारा रै माध्यम सू उणा भारतीय स्वतत्रता सग्राम मे

---

1 मरुवाणी, जनकवि उस्ता‍द अक, भूमिका।

लू ठो योगदान दियो। राष्ट्र अर राज्य दोनू स्तरा माथै वारो योगदान उल्लेखजोग रह्यो।

ई सन् 1930 मे जद गाधीजी नमक आदोलन सरु कियो तो उस्ताद उणमे शरीक होयग्या। उण वखत वारी उमर फगत तेईस बरस री ही। वान गिरफ्तार करन ब्यावर री जेळ मे घाल दिया। उठै वानै अेक बरस री कारावास भोगणो पड्यो।

जेळ सू छूट्या पछै उस्ताद रोटी-रोजी रै चक्कर मे ठौड-ठौड फिरता रह्या पण वारो घणकरो वखत इदौर मे बीत्यो। उठै वे मजूरा री नेतृत्व करता मजूर सगठणा रै सपक मे आया। इण सिलसिलै मे वान मार्क्स अर अेजिल रै साहित्य रो अध्ययन करण री अवसर मिळ्यो। इणसू वारी साम्यवादी विचारधारा दृढ हुयगी। इणरै पछै जीवण मे उणा कई क्षेत्रा मे काम कियो पण वारै मानस माथै अेकर जिको साम्यवादी रग चढग्यो वो जीवण रै अत लग फीको नी पड्यो।

उणा ई सन 1938 मे जयनारायण व्यास सागै मिळ'र लोक परिषद री थरपणा करी ही। राजशाही अर विदेशी सत्ता रै खिलाफ सघर्ष करण वाळो ओ सगठण भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस रो इज अेक अग हो। उण वखत इण भात रा सगठण राजस्थान री दूजी रियासता मे ई ठौड ठौड बण्या। इण सगठणा री मूळ माग रियासता मे जिम्मेवार हकूमत कायम करण री ही।

दूजी रियासता रै ज्यू जोधपुर रियासत रा जागीरी इलाका मे ई प्रजा रै सागै भात भात रा जुल्म अर अत्याचार होवता। लोक परिषद वारो घोर विरोध कियो। ठौड ठौड सभावा इत्याद करन जन जागृति पैदा करी। उस्ताद उण वखत कई ओजपूर्ण कवितावा री रचना करी। वे इण कवितावा नै जन सभावा मे लोगा न गाय न सुणावता। वारी बुलद आवाज मे गायोडी इण कवितावा रो जन मानस माथै ऊडो असर पडतो। इण प्रसग मे लिख्योडी वारी अेक कविता है—'साथिया जागण रो दिन आयो।' इणमे कवि सामतवाद अर पूजीवाद री आरती आछी तरिया उतारी है—

साथिया जागण रो दिन आयो

जागण रो दिन आयो बेलिया, जागण रो दिन आयो
ओ ढळतो दिन आयो, जुग जगत पलटियो पायो

दिन बीत गया जद वे मतवाळा, वारा सिर कटचा देता
धाडवियां सू ढोक भराता वेहता घन पटका लेता
कमतरिया रोता रह जाता, वे करता मन चायो
या सगळो जगत नचायो

वे कमधज कादा रोटी खा, मरुधर न माथा देता
कटका मे लडता ग्रर, लाडचा सू जुग जुग ग्रळगा रता
वे घन घरा धरम पथ साचा, जुग जुग फरज वजायो
वा सिर दे नाक बचायो

ग्रब तरवारा बोथी हुयगी, घोडा ठाकर वेच दिया
मोटर सू कवळो तन पडग्यो, दारू जतर खेंच लिया
रणबका राडा चित लाग्या, गुरगा काम जमायो
सिरदारा राज गमायो

वे चारण चाटे नीं हिळता, कडवी बात सुणा देता
राज तेज री डर नीं लाता, साचो कवित बणा देता
बारठजी मरजादा भूल्या, कविता कुजस दिरायो
रे जाचक नाम कमायो

जद रा सेठ मिनख हा ग्रसयत, हालिया सू हिळमिळ रहता
खाता धाप पूठ नीं भरता स सुख दुख भेळा सहता
जद हरचो भरचो सगळो जग रहतो, नित धनवान सवायो
तद लोग परम सुख पायो

सेठा मे कीं जीव जनमगा हाय हाय न लावे
मोटा मगर कुटुंम नें खाव, छोटोडा रुळता जाव
ग्रे भूखा मर हाळी कमतरिया, सगळो बोझ उठायो
सेठा भार वधायो

वे जूना हाकम चपडासी, करता राज दिलासा दे
ग्रब वणग्या वे ग्रसल कसाई, घन पधराव धासा दे
ग्रे साम दाम मे दड भेद रो, जबरो जाळ फलायो
नें खोटो करम बधायो

बामण राज, सेठ करसा न, जुगा जुगा सू पीस रह्या
पण ग्रब चेत गया कमतरिया, वे वरतारा बीत गया
हडबडाय हळधाणो वालो, रण रो शख वजायो
या जबरो जग मचायो

घरोबरी रो आज जमानो, कुण छोटो नें कुण मोटो
दो हाथा रो खाय मजूरी वो निकमा सू नित मोटो
गिणती मे गेहरा कमतरिया, व हथियार उठायो
हिम्मत सू कदम बढायो ।।[1]

विदेशी सत्ता रै पीठबळ माथै जोर जुल्म करण वाळी राजशाही अर सामतशाही रै खिलाफ सघर्ष करण री प्रेरणा देवता अर स्वतत्रता सेनानिया नें उद्बोधित करता कवि अेक सातरी रचना लिखी है। पत्नी रै मू ड सू पति नें सबोधित करनें कवि कवायो है—

परण्या डरं मती

थू भोडां सू भय खाय, परण्या डर मती
अे डरपोडा मर जाय साजन डरं मती ।
वे जगता उबार सूरमा, ज्यारा लडता रा सिर जाय
अे लाठा भिड बाजे घणा
अे दोरा दिन व्है देस रा, जद आळाणो कर जाय साजन
थू उण गैल मत जाय, परण्या डरं मती ।
वा भिपट निपूती मावडी
जठै पूत कपूता नीपज, काई रणछोड घर जाय साजन
नर सूरां कद फिर जाय, परण्या डर मती ।

वा साच सवागण सोवणी
जिण रणबका भरतार सू, सगळी साधा सर जाय साजन
भल नाक रख नर जाय, परण्या डर मती ।

आ धिक मिनखा देह आपणी
जद भू छाळा मिग्गा धण, काई धूसो सुण डर जाय साजन
ज्यू पाका फळ खिर जाय, परण्या डर मती ।

अे धन टावर आ कामणी
ओ देसडलो डूबा थका, स जीवतडा मर जाय साजन
अे देस तिरचा तिर जाय, परण्या डर मती ।[2]

---

1 मरुवाणी, जनकवि उस्ताद अक पृ स 38
2 उपयुक्त पृ स 31

जोधपुर रियासत मे लोक परिषद कानी सू सचालित आदोलन रै कारण रियासत मे होळै होळै जन जागति फलण लागी तो सरकार की सावचेत हुई। उण लोक परिषद माथै पाबदी लगायदी अर जयनारायण व्यास समेत सगळा कायकर्तावा नै न्यारा न्यारा जेळा मे नाख दिया। उस्ताद न जाळोर र किल मे बद राख्या। पण 1939 मे दूजोडो विश्वयुद्ध सरु हो जावण सू मजबूर होय'र सगळा न छोडणा पड्या अर वार साग समझोतो ई करणो पड्यो।

पण ओ समझोतो युद्ध चाल्यो जितर ई कायम रह्यो। युद्ध मे मित्र राष्ट्रा री जीत होवता ई रियासत स्वतत्रता सेनानिया न पाछा जेळा मे बद कर दिया।

अबकाळ जोधपुर जेळ मे व्यासजी अर बारा सगी माथिया सागै घणो खराब वरताव हुयो। उस्ताद ई इणी'ज जेळ मे हा। इणा सगळा मिळ'र इणरो प्रतिकार करण री मतो कियो। व्यासजी अर बालमुकुद बिस्सा इण जुल्म रै विरोध मे आमरण अनशन माथै बैठा। अनशन र दरम्यान ई बिस्सा री देहावसान होयग्यो। इणसू जनता मे खूब रोष जागो। सरकार मौकै री नाजुकता देख'र उस्ताद समेत सगळा कायकर्तावा न फरू छोड दिया।

इणरै पछ सन् 1942 रा आदोलन मे ई उस्ताद न जेळ हुई। इण भात ठेट स्वतत्रता प्राप्ति ताई कदेई वे जेळ मे रह्या तो कदई बारै। अेक साचा देश भगत अर ईमानदार स्वतत्रता सेनानो री हैसियत सू उस्ताद स्वतत्रता सग्राम मे पूरै तनमन सू भाग लियो। इण काम मे वानै काई काई फोडा भुगतणा पड्या होसी वा तो अेक भुगतभोगी ई जाण सक।

लव वखत ताई जन आदोलन मे भाग लेवण र कारण उस्ताद री कवि रूप ई निरतर निखरतो गयो। इण कारण वारी कवितावा मे निरतर ओज आवतो गयो। वारी अेक ओजपूण कविता है— 'मुलक नै मोट्यारा माथा देणा पडसी।' आ कविता उण वखत घणी प्रसिद्ध हुई। सभा सम्मेलना मे वार बार गाईजण सू वा लोगा री जबान माथै चढगी। कविता इण भात है।

माथा देणा पडसी

मुलक नै मोट्यारां, माथा देणा पडसी
देस न दीवाणा, माथा देणा पडसी

बीत गयो जूनो जग सारो, बदळ रह्यो दुनिया रो ढाळो
जुग नैं हाथ लगावो, मुलक नैं मोटघारां
सिर सोंदै री साख सपूतां, पूरी किएा विघ होसी सूतां
जागो जगत जगावो, मुलक न मोटघारां
मरुधर रा मू घा मानवियां, काज सरै सिर सूघा करियां
रए रा साज सजावो, मुलक नैं मोटघारा
जुल्म जोर री जड नैं काटो, फूट फूड री खाई पाटो
हिळ मिळ हाथ लगावो, मुलक न मोटघारां
आवो अपणो देस उबारा, भारत मा रो भार उतारा
सिर दे नाक बचावा, मुलक नैं मोटघारां ।[1]

देस वासियां नैं स्वतन्त्रता सग्राम मे भाग लेवए री प्रेरणा देवए खातर उस्ताद अेक ओरूं सातरी कविता लिखी है—'मरदा आग चालो !' इण कविता मे कवि देस वासियां न हिम्मत बधावतो कैवे—देखो दुनिया कितरी आगै बढगी अर आपाएी हाल काई हालत होय री है ? पए हिम्मत राखो अर मरदपणै सू आग बढो। इए बात मे इज थारी शान है—

मरदां आग आग चालो

आयो है वखत अमोल मरदा आग आग चालो
दुनिया बदल रही है चाल, वा बुध बल सू तोलो
देखो अकल री आख्या खोल के मरदा आग चालो
घर री आजादी ऊपर जान दे, सब पाप धोयलो
परबस जीवण री काई मोल, मरदा आग चालो
आयो है वखत अमोल, मरदा आग चालो
जो नर बताय साची राह बार लार चालो
राखो नित सबलो डोल मरदां आग चालो
आयो है वखत अमोल, मरदा आग चालो
माच्या अन्यायो कर, ससार रो डोल अडोलो
खोलो जुलम जोर री पोल के मरदा आग चालो
आयो है वखत अमोल, के मरदां आग चालो

---

1 मरुधारा जनकवि उस्ताद अक पृ स 37-39

मोटचारी रहसी दिन च्यार, पछै पड जासी चोलो
करदो जुलमी रा बींटा गोल के मरदा आगै चालो ।[1]

इणी'ज भाव री कवि री अेक ओरू कविता है—'भाया आग चालो ।' इणमे ई कवि विदेशी सत्ता अर राजशाही न ललकारता किसान अर मजूरा न हिम्मत वधाई है । वा कह्यो—ओ जुग आग वढण री है । जे थे सगठित होय न आगै प्रयाण री हिम्मत करो तो जीत निश्चित रूप सू थारी है । डरो अर घवरावो मत । मारग री सगळी अडचणा मतै ई हट जासी । गयोडो वखत पाछो कदई नी आवै । जिको क्षण वीतग्यो वो वीतग्यो । उणन पाछो लावणो हाथ री वात कोनी । इण वास्त वखत री कीमत न ओळखो अर हिम्मत करनै आग वढो—

भाया आगै चालो !

भई धीमा मुधरा चालो, पण आग आग चालो !

आगै चाल्या मिनख जिनावर, पगा ऊभ हाया खातो
आग चाल्या मूढ शिकारी, गडका प लाठ्या वातो
ओ जुग जुग चाल मानखो, जीवण री नाम उछालो
भई धीमा मुधरा चालो, पण आगै आगै चालो !

आग चाल्या वो नर राक्षस, मिनख मिनख नै जिण खायो
आग चाल्या वो खेती ग्डड, मिनख जोत नै हल वायो
ओ पग पग काटा भागतो, मारग न कियो सु वालो
भई धीमा मुधरा चालो, पण आग आगै चालो

आग चाल्यो भोपो प्रोहित कामण सीख वेद भण न
आग चाल्यो सूर सिपाही, घाड छोड राजा वण नै
ओ जीव सो आग वढ, मरतोडा खाथ टालो
भई धीमा मुधरा चालो, पण आग आग चालो

आग चाल्यो व्याज वाणियो, नाथ घाल राजा खड नै
आग चाल्यो भील मुसाहिव, राज लियो सत्तर धड नै
अव सगलो धन मेलो कीधो, दे धन गाभा र तालो
भई धीमा मुधरा चालो, पण आगै आग चालो

---

1 मरवाणी जन कवि उस्ताद अंक, पृ स 37-39

अब करसा कारीगर चेत्या जूथ बांध आगे बढसी
अटक कर यार मारग मे वारा धड पल मे पडसी
इण नितरी हलचल माय नै, जीवण री सग सभाळौ
भई धीमा मुधरा चालौ, पण आग आग चालौ

जनम लियौ सो डीगौ वधसी, कद ओछौ पड जाय नहीं
जमीं छोड धरती स कद भी, बीज पताला जाय नहीं
ओ गयौ रूप आवै नहीं, रुक जाणौ जम रौ जालौ
भई धीमा मुधरा चालौ, पण आग आग चालौ

ओ पाछौ पग कुदरत री अवकै, रुक जावै सो मरै परौ
जग जीवण नित आग चाल, ओ कुदरत नेम खरौ
पल बीतौ कद पाछौ आवै, कद विरला कर कसालौ ।।
भई धीमा मुधरा चालौ, पण आगं आगं चालौ ।।[1]

देश री आम जनता न विदेशी सत्ता, राजा महाराजा, सेठ-साहूकार अर पडा पुजारी सगळा मिळ'र किण भात चूसै, इणरौ सातरौ लेखौ जोखौ कवि री—'म्है आया अकल बतावण नै' नाम री कविता मे मिळै । कवि आपरी इण कविता मे 'शोषक पिरामिड' रौ आछौ खाकौ खाच्यौ है । सै मू ऊपर विदेशी हुकूमत अर उणरै नीचै राजा-महाराजा, सरदार सामत, ठाकर-ठीकर, कामदार-कण-वारिया, सेठ साहूकार अर पडा पुजारी । इण सगठित अर ताकतवर फौज रौ मुकाबलौ करण वास्तै किसान मजूर कन फगत अेक ई साधन होय सकै के वे ई सगठित होय जावै अर पछै प्रतिकार करै । कवि वान आ ई सीख देवण ताई वार दरवाज ताई पूग अर कव—

म्है आया अकल बतावा नै

म्है आया अकल बतावा न, जनता रौ राज जमावा नै
राजा देख समझली सगळी, रीत भात रजवाडा री
सग ढोल में पोल मची है, धूम मची है धाडा री
धाडत्या नै धमकावा नै
वडा ठिकाणा जोर जतावै, कर होड रजवाडा री

---

1 मरवाणौ जनकवि उस्ताद अक पृ स 37

माडाणी महाराजा बणग्या, चाल ढाल सै भाडा री
बडपण री वैम मिटावण नै
मोटा अफसर लीवो मोटरा, अधबिचला घोडा राखै
छोटा र आटै री घाटो रिश्वत खाय धान चाखे
भवसागर मेद मिटावा न

कामेती, कणवारघा, भावो, राख ठाट नवाबा रा
चवड चाले चाल मुसद्दी, पडद फिरतब काबा रा
पडदा नै पर हटाबा नै

सूम सेठिया बण्या सयाणा, लोही चूस मजूरा री
अेक अेक रा कर इक्यावन, सार सूत ले सूरा री
बोहराजी नै भिडकावा न

जोसी, पडा और पुजारो, पीर, पादरी साध जती
नित-नेमा रा नखरा राख फूट झूठ सू फिरी मति
अणभणिया अकल उपावा न

खेतर सै खडवा वाळा रा, सपत सँग मजूरा री
राज हथोडै-दातरडी री, बीती बात हजूरा री
सूतोडा शेर जगावा नै ॥[1]

ऊपर कियोडै उल्लेख मुजब कवि री मानस साम्यवादी विचार-धारा सू प्रभावित हो, इण कारण उणरो प्रभाव वारै काव्य मे सुभट लखावै । साम्यवादी भडे रै प्रतीक दातरडै अर हथोड री बात कवि री कई कवितावा मे आई है—

जुग पसवाडो

जुग पसवाडो लीनो रे भाई जुग पसवाडो लीनो
अेक हाथ हथोडो साम्यो
दूजै दारतडो कर लीनो -
जुग पसवाडो लीनो भाई
जुग पसवाडो लीनो ।
× ×
दूजा रग बिणज रो बानो

1 मरुवाणी जनकवि उस्ताद अक पृ स 42

रातौ रग मजूरा रौ
हाथ हथोड़ दातरडी मे
बसियौ काळ हजूरा रौ
जुग पसवाडो लीनो रे भाई
जुग पसवाडो लीनो ।[1]

फगत इतरी वात इज नी पण कवि आपरी अेक कविता मे तो 'लाल धजा री आण' फेरता किसाना अर मजूरा नै सवडैधाड उद्‌बोधित किया है—

लाल धजा री आण फिरै

लाल धजा री आण फिरै, जद किमतरिया री दसा थिर
बीत्या जुग मैंणत करता नै, धरती धन निपजाता नै
मायण माल मुफत मे जाता, छाछ मलीचौ खाता नै
अब हथोडो दातरडी, धन धरती री धणियाप कर
लाल धजा री आण फिर

डगमग डोल रह्या रजवाडा, बडे राज री जोर गयौ
ठाकर फिरै ठोकरा खाता, बडो रावळो बिगड गयौ
जाग गया धरती रा धायल हुलस धारियो हाथ धर
लाल धजा री आण फिर

सेठा री सैंणप सड चाली, बात बिगडगी बोहरा री
चाल उकोली धघड डूबगी, पोल खुली स चोरा री
अणभणिया आयडवा ढूका, धरती धूजै सूम डर
लाल धजा री आण फिर

जूझ रह्या अणगिण्या जुग सू, जग रा करसा और मजूर
सींच धरा रात लोही सू, रग दियो धज नै भरपूर
यध काठ परबस कमतरिया, रे हिवडै मे जोश भर
लाल धजा री आण फिर

दूजा रग विणज रा बाना रातौ रग मजूरा रौ
हाथ हथोड दारतडो मे, बसियौ काळ हजूरा रौ

---

1 जनकवि उस्ताद, पृ ■ 32

निशंक फिर हळवाणी वाळा, दुस्मण हळ भय खाय मरै
लाल धजा री आण फिरै

हळवाळा तरवारा झेलो, कळवाळा तोपा दागे
दार मूलग्या दळजळ वाळा जीव छोड नै पड भाग
चूड माजनो धाडविया रो कमतरिया रो राज सर
लाल धजा री आण फिर[1]

उस्ताद जिसी स्वतंत्रचेता जनकवि आजादी आया पछ ई आपरी खरी अभिव्यक्ति रै कारण आपरै सागण आसण माथै कायम रह्यो। इणर वास्त वान हर तर सू नुकसाण भुगतणो पड्यो। पण खोळिय मे सास कायम रही जठा लग इण निडर कवि री कथणी अर करणी मे अगाई फरक नी आयो।

जनकवि छेवट दुखी होयन कह्यो—

रे कवि अब जीव मतो, कविता हुयगी कोढ।
विडद भांड कविता कर, छूठ री चादर ओढ।।

---

1 जनकवि उस्ताद, पृ सं 52

कवि परिचय

कविराजा बांकीदास श्रासिया, महाराजा मानसिंह (जोधपुर), महाकवि सूर्यमल मीसण, शकरदान सामोर, केसरीसिंह बारहठ, उदयराज उज्वळ, विजयसिंह पथिक श्रर गणेशीलाल व्यास उस्ताद री विगतवार श्रोळखाण शोध प्रबध रा न्यारा न्यारा प्रसगा मे श्रायगी है। इण वास्तै लारै रह्योडा कविया री सक्षिप्त श्रोळखाण नीचै लिखी श्रोळ्या मे दिरीजी है।

वलजी महडू

श्राप डू गरपुर रियासत रै बरोडा गाव रा रैवासी हा। डू गरपुर महारावळ जसवतसिंह (दूजोडा) श्रापरा समकालीन हा। उण जमानै रा श्राप डिंगल रा श्रेक चावा कवि हा। चापलूसी सू श्रळगा रैय'र खरी बात कैवणी श्रापरै सुभाव री विशेषता रही। श्रोई कारण है के श्रापरै काव्य मे विदेशी सत्ता र प्रति रोष श्रर विलासी राजावा रै प्रति श्राक्रोश री भावना है। महारावळ जसवतसिंह रै सागै दगो करण वाळा दूजा राजावा नै इण काव्य मे जबरा भाडिया है।

कमजी दधवाडिया

श्रापरो पूरो नाम कायमसिंह दधवाडिया हो। श्रापरो जनम वि स 1867 मे मेवाड मे हुयो। श्राप मेवाड रा श्रेक प्रतिष्ठित नागरिक श्रर विख्यात कवि हा। वीर विनोद' रा रचयिता कविराजा श्यामळदास श्रापरा इज सुपुत्र हा। कमजी फुटकर कवितावा रै श्रलावा 'दीपग कुल प्रकाश' नाम सू श्रेक श्राछै काव्य ग्रथ री रचना ई करी। श्रापरो देहात वि स 1927 मे हुयो।

चिमनजी दधवाडिया

आपरो जनम मेवाड राज रै ढोकळिया गाव मे हुयो। आपरै पिताश्री रो नाम ओनाडसिंह हो। प्रख्यात कवि होवण रै कारण महाराणा रै दरबार मे आपरो आछो सनमान हो। वैवारकुशळ अर मिलणसार सुभाव रै कारण आपरी ओळख-पिछाण ई मोकळी ही। विदेशी सत्ता रै खिलाफ आप मोकळी कवितावा लिखी। सुप्रसिद्ध कवि करणीदानजी आपरा ई सुपुत्र हा।

सूयमल आसिया

आप उदयपुर जिला रै कडिया गाव रा रैवासी हा। डिंगल गीता री रचना मे आप खूब निपुण हा। यारी घणकरी रचनावा बीसवी सदी रै प्रारभ मे लिखोडी है। आप मे-राष्ट्रीय भावना घणी प्रबळ ही। आ बात यार डिंगल गीता मे सुभट लखाव। आपरै वश मे ई श्री सावळदान आसिया अेक ख्यातनामा कवि है।

गिरवरदान कविया

गिरवरदान कविया मारवाड राज मे जैतारण तेहसील रै बासणी गाव रा रैवासी हा। उण जमानै रा विख्यात डिंगल कविया मे आपरी गिणती ही। यारै डिंगल गीता नै इतरी ख्याति मिळी के वारी प्रशषा मे रचित पद्य री अेक कडी लोकोक्ति रै ज्यू चावी हुयगी—'परवरिया सारी प्रिथी, गिरवरिये रा गीत।'

1857 रै प्रमुख स्वतत्रता सेनानी आऊवा ठाकर खुशालसिंह री प्रशषा मे रचित यारो काव्य यारो काव्य यारी राष्ट्रीय विचारधारा न उजागर करै। इणा रै गीता मे अलकार सौदय रै सागै उक्तिया रो सफल प्रयोग देख्या ई बण आव।

जवानजी आढा

आप मारवाड रियासत र पाचेटिया गाव रा रवासी हा। पाचेटियो डिंगल रा ख्यातनामा कवि दुरसाजी आढा र वशधरा री गाव है। जवानजी आढा मारवाड नरेश महाराजा मानसिंहजी रा समकालीन हा। मानसिंह वानो सू विदेशी सत्ता रै विरोध सू प्रभावित होयन इणा महाराजा री प्रशषा मे कई डिंगल गीता री रचना करी, जिण मे अेक गीत—'हुव फैल धरण हेकण हुव' घणो चावो हुयो।

बुधजी सिढायच

आप मूळ रूप सू तो मारवाड राज रै मोगडा गाव रा वासी हा। पण यांरा वडेरा नृसिंहगढ रियासत मे जाय नै बसग्या हा अर उठै रा राज घराणा मे कविराजा र पद माथै पूगग्या। बुधजी ई इणी रूप मे सम्मानित रह्या। यारै समकालीन नृसिंहगढ रा राज-कु वर चैनसिंह अग्रेजा सागै युद्ध करता काम आयग्या तो इण घटना सू यारो मानस घणो प्रभावित हुयो अर इण प्रसग मे उणा कई डिंगल गीता री रचना करी। यारै डिंगल गीता, छप्पय अर कवित्त इत्याद मे वृज मिश्रित राजस्थानी रो प्रयोग मिळै। आप लेक विख्यात कवि हा।

बुधजी आसिया

बुधजी आसिया मारवाड रै भाडियावास गाव रा वासी हा। कविराजा वाकीदास रै च्यारू भाइया मे आप सै सू नना हा। महाराजा मानसिंह वाकीदास न काव्यगुरु रै रूप मे मानता इण कारण बुधजी माथ ई आपरी असीम कृपा ही। वे आपने वाळक-नाथ कैय नै वतळावता। बुधजी खरी खरी कवणिया अर स्वतत्र विचारा रा आदमी हा। यारी राष्ट्रीय विचारधारा री झलक यार काव्य मे मिळै जिको इणा स्वतत्रता सेनानी डू गजी जवारजी री प्रशसा मे लिख्यो है। कविराजा वाकीदास र ज्यू यारो काव्य ई उत्तम कोटि रो है।

धुरगादत्त बारहठ

आप मारवाड राज रै लोळावास गाव रा वासी हा। उण जमान रा ख्यातनामा डिंगल कविया मे आपरी गिणती ही। महाकवि सूयमल मीसण आपरै सुप्रसिद्ध ग्र थ वश भास्कर मे आपरी गिणती आपरी मित्रमडळी मे करी है। तत्कालीन रतलाम नरेश री आप माथै घणी कृपा रही। यारो घणकरो वखत वारै दरबार मे बीतो। राजा र नाम माथै उणा 'बळवत नाम माळा' नाम सू निसाणी छद ई बणायो हो। बू दी र बळवत हाडै जद अग्रेजा साग राड करी तो इणा उणरी तारीफ मे डिंगल गीत लिख्या। यारो काव्य ऊच दरजै रो है।

राघोदास सादू

आप मारवाड मे वाली तहसील र मिरगेमर गाव रा वासी हा।

काव्य रचना र आग इतिहास मे ई यान मोकळी रुचि होवण सू यारै कन इतिहास सबधी मोकळी सामग्री ही । थे आपरै जमान रा अेक निडर कवि मानीजता । अग्रेजा री परवाह किया बिना इणा राष्ट्रीय भावना सू ओत-प्रोत कई डिंगल गीता री रचना करी । सलूवर रावत केसरीसिह जीवण भर अग्रेजा र खिलाफ रह्या । इण कारण इणा वारी तारीफ मे कई डिंगल गीत लिख्या ।

चिमनजी आढा

चिमनजी आढा पाचेटिया रा वासी हा । आप जोधपुर महाराजा मानसिह रा समकालीन हा । इणा मानसिह री प्रशसा मे जिकौ डिंगल गीत लिख्या, वा मे अेक गीत—'भरक झाकरो मान भूपत तप आज रो' खासो चावो रह्यो । इण गीत मे अग्रेजा री खिलाफत करण मे मानसिह री तारीफ करीजी है । चिमनजी रो लिख्योडो घणो काव्य कोनी मिळै, पण जिको ई मिळै वो उत्तम श्रेणी रो है ।

गोपाळदान दधवाडिया

गोपाळदान मेवाड राज मे लेमपुर गाव रा रैवासी हा । यारै वडेरा नै मारवाड मे राजकियावास गाव जागीर मे मिळयोडो हो । डिंगल रा नामी कवि होवण सू अे महाराजा मानसिह (जोधपुर) रा कृपा पात्र हा । इणा मानसिह री यश प्रशस्ति मे कई गीता री रचना करी । यारै काव्य मे विदेशी सत्ता रो विरोध सुभट लखाव । कविराजा बाकीदास रै देहात पछ मानसिह माथै जे कोई कवि रो प्रभाव हो तो वो गोपाळदान दधवाडियै रो हो । अ जीवण लग घण मान तान सू रह्या ।

चनजी थरासूर

चनजी जोधपुर महाराजा तखतसिह रै प्रमुख दरबारी कविया मे अेक हा । महाराजा मानसिह री मुसीबत रै दिना मे मदद राखण सू यारै वडेरा नै पारलू (बाडमेर) गाव जागीर मे मिळयोडो । उण वखत रै दूज राजावा रै ज्यू महाराजा तखतसिह रो रवैयो अग्रेजा रै प्रति दोस्ती रो हो । उणा 1857 मे अग्रेजा री मदद करी । पण चनजी वारा दरबारी कवि होवता थकाई राष्ट्रीय विचारधारा रा व्यक्ति हा । उणा अग्रेजा रै खिलाफ अर महाराजा मानसिह री तारीफ मे डिंगल गीत लिख्या ।

लिखमोदान ऊजळ

लिखमीदान ऊजळ जिए चारए कुळ मे जनम लियो, वारै जागीर रो गाव ऊजळा (जसलमेर) हो। इए वश मे नाथूरामजी अेक ठावा पुरुप हुया। वे पोकरए ठिकाणै रा दीवाए होवए रै साग अेक चावा राजनीतिज्ञ हा। जोधपुर राजघराणै री समस्यावा सुळभावए मे ई वारी सलाह लिरीजती। लिखमीदान, नाथूरामजी रा सुपुत्र ग्रर डिंगल रै सुप्रसिद्ध कवि हा। लिखमीदानजी री कई फुटकर रचनावा मिळै। या री डूगजी जवारजी री प्रशसा मे रचित अेक डिंगल गीत—'भिडियो इम ज्वार लिया भड सग' यारी राष्ट्रीय विचारधारा रो द्योतक है।

चिमनजी ग्राढा

चिमनजी ग्राढा ई पाचेटिया गाव रा वासी हा। यारो काव्य घणो तो कोनी मिळै पए जिको मिळै वो ग्राछै स्तर रो है। जोधपुर महाराजा मानसिह रा समकालीन होवए सू इएा ई महाराजा री प्रशसा मे कीं डिंगल गीत लिख्या है। वा मे सू अक गीत—'ग्ररक ग्राकरो मान भूपत तप ग्राज रो' घएो प्रसिद्ध हुयो। इए गीत मे अग्रेजा साग ग्रसहयोग करए सू मानसिह रा वखाए करीज्या है।

कविराजा भारतदान

जोधपुर महाराजा मानसिह रै काव्यगुरु बाकीदास रै कोई बेटो नी होवए सू कविराजा यान गोद लिया हा। यारा इज पुत्र कविराजा मुरारीदान हुया। ग्रापरी रचनावा घणी कोनी मिळै पए जिकी मिळै वे स्तरीय है। कई डिंगल गीत तो घणा प्रभावशाली ग्रर ग्रोपता है। डूगजी जवारजी मार्थ लिख्योडो गीत यारी राष्ट्रीय विचारधारा रो पोपक है।

गगादान सांदू

गगादान सादू शिव गाव रा वासी हा। ग्रो गाव मौजूदा जोधपुर जिल मे गोटए रै कनै ग्रायोडो है। ग्राप महाराजा तखतसिह रै समकालीन कविया मे हा। यारी रचनावा ई कम मिळै ग्रर वे ई साधारए स्तर री है। इएा ई डूगजी जवारजी री प्रशसा मे अेक डिंगल गीत लिख्यो है।

महाराजा चतुरसिंह

आपरो जनम मेवाड र राज घराणै मे वि स 1923 मे करजाली गाव मे हुयो। आपरै पिता रो नाम सूरतसिंह हो। जीवण रै अठाईसवें वरस मे आपरी जोडायत री देहात होय जावण सू यारो मन सासारिक वधणा सू उठग्यो। राजम्हैल छोड'र सुकेर नाम रा गाव मे झू पडी वणाय'र रवण लाग्या। ईश्वर भजन अर साहित्य सिरजण मे इणा आपरी आखी उमर गाळ दी। सादगी अर सरलता रा तो आप साखियात अवतार हा। मेवाड मे आप बावजी चतुरसिंहजी र नाम सू ओळखोजता अर जनता याने देवता मान'र पूजती। आप सस्कृत हिन्दी अर राजस्थानी रा आछा विद्वान हा। आप कुल 16 पुस्तका लिखी। अध्यात्मवाद आपर लेखन रो प्रमुख विषय हो। आपरी की रचनावा राष्ट्रीय विचारा सू ई प्रभावित है।

नाथूदान महियारिया

आपरो जनम उदयपुर मे वि स 1948 मे हुयो। आपरै पिता केसरीसिंह ई अेक चावा कवि हा। काव्य रचना यांन विरासत मे मिळी। आगे चाल'र अ आपर जमान रा विख्यात डिंगल कवि मानीज्या। आपरी रचनावा मे 'वीरसतसई' अेक चर्चित कृति है। बाकी रचनावा मे हाडी शतक, चू डा शतक, झाला शतक अर गाधी शतक प्रमुख है। आपर काव्य री भाषा सहज, सरल अर मधुर है।

सावळदान आसिया

आपरो जनम वि स 1961 मे मेवाड राज रै कहिया गाव मे अेक ठावै चारण परिवार मे हुयो। आप डिंगल रा वतमान कविया मे अेक श्रेष्ठ कवि है। राजस्थान मे इण वखत डिंगल गीता रो शुद्ध वाचन करण वाळा मे आपरो नाम सिरै गिणीजै। आप डिंगल गीता रै लक्षण ग्रन्थ रै रूप में 'महाभारत रूपक' री रचना करी है। आपरी कई रचनावा राष्ट्रीय भावा सू ओतप्रोत है। आपरी भाषा सरल, सुबोध अर सहज है।

मुकनदान बारहठ

आप शेखावाटी क्षेत्र र बिरमी गाव रा वासी। शेखावाटी क्रांतिकारी आदोलन रा अेक सक्रिय सदस्य अर प्रत्यक्ष द्रष्टा होवण

सू इण आंदोलन रा जीवता इतिहास हा। अेक निडर कवि होवण सूं आप आपरी बात बिना लाग लपेट रै कही। देशद्रोहियां नै इण खूब भाडिया। शेखावाटी रै घर घर मे यांरी रचनावा आज ई लोगा री जबान माथै है। हाथ काठो होवता थकाई आप कोई सू कदई याचना नी करी। इतिहास अर साहित्य दोनू री दीठ सू अे अेक चालता फिरता पुस्तकालय रै उनमान हा।

यशकरण चारण

वि स 1961 मे आपरौ जनम भीलवाडा जिलै रै जेतपुरा गाव मे हुयौ। यांरै पिता रो नाम शक्तिदान हो। यांरै टाबरपण मे ई पिता रो देहात होवण सू घर मे नैनम पडगी ही। इण कारण आपरी शिक्षा-दीक्षा नियमित रूप सू नीं होय सकी पण स्वाध्याय रै कारण साहित्य मे आप आछी निपुणता हासल करली। आप हिंदी अर राजस्थानी दोनू मे समान गति सू लिख। आप फुटकर कवितावा र अलावा की काव्य ग्र थ ई लिख्या जिकौ हाल अप्रकाशित है। यार अेक ग्र थ मे प्रजा मडळ युगीन काव्यधारा' अध्याय हेठळ जिकौ कवितावा सकलित है वे यारै राष्ट्रीय सरूप न दरसावै।

ठाकर रामसिंह

ठाकर रामसिंह रो जनम मेवाड राज रै केलवा गाव मे अेक राजपूत परिवार मे हुयौ। आपरी प्रारंभिक शिक्षा दीक्षा पीपलातरी गाव रा नानजी पालीवाल री देखरेख मे हुई। काव्यरचना मे रुचि होवण सू आगे चाल'र या चतुरदान चारण सू काव्य रचना करणी सीखी। वे महात्मा गाधी र अहिंसात्मक आदोलन सू घणा प्रभावित हा इण कारण इणा राष्ट्रीय भावनावा सू ओतप्रोत कई फुटकर रचनावा लिखी।

रेवतसिंह भाटी

आपरौ जनम कृष्णगढ राज रा नवर गाव मे 1 जुलाई 1909 मे हुयौ। यारै पिता रौ नाम जोरसिंह भाटी हो। आप विद्याध्ययन पछ सेना मे नोकरी करली अर लेफ्टिनेंट पद सू सेवा निवृत्ति लीवी। काव्य मे आपन ठेठ सू रुचि रही। चारणी साहित्य सू प्रभावित होवण सू आपरो भुकाव वीर रसात्मक काव्य कानी बेसी रह्यो। सकड़ फुटकर कवितावा र अलावा आप कई काव्य पुस्तका

री रचना करी है। इणा मे 'लक्ष्मण विलास', 'छत्रसाल शतक', 'चन्द्रसेन चरित्र' अर 'चारण चमत्कृति' इत्याद प्रमुख है। आप हिन्दी अर वृज भाषा मे ई काव्य रचना करी।

अक्षयसिंह रतनू

आपरो जनम जयपुर रियासत रै वाळी पहाड़ी गाव में वि स 1966 मे हुयो। ठेठ सू काव्य मे रुचि होवण सू आप सै सू पै'ली श्रीमद् भागवत पुराण रै दशम स्कध रो छदवद्ध अनुवाद कियो। आपरी प्रमुख कृतिया है— 'अक्षय किशोर स्मृति', 'अक्षय रतन स्मृति', 'श्री हर की पेढी' अर 'राजस्थान केसरी'। आपर राष्ट्रीय भाव री कवितावा मे केसरीसिंह बारठ अर प्रतापसिंह बारठ मार्थ लिख्योड़ी मसाला प्रसिद्ध है।

मल्हाजी राव घोळाखेड़ा

आप शेखावाटी क्षत्र मे घोळाखेडा गाव री सरहद मे बस्योड़ी भाट री ढाणी रा रैवासी हा। थारै पिता रो नाम मोतीसिंह हो। थार दादै कलजी राव आ ढाणी बसाई ही। क्रातिकारी आदोलन सू प्रभावित होवण र कारण आप क्रातिकारिया रा हिमायती अर राष्ट्रीय विचारधारा रा पोषक कवि हा। आप कई फुटकर कवितावा री रचना करी है। आपरो देहात वि स 2016 मे आसोज सुद तीज नै हुयो। इण प्रसग मैं ओ दूहो कह्योडो है—

दो हजार सोळ सवत, आश्विन मास उदार।
सुत मोती सुरग सिधावियो, तीज तिथि रविवार॥

फतेहकरण उज्वळ

आप बिजोलिया आदोलन र सचालक विजयसिंह पथिक रा प्रमुख सहयोगी रह्या। इण कारण बिजोलिया किसान आदालन मे सक्रिय रूप सू भाग ई लियो। कवि होवण सू आप आपर काव्य मे सामती अत्याचारा री खूब निंदा करी। इणर कारण आपन मोकळा फोडा भुगतणा पडया पण आप इण वात री कदेई परवा नी करी। बिजोलिया आदोलन सबधी आपरी कवितावा आज ई उठ रा मिनखा री जवान मार्थ है।

नदराम साधु

आप अजमेर राज रे जामोळा गाव रा वासी हा। वैष्णव मत

होवरण सू सरुपात मे आप कथा वाचन रो काम करता । इण सारू आपनैं दूर दूर ताई भ्रमण करणो पडतो । उण वखत महात्मा गांधी रो स्वदेशी आंदोलन घणैं जोर सू चाल हो । यार मायं ई उण आंदोलन रो असर पड्यो । स्वदेशी वस्तुवां रैं प्रयोग री बात इणा नैं ई हितकर लागी । इण कारण स्वदेशी वस्तुवां रैं प्रयोग बाबत लोकगीतां री तज मायं इणा मोकळी काव्य रचना करी जिको खूब लोकप्रिय हुई । इण भात बापू र स्वदेशी आंदोलन मे इणा रो ई योगदान रह्यो ।

अर्जुनलाल सेठी

सेठी रो जनम 9 सितंबर 1880 न जयपुर मे हुयो । आपरी शिक्षा बी अे ताई हुई । राजनीति मे रुचि होवण सू आप लोकमान्य तिलक रैं संपर्क मे आया । आप जयपुर मे वर्द्धमान विद्यालय री थरपणा करी । शिक्षण संस्था रैं नाम माथ इण विद्यालय मे देश रैं टाळवै मोट्यारा न क्रांति री शिक्षा दिरीजती । वे राजस्थान प्रदेश मे क्रांतिकारी आंदोलन रा सूत्रधार हा । मूळत कवि नी होवता थकाई इणा राजस्थानी मे की कवितावां लिखन विदेशी सत्ता रैं विरोध मे आपरी भावनावां प्रकट करी । गांधी वादियां सू यारी विचारधारा नी मिळवा सू या छेहली उमर मे घणा फोडा भुगतिया ।

जयनारायण व्यास

लोक नायक जयनारायण व्यास रो जनम 18 फरवरी 1899 मे जोधपुर नगर मे हुयो । व्यासजी देशी रजवाडा मे जन जागति रा अग्रदूत है । इणा प नेहरू रैं सहयोग सू देशी राज प्रजा परिषद रो थरपणा करन उण युग मे घणो महताऊ काम कियो । इण संस्था रैं कारण ई भारत री सगळी रियासता मे जन जागति आई । व्यासजी रो व्यक्तित्व बहुमुखी हो । वे अेक ईमानदार देश भगत, कमठ नेता, भावुक कवि, उत्कट कला प्रेमी अर मस्तमौला किस्म रा आदमी हा । आप राजस्थान रा मुख्य मंत्री ई रह्या । राजस्थानी भाषा रा आप प्रबळ समर्थक हा । आप राजस्थानी मे 'आगीवाण' नाम रो अेक अखबार ई काढ्यो । सक्रिय राजनीति मे रैंवता थकाई आप मूळत कवि हा । आप हिन्दी, राजस्थानी मे कई फुटकर कवितावां लिखी ।

माणिकलाल वर्मा

मेवाड राज रै बिजोलिया गाव मे आपरो जनम हुयो । आपरो राजनतिक जीवण बिजोलिया आदोलन रै साग ई सरु हुयो । आपरो आखो जीवण देश सेवा मे बीतो । आप हरिजना अर अछेवा री घणी सेवा करी । राजनीति सू सबधित होवण सू जन जागृति वास्तै आप मेवाडी वोली मे कई फुटकर कवितावा री रचना करी ।

हीरालाल शास्त्री

जयपुर रियासत र जोबनेर कस्बै मे 24 नवबर 1899 मे आपरो जनम हुयो । 1921 मे बी ओ ताई पढ'र आप की बरमा ताई राज री नोकरी में रह्या । छेवट 1927 में अजु नलाल सेठी री प्रेरणा सू सरकारी नोकरी छोड'र सावजनिक जीवण मे प्रवेश कियो । 1929 मे आप वनस्थळी गाव मे विद्यापीठ री थरपणा करी । आपरो सगळो जीवण राजनीति मे बीतो । आप राजस्थान रा मुख्य मत्री ई रह्या । विद्याव्यसनी होवण रै कारण आपरो झुकाव काव्य रचना कानी ई रह्यो । जन जागृति सारू आप ढू ढाडी बोली मे की कविताश्रा लिखी जिकी 'गीत पच्चीसी' रै नाम सू प्रकाशित हुई ।

घनश्याम शर्मा

आपरो जनम 3 जनवरी 1901 मे ग्वालियर रियासत र सिगोली गाव मे हुयो । आप बिजोलिया किसान आदोलन मे सक्रिय रूप सू भाग लियो । वेगू हत्याकाड री वखत आपरै पग मे ई गोळी लागी ही । रियासती शासन इणा माथे घणा जुल्म किया । यारी खेती री जमीन जब्त करली अर कई तक्लीफा दीवी । पण इणा परवा नी करी । किसान आदोलन मे भाग लेय'र इणा कई गीता री रचना करी जिकी इण शोध प्रबध मे सकलित है ।

भैंरवलाल काळा बादळ

4 सितम्बर 1920 मे कोटा रियासत री सारथल जागीर रै काकोडी खेडा गाव मे आपरो जनम हुयो । आरभिक दिना मे आप जिल्दसाजी रो काम कियो । पछ प नन्नूराम शर्मा रै सपक मे आवण सू कोटा प्रजामडळ रै कायक्रमा मे भाग लेवणो सरू कियो ।

आदिवासी जन जातिया मे शिक्षा प्रचार वास्त आप जम न काम कियो । 1942 मे भारत छोडो आदोलन मे ई आप भाग लियो । 1952 सू 1967 ताई पूरा 15 वरस आप राजस्थान विधान सभा रा सदस्य रह्या । जन जातिया मे जागृति वास्तै आप मोकळी काव्य रचना करी । आपरी लिख्योडो 'काळा बादळ' गीत घणो चावो रह्यो । इणसू आपरो उपनाम ई 'काळा बादळ' पडग्यो ।

सुमनेश जोशी

जोधपुर नगर मे 3 सितबर 1916 मे आपरो जनम हुयो । मोकळै बरसै ताई आप सरकारी सेवा मे रह्या । जन सेवा री प्रेरणा आपनै लोकनायक व्यासजी सू मिळी । सुमनेश मूळत कवि अर पत्रकार हा । इण रूप मे प्रदेश री राजनीति मे थारो महताऊ योग-दान रह्यो । इणा मोकळो राष्ट्रवादी काव्य लिख्यो । जोधपुर सू 'रियासती' दनिक पत्र रो प्रकासण ई कियो । राजनीति मे इण पत्र री घणो महत्व रह्यो ।

विजयशकर शास्त्री

आपरो जनम वि स 1966 मे काती सुदी छट्ठ रै दिन जयपुर नगर मे प रामनाथ शर्मा रै घरा हुयो । सरुपात सू ई अे राष्ट्रीय विचारधारा रा पोषक रह्या । सन 1929 मे जयपुर र महाराजा कॉलिज मे बम री धडाको किया पछ थार पिता थान राजस्थान सू बार भेज दिया । अे बरसा लग प मदनमोहन मालवीय रै सपक मे रह्या । जन जागति रै विचार सू आप राजस्थानी मे काव्य रचना करी जिकी खासी चर्चित रही । सन् 1952 मे 'जन सदेश' दैनिक पत्र ई काढ्यो जिको सतर साल चाल'र आर्थिक कारण सू छेवट बद हुयग्यो ।

डॉ मनोहर शर्मा

झूझणू जिलै र बिसाऊ गाव मे आपरो जनम वि स 1972 मे हुयो । आप राजस्थानी गद्य अर पद्य रा चावा अर लूठा कवि-लेखक है । 'अरावली री आत्मा' अर 'गीतकथा' आपरी काव्य कृतिया है । आप राजस्थानी मे गद्य अर पद्य दोनू विधावा मे मोकळो लिख्यो है । लारला कई बरसा सू आप वरदा' नाम री राजस्थानी शोध पत्रिका रो सपादन ई करै ।

भवरलाल प्रज्ञाचक्षु

आप बिजोलिया किसान आदोलन मे विजयसिह पथिक रा प्रमुख सहयोगी रह्या। आदोलन न गति देवण ताई इणा लोक भाषा मे कई गीता री रचना करी। आपर काव्य री भाषा घणी सरल, सरस अर मधुर है। इण काव्य मे राष्ट्रीय भावना जबरी भरयौडी है। आपरै काव्य सू आम जनता मे मोकळी चेतना आई।

गिरधारीसिह पडिहार

आपरौ जनम बीकानेर नगर मे हुयौ। सरकारी सेवा मे रैवता थका ई लेखन मे आपरी गहरी रुचि रही। फुटकर कवितावा साग आप दो खड काव्य 'मानखौ' अर 'धूड कोट' ई लिख्या। आपरौ काव्य उत्तम किस्म रो है। राजस्थानी भाषा मे राष्ट्रीय काव्य रै निर्माण मे आपरौ योगदान उल्लेख जोग रह्यौ।

सहायक ग्रन्थ सूची

1 Tod s Rajasthan, Vol I
2 The Indian Mutiny, Malle Son
3 The chapter of Indian Mı tiny, Trevor
4 Political History of Jeypore Brookes
5 A missing chapter of Indian Mutiny, Showere
6 Loyal Rajputana, Munshi Jwalasahai
7 The mutinies in Rajputana, Prichard
8 भारत मे अग्रेजी राज (प्रथम खड), प सुन्दरलाल।
9 भारत म अग्रेजी राज (द्वितीय खड), प सुन्दरलाल।
10 मारवाड का इतिहास (द्वितीय खड) प विश्वेश्वरनाथ रऊ।
11 वीर विनोद (प्रथम खड) कविराजा श्यामलदास।
12 वीर विनोद (द्वितीय खड) कविराजा श्यामलदास।
13 जोधपुर राज्य का इतिहास (ततीय खड) ओझा।
14 मध्यप्रदेश का इतिहास और नागपुर के भासले।
15 वाकीदास ग्र थावली (ततीय खड), काशी ना सभा।
16 वीर सतसई स डा क सहल।
17 राजस्थानी साहित्य की रूपरेखा, डा मो मेनारिया।
18 डिगल म वीर रस डा मो मेनारिया।
19 कवि रत्न माला मु शी देवी प्रसाद।
20 हाडौती का स्वतन्त्रता सग्राम, कवि निरजन।
21 बीकानेर राज्य का इतिहास ओझा।
22 भारतीय क्रांतिकारी आदोलन म नाथ गुप्त।
23 राजस्थान मे राजनतिक जागरण, के अेस सक्सेना।
24 राजस्थान म स्वतन्त्रता सग्राम के सेनानी सुमनेश।
25 धुन के धनी सत्यदेव विद्यालकार।

26 विजयसिंह पथिक, शोभालाल गुप्त ।
27 अमर शहीद सागरमल गोपा, रामचन्द्र बोड़ा ।
28 स्वतन्त्रता सेनानी डूंगजी जवारजी, सौ शक्तावत ।
29 ख्याल डूंगजी जवारजी को, प्र घन्नी मोहनचंद ।
30 गीत पच्चीसी हीरालाल शास्त्री ।
31 मारवाड़ की ख्यात (जिल्द दूसरी), रेऊ ।
32 जोधपुर राज्य की ख्यात (जिल्द चौथी) ।
33 दस्तूरी रेकर्ड जोधपुर बही स 18 ।
34 जोधपुर स्टेट रेकर्ड सनद बही स 126 ।
35 जोधपुर स्टेट रेकर्ड हकीकत बही स 18 ।

पत्र-पत्रिकायें

1 परम्परा (त्रैमासिक), गोरा हटजा अंक ।
2 प्रात स्मरणीय प्रताप स्मारिका ।
3 राजस्थानी वीर मासिक (पूना), जनवरी 75 ।
4 मरुवाणी जनकवि उस्ताद अंक ।
5 मरुवाणी उदयराज उज्जवल अंक ।
6 वरदा (त्र मासिक), मार्च 58 ।